एको देवः कलौ शनिः

प्रथम संस्करणः 2007
प्रतियाँः 5,100

द्वितीय संस्करणः 2010
प्रतियाँः 11,000

तृतीय परिवर्द्धित एवं संशोधित पुष्पम्ः 2013
प्रतियाँः 1,000

मूल्यः 251/- रुपये

ISBN: 978-81-903707-9-0

संकलित एवं विरचित– शनिभक्त 'मनु'
फोनः 9899133496

प्रकाशकः
रामा पब्लिकेशन्स
एच-3/26, बंगाली कॉलोनी,
महावीर एन्क्लेव, नई दिल्ली-45
फोनः 9313553434, 9311353434
E-mail: ramapublications@gmail.com
divyashanidev@yahoo.com

श्रीसद्‌गुरु देव देवगुरु भगवान बृहस्पति व महावतारी बाबा जी से सविशेष प्रार्थना करता हूँ कि वो अपने श्रीचरणों में मेरा अनन्त भावमय सश्रद्ध प्रणाम बृहद् शनि-महिमा ग्रंथ के रूप में स्वीकार करें।
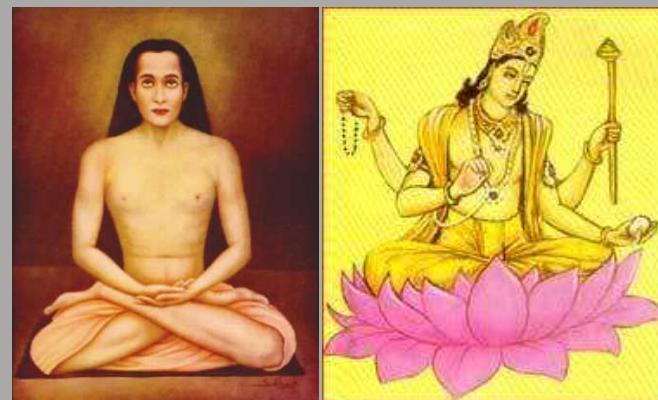
ॐ सत्यस्वरूपाय विद्महे सद्‌गुरुदेवाय धीमहि तन्नौ जीव प्रचोदयात्

ॐ शिवस्वरूपाय सद्‌गुरुदेवाय श्री महावतारीबाबा नमो नमः

समर्पण

स्व. पितामह – श्री बाल किशन त्यागी

स्व. पितामही – श्रीमती रामकली देवी

जिनकी देवतुल्य आत्माएँ आज भी मेरा मार्गदर्शन कर रही हैं।

व

पूज्य पिताश्री – श्री डॉ. राजबीर त्यागी

पूजनीया माताजी – श्रीमती जयश्री देवी

जिनसे आशीर्वाद रूप में शनि भक्ति मिली तथा जो आज भी मेरा संबल हैं। उनके चरण कमलों में इस ग्रंथ को सादर समर्पित करता हूँ।

आभार

गुरुवर एन.पी. सती (एम.ए., बी.एड.) गाँव काँगन हेड़ी, जिनका आशीर्वाद इस ग्रंथ के लेखन में मेरी ज्ञान दृष्टि का अंजन बना।

श्रीमान विजेन्द्र कुमार गोयल (रामा पब्लिकेशन्स), जिनके सतत सहयोग से इस ग्रंथ का पुनर्मुद्रण व प्रकाशन सम्भव हुआ, जिनके मार्गदर्शन व अनन्त प्रकार से की गई सहायता से मुझे शनि सान्निध्य व शनि कृपा सतत प्राप्त हो रही है। इसी से मेरा अन्तःकरण उनके उपकार व धन्यता से सदैव भरा रहेगा।

सुरूचिकर प्रकाशनार्थ, शब्द संयोजन, चित्रांकन के लिये सम्माननीय श्री अरविन्द गोयल (सपरिवार, सपरिजन) के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

जय श्री शनिदेव

इस घोर कलियुग में इस स्थूल मानव शरीर की उत्पत्ति उपरान्त अनेकों भयंकर व भारी कष्ट प्रारब्ध संचित व वर्तमान कर्मफल प्रतिकूल परिस्थितियाँ लेकर सामने उपस्थित होता है। जिसे स्वेच्छा, देवेच्छा और परेच्छापूर्वक हम सभी कर्मफल भोग की प्रवृत्ति से भोगते हैं। नियमानुसार प्रारब्ध घटित होकर ही रहता है परन्तु मनुष्य द्वारा किए या श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा कराए गए विधिपूर्वक देव अनुष्ठान से आशातीत लाभ अवश्य ही प्राप्त होता है। कलियुग में जाग्रत शनिदेव घोर व दीर्घ तप के कारण जिन्हें भगवान शंकर ने ग्रह उपाधि प्रदान की। अनुकुल व प्रतिकूल परिस्थितियों के द्वारा कर्मफल भुगताकर सभी बन्धनों से विमुक्त कर विशुद्धि प्रदान करते हैं। मैंने पाया श्री शनि भगवान से जल्द प्रसन्न होने वाला और कोई देवता नहीं है। श्रद्धानुसार तन्मय होकर उनकी कोई भी स्तुति पाठ की जाए, उसी से वे शीघ्र प्रसन्न होकर पुरुषार्थ के चारों साधन (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्रदान करते हैं। इन सभी स्तुतियों के निरन्तर पाठ से आप सबको शनि कृपा व शनि सायुज्य प्राप्त हो।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

जगत कल्याणकारी श्री शनिदेव भगवान की चरण रज का पिपासु, मैं अकिंचन 'मनु' शनि अनुकम्पा एवं आप सभी भक्तों के सहयोग से 'बृहद् शनि-महिमा ग्रंथ' का तृतीय संस्करण आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो शनि भगवान की लोक कल्याणकारी स्तुतियों, भजनों, गायत्री, मंत्रों व साधनाओं का शनि अनुकूलता एवं शनि कृपा प्राप्ति हेतु संग्रहनीय होगा।

श्री शनिदेव महाराज कलियुग में जाग्रत हैं, सभी राशियों के स्वामी हैं, राशि फल दाता हैं व ग्रह राज हैं। एकमात्र वो ही ऐसे ग्रह देव हैं जो अपनी ही नहीं, अन्य ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीड़ा को भी शांत करने वाले हैं। शनिदेव के आशीर्वाद से मैंने शनि भक्ति धारा में अविरल बहकर जो पाया है, वही मंगलमय भगवान शनि का रूप आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। जो लोग शनि साढ़ेसाती, ढैय्या या शनि की महादशा में अनेकानेक कर्म दुख भोग रहे हैं और कारण केवल शनि को मान रहे हैं, मेरा कार्य उनका वास्तविकता से परिचय कराना है। कुछ लोभी ज्योतिष करने वालों लोगों ने जन साधारण को शनि से डराकर रखा हुआ है और विभिन्न उपायों के माध्यम से उनसे धन ऐंठकर अपना घर भरते रहते हैं।

श्री शनि कल्याणकारी भगवान हैं। ये किसी से वैर रखने वाले नहीं हैं। अगर ऐसा ही होता तो वे भगवान शिव के शिष्य नहीं होते, भगवान श्रीकृष्ण के भक्त नहीं होते तथा हनुमान जी के परम मित्र नहीं होते। राहु, बुध से उनकी मित्रता जग प्रसिद्ध है।

श्री शनिदव महाराज की महिमा अनन्त है। अपनी कामना करने वाले भक्तों के लिए वे प्राण वल्लभ हैं, जैसे- दशरथ को मन इप्सित वर देकर अभीष्ट कर दिया, विक्रम को भक्ति व ससम्मान राज्य वापिस दिया। राजा नल पर कृपा की, इत्यादि।

- अगर वो भयदातार हैं – तो अभीष्टकारी भी हैं
- भयानक हैं – तो शांत स्वरूप भी हैं
- खड्गधारी हैं – तो वरदमय हस्त भी हम उनका देखते हैं
- कालरूप हैं – तो आयुवृद्धाय (आयु वृद्धि) करने वाले भी हैं
- रोद्रान्तकारी हैं – तो ग्रह पीड़ा हारी भी हैं
- वाम दृष्ट व बलीमुख हैं – तो जन्म लग्न दोष का निवारण करने वाले भी हैं
- दण्डाधिकारी हैं – तो धनदातारी भी हैं
- शत्रु मर्दन करने वाले हैं एवं भक्त सुखकारी हैं

दुष्कर्मों का फल शनिदेव हमसे साढ़ेसती, ढैय्या व अपनी महादशा-अन्तर्दशा का बहाना करके भुगताते हैं। उल्टा हमें खुश होना चाहिए, श्री शनि तो हमें तपाकर सोने से कुंदन बनाते हैं, साथ ही निष्पाप करते हैं। कभी भी एक राशि के सभी लोगों पर उनकी दशा लागू नहीं होती। जिन लोगों के संचय व वर्तमान कर्म पुण्य बढ़ाने वाले हैं, उनको शनि से हानि की बजाय फल के रूप में लाभ ही मिलता है।

वैसे भी अनेक भारतीय योगियों ने यह माना कि ग्रहों द्वारा हमेशा ऋणात्मक और धनात्मक किरणें विकीर्ण होती रहती हैं

जो हमारे जीवन पर अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। ज्योतिष के अनुसार हमारे जन्म समय, जन्म स्थान, जन्मदिन और पिछले संचय कर्मों के सार हमें शुभ और अशुभ फल के रूप में इस जीवन में प्रभावित करते हैं। इसके अलावा हम अपनी इस असमर्थता का मन के अटल विश्वास और अपने कर्मों में बदलाव कर अतिक्रमण कर सकते हैं क्योंकि यह सभी हमें जो मिलता है उसका उद्भव हमारे अपने कर्मों से ही हुआ है, इसके अतिरिक्त हमारे पास आध्यात्मिक शक्ति है जिसकी प्राप्ति कर हम सभी ग्रह नक्षत्र दोष को (देव कृपा या ईश कृपा) द्वारा सम्पूर्ण विनष्ट कर सकते हैं और मन इप्सित फल प्राप्त कर सकते हैं।

शनि भगवान बेशक दण्डाधिकारी हैं, तो भी वे किसी से वैर रखने वाले नहीं है। उनके हृदय में सबके लिए मातृतुल्य प्रेम भरा हुआ है (पितृतुल्य प्रेम इसलिए नहीं कहा गया क्योंकि पिता का प्रेम हमारे कर्म रूप देखकर बिल्कुल खत्म भी हो सकता है, परन्तु माँ का प्रेम गहन भाव-प्रवण होता है जो बेटा चोर, जुआरी, शराबी, कबाबी भी हो तो भी एकसमान रहता है, ईश्वर प्रेम जैसा)। उसी ने मायारूपी संसार में हमें डाल दिया है और वह यह भी जानता है कि हम कष्ट में हैं। उसे हमारे द्वारा रोज किए जाने वाले संघर्षों का भी आभास है, जब हम उनके शरणागत हो जाते हैं तब हमें तुरंत उनका आशीष और वरदमय हस्त अपने शीष पर प्रतीत होता है और अंततः उनकी कृपा प्रसाद के रूप में जीवन सफलता बनकर संसार के समक्ष उजागर होती है।

– शनि भक्त 'मनु'

6 फरवरी 2013, षट्तिला एकादशी

अनुक्रमणिका

गणपति वन्दना

मंगल करो, मंगल करो, मंगल करो गणपति गणराज।
द्वारे तेरे आये आज। मंगल करो, मंगल करो......
तुम ही हो प्रभु जग परमेश्वर, सोम रूप हो हे विघ्नेश्वर।
बुद्धि नाथ हे विद्यादाता, शिव हैं पिता पार्वती माता।
पूर्ण कर दो हमरे काज। मंगल करो, मंगल करो......
एक रदन गज बदन हो स्वामी, सर्वसाक्षी उर अन्तरयामी।
सिद्धिविनायक हे दुःख भंजन, कलुष ताप तम हरो करूँ वंदन।
राखो स्वामी सबकी लाज। मंगल करो, मंगल करो......
राजे मणि मुक्तन उर माला, स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला।
गण नायक गुण गान निधाना, पूजें प्रथम तुम्हें भगवाना।
मस्तक चन्द्र बना है ताज। मंगल करो, मंगल करो......
स्वर्ण सूत्र प्रभु तन पर साजे, चरण तेरे 'मनु' मन पर राजे।
ज्येष्ठ राज हे सिन्धुर वदना, ढुण्ढिराज सर्व सुख सदना।
सुन लो भक्तेश्वर महाराज। मंगल करो, मंगल करो......

श्री गणेश चालीसा

दोहा- जय जय जय गजवदन प्रभु, अद्वयमूर्ति गणेश।
ज्येष्ठ राज सिन्धुर वदन, सूंडि विराजे शेष।।
गजानना गणनायका, एक दन्त भगवन्त।
गुण गायें पूजें 'मनु', शिव गौरी और सन्त।।

जयति जयति जय गौरी लाला। गणनायक गजवदन विशाला।।
निर्विकार अव्यक्त अविनाशी। कपिलाय आनन्द सुखराशी।।
शूर्पकर्ण माया अधिकारी। सिद्धि सदन सुमुखाय औदारी।।
जय जय रिद्धि बुद्धि के स्वामी। सगुण निर्गुण ब्रह्म अन्तरयामी।।
मस्तक चन्द्र मुकुट मणि राजित। लाल कमल गल माला साजित।।
स्वर्ण सूत्र प्रभु तन पर डारे। वाहन मूषक मोदक प्यारे।।
वरद अभय की मुद्रा धारे। अति बलशाली हस्त तुम्हारे।।
परसा अंकुश भी कर साजे। शेषनाग सूंडि में विराजे।।
गण्डस्थल मकरंद सुगन्धित। शुण्ड दण्ड सुविचारा बंधित।।
शिव सुत स्वानन्द धाम निवासा। ओम रूप किया जग प्रकाशा।।
नित्य सेविका चँवर डुलावे। सरस्वती तेरे गुण गावे।।
मेवा पान सुपारी चन्दन। भोग लगावे शिव के नन्दन।।
ब्रह्मा शिव हरि के कुलदेवा। अक्षय रूप धर की जन सेवा।।
भये सबके प्रभु आदि कारण। जन्म लियो सब कष्ट निवारण।।
जन्म दियो जब मात शिवानी। देखन आये सुर मुनि ज्ञानी।।
धन्य हुए सब दर्शन पाकर। बैठ गए शनिदेव भी आकर।।
दरश करो शनि बोली गौरी। बात सुनो मैया जी भोरी।।
मिला श्राप मुझको अति भारी। शिरश्च्छेद करें नजर महतारी।।

जब देखन आये तो देखो। मिटे शनि ना भाग्य का लेखो।।
राखा शनि ने धर्म प्रमाणा। क्षिति नभ मण्डल साक्षी जाना।।
देखा शनि फिर सुत गौरीशा। नभ उडि गयो लम्बोदर शीशा।।
हुआ पार्वती को अतिशय दुख। श्री हरि काटि लगाया गजमुख।।
नभ से भई पुष्प की वर्षा। उर उमा के आनन्द हर्षा।।
नाम गणेश भया तुम्हारा। जो सुमरेगा उतरे पारा।।
आदि तब से पूजें विनायक। विघ्न विनाशक बुद्धि दायक।।
लेइ परीक्षा गिरिजा कुमारी। परिक्रमा करो धरा सारी।।
चले षडानन लीक पुरानी। मन्द गजानन पर बहु ज्ञानी।।
मात-पिता प्रदक्षिन्ह कीन्हें। उत्पादक के मन हर लीन्हें।।
चक्कर काटि स्कन्द भी आये। रंग जीत के मुख पर छाये।।
मन्दराचल पर गणपति पाए। शिव कल्याणी मन हर्षाये।।
वक्रतुण्ड धुम्र विकट महोदर। गजानन एक दन्त लम्बोदर।।
ले अवतार किए सिद्ध काजा। हरे विघ्न बनकर विघ्न राजा।।
मत्सरासुर मदासुर हन्ता। मोह लोभसुर नाश करन्ता।।
क्रोधासुर कामासुर मारे। मया अहंतासुर संहारे।।
करबद्ध व्यास अनुनय कीन्हीं। दन्त तोड़ गीता लिख दीन्हीं।।
माघ मास कृष्ण पक्षचतुर्थी। जन्म मनावें मंगल मूर्ति।।
करें सभी जन उत्सव पूजा। बप्पा मोरया सम न दूजा।।
पढ़े चालीसा मंगल कारी। टाले गणपति विपदा भारी।।
चालिस दिन नित पढ़े पढ़ावे। अन्न, धन, पुत्र, बुद्धि वो पावे।।
हिय सदा अंकुरित होवे रति। रहवे ध्यान में लीन 'मनु' मति।।

दोहा- मन से गणपति पूजिये, कर चालीसा पाठ।
मनसा 'मनु' एक काम की, पूरण होंगे साठ।।

गणपति पाश

दोहा– प्रथम गणपति पूजिये, रख मन में विश्वास।
तीन ताप का हो शमन, फैंक गणपति पाश।।

जय जय गणपति गौरी लाला। रूप चतुर्भुज परम विशाला।।
हुए अनोखे जन्म से बालक। भक्त रक्षक दानव कुलघालक।।
शरण तेरी जो हे भयहारी। करो दूर भव बाधा सारी।।
नामा केवट नाम उच्चारा। भ्रुशुण्डी बन उतरा पारा।।
वरेण्य को विस्तार बताया। पार तेरा ना कोई पाया।।
श्री हरि दोर्भिकरण कियो जब। चक्र सुदर्शन आप दियो तब।।
नृप त्रिपुर भारी तप कीन्हा। तीनों लोक विजय वर दीन्हा।।
परशुराम शुण्ड में लिपटाया। सभी लोक दर्शन करवाया।।
टूटा परशुराम घमंडा। छूटा परसा और कौदंडा।।
चढ़ मूषक प्रभु जल्दी आओ। करो रक्ष अब बिलंब ना लाओ।।

नष्ट करो सब शोक क्लापा। होवे दूर पाप और शापा।।
ॐ गं गं गं गणपति गणराजा। करो सिद्ध प्रभु मेरे काजा।।
ॐ ग्लं लं लं लम्बोदर स्वामी। सर्वसाक्षी उर अन्तरयामी।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गों गजानन। बोध विधायक विघ्नविदारण।।
माँ उमा की तुम्हें सौगंधा। फंसे पाश जो कर दो अंधा।।
चार भुजाएँ अतुल बलकारी। त्रिनेत्र जग पालनहारी।।
विघ्न हरो विघ्नेश्वर गणपति। बुद्धि दाता रिद्धि सिद्धि पति।।
ज्योतिर्मयी प्रणव ओमकारा। आदि मध्य न अन्त तुम्हारा।।
नित्य जाप गणपति पाश का। हो कारण 'मनु' विघ्न नाश का।।
मन विघ्न से होवे शंकित। करो गणेश हृदय में अंकित।।
एक शत पाठ करे जो कोई। अपा मृत्यु से मुक्ति होई।।

दोहा– पूजन कर गणनाथ का, पढ़े गणपति पाश।
शरण मिले गजराज की, 'मनु' पूरण हो आश।।

गणपति ध्यान

ओंकारसंनिभमिभाननमिन्दुभालं
मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तम्।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवं
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम्।।

ओंकार–सदृश, हाथी के से मुख वाले तथा जिनके ललाट पर चन्द्रमा और बिन्दुतुल्य मुक्ता विराजमान है, जो बड़े तेजस्वी और एक दाँत वाले हैं, जिनका उदर लम्बा है, जिनकी चार सुन्दर भुजाएँ हैं, उन बुद्धि और सिद्धि के स्वामी आदिदेव गणेश जी का हम ध्यान करते हैं।

आरती गणेश जी की

गौरी नन्दन हे गणराज – दर्शन दो।

दर्शन दो प्रभु हमको आज – दर्शन दो।

हे गणनाथ भगत प्रतिपाला, गल सोहे तेरे मुतियन माला।।
मस्तक चन्द्र बना है ताज। दर्शन दो प्रभु हमको आज.....
रिद्धि बुद्धि चरणों की दासी, अकथ रूप तेरा अविनाशी।।
शिव हृदय पे तेरा राज। दर्शन दो प्रभु हमको आज.....
पान पुष्प सिंदूर चढ़ाऊँ, मोदक गणपति तुम्हें खिलाऊँ।।
पूर्ण कर दो मेरे काज। दर्शन दो प्रभु हमको आज.....
श्रद्धा से तेरी जोत जगाई, मन वीणा पे अस्तुति गाई।।
हुआ 'मनु' मन पूर्ण साज। दर्शन दो प्रभु हमको आज.....

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा। जय गणेश....
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी,
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी। जय गणेश....
अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया,
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया। जय गणेश....
हार चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़े मेवा,
लड्डुअन को भोग लगे, सन्त करें सेवा। जय गणेश....
दीनन की लाज राखो, शम्भु पुत्र वारी,
मनोरथ को पूरा करो, जायें बलिहारी। जय गणेश....

गुरु-स्तोत्रम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।१।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।२।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।३।।
स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत्किञ्चित् सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।४।।
चिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।५।।
सर्वश्रुतिशिरोरत्न विराजितपदाम्बुजः।
वेदान्ताम्बुजसूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः।।६।।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनः।
बिन्दुनादकलातीतः तस्मै श्री गुरवे नमः।।७।।
ज्ञानशक्ति-समारूढः तत्त्व-माला विभूषितः।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः।।८।।
अनेक जन्मसम्प्राप्त कर्मबन्धविदाहिने।
आत्मज्ञान प्रदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः।।९।।
शोषणं भव-सिन्धोश्च ज्ञापनं सार-संपदः।
गुरोर्पादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः।।१०।।
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्त्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।।११।।

मन्नाथः श्री जगन्नाथः मद्गुरुः श्री जगद्गुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः॥१२॥
गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम-दैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः॥१३॥
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्त्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा॥१४॥

गुर्वष्टकम् (श्रीशंकराचार्यकृतम्)

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥१॥
कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥२॥
षडंगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या, कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥३॥
विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः, सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥४॥
क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥५॥
यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्-जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥६॥
न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ, न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥७॥
अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये, न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥८॥

सरस्वती वन्दना

**या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥
वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्॥**

जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हार के समान श्वेत हैं, जो शुभ्र कपड़े पहनती हैं, जिनके हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित हैं, जो श्वेत कमलासन पर बैठती हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें। हे वीणा धारण करने वाली, अपार मंगल देने वाली, भक्तों के दुःख छुड़ाने वाली, ब्रह्मा-विष्णु और शिव से वन्दित होने वाली, कीर्ति तथा मनोरथ देने वाली, पूज्यवरा और विद्या देने वाली सरस्वति! तुमको नित्य प्रणाम करता हूँ।

**चन्द्रवदन शोभा अति ज्ञानमुद्राधारिणी।
वाग्देवी ब्रह्मजाया शारदाहितकारिणी॥
करवीणा तनु शुभ्र वसन मुक्तिज्ञानप्रदायिनी।
हे माँ तू हंसवाहिनी दो भक्ति अनपायिनी॥**

श्रीदुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुख हरनी।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूँ लोक फैली उजियारी।
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकराला।
रूप मातु को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावे।
तुम संसार शक्ति लय कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला, तुम्हीं आदि सुन्दरी बाला।
प्रलय काल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हारे गुण गावें, ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें।
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा, प्रगट भई फाड़ कर खम्बा।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरो जग माही, श्री नारायण अंग समाही।
क्षीरसिन्धु में करत विलासा, दया सिन्धु दीजे मन आसा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जान बखानी।
मातङ्गी धूमावती माता, भुवनेश्वरी बगला सुखदाता।
श्री भैरव तारा जग तारिणि, छिन्न भाल भव दुख निवारिणि।

केहरी वाहन सोहे भवानी, लांगुर बीर चलत अगवानी।
कर में खप्पर खड्ग बिराजे, जाको देख काल डर भाजे।
सोहै अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला।
नगरकोट में तुम्हीं विराजत, तिहूँ लोक में डंका बाजत।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्त बीज शंखन संहारे।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघ भार महि अकुलानी।
रूप कराल कालि को धारा, सेन सहित तुम तिहि संहारा।
परी भीर संतन पर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब तब।
अमर पुरी अरु बासव लोका, तव महिमा सब रहे अशोका।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजें नर नारी।
प्रेम भक्ति से जो जश गावें, दुःख दारिद्र निकट नहिं आवे।
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई, जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई।
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी।
शंकर आचरज तप कीन्हों, काम क्रोध जीति सब लीनो।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।
शक्ति रूप का मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछतायो।
शरणागत् हुई कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्ब भवानी।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहीं कीन विलम्बा।
मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।
आशा तृष्णा निपट सतावैं, रिपु मूरख मोहि अति डर पावैं।
शत्रु नाश कीजे महारानी, सुमिरों इकचित्त तुम्हें भवानी।
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला।
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ, तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावै, सब सुख भोग परम पद पावै।
देवीदास को शरण निज जानी, करहुँ कृपा जगदम्बे भवानी।

महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजित।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥१॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥२॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥३॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥४॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥५॥
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥९॥
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥११॥

इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्।

शिव चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्या दास तुम, देउ अभय वरदान।।

जय गिरिजापति दीनदयाला, सदा करत सन्तन प्रतिपाला।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुण्डल नाग फनी के।
अंग और शिर गंग वहाये, मुण्डमाल तन क्षार लगाये।
वस्त्र खाल वाघम्बर मोहे, छवि को देखि नाथ मन मोहे।
मैना भातु कि हवे दुलारी, वाम अंग सोहत छवि न्यारी।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी, करत सदा शत्रुन क्षयकारी।
नंदि गणेश सोहैं तहं कैसे, सागर मध्य कमल हैं जैसे।
कार्तिक श्याम और गणराऊ, या छवि को कहि जान न काऊ।
देवन जबहीं जाय पुकारा, तबहि दुःख प्रभु आप निवारा।
किया उपद्रव तारक भारी, देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।
तुरत षडानन आप पठायउ, लव निमेष महं मारि गिरायउ।
आप जलंधर असुर संहारा, सुयश तुम्हार विदित संसारा।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई, तवहिं कृपा कर लीन बचाई।
किया तपहिं भागीरथ भारी, पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी।
दानिन महं तुम सम कोऊ नाहीं, सेवक स्तुति करत सदाहीं।
वेद नाम महिमा तुम गाई, अकथ अनादि भेद नहीं पाई।
प्रगटे उदधि मथन में ज्वाला, जरत सुरासुर भए विहाला।
कीन्ह दया तहं करी सहाई, नीलकंठ तब नाम कहाई।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा, जीत के लंक विभीषण दीन्हा।
सहस कमल में हो रहे धारी, कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई, कमल नैन पूजन चहुं सोई।

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर, भये प्रसन्न दिये इच्छित वर।
जय जय जय अनन्त अविनाशी, करत कृपा सबके घट वासी।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावे, भ्रमत रही मोहि चैन न आवे।
त्राहि-त्राहि में नाथ पुकारों, यह अवसर मोह आन उबारों।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो, संकट ते मोहि आन उबारो।
माता-पिता भ्राता सब कोई, संकट में पूछत नहीं कोई।
स्वामी एक है आस तुम्हारी, आय हरहु मम संकट भारी।
धन निर्धन को देत सदा ही, जो कोई जांचे सो फल पाही।
अस्तुति केहि विधि करूँ तुम्हारी, क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।
शंकर हो संकट के नाशन, विघ्न विनाश मंगल कारन।
योगी यती मुनि ध्यान लगावे, शारद नारद शीश नवावे।
नमो नमो जै नमः शिवाय, सुर ब्रह्मादिक पार न पाये।
जो यह पाठ करे मन लाई, तापर होत है शम्भु सहाई।
रिनीया जो कोई हो अधिकारी, पाठ करे सो पावन हारी।
पुत्र होन की इच्छा जोई, निश्चय शिव प्रसाद से होई।
पंडित त्रयोदसी को लावे, ध्यान पूर्वक होम करावे।
त्रयोदसी व्रत करे हमेशा, तन नहीं ताके रहे कलेशा।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे, मनक्रम वचन से ध्यान लगावे।
जन्म-जन्म के पाप नसावे, अन्तवास शिवपुर में पाये।
कहै अयोध्यादास आस तुम्हारी, जान सकल दुःख हरहु हमारी।

दोहा— नित नेम उठि प्रात ही, पाठ करो चालीस।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करो जगदीश।।
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, ब्रजमोहन वखाण।
स्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण।।

अमोघ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै **न** काराय नमः शिवाय।१।
मन्दाकिनी सलिलचन्दन चर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै **म** काराय नमः शिवाय।२।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै **शि** काराय नमः शिवाय।३।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य - मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै **व** काराय नमः शिवाय।४।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै **य** काराय नमः शिवाय।५।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

हनुमान स्मरण

सदसि वसन्तं सुमृदु हसन्तं, कपिषु लसन्तं धुरिसन्तम्॥
जितहरिदन्तं कृतविपदन्तं, युधि निनदन्तं श्रितसन्तम्॥
सदनुभवन्तं सततमवन्तं, प्रभुवर वन्तं प्रभवन्तम्॥
स्वहृदि रमन्तं सुरतनुमन्तं, स्मर परमं तं हनुमन्तम्॥

तुलसीदासकृत

जाके गति है हनुमान की।
ताकी पैज पूजि आई, यह रेखा कुलिस पषान की॥१॥
अघटित-घटन, सुघट-बिघटन, ऐसी बिरुदावलि नहिं आनकी।
सुमिरत संकट-सोच-बिमोचन, मूरति मोद-निधान की॥२॥
तापर सानुकूल, गिरिजा, हर, लषन, राम अरु जानकी।
तुलसी कपि की कृपा-बिलोकनि, खानि सकल कल्यान की॥३॥

हियँ हनुमानहि आनु

सकल काज सुभ समउ भल सगुन सुमंगल जानु।
कीरति बिजय बिभूति भलि हियँ हनुमानहि आनु॥

श्रीहनुमान जी का हृदय में ध्यान करो और यह निश्चय समझ लो कि तुम्हारे सभी कार्य शुभ होंगे, दिन अच्छे आयेंगे तथा सभी सद्गुण, कीर्ति, विजय और विमल विभूति की प्राप्ति होगी।

श्रीहनुमत्-स्तवन

सो०— प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम्॥

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लंका
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

श्रीहनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। रामकाज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपे। तीनों लोक हाँक ते काँपे।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवे। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काजसकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावे। सोई अमित जीवन फल पावे।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गौसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसी दास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दो०—पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।१।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।२।
अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया-सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।३।
रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।४।
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।
आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।५।
रावन युद्ध अजान कियो तब, नाग कि फांस सबै सिर डारो।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेश तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।६।
बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।७।
काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।८।

दोहा—लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ।।

स्वप्न के भय दूर करने का मंत्र

राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा।।
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बरबानी।।
सेवक सुमिरत नामु सुप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोहदलु जीति।।
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें।।

सर्वप्रथम 51 दिन नित्य 108 बार इस मंत्र के पाठ करें। इसके बाद रात्रि को सोते समय इस मंत्र के तीन और प्रात: जागते समय 5 पाठ नित्य किया करें। इस मंत्र के द्वारा भगवान राम का गुणगान भी होता है और स्वप्न के भय भी समाप्त हो जाते हैं।

बजरंग-बाण

विनियोग— ॐ अस्य श्री बजरंग बाण स्तोत्र मन्त्रस्य राम ऋषि श्री तुलसीदासकृत चौपाई छन्द, हनुमत देवता, हनु हीं हुं हं सं चं बीजं, मम भक्ति शक्ति नियंत्रिता, श्री बजरंग देवता प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

ऋष्यादिन्यास— ॐ राम ऋषये नमः, ॐ चौपाई छन्दसे नमः, ॐ मुख हनुमत देवतायै नमः हृदि, ॐ हनु बीजाय नमः गुह्ये, ॐ आप शक्तये नमः पादयो।

करन्यास— ॐ हनु अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हुं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ चम करतलपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास— ॐ हनु हृदयाय नमः। ॐ हीं शिरसे स्वाहा। ॐ हुं शिखाये वषट। ॐ हं कवचाय हुं। ॐ सं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ चं अस्त्राय फट्।

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान ।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान ।।

जय हनुमंत संत-हितकारी।सुनि लीजै प्रभु विनय हमारी।।
जन के काज बिलंब न कीजै।आतुर दौरि महा सुख दीजै।।
जैसे कूदि सिंधु के पारा।सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।।
आगे जाय लंकिनी रोका।मारेहु लात गई सुर लोका।।
जाय बिभीषन को सुख दीन्हा।सीता निरखि परम-पद लीन्हा।।
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा।अति आतुर जमकातर तोरा।।
अक्षयकुमार मारि संहारा।लूम लपेटि लंक को जारा।।
लाह समान लंक जरि गई।जय-जय ध्वनि सुरपुर नभ भई।।
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी।कृपा करहु उर अंतरजामी।।

जय जय लखन प्राण के दाता।आतुर ह्वै दुख करहु निपाता।।
जय हनुमान जयति बल-सागर।सुर-समूह-समरथ भट-नागर ।।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।बैरिहि मारु बज्र की कीलै।।
ॐ हीं हीं हीं हनुमंत कपीसा।ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा।।
जय अंजनिकुमार बलवंता।संकर सुवन बीर हनुमंता।।
बदन कराल काल-कुलघालक।राम सहाय सदा प्रतिपालक।।
भूत, प्रेत पिशाच, निसाचर।अगनि बेताल काल मारी मर।।
इन्हें मारु, तोहि सपथ रामकी।राखु नाथ मरजाद नाम की।।
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै।रामदूत धरु मारु धाइ कै।।
जय जय जय हनुमंत अगाधा।दुख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा।नहि जानत कछु दास तुम्हारा।।
बन उपबन मग गिरि गृह माहीं।तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं।।
जनकसुता-हरि-दास कहावौ।ताकी शपथ, बिलंब न लावौ।।
जय-जय-जयधुनि होत अकासा।सुमिरत होय दुसह दुख नासा।।
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं।यहि औसर अब केहि गौहरावौं।।
उठ,उठ,चलु,तोहि राम-दोहाई।पायँ परौं, कर जोरि मनाई।।
ॐ चम चम चम चम चपल चलंता।ॐ हनु हनु हनु हनु हनु-हनुमंता।।
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल।ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल।।
अपने जन को तुरत उबारौ।सुमिरत होय अनंद हमारौ।।
यह बजरंग-बाण जेहि मारै।ताहि कहौ फिरि प्रान उबारै।।
पाठ करै बजरंग-बाण की।हनुमत रक्षा करैं प्रान की।।
यह बजरंग-बाण जो जापैं।तासों भूत-प्रेत सब काँपैं।।
धूप देय जो जपै हमेसा।ताके तन नहिं रहै कलेसा।।

दोहा—उर प्रतीति दृढ़, सरन होय, पाठ करै धरि ध्यान ।
बाधा सब हर, करै सब, काम सफल हनुमान ।।

श्री हनुमान साठिका

दोहा – बीर बखानौं पवनसुत, जानत सकल जहान।
धन्य धन्य अंजनि-तनय, संकट हर हनुमान।।

जय जय जय हनुमान अखंडी, जय जय महाबीर बजरंगी।
जय कपीस जय पवन-कुमारा, जय जग-बन्धन सील-अगारा।
जय उद्योग अमर अविकारी, अरि-मरदन जय जय गिरधारी।
अंजनि-उदर जन्म तुम लीना, जय-जयकार देवतन कीना।
बाजे दुंदुभि गगन गंभीरा, सुर-मन हरष, असुर-मन पीरा।
कपि के डर, गढ़ लंक सकाने, छूटे बंदी देव, सब जाने।
रिषय-समूह निकट चलि आये, पवन-तनय के पद सिर नाये।
बार-बार अस्तुति करि नाना, निरमल नाम धरा हनुमाना।
सकल रिषय मिलि अस मत ठाना, दीन बताय लाल फल खाना।
सुनत बचन कपि अति हरषाने, रबि-रथ गहे लाल फल जाने।
रथ-समेत रबि कीन अहारा, सोर भयउ तहँ अति भयकारा।
बिनु तमारि सुर-मुनि अकुलाने, तब कपीस-कै अस्तुति ठाने।
सकल लोक वृतांत सुनावा, चतुरानन तब रबि ढंगिलावा।
कहा बहोरि, सुनहु बल-सीला, रामचन्द्र करिहैं बहु लीला।
तब तुम तिनकर करब सहाई, अबहिं रहहु कानन-महं जाई।
अस कहिबिधि निज लोक सिधारा, मिले सखासंग पवनकुमारा।
खेलहिं खेल महातरु तोरी, गली करत परबत-में फोरी।
जेहि गिरि चरन देत कपिराई, बल सो चमकि रसातल जाई।
कपि सुग्रीव बालि-की त्रासा, निरभउ रहेउ राम मग-आसा।
मिले राम लै पवन-कुमारा, अति आनन्द समीर-दुलारा।
मनि मुंदरी रघुपति-सौं पाई, सीता खोज चले कपिराई।
सत योजन जननिधि बिस्तारा, अगम अपार देव-मुनि हारा।

बिन श्रम गोखुर सरिस कपीसा, लांघि गयी कपि कहि जगदीसा।
सीता चरन सीस तिन नायौ, अजर अमर की आशिष पायो।
अजर अमर गुन निधि सुत होहू। करहूँ बहुत रघुनायक छोहू।
रहे दनुज उपवन-रखवारी, एक-तें एक महा भट-भारी।
तिन्हें मारि, उपवन, करि खीसा, दह्यो लंक कांप्यौ दससीसा।
सिया बोध दे पुनि फिरि आयो, रामचन्द्र-के पद सिर नायो।
मेरु बिसाल आनि पल मांही, बांध्यौ सिंधु निमिष इक मांही।
भये फन्नीस सक्ति-बस जबहीं, राम बिलाप कीन बहु तबहीं।
भवन समेत सुखेनहिं लाये, भूरि सजीवनि कहं तब धाये।
मग-महं कालनेमि कहं मारा, अमित सुभट निसिचर संहारा।
आनि सजीवन सैल-समेता, धर दीन्ह्यौ जहं कृपानिकेता।
फनपति केर सोक हरि लीन्हो, बरषि सुमन, सुर जय जय कीन्हो।
अहिरावन हरि अनुज-समेता, लै गो जहाँ पाताल-निकेता।
तहाँ रहै देवी अस्थाना, दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना।
पवन-तनय तहँ कीन्ह गोहारी, कटक-समेत निसाचर मारी।
रिच्छ कीसपति जहाँ बहारी, राम-लखन कीन्हेउ यक ठौरी।
सब देवन-कै बंदि छोड़ाई, सोई कीरति नारद मुनि गाई।
अच्छ कुमार दनुज बलवाना, स्वामी केतु कहँ सब जग जाना।
कुम्भकर्ण रावन-कै भाई, ताहि निपात कीन्ह कपिराई।
मेघनाथ संग्रामहिं मारा, पवन-तनय सम को बरियारा।
मुरहा तनय नरांतक नामा, पल-महँ ताहि हता हनुमाना।
जहँ लगि नाम दनुज कर पावा, संभु-तनय तहँ मारि खसावा।
जय मारुत-सुत जन अनुकूला, नाम कृसान सोक सम तूला।
जेहि जीवन-कहँ संकट होई, रवि-समान तम-संकट खोई।
बंदि परे सुमिरै हनुमाना, गदा-चक्र लै चलु बलवाना।
जम-कहँ मारि बाम दिसि दीन्हा, मृत्युहिं बांधि हाल बहु कीन्हा।

सो भुजबल का कीन कृपाला, अछत तुम्हार मोरि यह हाला।
आरति-हरन नाम हनुमाना, सारद-सुरपति कीन्ह बखाना।
रहै न संकट एक रती-को, ध्यान धरैं हनुमान जती को।
धावहु देखि दीनता मोरी, मेटहु बंदि, कहहुँ कर जोरी।
कपिपति बेगि अनुग्रह करहु, आतुर आइ दास-दुख हरहू।
राम-सपथ मैं तुमहिं धरावा, जो न गुहार लागि सिव-जावा।
बिरद तुम्हारि सकल जग जाना, भव-भय-भंजन तुम हनुमाना।
यहि बंधन-करि के तिक बाता, नाम तुम्हार जगत-सुख-दाता।
करहु कृपा जय जय जग-स्वामी, बार अनेक नमामि नमामी।
भौम बार करि होम बिधाना, धूप-दीप-नैवेद्य सजाना।
मंगल-दायक की लौ लावै, सुर नर मुनि तुरतहिं फल पावै।
जयति जयति जय जय जग स्वामी, समरथ सब जग अन्तरजामी।
अंजनि-तनय नाम हनुमाना, सो तुलसी-कहँ कृपानिधाना।

दोहा – जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अंगद जय हनुमान।
राम-लखन-सीता-सहित, सदा करो कल्यान॥
बन्दी हनुमत नाम यह, भौमवार परमान।
ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्याण॥
जो यह साठिका पढ़िइ नित, तुलसी कहैं बिचारि।
पड़ै न संकट ताहि-कौ, साखी है त्रिपुरारि॥

हनुमत गान

संकटमोचन नाम भयो जग, काके न संकट दूर किये हैं
शेष कपीश सुरेशहुँ आदि, सहाय भये तब जाइ जिये हैं
रामहुँ रावण जीतिबे को दल, साजि जिन्हें निज संग लिये हैं
विष्णु भये तिनके शरणागत, जाके बसे सियराम हिये हैं।

श्रीहनुमत्-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ध्यान

वन्दे विद्युज्ज्वलनविलसद्ब्रह्मसूत्रैकनिष्ठं
कर्णद्वन्द्वे कनकरचिते कुण्डले धारयन्तम्।
सत्कौपीनं कपिचरवृतं कामरूपं कपीन्द्रं
पुत्रं वायोरिनसुतसुखदं वज्रदेहं वरेण्यम्॥

अर्थ– विद्युत कान्ति के सदृश वर्ण वाले, ज्ञानमार्ग में एकनिष्ठ, कर्णयुगल में सुवर्णनिर्मित कुण्डल धारण करने वाले, सुन्दर कौपीन धारण करने वाले, कपियों से सदा घिरे रहने वाले, इच्छानुसार रूप धारण करने वाले, वानरों के स्वामी, सुग्रीव को सुख देने वाले, वज्र के समान देह वाले सर्वपूज्य वायुपुत्र की मैं वन्दना करता हूँ।

1. ॐ आञ्जनेयाय नमः, 2. ॐ महावीराय नमः, 3. ॐ हनूमते नमः, 4. ॐ मारुतात्मजाय नमः, 5. ॐ तत्त्वज्ञानप्रदायकाय नमः, 6. ॐ सीतामुद्राप्रदायकाय नमः, 7. ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः, 8. ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः, 9. ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः, 10. ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः, 11. ॐ परविद्यापरिहाराय नमः, 12. ॐ परशौर्यविनाशनाय नमः, 13. ॐ परमन्त्रनिराकर्त्रे नमः, 14. ॐ परयन्त्रप्रभेदकाय नमः, 15. ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः, 16. ॐ भीमसेनसहायकृते नमः, 17. ॐ सर्वदुःखहराय नमः, 18. ॐ सर्वलोकचारिणे नमः, 19. ॐ मनोजवाय नमः, 20. ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः, 21. ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः, 22. ॐ सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः, 23. ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः, 24. ॐ

कपीश्वराय नमः, 25. ॐ महाकायाय नमः, 26. ॐ सर्वरोगहराय नमः, 27. ॐ प्रभवे नमः, 28. ॐ बलसिद्धिकराय नमः, 29. ॐ सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः, 30. ॐ कपिसेनानायकाय नमः, 31. ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः, 32. ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः, 33. ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः, 34. ॐ सञ्चलद्बाल-सन्नद्धलम्बमानशिखोज्ज्वलाय नमः, 35. ॐ गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः, 36. ॐ महाबलपराक्रमाय नमः, 37. ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः, 38. ॐ शृंङ्खलाबन्धमोचकाय नमः, 39. ॐ सागरोत्तारकाय नमः, 40. ॐ प्राज्ञाय नमः, 41. ॐ रामदूताय नमः, 42. ॐ प्रतापवते नमः, 43. ॐ वानराय नमः, 44. ॐ केसरिसुताय नमः, 45. ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः, 46. ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः, 47. ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः, 48. ॐ विभीषणप्रियकराय नमः, 49. ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः, 50. ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः, 51. ॐ वज्रकायाय नमः, 52. ॐ महाद्युतये नमः, 53. ॐ चिरजीविने नमः, 54. ॐ रामभक्ताय नमः, 55. ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः, 56. ॐ अक्षहन्त्रे नमः, 57. ॐ काञ्चनाभाय नमः, 58. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः, 59. ॐ महातपसे नमः, 60. ॐ लङ्क्निीभञ्जनाय नमः, 61. ॐ श्रीमते नमः, 62. ॐ सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः, 63. ॐ गन्धमादनशैलस्थाय नमः, 64. ॐ लंकापुरविदाहकाय नमः, 65. ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः, 66. ॐ धीराय नमः, 67. ॐ शूराय नमः, 68. ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः, 69. ॐ सुरार्चिताय

नमः, 70. ॐ महातेजसे नमः, 71. ॐ रामचूडामणिप्रदाय नमः, 72. ॐ कामरूपिणे नमः, 73. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः, 74. ॐ वार्धिमैनाकपूजिताय नमः, 75. ॐ कवलीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः, 76. ॐ विजितेन्द्रियाय नमः, 77. ॐ रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः, 78. महारावणमर्दनाय नमः, 79. ॐ स्फटिकाभाय नमः, 80. ॐ वागधीशाय नमः, 81. ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः, 82. ॐ चतुर्बाहवे नमः, 83. दीनबन्धवे नमः, 84. ॐ महात्मने नमः, 85. ॐ भक्तवत्सलाय नमः, 86. ॐ सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः, 87. ॐ शुचये नमः, 88. ॐ वाग्मिने नमः, 89. ॐ दृढव्रताय नमः, 90. कालनेमिप्रमथनाय नमः, 91. ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः, 92. ॐ दान्ताय नमः, 93. ॐ शान्ताय नमः, 94. ॐ प्रसन्नतात्मने नमः, 95. ॐ शतकण्ठमदापहृते नमः, 96. ॐ योगिने नमः, 97. ॐ रामकथालोलाय नमः, 98. ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः, 99. ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः, 100. ॐ वज्रनखाय नमः, 101. ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः, 102. ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः, 103. ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः, 104. ॐ शरपञ्जरभेदकाय नमः, 105. ॐ दशबाहवे नमः, 106. ॐ लोकपूज्याय नमः, 107. ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः, 108. ॐ सीतासमेतश्रीराम-पादसेवाधुरन्धराय नमः।

।। इति श्रीहनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ।।

देवदर्शन या साधुदर्शन के लिए जाते समय खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। कम से कम कुछ फल या मिठाई अवश्य लेकर जाना चाहिए।

जय श्री बजरंगबली

1. ॐ हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुं फट् (स्वाहा)

2. ॐ हं पवननन्दनाय स्वाहा

न्यास– राम ऋषि, जगती छन्द, हनुमान देवता, हं बीजं हुं शक्ति (हां, हीं, हूं, हैं, हौं, हः) के द्वारा षडंगन्यास करें।

ध्यान

महाशैलं समुत्पाटय धावन्तं रावणं प्रति।
लाक्षारसारूणं रौद्रं कालान्तकयमोपमम्।
ज्वलदग्निसमं जैत्रं सूर्य कोटि समप्रभम्।
अङ्गदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रूद्ररूपिणम्।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट सृजन्तं घोरनिःस्वनम।
शैवरूपिणमभ्यर्च्य ध्यात्वा लक्षं जपेन्मनुम्।।

तदनन्तर दूध दही घी मिलायें, चावल से दशांस होम करें।

पहली रात में एक लाख मंत्र जप करें, दूसरे दिन जप करें, ध्यान करें दिन–रात जप में लगे रहें। होम करें। तब तक जप करें, जब तक दर्शन न हों। हनुमान जी साधक को इच्छानुसार वर देते हैं, वर पाकर साधक मौज में इधर उधर विचरता है।

दूसरे मंत्र का ध्यान– 'ॐ हं पवननन्दनाय स्वाहा'

ध्यायेद्रणे हनुमन्तं सूर्यकोटिसमप्रभम्।
धावर्न्तुं रावणं जेतुं दृष्टवा सत्वरमुत्थितम्।
लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले।
गुरूं च क्रोधमुत्पाद्य ग्रहीतुं गुरुपर्वतम्।

हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तं जगत्रयम्।
आब्रह्माण्डं समाव्याप्य कृत्वा भीमं कलेवरम्।।

तत्पश्चात् एक लाख जप, फिर हवन करें।

प्रतिदिन दस हजार जप करें, सातवें दिन विशेष रूप से पूजन करें। दिन–रात जप करें, रात के तीन बजे के बाद चौथे पहर में महान भय दिखाकर हनुमान आयेंगे। (साधक विद्या, धन, राज्य तत्काल प्राप्त करता है।)

पच्चीस अक्षर मंत्र (प्रेत बाधा निवारण के लिए)

ॐ श्रीं महाअञ्जनाय पवनपुत्राय वेशयावेशय ॐ श्री हनुमते फट् ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द, हनुमान देवता, श्रीं बीजम् फट शक्ति छ दीर्घस्वरों से युक्त बीज द्वारा न्यास करें।

ध्यान

आञ्जनेयं पाटलास्यं स्वर्णाद्रिसमविग्रहम्।
पारिजातद्रुमूलस्थं चिन्तयेत साधकोतमः।।

जिनका मुख लाल और शरीर सुवर्णगिरि के सदृश कान्तिमान हैं जो पारिजात (कल्पवृक्ष) के नीचे मूल भाग में बैठे हुए हैं, उन पवन पुत्र का श्रेष्ठ साधक चिन्तन करें।

ध्यान कर एक लाख जप करें। मधु, घी, शक्कर, तिल से होम करें।

प्रेतबाधा–

ॐ दक्षिणमुखाय पञ्चमुखहनुमते करालबदनाय नारसिंहाय ॐ छां, छीं, छूं, छौं, छः सकलभूत प्रेत मदनाय स्वाहा। अष्टगंध से हवन। दस हजार जप करें।

श्री हनुमत् द्वादशाक्षर मंत्र विधान

विनियोग

ॐ अस्य श्री हनुमत द्वादशाक्षर मंत्रस्य शिव ऋषिः अतिजगती छन्दः रुद्रात्मक हनुमान देवता, हं बीजं हुं शक्तिः, फट् कीलकं श्री हनुमत् वरप्रसाद सिद्धयर्थे (अभीष्ट कामना उल्लेख करें) **जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास

शिव ऋषये नमः (शिरसे)। अतिजगती छन्दसे नमः (मुखे)। रूद्रात्मक हनुमत देवताये नमः (हृदि)। हं बीजाय नमः (गुह्ये)। हुं शक्तये नमः (पादयो)। फट् कीलकाय नमः (नाभौ)। श्री हनुमत् वर प्रसाद सिद्धयर्थे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

हां अंगुष्ठाभ्यां नमः। हीं तर्जनीभ्यां नमः। हुं मध्यमाभ्यां नमः। हैं अनामिकाभ्यां नमः। हौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। हः करतल पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

हां हृदयाय नमः। हीं शिरसे स्वाहा। हुं शिखायै वषट्। हैं कवचाय हुम्। हौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हः आत्राय फट्।

ॐ दहन्तं पुच्छपान्तं हुतवहमनन्तं परिवहम्
सलकं सातकं ललनामपि लांकन्यापीतयः।
महान्तं धीमन्तं विपुल बलवन्तं प्रतिपलं हनुमन्तं,
सन्तं स्वहृदि निवसन्तं परिभज॥

मानसोपचार पूजन

ॐ लं पृथ्वी तत्वात्मकम् गन्धम् समर्पयामि।
ॐ हं आकाश तत्वात्मकम् पुष्पं समर्पयामि।
ॐ यं वायु तत्वात्मकम् धूपमाघ्रापयामि।
ॐ रं तेजसात्मकम् दीपम् प्रदर्शयामि।
ॐ वं अमृत तत्वात्मकम् नैवेद्यम् निवेदयामि।
ॐ शं सर्व तत्वात्मकम् मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

मन्त्र

ॐ हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुं फट्।

(लक्ष जप दशांश हवनादि)

प्रार्थना

ॐ आञ्जनेय महाभाग भक्तानां अभयंकरः।
शत्रून् संहर माम् रक्ष श्री मनापदुद्दर॥

समर्पण

गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाण अस्मदकृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव तवत्प्रसादात् महेश्वर॥
ॐ हनुमते नमः

साधन– भूमि शयन, कम्बल का आसन, ब्रह्मचर्यव्रत (मनसा, वाचा, कर्मणा), फलाहार, पयाहार, पूर्णतः मौन, अखण्ड दीप, धूप, घी, चना, गुड़, इत्र, पान, लौंग, इलायची, सिन्दूर, लाल पुष्प से पूजनादि क्रिया करें व गूगल से हवन करें।

श्रीराम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज–लोचन, कंजमुख, कर–कंज, पद कंजारुणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि नवनील–नीरद–सुन्दरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं।।
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव–दैत्य–वंश निकंदनं ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथ–नन्दनं।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर–चाप–धर संग्राम–जित–खर दूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर–शेष–मुनि–मन–रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल–दल गंजनं।।
मनु जाहि राचेऊ मिलिहि सो वरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि–पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

।। सोरठा ।।

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

श्री नवग्रह चालीसा

श्री गणपति गुरुपद कमल, प्रेम सहित शिरनाय।
नव-ग्रह चालीसा कहत, शारद होहु सहाय।।
जय जय रवि शशि भौम बुद्ध, जय गुरु भृगु शनि राज।
जयति राहु अरु केतु ग्रह, करहु अनुग्रह आज।।

सूर्य-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ घृणिः सूर्याय नमः

प्रथमहिं रवि कहँ नावौ माथा, करहु कृपा जन जानि अनाथा।
हे आदित्य दिवाकर भानू, मैं मति मन्द महा अज्ञानू।
अब निज जन कँह हरहु कलेशा, दिनकर द्वादश रूप दिनेशा।
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर, अर्क मित्र अघ ओघ क्षमाकर।

चन्द्र-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ सों सोमाय नमः

शशि, मयंक, रजनीपति, स्वामी, चन्द्र, कलानिधि नमो नमामी।
राकापति, हिमांशु, राकेशा, प्रणवत जन नित हरहु कलेशा।
सोम, इन्दु, विधु, शान्ति सुधाकर, शीत रश्मि, औषधी, निशाकर।
तुमहीं शोभित भाल महेशा, शरण-शरण जन हरहु कलेशा।

मंगल-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ अं अंगारकाय नमः

जय जय जय मंगल सुखदाता, लोहित भौमादित विख्याता।
अंगारक कुज रुज ऋणहारी, दया करहु यहि विनय हमारी।
हे महिसुत छितीसुत सुखरासी, लोहितांग जग जन अघनासी।
अगम अमंगल मम हर लीजै, सकल मनोरथ पूरण कीजै।

बुध-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ बुं बुधाय नमः

जय शशिनन्दन बुध महाराजा, करहु सकल जन कहँ शुभ काजा।
दीजै बुद्धि सुमति बल ज्ञाना, कठिन कष्ट हर हरि कल्याना।
हे तारासुत रोहिणि नन्दन, चन्द्र सुवन दुःख दूरि निकन्दन।
पूजहु आस दास कहँ स्वामी, प्रणत पाल प्रभु नमो नमामी।

बृहस्पति-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ बृं बृहस्पतये नमः

जयति जयति जय श्री गुरु देवा, करौं सदा तुम्हरो प्रभु सेवा।
देवाचार्य देव गुरु ज्ञानी, इन्द्र पुरोहित विद्या दानी।
वाचस्पति वागीस उदारा, जीव बृहस्पति नाम तुम्हारा।
विद्या सिन्धु अंगिरा नामा, करहु सकल विधि पूरण कामा।

शुक्र-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ शुं शुक्राय नमः

शुक्रदेव तव पद जल जाता, दास निरन्तर ध्यान लगाता।
हे उशना भार्गव भृगुनन्दन, दैत्य पुरोहित दुष्ट निकन्दन।
भृगुकुल भूषण दूषण हारी, हरहु नेष्ट ग्रह करहु सुखारी।
तुहि पण्डित जोषी द्विज राजा, तुम्हरे रहत सहत सब काजा।

शनि-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः

जय श्री शनि देव रवि नन्दन, जय कृष्णो सौरि जगवन्दन।
पिंगल मंद रोद्र यम नामा, बभ्रु आदि कोणस्थल लामा।
बक्र दृष्टि पिप्पल तन साजा, छण महँ करत रंक छण राजा।
ललत स्वर्ण पद करत निहाला, करहु विजय छाया के लाला।

राहु-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ रां राहवे नमः

जय जय राहु गगन प्रविसइया, तुम ही चन्द्रादित्य ग्रसइया।
रवि शशि अरि स्वर्भानू धारा, शिखी आदि बहु नाम तुम्हारा।
सैहिंकेय निशाचर राजा, अर्धकाय तुम राखहु लाजा।
यदि ग्रह समय पाय कहुँ आवहु, सदा शान्ति रहि सुख उपजावहु।

केतु-स्तुति

बीज मंत्र- ॐ कें केतवे नमः

जय जय केतु कठिन दुखहारी, निज जन हेतु सुमंगलकारी।
ध्वजयुत रुण्ड रूप विकराला, घोर रौद्रतन अधमन काला।
शिखी तारिका ग्रह बलवाना, महा प्रताप न तेज ठिकाना।
वान मीन महा शुभकारी, दीजै शान्ति दया उरधारी।

नवग्रह शान्ति फल

तीरथराज प्रयास सुपासा, बसै राम के सुन्दर दासा।
ककरा ग्रामहिं पूरे-तिवारी, दुर्वासाश्रम जन दुःख हारी।
नव-ग्रह शान्ति लिख्यो सुख हेतु, जन तन कष्ट उतारण सेतू।
जो नित पाठ करै चित लावै, सब सुख भोगि परम पद पावै।

दोहा

धन्य नवग्रह देवप्रभु, महिमा अगम अपार।
नित नव मंगल मोद गृह, जगत जनन सुखद्वार।।
यह चालीसा नवहु ग्रह, विरचित सुन्दरदास।
पढ़त प्रेम युत बढ़त सुख, सर्वानन्द हुलास।।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।१।।

जपा (अढ़ौल) के फूल की तरह जिनकी कान्ति है कश्यप से जो उत्पन्न हुए हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है, जो सब पापों को नष्ट कर देते हैं, उन सूर्य भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।२।।

दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है जिनकी उत्पत्ति क्षीर-समुद्र से है, जो शिवजी के मुकुट पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रदेव को प्रणाम करता हूँ।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।३।।

पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युतपुंज (बिजली) के समान जिनकी प्रभा है, जो हाथों में शक्ति धारण किये रहते हैं, उन मंगलदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।४।।

प्रियंगु की कली की तरह जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है उन सौम्य और सौम्य गुणों से युक्त बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।५।।

जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, कंचन के समान जिनकी प्रभा है, जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार और तीनों लोकों के प्रभु हैं, उन बृहस्पतिजी को मैं प्रणाम करता हूँ।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।६।।

तुषार, कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा है जो दैत्यों के परम गुरु हैं उन सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता शुक्राचार्यजी को मैं प्रणाम करता हूँ।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।७।।

नीलांजन के समान जिनकी दीप्ति है, जो सूर्य भगवान के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता हैं, सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई है उन शनैश्चर देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।८।।

जिनका केवल आधा शरीर है, जिनमें महान् पराक्रम है, जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं, सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुं प्रणमाम्यहम्।।९।।

पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है, जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं, जो स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं, ऐसे घोर रूपधारी केतु को मैं प्रणाम करता हूँ।

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्न शान्तिर्भविष्यति।।१०।।

व्यास के मुख से निकले हुए इस स्तोत्र का जो सावधानी पूर्वक दिन या रात्रि के समय पाठ करता है, उसकी सारी विघ्न बाधायें शान्त हो जाती हैं।

नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।११।।

संसार के साधारण स्त्री-पुरुष और राजाओं के भी दुःस्वप्न जन्य दोष दूर हो जाते हैं। इसका पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य तथा आरोग्य प्राप्त होता है और पुष्टि की वृद्धि होती है।

विद्या प्राप्ति का मंत्र

गुरु गृह गए पढ़न रघुराई, अल्प काल विद्या सब आई।

विधि और लाभ– काँसे की कटोरी में केसर की स्याही से इस मंत्र को लिखकर अपने समक्ष रख लें। रुद्राक्ष की माला पर 108 बार इस मंत्र को पढ़ें और फिर कटोरी में दूध डालकर मीठा मिलायें और विद्यार्थी को पिला दें। इस क्रिया को 21 दिन तक करना चाहिए।

नवग्रह मंत्र

**ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्ति॥**

नवग्रहपीडास्तोत्रम्

**ग्रहाणामादिरादित्यो लोक-रक्षणकारकः।
विषमस्थानसंभूतां पीडा हरतु मे रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसंभूतां पीडा हरतु में विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जयतां भयकृत्सदा।
वृष्टिकृदवृष्टिहर्ता च पीडा हरतु मे कुजः॥
उत्पातरूपो जगलां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान्पीडां हरतु मे बुधः॥
देवमंत्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेक शिष्यः संपूर्णः पीडा हरतु मे गुरु॥
दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मंदचारः प्रसन्नात्मा पीडा हरतु मे शनिः॥
महाशिराः महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रा महानलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥
अनेकरूपवर्णेश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः।
उत्पातरूपोद जगतां पीडां हरतु मे ग्रहाः॥**

नवग्रह सूक्तम्

ॐ शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥

ॐ भूः ॐ भुवः ओ३ सुवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ओ३ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥ ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं आदित्यादि-नवग्रहदेवता-प्रसादसिद्ध्यर्थं आदित्यादि-नवग्रहनमस्कारान् करिष्ये॥

ॐ आसत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो यातिभुवना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत च द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानस्य सन्तु॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय आदित्याय नमः॥१॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतस्सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य संगथे। अप्सुमे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निञ्च विश्वशंभुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमे व्योमन्॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय सोमाय नमः॥२॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा३ रेता३ सि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानश्शर्म सप्रथाः। क्षेत्रस्य पतिना वयूँ हिते नेव जयामसि। गामश्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय अंगारकाय नमः॥३॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्ते स३ सृजेथामयञ्च। पुनः कृण्वग्ग्स्त्वा पितरं युवानमन्वाता३सीत्त्वयि तन्तुमेतम्। इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा३ सुरे। विष्णो रराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णोश्शनप्त्रेस्थो विष्णोस्स्यूरसि विष्णोर्धुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय बुधाय नमः॥४॥

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्च्ववसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्। इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबस्सुतस्य। तव प्रणीती तव शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयस्सुयज्ञाः। ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतस्सुरुचो वेन आवः। सबुध्निया उपमा अस्य विष्ठास्सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय बृहस्पतये नमः॥५॥

ॐ प्रवश्शुक्राय भानवे भरध्वम्। हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्। यो दैव्यानि मानुषा जनू३षि। अन्तर्विश्वानि विद्म ना जिगाति। इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमश्रवम्। न ह्यस्या अपरंचन जरसा मरते पतिः। इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः। ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय शुक्राय नमः॥६॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयग्ग्स्याम पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदांऽगिरोभिः पितृभिस्संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्, हविषा मादयस्व॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधस्सखा। कया शचिष्ठया वृता। आऽयं गौः पृश्निरक्रमीदसनन्मातरं पुनः। पितरञ्च प्रयन्त्सुवः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदन्ते तद्विष्याम्यायुषो न मध्यादथाजीवः पितुमद्धि प्रमुक्तः॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय राहवे नमः॥८॥

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणाग्स्वधितिर्वनानाः सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। सचित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय केतुभ्यो नमः॥९॥

॥ ॐ आदित्यादिनवग्रहदेवताभ्यो नमो नमः॥

नवग्रह प्रार्थना मंत्र

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मगलं मंगलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च गुरूतां शुक्रः सुखं शं शनिः
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिम नित्यं प्रीतिकरा
भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्ना ग्रहाः
आदित्यादि नवग्रह देवताभ्यो नमः॥

नवग्रह का ध्यान

सूर्य– पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥

चन्द्रमा– श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥

मंगल– रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥

बुध– पीतमाल्याबरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बृहस्पति– देवानां गुरु पूज्यः पीतवर्णः चतुर्भुजः।
दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥

शुक्र– दैत्यानां गुरुः श्रेष्ठः श्वेतवर्णः चतुर्भुजः।
दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥

शनि– इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥

राहु– करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥

केतु– धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

नवग्रह कवच

नीचे 'यामलतन्त्र' का एक 'नवग्रह कवच' दिया जा रहा है। इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करने तथा इसे ताबीज में रखकर भुजा में धारण करने से बहुत लाभ होता है।

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः।
मुखमङ्गारकः पातु कण्ठं च शशिनन्दनः॥
बुद्धि जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दितिनन्दनः॥
पादौ केतुः सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च।
तिथयोऽष्टौ दिशः पातु नक्षत्राणि वपुः सदा॥
अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च।
सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत्।
रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धौ मुच्येत बन्धनात्॥
श्रियं च लभते नित्यं रिष्टिस्तस्य न जायते।
यः करे धारयेन्नित्यं रिष्टिर्न जायते॥
पठनात् कवचस्यास्य सर्वपापात् प्रमुच्यते।
मृतवत्सा च या नारी काकवन्ध्या च या भवेत्॥
जीववत्सा पुत्रवती भवत्येव न संशयः।
एतां रक्षां पठेद् यस्तु अङ्गं स्पृष्टवापि वा पठेत्॥

नवग्रह व्रत एवं उनके फल

सूर्य का व्रत– एक वर्ष या 30 रविवारों तक अथवा 12 रविवारों तक करना चाहिये। व्रत के दिन लाल रंग का वस्त्र धारण करके **'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'** इस मंत्र का 12 या 5 अथवा 3 माला जप करें। जप के बाद शुद्ध जल, रक्त चन्दन, अक्षत, लाल पुष्प और दूर्वा से सूर्य को अर्घ्य दें। भोजन में गेहूँ की रोटी, दलिया, दूध, दही, घी और चीनी खायें। नमक नहीं खायें। इस व्रत के प्रभाव से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाता है। तेजस्विता बढ़ती है। शारीरिक रोग शान्त होते हैं। आरोग्यता प्राप्त होती है।

चन्द्रमा का व्रत– 54 सोमवारों तक या 10 सोमवारों तक यह व्रत करना चाहिए। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण कर **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः'** इस मंत्र का 11 या 5 अथवा 3 माला जप करें। भोजन में बिना नमक के दही, दूध, चावल, चीनी और घी से बनी चीजें ही खायें। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ होता है। मानसिक कष्टों की शांति होती है। विशेष कार्यसिद्धि में यह व्रत पूर्ण लाभदायक होता है।

मंगल का व्रत– 45 या 21 मंगलवारों तक करना चाहिये। यह व्रत अधिक दिन भी किया जा सकता है। लाल वस्त्र धारण करके **'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः'** इस मंत्र को 7, 5 या 3 माला जपें। भोजन में गुड़ से बना हलवा या लड्डू इत्यादि खायें। नमक नहीं खायें। इस व्रत के करने से ऋण से छुटकारा मिलता है। संतान सुख प्राप्त होता है।

बुध का व्रत– 45, 21 या 17 बुधवारों तक करना चाहिये। हरे रंग का वस्त्र धारण करके **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** इस मंत्र का 17, 5 या 3 माला जप करें। भोजन में नमक रहित मूँग से बनी चीजें खानी चाहियें। जैसे मूँग का हलवा, मूँग की पंजीरी, मूँग के लड्डू

इत्यादि। भोजन से पहले तीन तुलसी के पत्ते चरणामृत या गंगाजल के साथ खाकर तब भोजन करें। इस व्रत के करने से विद्या और धन का लाभ होता है। व्यापार में उन्नति होती है और शरीर स्वस्थ रहता है।

बृहस्पति का व्रत– 3 वर्ष, 1 वर्ष अथवा 16 बृहस्पतिवारों तक करना चाहिए। पीले रंग के वस्त्र धारण कर **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** इस मंत्र की 16, 5 या 3 माला जपें। भोजन में चने के बेसन, घी और चीनी से बनी मिठाई व लड्डू ही खायें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिये बुद्धि और विद्याप्रद है। इस व्रत से धन की स्थिरता और यश की वृद्धि होती है।। अविवाहितों को यह व्रत विवाह में सहायक होता है।

शुक्र का व्रत– 31 या 21 शुक्रवारों तक करना चाहिये। श्वेत वस्त्र धारण करके **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** इस मंत्र का 21, 11 या 5 माला जप करें। इस व्रत के करने से सुख–सौभाग्य और ऐवश्र्य की वृद्धि होती है।

शनि का व्रत– 51 या 19 शनिवारों तक करना चाहिए। काला वस्त्र धारण करके **'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः'** इस मंत्रकी 19, 11 या 5 माला जपें। जप करते समय एक पात्र में शुद्ध जल, काला तिल, दूध, चीनी और गंगाजल अपने पास रख लें। जप के बाद इसको पीपल वृक्ष की जड़ में पश्चिममुख होकर चढ़ा दें। भोजन मे उड़द, कलाई के आटे से बनी चीजें, पंजीरी, पकौड़ी, चीला और बड़ा इत्यादि खायें। कुछ तेल में बनी चीजें अवश्य खायें। फल में केला खायें। इस व्रत के करने से सब प्रकार की सांसारिक झंझटें दूर होती हैं। झगड़े में विजय प्राप्त होती है। लोहे, मशीनरी, कारखाने वालों के लिये यह व्रत व्यापार में उन्नति और लाभदायक होता है।

राहु और केतु का व्रत– 18 शनिवारों तक करना चाहिए। काले रंग

का वस्त्र धारण करके राहु के व्रत में **'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'** इस मंत्र एवं केतु के व्रत में **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** इस मंत्र का 18, 11 या 5 माला जप करें। जप के समय एक पात्र में जल, दूर्वा और कुशा अपने पास रख लें। जप के बाद इनको पीपल की जड़ में चढ़ा दें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भूजा और काले तिल से बने पदार्थ खायें। रात में घी का दीपक पीपल वृक्ष की जड़ में रख दिया करें। इस व्रत के करने से शत्रु का भय दूर होता है। मुकदमे में विजय मिलती है, सम्मान बढ़ता है।

मेरे अनुभव

मार्च मास 2007। श्री विजेन्द्र गोयल जी के निवास स्थान महावीर एन्कलेव में मेरी 9 दिन की साधना के आठवें दिन की मध्यरात्रि। शाम के समय से ही नेत्र अश्रुपूरित हुए। मन रह–रहकर ईष्ट अपवाद करने लगा, 'प्रभु मैं त्यागी ब्राह्मण हूँ, आपने जब मुझे दर्शन ही नहीं देना, मेरा मार्गदर्शन ही नहीं करना तो यह मुझसे क्या करा रहे हो, मेरी वह नौकरी ही अच्छी थी गुजारा करने के लिए।' अश्रुपात की उस अविरल गति से आखिर उनका हृदय पसीज गया। मध्यरात्रि में चित्त अन्तःकोष में प्रविष्ट हुआ, पलकें बन्द होने पर भी सब कुछ आभास हुआ। हृदयाकाश खुल गया। शनि शक्ति से पहले बायां हाथ शनि शक्ति पाकर आगे आया, फिर दूसरा हाथ भी उसी मुद्रा में आगे आया। वे अवस्था प्रणाम की थी, मेरे दोनों हाथों ने शनि देव के चरणों को छुआ। मैं धन्य हुआ। मैंने पलकें उठाईं, सामने श्याम वर्ण बड़े–बड़े चरण कमलों को देखा और मुख को उर्ध्व किया। एक दिव्य झलक शनिदेव की पाई, वे तभी अन्तर्ध्यान हो गए और मैं आनंदमग्न होकर उनका संकीर्तन करता हुआ उनकी भक्त वत्सलता पर न्यौछावर हुआ।

जय शनिदेव

नवग्रहों के यंत्रों द्वारा रोगों का उपचार

प्रत्येक ग्रह जन्य रोग की शांति के लिये मंत्र, यंत्र, तंत्र, दान पदार्थ, पशु-पक्षी पोषण का विवरण निम्नोक्त है।

सूर्यजन्य रोग एवं उपचार

रोग

ज्वरपितोष्ण, मृगी, देहताप, चर्मरोग, नेत्र रोग, क्षय, हृदय रोग, पित्त ज्वर, अतिसार आदि।

उपचार

सूर्य यंत्र 15 (लाल चन्दन से अनार की कलम से लिखें)

6	1	8
7	5	3
2	9	4

मन्त्र– **ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।**
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

सूर्य गायत्री– ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

सूर्य मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो। आदित्य हृदय एवं गायत्री जप।

तन्त्र– बिल्वपत्र की जड़ रविवार को रक्तवस्त्र में रखकर भुजा में धारण करे अथवा अर्क (मदार) की जड़ बाँधे।

औषधि– ताम्रभस्म, सुवर्णभस्म।

पशुपक्षी– व्याघ्र, हरिण, चकवा इनका पालन-पोषण।

चन्द्र जन्य रोग एवं उपचार

रोग

छाती एवं गले के रोग, निद्रा रोग, कफ रोग, मलेरिया, मंदाग्नि, मूत्र रोग, जलोदर, पांडुरोग (पीलिया), रक्तदोष, सर्दी-जुकाम आदि।

उपचार

चन्द्र यंत्र 18 (सफेद चन्दन, अनार की कलम से)

7	2	9
8	6	4
3	10	5

मंत्र– ॐ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

चन्द्र गायत्री– ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि।
तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्।

चन्द्र मंत्र– ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ इमं देवता असपत्..................। कोष्टक में 18 का यंत्र विधिपूर्वक लिखकर सफेद वस्त्र में रखकर सोमवार को भुजा में धारण करें। स्त्री वर्ग को बांयी भुजा में पुरुष वर्ग को दाहिनी भुजा में यंत्र धारण करना चाहिये।

तंत्र– खिरनी के बीज अथवा पलाश की जड़ श्वेत वस्त्र में रखकर सोमवार को धारण करें।

औषधि– मुक्ताभस्म या मुक्तापिष्टि, रजतभस्म का उपयोग करें।

दान पदार्थ– सोमवार को सन्ध्याकाल में दान करें।

भौमजन्य रोग एवं उपचार

रोग

त्रिदोष, नेत्र रोग, पित्त ज्वर, गुल्म, मृगी, मज्जा, चर्म रोग, चेचक, गिल्टी, फोड़ा-फुंसी, अग्नि व विषजन्य रोग, शस्त्राघात, फेफड़ा, गला, जीभ, आँख, नाक व कान संबंधी रोग।

उपचार

भौम यंत्र 21

8	3	10
9	7	5
4	11	6

मंत्र— ॐ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

भौम गायत्री— ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे लोहिताङ्गाय धीमहि।
तन्नौ भौमः प्रचोदयात्।

भौम मंत्र— ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

वैदिक मंत्र— ॐ अग्निमूर्धा दिवेति......। कोष्टक में 21 का यंत्र विधिपूर्वक लिखकर भौमवार को रक्तवस्त्र में रखकर भुजा में धारण करें। अंगारक स्तोत्र का पढ़न भी लाभप्रद है।

प्रत्येक यंत्र को आम्रपट्ट पर ग्रहवर्ण के अनुसार (रवि-मंगल का रक्त, चन्द्र-शुक्र का श्वेत, बुध का हरित, गुरु का पीत, शनि-राहु का नीला-काला वस्त्र बिछाकर 11 या 13 अंगुल की अनार की कलम से यंत्र पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर लिखना चाहिये। यंत्र लिखने के लिए अष्टगन्ध की स्याही को सर्वोत्तम माना

गया है, किन्तु अष्टगन्ध में गोरोचन व कस्तूरी का भी मिश्रण किया जाता है, जो आज कल शुद्ध गोरोचन की उपलब्धि नहीं हो रही है। अतः ग्रहों के यंत्र लिखने हेतु चन्द्र-शुक्र को सफेद चन्दन की स्याही से, सूर्य मंगल को रक्त चन्दन की स्याही से, गुरु को हरिद्रा या सफेद केसर चन्दन की स्याही से, शनि-राहु-केतु को काली स्याही से, बुध को पालक रस मिश्रित सफेद चन्दन की स्याही से तथा सभी यंत्रों को अनार की कलम से लिखकर धूप-दीप कर धारण करना चाहिये। अंक लिखते समय सर्वप्रथम छोटा अंक लिखकर पश्चात् उत्तरोत्तर वृद्धि के अंक लिखें।

तंत्र— खदिर (खैर) अथवा नागजिह्वा की जड़ रक्तवस्त्र में रखकर प्रातः सूर्योदय से 1 घंटे तक के समय में भुजा में मंगलवार को धारण करें।

औषधि— ताम्रभस्म या प्रवालभस्म का वैद्य के परामर्शानुसार सेवन करें।

दान— मंगलवार को मध्याह्न में मंगल की वस्तुओं का दान करें।

पशुपक्षी— कुक्कुट, मेंढक, सूकर, चोर गिद्ध, सियार आदि का पालन-पोषण करें।

जप-ध्यान करते-करते जब मन स्थिर हो जाएगा, शुद्ध हो जाएगा, तब मन ही तुम्हारा गुरु होगा। अपने अन्तर से ही सब विषय समझ पाओगे, संशय और प्रश्नों का समाधान होगा। तुम्हें साधना में आगे क्रमशः क्या-क्या करना होगा, कैसे चलना होगा, मन ही यह सब बतला देगा।

बुधजन्य रोग एवं उपचार

रोग

गले एवं नाक में होने वाले रोग, वातज व्याधि, चर्म रोग, अस्थमा, मंदाग्नि, गुप्त रोग, कुष्ठ व शूल तथा प्रेम बाधाादि।

उपचार

बुध यंत्र 24

9	4	11
10	8	6
5	12	7

मंत्र– **ॐ प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।**
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

बुध गायत्री– **ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि।**
तन्नौ बुधः प्रचोदयात्॥

बुध मंत्र– ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने.........। यंत्र कोष्टक में 24 का यंत्र भोजपत्र पर लिखकर बुध की होरा में अथवा प्रातः सूर्योदय से 1 घंटे के मध्य में बुध को धारण करें। यहाँ इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि सभी ग्रहों का यंत्र भोजपत्र पर लिखें।

तंत्र– अपामार्ग को जड़ अथवा विधारे (बृद्धमूल) की जड़ हरितवस्त्र में रखकर बुधवार को भुजा में धारण करें।

औषधि– सुवर्ण या पन्ने की भस्म वैद्य परामर्श से सेवन करें।

दान– बुध वस्तुओं का दान बुध की होरा में करें।

पशु-पक्षी– चातक, तोता, बिल्ली का पालन–पोषण करें।

गुरुजन्य रोग एवं उपचार

रोग

आँतों का रोग, हर्निया, कर्ण रोग, कमर से जंघा तक के रोग, देव–द्विज–यक्ष–किन्नर आदि के शाप से उत्पन्न रोग आदि।

उपचार

गुरु यंत्र 27

10	5	12
11	9	7
6	13	8

मंत्र– **ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।**
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

गुरु गायत्री– **ॐ अङ्गिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि।**
तन्नौ गुरु प्रचोदयात्।

गुरु मंत्र– ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ बृहस्पते अति अदर्यो..................। यंत्र 27 अंक को विधिपूर्वक लिखकर गुरुवार को धारण करें, यंत्र पीतवस्त्र में रखकर भुजा में बाँधे।

तंत्र– पीपल की जड़ अथवा भारंगी की जड़ पीत वस्त्र में रखकर गुरुवार को भुजा में धारण करें।

औषधि– स्वर्णभस्म या पुखराजभस्म वैद्य के परामर्श से सेवन करें।

दान– गुरु की वस्तुओं का गुरुवार को गुरु की होरा में दान करें।

पशु-पक्षी– पीपलवृक्ष, कबूतर, हंस, अश्व का पालन–पोषण करें।

शुक्रजन्य रोग एवं उपचार

रोग

कफज-वातज व्याधि, नेत्र पीड़ा, मूत्र संबंधी, मूत्रकृच्छ, प्रमेह, गुप्तेन्द्रिय, वीयेजनित, त्रिशा रोग तथा शुक्र रोग आदि।

उपचार

शुक्र यंत्र 30

11	6	13
12	10	8
7	14	9

मंत्र– ॐ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

शुक्र गायत्री– ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि।
तन्नः कविः प्रचोदयात्।

शुक्र मंत्र– ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ अन्नात्परिश्रुतो............। कोष्टक में 30 अंक का यंत्र विधिपूर्वक लिखकर सफेद वस्त्र से बाँधकर शुक्रवार को भुजा में धारण करें।

तंत्र– गूलर की जड़ या मजीठ की जड़ श्वेत वस्त्र में रखकर शुक्र की होरा में शुक्रवार को भुजा में धारण करें।

औषधि– रजतभस्म या हीरे की भस्म वैद्य के परामर्श से सेवन करें।

दान– शुक्र की वस्तुओं का शुक्रवार को शुक्र होरा में दान करें।

पशु-पक्षी– मोर, महिश, गौ, तोता, वेश्या, जुलाहा का पालन-पोषण करें।

शनिजन्य रोग एवं उपचार

रोग

कफज-वातज रोग, पैरों के रोग, कुक्षि रोग, चित्त भ्रमित रोग, भूख-प्यास संबंधी रोग, विषजन्य व भयानक ज्वर आदि।

उपचार

शनि यंत्र 33

12	7	14
13	11	9
8	15	10

मंत्र– ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

शनि गायत्री– ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि।
तन्नः शौरिः प्रचोदयात्॥

शनि मंत्र– ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय........। यंत्र 33 अंक का 9 कोष्टक में विधिपूर्वक लिखकर शनिवार को नीलेवस्त्र में रखकर भुजा में धारण करें।

तंत्र– शमी वृक्ष की जड़ नीलेवस्त्र में रखकर शनिवार को भुजा में धारण करें। अम्लवेत की जड़ भी धारण कर सकते हैं।

औषधि– लौहभस्म, नीलमभस्म वैद्य के परामर्शानुसार सेवन करें।

दान– शनि की वस्तुओं का सायंकाल या शनि की होरा में शनिवार को दान करें।

पशु-पक्षी– कोयल, हाथी, कौवा, तेली, लुहार, मजदूर (श्रीमकवर्ग), नौकर, नीच जाति का पालन-पोषण करें।

राहुजन्य रोग एवं उपचार

रोग

भूत-बाधा, आकस्मिक घटना, ज्वर, अपस्मार, चर्म रोग, विषूचिका, विषजन्य आदि।

उपचार

राहु यंत्र 36

13	8	15
14	12	10
9	16	11

मंत्र– **ॐ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।**
सिंहिकागर्भसम्भूतम् तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

राहु गायत्री– **ॐ नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि।**
तन्नौ राहुः प्रचोदयात्।

राहु मंत्र– ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ कयानश्चित्र...........। कोष्ठक में 36 का यंत्र विधिपूर्वक लिखकर शनिवार सायंकाल कालेवस्त्र में भुजा में धारण करें।

तंत्र– चन्दन लेप या चन्दन का टुकड़ा जेब में हमेशा रखें, दूर्वा का सिंचन करें।

औषधि– गोमेदभस्म तथा विषमिश्रित औषधि का सेवन, लौहभस्म वैद्य परामर्श से सेवन करें।

पशु-पक्षी– सर्प को दूध पिलायें।

केतुजन्य रोग एवं उपचार

रोग

भूत-बाधा, आकस्मिक घटना, ज्वर, अपस्मार, चर्म रोग, विषूचिका, विषजन्य आदि।

उपचार

केतु यंत्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

मंत्र– **ॐ पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।**
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

केतु गायत्री– **ॐ अन्तर्वाताय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि।**
तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

केतु मंत्र– ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

वैदिक मंत्र– ॐ केतु कृन्वन्नकेतवे...........। कोष्ठक में 39 का यंत्र विधिपूर्वक लिखकर शनिवार को सायंकाल में काले वस्त्र में धारण करें।

तंत्र– असगंध की जड़ या कुशा की जड़ काले वस्त्र में रखकर शनि के सायंकाल समय में भुजा में धारण करें।

औषधि– लहसुनिया की भस्म, लौहभस्म, असगन्ध का चूर्ण वैद्य परामर्श से सेवन करें।

पशु-पक्षी– राम नाम की गोलियाँ आटे में मिलाकर मछलियों को खिलाना चाहिए।

सूर्य

सूर्यदेव की दो भुजाएँ हैं, वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं। उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित हैं। उनके सिर पर सुन्दर स्वर्णमुकुट तथा गले में रत्नों की माला है। उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की सी है और वे सात घोड़ों के रथ पर आरूढ़ रहते हैं।

सूर्य देवता का एक नाम सविता भी है, जिसका अर्थ है- सृष्टि करने वाला। 'सविता सर्वस्य प्रसविता' (निरुक्त 10/31)। ऋग्वेद के अनुसार आदित्य-मण्डल के अन्तःस्थित सूर्य देवता सबके प्रेरक, अन्तर्यामी तथा परमात्मस्वरूप हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य ब्रह्मस्वरूप है, सूर्य से जगत उत्पन्न होता है और उन्हीं में स्थित है। सूर्य सर्वभूतस्वरूप सनातन परमात्मा हैं। यही भगवान भास्कर ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र बनकर जगत का सृजन, पालन और संहार करते हैं। सूर्य नवग्रहों में सर्वप्रमुख देवता हैं।

जब ब्रह्मा अण्ड का भेदन कर उत्पन्न हुए, तब उनके मुख से '*ॐ*' यह महाशब्द उच्चारित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही भगवान सूर्यदेव का शरीर है। ब्रह्मा के चारों मुखों से चार वेद आविर्भूत हुए, जो तेज से उदीप्त हो रहे थे। ओंकार के तेज ने इन चारों को आवृत्त कर लिया। इस तरह ओंकार के तेज से मिलकर चारों एकीभूत हो गये। यही वैदिक तेजोमय ओंकारस्वरूप सूर्य देवता हैं। यह सूर्यस्वरूप तेज सृष्टि के सबसे आदि में पहले प्रकट हुआ, इसलिए इसका नाम '*आदित्य*' पड़ा।

एक बार दैत्यों, दानवों एवं राक्षसों ने संगठित होकर देवताओं के विरूद्ध युद्ध ठान दिया और देवताओं को पराजित कर उनके

अधिकारों को छीन लिया। देवमाता अदिति इस विपत्ति से त्राण पाने के लिए भगवान सूर्य की उपासना करने लगीं। भगवान सूर्य ने प्रसन्न होकर अदिति के गर्भ से अवतार लिया और देव-शत्रुओं को पराजित कर सनातन वेदमार्ग की स्थापना की। इसलिये भी वे आदित्य कहे जाने लगे।

भगवान सूर्य का वर्ण लाल है। इनका वाहन रथ है। इनके रथ में एक ही चक्र है, जो संवत्सर कहलाता है। इस रथ में मासस्वरूप बारह अरे हैं, ऋतुरूप छः नेमियाँ और तीन चौमासे-रूप तीन नाभियाँ हैं। इनके साथ साठ हजार बालखिल्य स्वस्तिवाचन और स्तुति करते हुए चलते हैं। ऋषि, गन्धर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस और देवता सूर्य नारायण की उपासना करते हुए चलते हैं। चक्र, शक्ति, पाश और अंकुश इनके मुख्य अस्त्र हैं।

भगवान सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा छः वर्ष की होती है। सूर्य की प्रसन्नता और शान्ति के लिये नित्य सूर्यार्घ्य देना चाहिये और हरिवंशपुराण का श्रवण करना चाहिए। माणिक्य धारण करना चाहिये तथा गेहूँ, सवत्सा गाय, गुड़, ताँबा, सोना एवं लाल वस्त्र ब्राह्मण को दान करना चाहिए। सूर्य की शांति के लिये वैदिक मंत्र- ***'ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥'*** पौराणिक मंत्र- ***'जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।'*** बीज मंत्र- ***'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'*** तथा सामान्य मंत्र- ***'ॐ घृणि सूर्याय नमः'*** है। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार एक निश्चित संख्या में नित्य जप करना चाहिये। जप की कुल संख्या 7000 तथा समय प्रातःकाल है।

श्रीसूर्यअष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ ह्रीं अरुणाय नमः, 2. ॐ ह्रीं शरण्याय नमः, 3. ॐ ह्रीं करुणारससिन्धवे नमः, 4. ॐ ह्रीं असमानबलाय नमः, 5. ॐ ह्रीं आर्तरक्षकाय नमः, 6. ॐ ह्रीं आदित्याय नमः, 7. ॐ ह्रीं आदिभूताय नमः, 8. ॐ ह्रीं अखिलागमवेदिने नमः, 9. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः, 10. ॐ ह्रीं अखिलज्ञाय नमः, 11. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः, 12. ॐ ह्रीं इनाय नमः, 13. ॐ ह्रीं विश्वरूपाय नमः, 14. ॐ ह्रीं इज्याय नमः, 15. ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः, 16. ॐ ह्रीं भानवे नमः, 17. ॐ ह्रीं इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः, 18. ॐ ह्रीं वन्दनीयाय नमः, 19. ॐ ह्रीं ईशाय नमः, 20. ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः, 21. ॐ ह्रीं सुशीलाय नमः, 22. ॐ ह्रीं सुवर्चसे नमः, 23. ॐ ह्रीं वसुप्रदाय नमः, 24. ॐ ह्रीं वसवे नमः, 25. ॐ ह्रीं वासुदेवाय नमः, 26. ॐ ह्रीं उज्ज्वलाय नमः, 27. ॐ ह्रीं उग्ररूपाय नमः, 28. ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगाय नमः, 29. ॐ ह्रीं विवस्वते नमः, 30. ॐ ह्रीं उद्यत्किरणजालाय नमः, 31. ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः, 32. ॐ ह्रीं ऊर्जस्वलाय नमः, 33. ॐ ह्रीं वीराय नमः, 34. ॐ ह्रीं निर्जराय नमः, 35. ॐ ह्रीं जयाय नमः, 36. ॐ ह्रीं उरुद्वयभावरूपयुक्तसारथये नमः, 37. ॐ ह्रीं ऋषिबन्धाय नमः, 38. ॐ ह्रीं रुग्हन्त्रे नमः, 39. ॐ ह्रीं ऋक्षचक्रचराय नमः, 40. ॐ ह्रीं ऋजुस्वभावचित्ताय नमः, 41. ॐ ह्रीं नित्यस्तुत्याय नमः, 42. ॐ ह्रीं ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः, 43. ॐ ह्रीं उज्जवलत्तेजसे नमः, 44. ॐ ह्रीं ऋक्षादिनाथमित्राय नमः, 45. ॐ ह्रीं पुष्कराक्षाय

नमः, 46. ॐ ह्रीं लुप्तदन्ताय नमः, 47. ॐ ह्रीं शान्ताय नमः, 48. ॐ ह्रीं कान्तिदाय नमः, 49. ॐ ह्रीं घनाय नमः, 50. ॐ ह्रीं कनत्कनकभूषाय नमः, 51. ॐ ह्रीं खद्योताय नमः, 52. ॐ ह्रीं ऊनिताखिलदैत्याय नमः, 53. ॐ ह्रीं सत्यानन्दस्वरूपिणे नमः, 54. ॐ ह्रीं अपवर्गप्रदाय नमः, 55. ॐ ह्रीं आर्तशरण्याय नमः, 56. ॐ ह्रीं एकाकिने नमः, 57. ॐ ह्रीं भगवते नमः, 58. ॐ ह्रीं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः, 59. ॐ ह्रीं गुणात्मने नमः, 60. ॐ ह्रीं घृणिभृते नमः, 61. ॐ ह्रीं बृहते नमः, 62. ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः, 63. ॐ ह्रीं ऐश्वर्यदाय नमः, 64. ॐ ह्रीं शर्वाय नमः, 65. ॐ ह्रीं हरिदश्वाय नमः, 66. ॐ ह्रीं शौरये नमः, 67. ॐ ह्रीं दशदिक्सम्प्रकाशाय नमः, 68. ॐ ह्रीं भक्तवश्याय नमः, 69. ॐ ह्रीं ऊर्जस्कराय नमः, 70. ॐ ह्रीं जयिने नमः, 71. ॐ ह्रीं जगदानन्दहेतवे नमः, 72. ॐ ह्रीं जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमः, 73. ॐ ह्रीं उच्चस्थानसमारूढरथस्थाय नमः, 74. ॐ ह्रीं असुरारये नमः, 75. ॐ ह्रीं कमनीयकराय नमः, 76. ॐ ह्रीं अब्जवल्लभाय नमः, 77. ॐ ह्रीं अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः, 78. ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः, 79. ॐ ह्रीं आत्मरूपिणे नमः, 80. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः, 81. ॐ ह्रीं अमरेशाय नमः, 82. ॐ ह्रीं परस्मैज्योतिषे नमः, 83. ॐ ह्रीं अहस्कराय नमः, 84. ॐ ह्रीं रवये नमः, 85. ॐ ह्रीं हरये नमः, 86. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः, 87. ॐ ह्रीं तरुणाय नमः, 88. ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः, 89. ॐ ह्रीं ग्रहाणांपतये नमः, 90. ॐ ह्रीं भास्कराय नमः, 91. ॐ ह्रीं आदिमध्यान्तरहिताय नमः, 92. ॐ ह्रीं सौख्यप्रदाय नमः, 93.

ॐ ह्रीं सकलजगतांपतये नमः, 94. ॐ ह्रीं सूर्याय नमः, 95. ॐ ह्रीं कवये नमः, 96. ॐ ह्रीं नारायणाय नमः, 97. ॐ ह्रीं परेशाय नमः, 98. ॐ ह्रीं तेजोरूपाय नमः, 99. ॐ ह्रीं श्रीहिरण्यगर्भाय नमः, 100. ॐ ह्रीं सम्पत्कराय नमः, 101. ॐ ह्रीं इष्टार्थदाय नमः, 102. ॐ ह्रीं अनुप्रसन्नाय नमः, 103. ॐ ह्रीं श्रीमते नमः, 104. ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः, 105. ॐ ह्रीं भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः, 106. ॐ ह्रीं निखिलागमवेद्याय नमः, 107. ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः, 108. ॐ ह्रीं छायाउषादेवीसमेताय नमः।

सूर्य मंत्र

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः।

भगवान नारायण तपे हुए स्वर्णसदृश, कान्तिमान शरीर धारण किये हुए हैं। उनके गले में हार, भुजाओं में बाजूबन्द एवं सिर पर किरीट विराजमान है। उनके कान मकरकुण्डल से सुशोभित हैं। वे अपने दोनों हाथों में शंख-चक्र धारण किये हुए हैं। सूर्यमण्डल में कमलासन पर बैठे हुए ऐसे भगवान सूर्य नारायण का चिन्तन करना चाहिए।

श्रीसूर्यस्तवराजः

स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनि संततः।
राजन् नामसहस्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम्॥१॥
खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत्॥२॥

श्रीसूर्य उवाच

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत।
अलं नामसहस्रेण पठंस्त्वेवं स्तवं शुभम्॥३॥
यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा तमवधारय॥४॥

ॐविकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।
लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लकचक्षुर्ग्रहेश्वरः॥५॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः॥६॥
गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम॥७॥
शरीरारोग्यदश्चैव धनवृद्धियशस्करः।
स्तवराज इति ख्यातिस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः॥८॥
य एतेन महाबाहो द्वे संध्येऽस्तमनोदये।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥९॥
कायिकं वाचिकं चापि मानसं यच्च दुष्कृतम्।
तत् सर्वमेकजाप्येन प्रणश्यति ममाग्रतः॥१०॥
एष जप्यश्च होमश्च संध्योपासनमेव च।
बलिमन्त्रोऽर्घ्यमन्त्रश्च धूपमन्त्रस्तथैव च॥११॥
अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे।
पूजितोऽयं महामंत्रः सर्वव्याधिहरः शुभः॥१२॥
एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः।
आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत॥१३॥
साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम्।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद् रोगाद् विमुक्तवान्॥१४॥

॥ इति साम्बपुराणे रोगापनयने श्रीसूर्यवक्त्रविनिर्गतः स्तवराजः समाप्तः ॥

प्रभाकर नमोऽस्तु ते

(श्रीशिवप्रोक्तं सूर्याष्टकम्)

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते॥१॥
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥२॥
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥3॥
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥४॥
बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥५॥
बन्धूकपुष्पसंकाशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥६॥
तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजः प्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥७॥
तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥८॥

॥ इति श्रीशिवप्रोक्तं सूर्याष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग

ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुपछन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्म देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टपछन्दसे नमः, मुखे। आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादि-गायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास

ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास

ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करके निम्नांकित मंत्र से भगवान सूर्य का ध्यान एवं नमस्कार करना चाहिये-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

तत्पश्चात् **'आदित्यहृदय'** स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्टवा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यौ भगवांस्तदा॥२॥
राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥३॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥६॥
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः॥७॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः॥८॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥१०॥
हरिदश्वः सहस्त्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्॥११॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।

अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः॥१२॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः॥१३॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥१५॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥
नमः उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥१८॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥
नाशयत्येष वै भूतं तमेष सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥२३॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।

यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः॥२४॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥२५॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥२६॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।
एवमुक्तवा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्॥२७॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥२८॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्॥३०॥
अथ रविरवदन्निरीक्षय रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥३१॥

॥ श्रीवाल्मीकिये रामायणे युद्धकाण्डे, अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सूर्य देव

सूर्य देव चेतना के प्रतीक हैं। पूर्ण विकास के द्योतक हैं। इनका सम्बन्ध पूर्ण इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, सदाचार, शांति, लक्ष्य, स्थान, प्राप्ति आदि से है। सूर्य देव शरीर के विशिष्ट अंगों का संचालन करते हुए हृदय, रक्त-संचालन, नेत्र कोशिकाएँ, दाहिनी आँख व कान आदि का विकास करते हैं।

चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या)

विनियोग– ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां. पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायांक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

।। श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णम् ।।

ब्रह्मवैवर्तपुराणम्

जगदगुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च
योगीन्द्राणां च योगीन्द्र गुरूणां गुरवे नमः

चन्द्रमा

चन्द्रदेव का वर्ण गौर है। इनके वस्त्र, अश्व और रथ तीनों श्वेत हैं। ये सुन्दर रथ पर कमल के आसन पर विराजमान हैं। इनके सिर पर सुन्दर स्वर्णमुकुट तथा गले में मोतियों की माला है। इनके एक हाथ में गदा है और दूसरा हाथ वरमुद्रा में है।

श्रीमद्भागवत के अनुसार चन्द्रदेव महर्षि अत्रि और अनसूया के पुत्र हैं। इनको सर्वमय कहा गया है। ये सोलह कलाओं से युक्त हैं। इन्हें अन्नमय मनोमय, अमृतमय पुरुषस्वरूप भगवान कहा जाता है। आगे चलकर भगवान श्रीकृष्ण ने इन्हीं के वंश में अवतार लिया था। इसीलिये वे चन्द्र की सोलह कलाओं से युक्त थे। चन्द्रदेवता ही सभी देवता, पितर, यक्ष, मनुष्य, भूत, पशु–पक्षी और वृक्ष आदि के प्राणों का आप्यायन करते हैं।

प्रजापितामह ब्रह्मा ने चन्द्र देवता को बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणों का राजा बना दिया। इनका विवाह अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी आदि दक्ष की सत्ताईस कन्याओं से हुआ। ये सत्ताईस नक्षत्रों के रूप में भी जानी जाती हैं। (हरिवंशपुराण)

महाभारत वनपर्व के अनुसार चन्द्रदेव की सभी पत्नियाँ शील और सौन्दर्य से सम्पन्न हैं तथा पतिव्रत–धर्म का पालन करने वाली हैं। इस तरह नक्षत्रों के साथ चन्द्रदेवता परिक्रमा करते हुए सभी प्राणियों के पोषण के साथ–साथ पर्व, संधियों एवं विभिन्न मासों का विभाग किया करते हैं। पूर्णिमा को चन्द्रोदय के समय ताँबे के बर्तन में मुधमिश्रित पकवान यदि चन्द्रदेव को अर्पित किये जायें तो इनकी तृप्ति होती है। उससे प्रसन्न होकर चन्द्रदेव सभी कष्टों से त्राण दिलाते हैं। इनकी तृप्ति

से आदित्य, विश्वेदेव, मरुद्गण और वायुदेव तृप्त होते हैं।

मत्स्यपुराण के अनुसार चन्द्रदेव का वाहन रथ है। इस रथ में तीन चक्र होते हैं। दस बलवान घोड़े जुते रहते हैं। सब घोड़े दिव्य अनुपम और मन के समान वेगवान हैं। घोड़ों के नेत्र और कान भी श्वेत हैं। वे शंख के समान उज्जवल हैं।

चन्द्र देवता की अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस पत्नियाँ हैं। इनके पुत्र का नाम बुध है, जो तारा से उत्पन्न हुए हैं। चन्द्रमा के अधिदेवता अप् और प्रत्यधिदेवता उमा देवी हैं। इनकी महादशा दस वर्ष की होती है तथा ये कर्क राशि के स्वामी हैं। इन्हें नक्षत्रों का भी स्वामी कहा जाता है। नवग्रहों में इनका दूसरा स्थान है।

चन्द्रदेव की प्रतिकूलता से भौतिकरूप से मनुष्य को मानसिक कष्ट तथा श्वास आदि के रोग होते हैं। इनकी प्रसन्नता और शांति के लिये सोमवार का व्रत, शिवोपासना करनी चाहिये तथा मोती धारण करना चाहिये। चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चाँदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, बैल, दही और मोती– ब्राह्मण को दान करना चाहिये। इनकी उपासना के लिये वैदिक मंत्र– ***'ॐ इमं देवा असपत्नसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाराजा।'*** पौराणिक मंत्र– ***'दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।'*** बीज मंत्र– 'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः' तथा सामान्य मंत्र– 'ॐ सों सोमाय नमः' है। इनमें से किसी भी मंत्र का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिये। कुल जप-संख्या 11000 तथा समय संध्याकाल है।

श्रीसोम (चन्द्र) अष्टोत्तरशतनामावलि

1. ॐ सौं श्रीमते नमः, 2. ॐ सौं शशधराय नमः, 3. ॐ सौं चन्द्राय नमः, 4. ॐ सौं ताराधीशाय नमः, 5. ॐ सौं निशाकराय नमः, 6. ॐ सौं सुधानिधये नमः, 7. ॐ सौं सदाऽऽराध्याय नमः, 8. ॐ सौं सत्पतये नमः, 9. ॐ सौं साधुपूजिताय नमः, 10. ॐ सौं जितेन्द्रियाय नमः, 11. ॐ सौं जयोद्योगाय नमः, 12. ॐ सौं ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकाय नमः, 13. ॐ सौं विकर्तनानुजाय नमः, 14. ॐ सौं वीराय नमः, 15. ॐ सौं विश्वेशाय नमः, 16. ॐ सौं विदुषां पतये नमः, 17. ॐ सौं दोषाकराय नमः, 18. ॐ सौं दुष्टदूराय नमः, 19. ॐ सौं पुष्टिमते नमः, 20. ॐ सौं शिष्टपालकाय नमः, 21. ॐ सौं अष्टमूर्तिप्रियाय नमः, 22. ॐ सौं अनन्ताय नमः, 23. ॐ सौं कष्टदारुकुठाराय नमः, 24. ॐ सौं स्वप्रकाशाय नमः, 25. ॐ सौं प्रकाशत्मने नमः, 26. ॐ सौं द्युचराय नमः, 27. ॐ सौं देवभोजनाय नमः, 28. ॐ सौं कलाधराय नमः, 29. ॐ सौं कालहेतवे नमः, 30. ॐ सौं कामकृते नमः, 31. ॐ सौं कामदायकाय नमः, 32. ॐ सौं मृत्युसंहारकाय नमः, 33. ॐ सौं अमर्त्याय नमः, 34. ॐ सौं नित्यानुष्ठानदाय नमः, 35. ॐ सौं क्षपाकाराय नमः, 36. ॐ सौं क्षीणपापाय नमः, 37. ॐ सौं क्षयवृद्धिसमन्विताय नमः, 38. ॐ सौं जैवातृकाय नमः, 39. ॐ सौं शुचये नमः, 40. ॐ सौं शुभ्राय नमः, 41. ॐ सौं जयिने नमः, 42. ॐ सौं जयफलप्रदाय नमः, 43. ॐ सौं सुधामयाय नमः, 44. ॐ सौं सुरस्वामिने नमः, 45. ॐ सौं भुक्तिदाय नमः, 46. ॐ सौं भद्राय नमः, 47. ॐ सौं

भक्तानामिष्टदायकाय नमः, 48. ॐ सौं भक्तदारिद्रभञ्जनाय नमः, 49. ॐ सौं सामगानप्रियाय नमः, 50. ॐ सौं सर्वरक्षकाय नमः, 51. ॐ सौं सागरोद्‌भवाय नमः, 52. ॐ सौं भयान्तकृते नमः, 53. ॐ सौं भवितगम्याय नमः, 54. ॐ सौं भवबन्धविमोचकाय नमः, 55. ॐ सौं जगत्प्रकाशकरणाय नमः, 56. ॐ सौं जगदानन्दकारणाय नमः, 57. ॐ सौं निःसपत्नाय नमः, 58. ॐ सौं निराहराय नमः, 59. ॐ सौं निर्विकाराय नमः, 60. ॐ सौं निरामयाय नमः, 61. ॐ सौं भूछायाऽऽच्छादिताय नमः, 62. ॐ सौं भव्याय नमः, 63. ॐ सौं भुवनप्रतिपालकाय नमः, 64. ॐ सौं सकलार्तिहराय नमः, 65. ॐ सौं सौम्यजनकाय नमः, 66. ॐ सौं साधुवन्दिताय नमः, 67. ॐ सौं सर्वागमज्ञाय नमः, 68. ॐ सौं सर्वज्ञाय नमः, 69. ॐ सौं सनकादिमुनिस्तुताय नमः, 70. ॐ सौं सितछत्रध्वजोपेताय नमः, 71. ॐ सौं सितांगाय नमः, 72. ॐ सौं श्वेतमाल्याम्बरधराय नमः, 73. ॐ सौं सितभूषणाय नमः, 74. ॐ सौं श्वेतगन्धानुलेपनाय नमः, 75. ॐ सौं दशाश्वरथसंरूढाय नमः, 76. ॐ सौं दण्डपाणये नमः, 77. ॐ सौं धनुर्धराय नमः, 78. ॐ सौं कुन्दपुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः, 79. ॐ सौं नयनाब्जसमुद्‌भवाय नमः, 80. ॐ सौं आत्रेयगोत्रजाय नमः, 81. ॐ सौं अत्यन्तविनयाय नमः, 82. ॐ सौं प्रियदायकाय नमः, 83. ॐ सौं करुणारससम्पूर्णाय नमः, 84. ॐ सौं कर्कटकप्रभवे नमः, 85. ॐ सौं चतुरस्त्रसमारूढाय नमः, 86. ॐ सौं अव्ययाय नमः, 87. ॐ सौं चतुराय नमः, 88. ॐ सौं दिव्यवाहनाय नमः, 89. ॐ सौं विवस्वन्मण्डलागेयवासाय नमः, 90. ॐ सौं

वसुसमृद्धिदाय नमः, 91. ॐ सौं महेश्वरप्रियाय नमः, 92. ॐ सौं दान्ताय नमः, 93. ॐ सौं मेरुगोत्रप्रदक्षिणाय नमः, 94. ॐ सौं ग्रहमण्डलमध्यस्थाय नमः, 95. ॐ सौं ग्रसितार्काय नमः, 96. ॐ सौं द्विजराजाय नमः, 97. ॐ सौं द्युतितकाय नमः, 98. ॐ सौं द्विभुजाय नमः, 99. ॐ सौं द्विजपूजिताय नमः, 100. ॐ सौं औदुम्बरनगावासाय नमः, 101. ॐ सौं उदाराय नमः, 102. ॐ सौं रोहिणीपतये नमः, 103. ॐ सौं नित्योदयाय नमः, 104. ॐ सौं मुनिस्तुताय नमः, 105. ॐ सौं नित्यानन्दफलप्रदाय नमः, 106. ॐ सौं सकलाह्लादनकराय नमः, 107. ॐ सौं पलाशसमिधप्रियाय नमः, 108. ॐ सौं चन्द्रमसे नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

चन्द्र ध्यान

कपूर्रस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिम्बाननम्।
मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः।।
हस्ताभ्यां कुमुदं वरं विदधतं नीलालकोद्भासितम्।
स्वस्याङ्कस्थमृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।।

कर्पूर और स्फटिक मणि के समान जिनका निर्मल वर्ण है, जिनका मुखमण्डल पूर्णेन्दूबिम्ब के समान है, मुक्ता की मालाओं से अलंकृत शरीर के द्वारा जो अन्धकार का उन्मूलन करने वाले हैं, जो श्यामल केशराशि के कारण अतिशय सुशोभित हैं, जो अपने हाथों में कमल का पुष्प एवं वरमुद्रा धारण किये हुए हैं, मृगलांछन को अपनी गोद में आश्रय देना जिनका गुण माना गया है, इस प्रकार के सुधासमुद्ररूप चन्द्रमा का मैं सदा ध्यान करता हूँ।

चंद्राष्टाविंशतिनाम स्तोत्रम्

विनियोग

अस्य श्री चंद्राष्टाविंशति नामस्तोत्रस्य गौतम ऋषिः सोमो देवता, विराट् छन्दः चंद्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

चंद्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान् मुच्यते नोत्र संशय॥१॥
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरजः कुमुदप्रियः।
लोक प्रिय शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः॥२॥
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकारः।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरौषधीशः कलानिधिः॥३॥
जैवात्रको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भवः।
नक्षत्रनायकः शम्भुशिरश्चूडामणिर्विभुः॥४॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत्।
प्रत्यहं क्रियासंयुक्तस्तस्यपीडा विनश्यति॥५॥
फलश्रुति– **तुहिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्व समीहितम्।**
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चंद्रबलं सदा॥६॥

चन्द्र देव

यह प्राणी के शरीर पर प्रभाव डालते हैं। यह श्वेत रंग, मछली, जल, तरल पदार्थ, नर्स, दासी, भोजन, चाँदी एवं बैंगनी रंग के पदार्थों पर अपना प्रभाव रखते हैं। यह संवेदन, आंतरिक इच्छा, उतावलापन, भावना, कल्पना, सतर्कता एवं लाभांवित होने की भावना का प्रतीक हैं। यह शरीर में पेट, पाचन शक्ति, आँतें, स्तन, गर्भाशय, योनि स्थान, आँख एवं नारी के गुप्तांगों पर अपना प्रभाव डालते हैं।

चंद्र कवच

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर चंद्रमा का ध्यान करें–

सोमं चतुर्भुजः वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम्।
वासुदेवस्य नयनं, शंकरस्य च भूषणम्॥

आचमनी जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग

अस्य श्रीचंद्रकवचस्तोत्रमंत्रस्य गौतम ऋषि, अनुष्टुप छन्दः, श्रीचंद्रोदेवता, चंद्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभम्।
शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः॥१॥
चक्षुषी चंद्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः।
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबान्धवः॥२॥
पातु कण्ठं च मे सोमः स्कंधौ जैवातृकस्तथा।
करौ सुधाकरः पातुः वक्षः पातु निशाकरः॥३॥
हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शंकरभूषणः।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः॥४॥
उरु तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा।
अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ विधुः सदा॥५॥
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चंद्रोऽखिलं वपु॥६॥

फलश्रुति

एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति-मुक्ति प्रदायकम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥७॥

मंगल

मंगल देवता की चार भुजाएँ हैं। इनके शरीर के रोयें लाल हैं। इनके हाथों में क्रम से अभयमुद्रा, त्रिशूल, गदा और वरमुद्रा है। इन्होंने लाल मालाएँ और लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं। इनके सिर पर स्वर्णमुकुट है तथा ये मेख (भेड़) के वाहन पर सवार हैं।

वाराह कल्प की बात है। जब हिरण्यकशिपु का बड़ा भाई हिरण्याक्ष पृथ्वी को चुरा ले गया था और पृथ्वी देवी के उद्धार के लिये भगवान ने वाराहावतार लिया तथा हिरण्याक्ष को मारकर पृथ्वी देवी का उद्धार किया, उस समय भगवान को देखकर पृथ्वी देवी अत्यन्त प्रसन्न हुईं और उनके मन में भगवान को पतिरूप में वरण करने की इच्छा हुई। वाराहावतार के समय भगवान का तेज करोड़ों सूर्यों की तरह असह्य था। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी की कामना पूर्ण करने के लिए भगवान अपने मनोरम रूप में आ गये और पृथ्वी देवी के साथ दिव्य एक वर्ष तक एकान्त में रहे। उस समय पृथ्वी देवी

और भगवान के संयोग से मंगल ग्रह की उत्पत्ति हुई (ब्रह्मवैवर्तपुराण 2/8/21 से 43)। इस प्रकार विभिन्न कल्पों में मंगल ग्रह की उत्पत्ति की विभिन्न कथाएँ हैं। पूजा के प्रयोग में इन्हें भरद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेशपुराण में आई है।

मंगल ग्रह की पूजा की पुराणों में बड़ी महिमा बताई गई है। यह प्रसन्न होकर मनुष्य की हर प्रकार की इच्छा पूर्ण करते हैं। भविष्यपुराण के अनुसार मंगल व्रत में ताम्र पत्र पर भौमयन्त्र लिखकर तथा मंगल की सुवर्णमयी प्रतिमा की प्रतिष्ठा कर पूजा करने का विधान है। मंगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। यह अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्रगति से न चलें तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को डेढ़ वर्ष में पार करते हैं।

मंगल ग्रह की शांति के लिए शिव-उपासना तथा प्रवाल रत्न धारण करने का विधान है। दान में ताँबा, सोना, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केशर, कस्तूरी, लाल बृषभ, मसूर की दाल तथा भूमि देना चाहिये। इनकी महादशा सात वर्षों तक रहती है। यह मेष तथा वृश्चिक राशि के स्वामी हैं। इनकी शांति के लिये वैदिक मंत्र- ***'ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाꣳ रेताꣳ सि जिन्वति।'*** पौराणिक मंत्र- ***'धरणीगर्भसम्भूतं विद्युतकान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।'*** बीज मंत्र- ***'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः'*** तथा सामान्य मंत्र- ***'ॐ अं अंगारकाय नमः'*** है। इनमें से किसी का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिये। कुल जप संख्या 10000 तथा समय प्रातः आठ बजे है।

श्रीमंगलअष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ मं महीसुताय नमः, 2. ॐ मं महाभागाय नमः, 3. ॐ मं मंगलाय नमः, 4. ॐ मं मंगलप्रदाय नमः, 5. ॐ मं महावीराय नमः, 6. ॐ मं महाशूराय नमः, 7. ॐ मं महाबलपराक्रमाय नमः, 8. ॐ मं महारौद्राय नमः, 9. ॐ मं महाभद्राय नमः, 10. ॐ मं माननीयाय नमः, 11. ॐ मं दयाकराय नमः, 12. ॐ मं मानदाय नमः, 13. ॐ मं अमर्षणाय नमः, 14. ॐ मं क्रूराय नमः, 15. ॐ मं तापपापविवर्जिताय नमः, 16. ॐ मं सुप्रतीपाय नमः, 17. ॐ मं सुताम्राक्षाय नमः, 18. ॐ मं सुब्रह्मण्याय नमः, 19. ॐ मं धर्मात्मजाय नमः, 20. ॐ मं वक्तृसभादिगमनाय नमः, 21. ॐ मं वरेण्याय नमः, 22. ॐ मं वरदाय नमः, 23. ॐ मं सुखिने नमः, 24. ॐ मं वीरभद्राय नमः, 25. ॐ मं विरूपाक्षाय नमः, 26. ॐ मं विदूरस्थाय नमः, 27. ॐ मं विभावसवे नमः, 28. ॐ मं नक्षत्रचक्रसञ्चारिणे नमः, 29. ॐ मं नक्षत्ररूपाय नमः, 30. ॐ मं क्षात्रवर्जिताय नमः, 31. ॐ मं क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ताय नमः, 32. ॐ मं क्षमायुक्ताय नमः, 33. ॐ मं विचक्षणाय नमः, 34. ॐ मं अक्षीणफलदाय नमः, 35. ॐ मं चक्षुर्गोचराय नमः, 36. ॐ मं शुभलक्षणाय नमः, 37. ॐ मं वीतरागाय नमः, 38. ॐ मं वीतभयाय नमः, 39. ॐ मं वीचिविरावाय नमः, 40. ॐ मं विश्वकारणाय नमः, 41. ॐ मं नक्षत्रराशिसञ्चारिणे नमः, 42. ॐ मं नानाभयनिकृन्तनाय नमः, 43. ॐ मं कमनीयाय नमः, 44. ॐ मं दयासाराय नमः, 45. ॐ मं कनत्कनकभूषणाय नमः, 46. ॐ मं भयत्राणाय नमः, 47. ॐ

मं भव्यफलदाय नमः, 48. ॐ मं भक्ताभयवरप्रदाय नमः, 49. ॐ मं शत्रुहन्त्रे नमः, 50. ॐ मं शमोपेताय नमः, 51. ॐ मं शरणागतपोषणाय नमः, 52. ॐ मं साहसिने नमः, 53. ॐ मं सद्‌गुणाध्यक्षाय नमः, 54. ॐ मं साधवे नमः, 55. ॐ मं समरदुर्जयाय नमः, 56. ॐ मं दुष्टदूराय नमः, 57. ॐ मं शिष्टपूज्याय नमः, 58. ॐ मं सर्वकष्टनिवारणाय नमः, 59. ॐ मं दुश्चेष्टावारकाय नमः, 60. ॐ मं दुःखभञ्जनाय नमः, 61. ॐ मं दुर्धर्षाय नमः, 62. ॐ मं हरये नमः, 63. ॐ मं दुःस्वप्नहन्त्रे नमः, 64. ॐ मं दुर्धराय नमः, 65. ॐ मं दुष्टगर्वविमोचनाय नमः, 66. ॐ मं भरद्वाजकुलोद्भूताय नमः, 67. ॐ मं भूसुताय नमः, 68. ॐ मं भव्यभूषणाय नमः, 69. ॐ मं रक्ताम्बराय नमः, 70. ॐ मं रक्तवपुषे नमः, 71. ॐ मं भक्तपालनतत्पराय नमः, 72. ॐ मं चतुर्भुजाय नमः, 73. ॐ मं गदाधारिणे नमः, 74. ॐ मं मेषवाहनाय नमः, 75. ॐ मं अमिताशनाय नमः, 76. ॐ मं शक्तिशूलधराय नमः, 77. ॐ मं शक्ताय नमः, 78. ॐ मं शस्त्रविद्याविशारदाय नमः, 79. ॐ मं तार्किकाय नमः, 80. ॐ मं तामसाधाराय नमः, 81. ॐ मं तपस्विने नमः, 82. ॐ मं ताम्रलोचनाय नमः, 83. ॐ मं तप्तकाञ्चनसंकाशाय नमः, 84. ॐ मं रक्तकिंजुल्कसन्निभाय नमः, 85. ॐ मं गोत्राधिदेवाय नमः, 86. ॐ मं गोमध्यचराय नमः, 87. ॐ मं गुणविभूषणाय नमः, 88. ॐ मं असृजै नमः, 89. ॐ मं अंगारकाय नमः, 90. ॐ मं अवन्तिदेशाधीशाय नमः, 91. ॐ मं जनार्दनाय नमः, 92. ॐ मं सूर्ययाम्यप्रदेशस्थाय नमः, 93. ॐ मं यौवनाय नमः, 94. ॐ मं याम्यदिङ्‌मुखाय नमः, 95.

ॐ मं लोहितांगाय नमः, 96. ॐ मं त्रिदशाधिपसन्नुताय नमः, 97. ॐ मं शुचये नमः, 98. ॐ मं शुचिकराय नमः, 99. ॐ मं शूराय नमः, 100. ॐ मं शुचिवश्याय नमः, 101. ॐ मं शुभावहाय नमः, 102. ॐ मं मेषवृश्चिकराशीशाय नमः, 103. ॐ मं मेधाविने नमः, 104. ॐ मं मितभाषणाय नमः, 105. ॐ मं सुखप्रदाय नमः, 106. ॐ मं सुरूपाक्षाय नमः, 107. ॐ मं सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः, 108. ॐ मं सर्वरोगापहारकाय नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

मंगल ध्यान

एह्ये हि भगवन्भैम अङ्गारक महाप्रभो।।
त्वयि सर्व समायातं त्रैलोक्यं सचराचरम्।।
भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्ति दुरासदम्।।
रूद्ररूपमनिर्देश्चवक्त्रचं रुधिरप्रभम्।।

मंगल देव

यह इन्द्रिय ज्ञान तथा आनन्देच्छा का प्रतीक हैं। यह उत्तेजक एवं संवेदनशील हैं। यह इच्छित वस्तु को प्राप्त करने की लालसा जागृत करके शरीर का संचालन करते हैं। अतः यह इच्छाओं का प्रतीक हैं। आत्मिक दृष्टिकोण से साहस, दृढ़ता, आत्मविश्वास, क्रोध, प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति तथा अहंकार को दर्शाते हैं। शरीर के अवयवों में सिर, खोपड़ी, नासिका एवं गालों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके प्रबल होने से रोग, घाव, खरोंच, ऑपरेशन, रक्तदोष, दर्द आदि का जीवन में अनुभव होता है।

मंगल स्तोत्रम्

मङ्गलोभूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मविरोधकः।।१।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानांकृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।२।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्त्ताऽपहर्ता च सर्वकालफलप्रदः।।३।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।४।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।५।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यै तत्पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।६।।
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सलं।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमपाशु विनाशय।।७।।
ऋणरोगादि दारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेश मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।८।।
अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।९।।
विरिञ्चिशक्र विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।।१०।।
पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्र्य दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।११।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो युवाध्रुवम्।।१२।।

मंगल कवच

शिखायां मंगलः पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि॥
ललाटे ऋणहर्ता व चक्षुषीश्च धनप्रदः॥
स्थिरासनः श्रोत्रयोश्च महाकायश्च नासिके॥
आस्यदन्तोष्ट जिह्वासु सर्वकर्माविरोधकः॥
हनौ मे लोहितः पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके॥
स्कन्धयोरूभयो रक्षेत्सामगानां कृपाकरः॥
धरात्मजो भुजौ पातु कुजो रक्षेत्करद्वयम्॥
भौमो मे हृदयं पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्ये त्वङ्गारकोऽवतु॥
उरू मम यमो रखेज्जान रोगापहारकः॥
जंघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ता च गुल्फयोः॥
पादांगुष्टा च गुल्फौ च सर्वकामफलप्रदः॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूलं रक्षेच्च दक्षिणे॥
पश्चिमे च धनुः पातु उत्तरे च शरस्तथा॥
उर्ध्वं पिण्डाननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम॥
एवं न्यस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमिनन्दनम्॥

मंगल गायत्री

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताधीमहि।
तन्नौ भौमः प्रचोदयात्॥

बुध

बुध पीले रंग की पुष्पमाला तथा पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके शरीर की कांति कनेर के पुष्प की जैसी है। वे अपने चारों हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, गदा और वरमुद्रा धारण किये रहते हैं। वे अपने सिर पर सोने का मुकुट तथा गले में सुन्दर माला धारण करते हैं। उनका वाहन सिंह है।

अथर्ववेद के अनुसार बुध के पिता का नाम चन्द्रमा और माता का नाम तारा है। ब्रह्माजी ने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्भागवत के अनुसार ये सभी शास्त्रों में पारंगत तथा चन्द्रमा के समान ही कान्तिमान हैं। (मत्स्यपुराण 24/1-2) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्मा जी ने इन्हें भूतल का स्वमी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारत की एक कथा के अनुसार इनकी विद्या-बुद्धि से प्रभावित होकर महाराज मनु ने अपनी गुणवती कन्या इला का इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुध के संयोग से महाराज पुरूरवा की उत्पत्ति हुई। इस तरह चन्द्रवंश का विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्भागवत (4/22-23) के अनुसार बुध ग्रह की स्थिति शुक्र से दो लाख योजन ऊपर है। बुध ग्रह प्रायः मंगल ही करते हैं, किन्तु जब ये सूर्य की गति का उल्लंघन करते हैं, तब आँधी-पानी और सूखे का भय प्राप्त होता है।

मत्स्यपुराण के अनुसार, बुध ग्रह का वर्ण कनेर पुष्प की तरह पीला है। बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है। इसमें वायु के

समान वेग वाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम– श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है।

बुध ग्रह की शांति के लिये प्रत्ये अमावस्या को व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को हाथी दाँत, हरा वस्त्र, मूँगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस भोजन तथा घृत का दान करना चाहिये।

नवग्रह मंडल में इनकी पूजा ईशानकोण में की जाती है। इनका प्रतीक वाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र– ***'ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।'*** पौराणिक मंत्र– ***'पियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।'*** बीज मंत्र– ***'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'*** तथा सामान्य मंत्र– ***'ॐ बुं बुधाय नमः'*** है। इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिये। जप की कुल संख्या 9000 तथा समय 5 घड़ी दिन है।

बुध देव

यह आध्यात्मिक शक्ति प्रदाता हैं। आंतरिक प्रेरणा, निर्णय लेने की क्षमता, वस्तु परीक्षण, शक्ति, विवेक शक्ति को प्रभावित व संचालित करते हैं। यह स्मरण शक्ति, खण्डन-मण्डन शक्ति, सूक्ष्म कलाओं की उत्पादन शक्ति, तर्क-वितर्क क्षमता प्रदान करते हैं। मस्तिष्क, स्नायु तंत्र, जिह्वा, वाणी, विवेक तथा कलात्मक कार्यों का संचालन करते हैं।

श्रीबुधअष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ बुं बुधाय नमः, 2. ॐ बुं बुधार्चिताय नमः, 3. ॐ बुं सौम्याय नमः, 4. ॐ बुं दृढफलाय नमः, 5. ॐ बुं श्रुतिजालप्रबोधकाय नमः, 6. ॐ बुं सत्यवासाय नमः, 7. ॐ बुं सत्यवचसे नमः, 8. ॐ बुं श्रेयसांपतये नमः, 9. ॐ बुं अव्ययाय नमः, 10. ॐ बुं शशिसुताय नमः, 11. ॐ बुं सोमजाय नमः, 12. ॐ बुं सुखदाय नमः, 13. ॐ बुं श्रीमते नमः, 14. ॐ बुं सोमवंशप्रदीपकाय नमः, 15. ॐ बुं वेदविदे नमः, 16. ॐ बुं वेदतत्त्वज्ञाय नमः, 17. ॐ बुं वेदान्तज्ञानभास्वराय नमः, 18. ॐ बुं विद्याविचक्षणविभवे नमः, 19. ॐ बुं विद्वत्पतिकराय नमः, 20. ॐ बुं ऋजवे नमः, 21. ॐ बुं विश्वानुकूलसञ्चारिणे नमः, 22. ॐ बुं विशेषविनयान्विताय नमः, 23. ॐ बुं विविधागमसारज्ञाय नमः, 24. ॐ बुं वीर्यवते नमः, 25. ॐ बुं विगतज्वराय नमः, 26. ॐ बुं त्रिवर्गफलदाय नमः, 27. ॐ बुं अनन्ताय नमः, 28. ॐ बुं त्रिदशाधिपपूजिताय नमः, 29. ॐ बुं बुद्धिमते नमः, 30. ॐ बुं बहुशास्त्रज्ञाय नमः, 31. ॐ बुं बलिने नमः, 32. ॐ बुं बन्धविमोचनाय नमः, 33. ॐ बुं बोधनाय नमः, 34. ॐ बुं वक्रातिवक्रगमनाय नमः, 35. ॐ बुं वासवाय नमः, 36. ॐ बुं वसुधाधिपाय नमः, 37. ॐ बुं प्रसादवदनाय नमः, 38. ॐ बुं वन्द्याय नमः, 39. ॐ बुं वरेण्याय नमः, 40. ॐ बुं वागविलक्षणाय नमः, 41. ॐ बुं सत्यवते नमः, 42. ॐ बुं

सत्यसन्धाय नमः, 43. ॐ बुं सत्यसंकल्पाय नमः, 44. ॐ बुं सदाधाराय नमः, 45. ॐ बुं सर्वरोगप्रशमनाय नमः, 46. ॐ बुं सर्वमृत्युनिवारकाय नमः, 47. ॐ बुं वाणिज्यनिपुणाय नमः, 48. ॐ बुं वश्याय नमः, 49. ॐ बुं वातांगिने नमः, 50. ॐ बुं वातरोगहृते नमः, 51. ॐ बुं स्थूलाय नमः, 52. ॐ बुं स्थैर्यगुणाध्यक्षाय नमः, 53. ॐ बुं स्थूलसूक्ष्मादिकारणाय नमः, 54. ॐ बुं अप्रकाशाय नमः, 55. ॐ बुं प्रकाशात्मने नमः, 56. ॐ बुं धनाय नमः, 57. ॐ बुं गगनभूषणाय नमः, 58. ॐ बुं विधिस्तुताय नमः, 59. ॐ बुं विशालाक्षाय नमः, 60. ॐ बुं विद्वज्जनमनोहराय नमः, 61. ॐ बुं चारुशीलाय नमः, 62. ॐ बुं स्वप्रकाशाय नमः, 63. ॐ बुं चपलाय नमः, 64. ॐ बुं जितेन्द्रियाय नमः, 65. ॐ बुं उदङ्मुखाय नमः, 66. ॐ बुं मखासक्ताय नमः, 67. ॐ बुं मगधाधिपतये नमः, 68. ॐ बुं हरये नमः, 69. ॐ बुं सौम्यवत्सरसञ्जाताय नमः, 70. ॐ बुं सोमप्रियकराय नमः, 71. ॐ बुं सुफलप्रदाय नमः, 72. ॐ बुं सुखिने नमः, 73. ॐ बुं सिंहादिरूढाय नमः, 74. ॐ बुं सर्वज्ञाय नमः, 75. ॐ बुं शिखिवर्णाय नमः, 76. ॐ बुं शिवंकराय नमः, 77. ॐ बुं पीताम्बराय नमः, 78. ॐ बुं पीतवपुषे नमः, 79. ॐ बुं खड्गचर्मधराय नमः, 80. ॐ बुं कार्यकर्त्रे नमः, 81. ॐ बुं कलुषहराय नमः, 82. ॐ बुं आत्रेयगोत्रजाय नमः, 83. ॐ बुं अत्यन्तविनयाय नमः, 84. ॐ बुं विश्वपावनाय नमः, 85. ॐ बुं चाम्पेयपुष्पसंकाशाय नमः, 86. ॐ बुं चारणाय नमः, 87. ॐ बुं चारुभूषणाय नमः, 88.

ॐ बुं वीतरागाय नमः, 89. ॐ बुं वीतभयाय नमः, 90. ॐ बुं विशुद्धाय नमः, 91. ॐ बुं कनकप्रभाय नमः, 92. ॐ बुं बन्धुप्रियाय नमः, 93. ॐ बुं बन्धमुक्ताय नमः, 94. ॐ बुं बाणमण्डलसंश्रिताय नमः, 95. ॐ बुं अर्केशाननिवासस्थाय नमः, 96. ॐ बुं तर्कशास्त्रविशारदाय नमः, 97. ॐ बुं प्रशान्ताय नमः, 98. ॐ बुं प्रीतिसंयुक्ताय नमः, 99. ॐ बुं प्रियकृते नमः, 100. ॐ बुं प्रियभाषणाय नमः, 101. ॐ बुं मेधाविने नमः, 102. ॐ बुं माधवासक्ताय नमः, 103. ॐ बुं मिथुनाधिपतये नमः, 104. ॐ बुं सुधिये नमः, 105. ॐ बुं कन्याराशिप्रियाय नमः, 106. ॐ बुं कामप्रदाय नमः, 107. ॐ बुं घनफलाशाय नमः, 108. ॐ बुं रोहिणेयाय नमः।

बुधमंगलस्तोत्रम्

सौम्योदङ्मुख-पीतवर्ण-मगधश्चात्रेय-गोत्रोद्भवो,
बाणेशानदिशः सुदृक्छनिभृगुः शत्रुः सदा शीतगुः।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट-चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो,
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्॥

एकान्त जगह में, क्षीण प्रकाश या अंधकार में ध्यान करना चाहिए। कपड़े ढीले रखने चाहिएं, मुँह बंद करके नाक से ही श्वास-प्रश्वास निकलें। ध्यान के समय इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करने की चेष्टा करनी चाहिए। आँखें बन्द कर (मानस) दृष्टि, हृदय में अर्थात् अपने अन्तर के भी अन्तर में रखनी चाहिए और सोचना चाहिए कि इष्ट वहीं विराज रहे हैं।

बुधवार व्रत कथा

एक बार एक व्यक्ति, जिसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, वह अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। कुछ दिन वहाँ रहने के पश्चात उसने सास-ससुर से जाने के लिए आज्ञा माँगी। किंतु सास-ससुर ने कहा, आज बुधवार का दिन है। आज के दिन गमन नहीं करते। उसने किसी की बात नहीं सुनी और अपनी पत्नी को विदा करवाकर अपने नगर के लिए चल पड़ा। मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी। वह व्यक्ति गाड़ी से उतरकर पात्र लेकर जल की खोज में चल पड़ा। कुछ देर पश्चात वह वापस आया तो उसने देखा कि उसके जैसी शक्ल-सूरत, वेशभूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के पास बैठा है। यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया। वह क्रोध में बोला, 'यह मेरी पत्नी है। मैं अभी अपनी ससुराल से इसे विदा कराकर ला रहा हूँ।' दोनों में परस्पर झगड़ा होने लगा। तभी उधर से राज्य के सैनिक जा रहे थे, उन्होंने सारा हाल सुनकर स्त्री से पूछा- 'तुम्हारा पति इन दोनों में से कौन है?' उसकी पत्नी चुप थी क्योंकि दोनों व्यक्ति बिल्कुल एक जैसे थे और उसमें से असली की पहचान पाना मुश्किल था। असली व्यक्ति ने ईश्वर से प्रार्थना की, 'हे प्रभु! यह कैसी माया है कि पराया व्यक्ति मेरी पत्नी को अपना बना रहा है।' तभी आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख, बुधवार के दिन तूने गमन किया, तूने किसी की बात नहीं मानी, अतः बुध देव की माया से तुझे इस कष्ट का सामना करना पड़ा है।

उसने भगवान बुधदेव से क्षमा याचना की। मनुष्य के रूप में आए

भगवान बुधदेव अंतर्ध्यान हो गए। वह व्यक्ति खुशी-खुशी अपनी पत्नी को लेकर अपने घर आया। इसके पश्चात् पति-पत्नी दोनों नियमपूर्वक बुधवर का उपवास करने लगे। इस प्रकार जो कोई भी बुधवार का उपवास रखता है तथा श्रद्धापूर्वक व्रत कथा को सुनता है, उसे बुधवार के दिन गमन करने को दोष नहीं लगता तथा उसे सर्वप्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

बुधपञ्चविंशतिनामावली स्तोत्रम्

विनियोग- अस्य श्री बुधपञ्चविंशन्निनाम स्तोत्र मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप् छन्दः, बुधो देवताः, बुधपीडानिवारणार्थे जपे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः॥
चंद्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः।
पञ्चविंशति नामानि बुधस्यै तानि यः पठेत्॥
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडाः सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोंगतम्॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

बुधकवचम्

विनियोग

अस्य श्री बुधकवचस्तोत्र मंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टप् छन्दः, बुधो देवता, बुधपीड़ाशमनार्थ जपे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपनः॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम॥
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजा पुस्तकभूषणः।
वक्षः पातु वरांगश्च हृदयं रोहिणीसुतः॥
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः।
जानुनी रोहिणेयञ्च पातु जंघेऽखिलप्रदः॥
पादौ मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः।
एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपापप्रणाशनम्॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःख निवारणम्।
आयुरारोग्यधनदे पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥

॥ इति श्री ब्रह्मवैवर्तकपुराणेबुधकवचं संपूर्णम् ॥

बुध अनिष्ट फल शमनार्थ दान पदार्थाः

बुधप्रतिदान- पन्ना, सोना, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरा वस्त्र, पचरंग के फूल, हाथी दांत, कपूर, शस्त्र और फल।

बुध स्तोत्र

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवदुःखापहर्ता।
धर्मस्य धृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च॥१॥
ॐ प्रियंगुकलिकश्यामं रूपेणप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं नमामि शशिनन्दनम्॥२॥
सोमसूनुर्बुधश्चैव सौम्यः सौम्यगुणान्वितः।
सदा शांत सदा क्षेमो नमामि शशिनन्दनम्॥३॥
उत्पातरूपी जगतां चंद्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥४॥
शिरीषपुष्पसंकाशः कपिशीलो युवा पुनः।
सोमपुत्रो बुधश्चैव सदा शांतिं प्रयच्छतु॥५॥
श्यामः शिरालश्चकलाविधिज्ञः कौतूहली कोमलवाग्विलासी।
राजोऽधिको मध्यमरूपधृक् स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः॥६॥
अहो चंद्रसुत श्रीमान् मगधेषु समुद्भवन्।
अत्रिगोत्रश्चतुर्बाहुः खड्गखेटकधारकः॥७॥
गदाधरो नृसिंहस्थः स्वर्णनाभसमन्वितः।
केतकीद्रुमपत्राभ इंद्रविष्णुप्रपूजितः॥८॥
ज्ञेयो बुधः पंडितश्च रौहिणेयश्च सोमज।
कुमारो राजपुत्रश्च सुसेव्यः शशिनन्दनः॥९॥
गुरुपुत्रश्च तारेयो विबुधो बोधनस्तथा।
सौम्यः सौम्यगुणोपेतो रत्नदानफलप्रदः॥१०॥
एतानि बुधनामानि प्रातःकाले पठेन्नरः।
बुद्धिर्विवृद्धितां याति बुधपीडा न जायते॥११॥

॥ इति बुधस्तोत्रं समाप्तम् ॥

बृहस्पति

देवगुरु बृहस्पति पीत वर्ण के हैं। उनके सिर पर स्वर्णमुकुट तथा गले में सुन्दर माला है। वे पीत वस्त्र धारण करते हैं तथा कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र और वरदमुद्रा सुशोभित है।

महाभारत आदि पर्व एवं तै. सं. के अनुसार बृहस्पति महर्षि अंगिरा के पुत्र तथा देवताओं के पुरोहित हैं। ये अपने प्रकृष्ट ज्ञान से देवताओं को उनका यज्ञ-भाग प्राप्त करा देते हैं। असुर यज्ञ में विघ्न डालकर देवताओं को भूखों मार देना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में देवगुरु बृहस्पति रक्षोघ्न मन्त्रों का प्रयोग कर देवताओं की रक्षा करते हैं तथा दैत्यों को दूर भगा देते हैं।

इन्हें देवताओं का आचार्यत्व और ग्रहत्व कैसे प्राप्त हुआ, इसका विस्तृत वर्णन स्कन्दपुराण में प्राप्त होता है। बृहस्पति ने प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान शंकर की कठोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें देवगुरु का पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करने का वर दिया।

बृहस्पति एक-एक राशि पर एक-एक वर्ष रहते हैं। वक्रगति होने पर इसमें अन्तर आ जाता है। (श्रीमद्भागवत 5/22/15)

ऋग्वेद के अनुसार बृहस्पति अत्यन्त सुन्दर हैं। इनका आवास स्वर्णनिर्मित है। ये विश्व के लिये वरणीय हैं। ये अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें सम्पत्ति तथा बुद्धि से सम्पन्न कर देते हैं, उन्हें सन्मार्ग पर चलाते हैं और विपत्ति में उनकी रक्षा भी करते हैं। शरणागतवत्सलता का गुण इनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। देवगुरु

बृहस्पति का वर्ण पीत है। इनका वाहन रथ है, जो सोने का बना है तथा अत्यन्त सुखकर और सूर्य के समान भास्वर है। इसमें वायु के समान वेग वाले पीले रंग के आठ घोड़े जुते रहते हैं। ऋग्वेद के अनुसार इनका आयुध सुवर्णनिर्मित दण्ड है।

देवगुरु बृहस्पति की एक पत्नी का नाम शुभा और दूसरी का तारा है। शुभा से सात कन्याएँ उत्पन्न हुईं- भानुमती, राका, अर्चिष्मती, महामती, महिष्मती, सिनीवाली और हविष्मती। तारा से सात पुत्र तथा एक कन्या उत्पन्न हुई। उनकी तसरी पत्नी ममता से भरद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। बृहस्पति के अधिदेवता इन्द्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

बृहस्पति धनु और मीन राशि के स्वामी हैं। इनकी महादशा सोलह वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिये प्रत्येक अमावस्या को तथा बृहस्पति को व्रत करना चाहिये और पीला पुखराज धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को दान में पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि तथा छत्र देना चाहिये। इनकी शांति के लिये वैदिक मंत्र- ***'ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्ज्नेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।'*** पौराणिक मंत्र- ***'देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।'*** बीज मंत्र- ***'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'*** तथा सामान्य मंत्र- ***'ॐ बृं बृहस्पतये नमः'*** है। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य निश्चित संख्या में जप करना चाहिये। जप का समय संध्याकाल तथा जप संख्या 19000 है।

श्री गुरु बृहस्पति देव चालीसा

दोहा

गाउँ नित मंगलाचरण, गणपति मेरे नाथ।
करो कृपा माँ शारदा, जीव रहें मेरे साथ॥

वीर देव भक्तन हितकारी। सुर नर मुनिजन के उद्धारी।।
वाचस्पति सुर गुरू पुरोहित। कमलासन बृहस्पति विराजित।।
स्वर्ण दंड वर मुद्रा धारी। पात्र माल शोभित भुज चारी।।
है स्वर्णिम आवास तुम्हारा। पीत वदन देवों में न्यारा।।
स्वर्णारथ प्रभु अति ही सुखकर। पाण्डुर वर्ण अश्व चले जुतकर।।
स्वर्ण मुकुट पीताम्बर धारी। अंगिरा नन्दन गगन विहारी।।
अज अगम्य अविनाशी स्वामी। अनन्त वरिष्ठ सर्वज्ञ नामी।।
श्रीमत् धर्म रूप धन दाता। शरणागत सर्वापद् त्राता।।
पुष्य नाथ ब्रह्म विद्या विशारद। गुण बरनै सुर गण मुनि नारद।।
कठिन तप प्रभास में कीन्हा। शंकर प्रसन्न हो वर दीन्हा।।
देव गुरू ग्रह पति कहाओ। निर्मल मति वाचस्पति पाओ।।
असुर बने सुर यज्ञ विनाशक। करें सुरक्षित मन्त्र से सुर मख।।
बनकर देवों के उपकारी। दैत्य विनाशे विघ्न निवारी।।
बृहस्पति धनु मीन के नायक। लोक द्विज नय बुद्धि प्रदायक।।
मावस वीर वार व्रत धारे। आश्रय दें सर्व पाप निवारें।।
पीताम्बर हल्दी पीला अन्न। शक्कर मधु पुखराज भू-लवण।।
पुस्तक स्वर्ण अश्व दान कर। देवें जीव अनेक सुखद वर।।
विद्या सिन्धु स्वयं कहलाते। भक्तों को सन्मार्ग चलाते।।
इन्द्र किया अपमान अकारण। विश्वरूपा गुरू किये धारण।।

बढ़ा कष्ट सब राज गँवाया। दानव ध्वज स्वर्ग लहराया।।
क्षमा माँग फिर स्तुति कीन्ही। विपदा सकल जीव हर लीन्ही।।
बढ़ा देवों में मान तुम्हारा। कीरति गावें सकल संसारा।।
दोष बिसार शरण में लीजै। उर आनन्द प्रभु भर दीजै।।
सद्‌गुरू तेरी प्रबल माया। तेरा पार ना कोई पाया।।
सब तीर्थ गुरू चरण समाये। समझे विरला बहु सुख पाये।।
अमृत वारिद सदृश वाणी। हिरदय धार भए ब्रह्मज्ञानी।।
शोभा मुख से बरनि न जाई। देवें भक्ति जीव मनचाही।।
जो अनाथ ना कोइ सहाई। लख चौरासी पार कराहीं।।
प्रथम गुरू का पूजन कीजे। गुरू चरणामृत रुच-रुच पीजै।।
मृग तृष्णा गुरू दरशन राखी। मिले मुक्ति हो सब जग साखी।।
चरणन रज सत्‌गुरु सिर धारे। पा गए दास पदारथ सारे।।
जग के कार विहारण दौड़े। गुरू मोह के बन्धन तोड़े।।
पारस माणिक नीलम रत्ना। गुरूवर सम्मुख व्यर्थ कल्पना।।
कर निष्काम भक्ति गुरुवर की। सुन्दर छवि धारे सुखकर की।।
गुरू पताका जो फहरायें। मन क्रम वचन ध्यान से ध्यायें।।
काल रूप यम नहीं सतावें। निश्चय गुरुवर पिंड छुड़ावें।।
भूत पिशाच निकट ना आवें। रोगी रोग मुक्त हो जावें।।
संतती हीन संस्तुति गावें। मंगल होय पुत्र धन पावें।।
'मनु' गुण गा हिरदय हर्षावे। स्नेह जीव चरणों में लावे।।
जीव चालीसा पढ़े पढ़ावे। पूर्ण शांति को पल में पावें।।

दोहा

मात पिता के संग मनु, गुरू चरण में लीन।
किरपा सब पर कीजिये, जान जगत में दीन॥

श्रीबृहस्पतिअष्टोत्तरशतानामावलिः

1. ॐ वृं गुरवे नमः, 2. ॐ वृं गुणवराय नमः, 3. ॐ वृं गोप्त्रे नमः, 4. ॐ वृं गोचराय नमः, 5. ॐ वृं गोपतिप्रियाय नमः, 6. ॐ वृं गुणिने नमः, 7. ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः, 8. ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः, 9. ॐ वृं अव्ययाय नमः, 10. ॐ वृं जेत्रे नमः, 11. ॐ वृं जयन्ताय नमः, 12. ॐ वृं जयदाय नमः, 13. ॐ वृं जीवाय नमः, 14. ॐ वृं अनन्ताय नमः, 15. ॐ वृं जयावहाय नमः, 16. ॐ वृं आंगीरसाय नमः, 17. ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः, 18. ॐ वृं विविक्ताय नमः, 19. ॐ वृं अध्वरकृत्पराय नमः, 20. ॐ वृं वाचस्पतये नमः, 21. ॐ वृं वशिने नमः, 22. ॐ वृं वश्याय नमः, 23. ॐ वृं वरिष्ठाय नमः, 24. ॐ वृं वाग्विचक्षणाय नमः, 25. ॐ वृं चित्तशुद्धिकराय नमः, 26. ॐ वृं श्रीमते नमः, 27. ॐ वृं चैत्राय नमः, 28. ॐ वृं चित्रशिखण्डिजाय नमः, 29. ॐ वृं बृहद्रथाय नमः, 30. ॐ वृं बृहद्भानवे नमः, 31. ॐ वृं वृहस्पतये नमः, 32. ॐ वृं अभीष्टदाय नमः, 33. ॐ वृं सुराचार्याय नमः, 34. ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः, 35. ॐ वृं सुरकार्यहितकराय नमः, 36. ॐ वृं गीर्वाणपोषकाय नमः, 37. ॐ वृं धन्याय नमः, 38. ॐ वृं गीष्पतये नमः, 39. ॐ वृं गिरीशाय नमः, 40. ॐ वृं अनघाय नमः, 41. ॐ वृं धीवराय नमः, 42. ॐ वृं दिव्यभूषणाय नमः, 43. ॐ वृं देवपूजिताय नमः, 44. ॐ वृं धनुर्धराय नमः, 45. ॐ वृं दैत्यहन्त्रे नमः, 46. ॐ वृं दयासाराय नमः, 47. ॐ वृं दयाकराय नमः, 48. ॐ वृं दारिद्र्यविनाशनाय नमः, 49. ॐ वृं धन्याय नमः, 50. ॐ वृं धिषणाय नमः, 51. ॐ वृं

दक्षिणायनसम्भवाय नमः, 52. ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः, 53. ॐ वृं देवाय नमः, 54. ॐ वृं धनुर्बाणधराय नमः, 55. ॐ वृं हरये नमः, 56. ॐ वृं अंगीरसाब्दसञ्जाताय नमः, 57. ॐ वृं अंगिरसकुलोद्भवाय नमः, 58. ॐ वृं सिन्धुदेशाधिपाय नमः, 59. ॐ वृं धीमते नमः, 60. ॐ वृं स्वर्णकायाय नमः, 61. ॐ वृं चर्तुर्भुजाय नमः, 62. ॐ वृं हेमांगदाय नमः, 63. ॐ वृं हेमवपुषे नमः, 64. ॐ वृं हेमभूषणभूषिताय नमः, 65. ॐ वृं पुष्यनाथाय नमः, 66. ॐ वृं पुष्यरागमणिमण्डनमण्डिताय नमः, 67. ॐ वृं काशपुष्पसमानाभाय नमः, 68. ॐ वृं कलिदोषनिवारकाय नमः, 69. ॐ वृं इन्द्रादिदेवदेवेशाय नमः, 70. ॐ वृं देवताऽभीष्टदायकाय नमः, 71. ॐ वृं असमानबलाय नमः, 72. ॐ वृं सत्त्वगुणसम्पद्भिभावसवे नमः, 73. ॐ वृं भूसुराभीष्टफलदाय नमः, 74. ॐ वृं भूरियशसे नमः, 75. ॐ वृं पुण्यविवर्धनाय नमः, 76. ॐ वृं धर्मरूपाय नमः, 77. ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः, 78. ॐ वृं धनदाय नमः, 79. ॐ वृं धर्मपालनाय नमः, 80. ॐ वृं सर्ववेदतार्थतत्त्वज्ञाय नमः, 81. ॐ वृं सर्वापद्विनिवारकाय नमः, 82. ॐ वृं सर्वपापप्रशमनाय नमः, 83. ॐ वृं स्वमतानुगतामराय नमः, 84. ॐ वृं ऋग्वेदपारगाय नमः, 85. ॐ वृं सदानन्दाय नमः, 86. ॐ वृं सत्यसन्धाय नमः, 87. ॐ वृं सत्यसंकल्पमानसाय नमः, 88. ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः, 89. ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः, 90. ॐ वृं सर्ववेदान्तविदुषे नमः, 91. ॐ वृं ब्रह्मपुत्राय नमः, 92. ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः, 93. ॐ वृं ब्रह्मविद्याविशारदाय नमः, 94. ॐ वृं समानाधिकनिर्मुक्ताय नमः, 95. ॐ वृं सर्वलोकवशंकराय नमः, 96. ॐ वृं

सुरासुरगन्धर्ववन्दिताय नमः, 97. ॐ वृं सत्यभाषणाय नमः, 98. ॐ वृं सुराचार्याय नमः, 99. ॐ वृं दयावते नमः, 100. ॐ वृं शुभलक्षणाय नमः, 101. ॐ वृं लोकत्रयगुरवे नमः, 102. ॐ वृं श्रीमते नमः, 103. ॐ वृं सर्वगाय नमः, 104. ॐ वृं सर्वतोविभवे नमः, 105. ॐ वृं सर्वेशाय नमः, 106. ॐ वृं सर्वदातुष्टाय नमः, 107. ॐ वृं सर्वगाय नमः, 108. ॐ वृं सर्वपूजिताय नमः।

बृहस्पति देव

यह रक्त प्रदान करते हैं एवं रक्त के अन्दर रहने वाले कीटाणुओं को चेतना प्रदान करते हैं। स्मृति, अनुभव एवं प्रत्यभिज्ञा से संबंधित है। शरीर में पैर, जंघा, जिगर, पाचन क्रिया, रक्त एवं नसों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शरीर द्वारा आनन्द एवं भावनात्मक अनुभूतियों को प्रदान करने वाले गुणों के प्रतीक हैं। उदारता, स्वभाव, सौन्दर्य प्रेम, शक्ति, भक्ति एवं व्यवस्था, बुद्धि, ज्ञान, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र विचार शक्ति आदि प्रदान करने वाले हैं।

मानसपूजा में देवविग्रह या अन्य किसी भी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती। देवता की मूर्ति का हृदय में ध्यान करके तथा मन ही मन उपर्युक्त द्रव्यादि की कल्पना करके उन्हें निवेदन करने से ही मानसपूजा सम्पन्न हो जाती है। इस पूजा में ब्राह्मण, चाण्डाल, अस्पृश्य सब का ही अधिकार है। इस पूजा में शुचि-अशुचि, देश-काल, विधि-निषेध आदि की कोई बला नहीं। केवल मनः-संयोग की आवश्यकता है।

बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र

अष्टाक्षर (रत्नमंजूषायाम्) ब्रूं बृहस्पतये नमः।
(मंत्र महोदधौ)- बृं बृहस्पते नमः॥

ध्यानम्

रत्नस्वर्णाशुकादीन् निजकरकमलाद् दक्षिणादथितरम्।
वासो-राशौ निधायापरममरबृहस्पतिं पीतवस्त्रादि भूषणम्॥
तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसंघ स्तुतपादपंकजम्।
मेघा-निधिं मत्स्यगतं द्विबाहुं बृहस्पतिं भजे मानस-पंकजाहम्॥

दशाक्षर मंत्र – **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।**

द्वादशाक्षर मंत्र – **ॐ जां जीं जूं सं बृहस्पतये स्वाहा।**

अथ अष्टाक्षर मंत्र विधानम् – **'बृं बृहस्पतये नमः'।**

विनियोग– **ॐ अस्य बृहस्पति मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। आचार्यो देवता। बृं बीजम्। नमः शक्ति। ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास– **ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि॥१॥ अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे॥२॥ सुराचार्यो देवतायै नमः हृदि॥३॥ बृं बीजाय नमः॥४॥ नमः शक्तये नमः पादयोः॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे॥६॥**

करन्यास– **ॐ ब्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ब्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ब्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ब्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ब्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ब्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।**

हृदयादि षडंगन्यास– **ॐ ब्रां हृदयाय नमः। ॐ ब्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ब्रूं शिखायै वषट्। ॐ ब्रैं कवचाय हुं। ॐ ब्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रः अस्त्राय फट्।**

श्री बृहस्पति नामावलिस्तोत्रम्

विनियोग– **ॐ अस्य श्रीबृहस्पति स्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीबृहस्पतिः देवता, श्रीबृहस्पति प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास– **शिरसि गृत्समद ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप छन्दसे नमः। हृदि श्रीबृहस्पति देवतायै नमः। सर्वांगे श्रीबृहस्पति प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।**

मूल स्तोत्र पाठ

बृहस्पतिर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः।
वागीशो धिष्णो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा॥
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः।
दयाकरः सौम्य मूर्तिः सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः॥
लोकपूज्यो लोकबृहस्पतिर्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापतिश्चांगिरसो वेद वैध पितामहः॥

॥ फलश्रुति ॥

भक्तया बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान स भवेन्नरः॥
जीवेद् वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्चति तत्क्षणात्।
यः पूजयेद् बृहस्पति दिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः॥
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीडा शांतिर्भवेद् गुरोः॥

॥ श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पति स्तोत्रम् ॥

श्री बृहस्पति कवचम्

विनियोग– **ॐ अस्य श्रीबृहस्पति कवचस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, देवबृहस्पति श्रीबृहस्पतिः देवता, गं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं बृहस्पति पीडा शमनार्थे पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास– **शिरसि ईश्वर ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप छन्दसे नमः। हृदि श्रीबृहस्पति देवतायै नमः। गुह्ये गं बीजाय नमः। पादयोः श्री शक्तये नमः। नाभौ क्लीं कीलकाय नमः। सर्वांगे बृहस्पति पीडा शमनार्थे पाठे विनियोगाय।**

अंगन्यास	**करन्यास**	**षडंगन्यास**
गां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
गूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
गैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
गः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्

अभीष्ट फलदं देवं सर्वज्ञं सुर पूजितम्।
अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम्॥

॥ कवचपाठ ॥

बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे बृहस्पतिः।
कर्णौ सुरबृहस्पतिः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः॥
जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कंठे मे देवता बृहस्पतिः॥

भुजावाङ्गिरसः पातु करौ पातु शुभप्रद।
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः॥
नाभिं देवबृहस्पतिः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः।
कटिं पातु जगद्वन्द्यः उरू मे पातु वाक्पतिः॥
जानु जंघे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा।
अन्यानि यानि चाङ्गनि रक्षेन् मे सर्वतोगुरुः॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

॥ इतिश्रीब्रह्ममालये बृहस्पति कवचम् ॥

मेरे अनुभव

सन् 2008, अप्रैल मास, स्थल शनि मंदिर बक्करवाला, दिल्ली। ये 9 दिन का पाठ था। प्रथम दिवस 53000 मंत्र का जप करके सोने जा रहा था। तख्त पर लेटकर जप करते हुए निद्रा आने लगी, कुछ बेचैनी सी महसूस हुई, करवट लेकर फिर निद्रा में जाने लगा, परन्तु बेचैनी बढ़ गई। अब चारों तरफ उठकर देखने लगा फिर कुछ नहीं। आँखों में निद्रा भरी हुई थी, जो गहरा गई, तभी अचानक वह हुआ जो कल्पनातीत था। किसी ने मेरे दोनों पैरों को उठा लिया, भय भी महसूस हुआ। मैंने शनिदेव को पुकारा। एक क्षण समय भी गँवाए बिना मेरे इष्ट हाथ में अंकुश लेकर प्रकट हुए, उस महाप्रेत को अंकुश से पीटकर पता नहीं किन निम्न लोकों में गिराया होगा। इस अकिंचन पर करूणानिधान ने करूणा कर बचा लिया और अपने चरण कमल प्रदान किए। आज इस अपूर्व सुख को आपके साथ साझा कर रहा हूँ।

जय शनि देव

अथ बृहस्पतिस्तोत्राणि:

1.

क्रौं शकादिदेवैः परिपजितोऽसि त्वं जीवभूतो जगतो हिताय।
ददाति यो निर्मलषास्त्रबुद्धिं स वाक्पतिर्मे वितनोतु लक्ष्मीम्॥१॥
पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवबृहस्पतिः प्रशांतः।
दधाति दंडं च कमण्डलुं च तथाक्षसूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम्॥२॥
बृहस्पति सुराचार्य्यो दयावाञ्छुभलक्षणः।
लोकत्रयबृहस्पतिः श्रीमान्सर्वज्ञः सर्वतो विभु॥३॥
सर्वेशः सर्वदा तुष्टः श्रेयस्कृत्सर्वपूजितः।
अक्रोधनो मुनिश्रेष्ठो नीतिकर्ता महाबलः॥४॥
विश्वात्मा विश्वकर्ता च विश्वयोनिरयोनिजः।
भूर्भुवो धनदाता च भर्ता जीवो जगत्पतिः॥५॥
पंचविंशतिनामानि पुण्यानि शुभदानि च।
नन्दगोपालपुत्राय भगवत्कीर्तितानि च॥६॥
प्रातरुत्थाय यो नित्यं कीर्तियेत्तु समाहितः।
विप्रस्तस्यापि भगवान् प्रीतः स च न संशयः॥७॥

2. तंत्रांतरेऽपि

देवानां च ऋषीणां च बृहस्पतिं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥१॥
अमराणां बुद्धिदाता वाग्मी यः करुणाकरः।
यावन्तो ये च मुनयः पुरुषाकारपीतभाः॥२॥
बृहस्पतिः सुराचार्य्यो ग्रीष्मपतिधिष्णो बृहस्पतिः।
जीव अंगिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः॥३॥

सकलसुरविनेता ब्रह्मतुल्यप्रभाव
स्त्रिदशपतिकरैर्यो घृष्टपादारविंदः।
विमलमतिविकासी सर्वमांगल्यहेतुर्दिशतु
मम विभूति वाक्पतिः सुप्रभावः॥४॥
बृहस्पतिमहं नौमि बृहस्पतिं देवेन्द्रपूजितम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं सर्वकामफलप्रदम्॥५॥
सर्वसंशयच्छेत्तारं वेत्तारं सर्वकर्मणाम्।
परब्रह्ममयं नित्यं परमानंदरूपिणम्॥६॥
सर्वसिद्धिप्रदं देवं शरण्यं भक्तवत्सलम्।
वरेण्यं वरदं शान्तं त्रिदशार्तिहरं परम्॥७॥
लंबकूर्च सुवर्णाभं स्वर्णयज्ञेपवीतिनम्।
पीतवस्त्रपरिधानं मार्तण्डतिलकान्वितम्॥८॥
चन्दनाबृहस्पति कर्पूरैः सुगंधैः शतपत्रकैः।
संपूज्य ध्यायते यस्तु भवत्या सुदृढया नरैः॥९॥
धनं धान्यं जपं सौख्यं सौभाग्यं नृपमान्यता।
भवन्ति सर्वदा तेषां त्वत्प्रसादात्सुरैश्वर॥१०॥
रोगाग्रिसर्पचौराद्यास्तेषां न प्रभवन्ति हि।
सुस्थानस्थोऽधि देशे च ध्यानात्सर्वार्थसाधकः॥११॥

3. पुनः तंत्रांतरेऽपि

नमः सुरेन्द्रवंद्याय देवाचार्याय ते नमः।
नमोऽत्वनंतसामर्थ्य वेदसिद्धान्त पारग॥१॥
सदानंद नमस्तेऽस्तु नमः पीडहराय च।
नमो वाचस्पते तुभ्यं नमस्ते पतिवाससे॥२॥
नमोऽद्वितीयरूपाय लंबकूर्चाय ते नमः।

नमः प्रहृष्टनेत्राय विप्राणां पतये नमः॥३॥
नमो भार्गवशिष्याय विपन्नहितकारक।
नमस्ते सुरसैन्याय विपन्नत्राणहेतवे॥४॥
विषमस्थस्तथा नृणां सर्वकष्टप्रणाशनम्।
प्रत्यहं तु पठेद्यौ वै तस्य कामफलप्रदम्॥५॥

बृहस्पतिमंत्रो– यथा 'ॐ नमोऽस्तु बृहस्पतये पीतवस्त्राभरणाय यज्ञोपवीत मालाधराय ममार्चनं गृहाण कुरु कुरु स्वाहा।' इति चत्वारिंशदृदशाक्षर मंत्रः।

॥ इति बृहस्पति स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

मेरे अनुभव

सन् 2006। नवम्बर महीना। गाँव में ही एक मित्र से शनि पुस्तक छपवाने के लिए कुछ रुपये उधार माँगे, पर उसने कहा कि अभी मुझे तनख्वाह नहीं मिली, 20 तारीख को मिलेगी, परन्तु तनख्वाह उसको मिल चुकी थी। अगले दिन सुबह मैं भाई की किरयाना दुकान पर बैठा हुआ था। सुबह 6 बजे की बात है। मित्र आया और रुपये मेरे हाथ में देकर बोला– भाई शनिदेव को क्यों भेजा? तब उसने स्वप्न बताया, 'रात्रि को भगवान ने मेरी चादर खींच ली, बंद आँखों से ही मैंने कहा, कौन? उन्होंने कहा, शनिदेव! तुमने मेरे भक्त को रुपये के लिए मना क्यों किया? तुम्हें तो तनख्वाह मिल चुकी है। मेरी आँखें खुल गई। मैं आश्चर्यचकित चारों तरफ देखने लगा, कुछ दिखाई नहीं दिया, परन्तु शरीर के अन्दर शक्तिपात हो रहा था, कुछ देर बाद मैं पुनः सो गया। स्वप्न में 8-8 फीट के देवमानव व देवमाताएँ दिखाई दीं, जिनमें से एक माता ने मेरे ऊपर लौटे से जल छिड़क दिया।' निद्रा से जागने के बाद मैं सीधा आपके पास आ गया, इतना सुनकर मैं भावुक हृदय से शनि प्रेम पाकर अविरल अश्रुधारा बहाने लगा।

श्री बृहस्पति कवचम्

शास्त्रों में लिखा है कि बृहस्पति दोषशांति हेतु बृहस्पति एवं ब्राह्मणों की सेवा वन्दना करें। अत: आप अपने बृहस्पति का स्त्रीबृहस्पति या पुरुषबृहस्पति हो, उनके हेतु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

बृहस्पतिदेव ध्यानम्

सहस्त्रदल पङ्कजे सकलशीत रश्मिप्रभम्।
वराभय कराम्बुजं विलगंधपुष्पाम्बरम्॥
प्रसन्नवदनेक्षणं सकल देवतारूपिणम्।
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधान पूर्वं बृहस्पतिम्॥

ध्यान करने के बाद पादुका मंत्र का उच्चारण कर सम्प्रदाय परम्परा से बृहस्पतिदेव के नाम का उच्चारण कर पूजा करें।

पादुका मंत्र

ऐं ह्रीं श्रीं हमखफ्रें ह स क्ष म ल व र यूं सहखफ्रें सहक्षमलवरयीं हसौः श्री अमुकानन्दनाथ श्री अमुकीदेव्याम्बा श्रीबृहस्पतिपादुकां पूजयामि नमः।

उक्त पादुकामंत्र से पूजन और जप करने के बाद वाग्भवबीज 'ऐं' से तीन बार प्रणायाम कर कुलगुरुओं का स्मरण करें, यथा–

॥ कुलगुरु स्मरणम् ॥

प्रह्लादानंदनाथख्यं सनकानंदनाथकम्।
कुमारानंदनाथख्यं वशिष्ठानंदनाथकम्॥
क्रोधानंद सुखानन्दौ ध्यानानन्दं ततः परम्।
बोधानंद ततश्चैव ध्यायेत कुलमुखोपरि॥
महारस रसोल्लास-हृदयाघूर्णलोचनाः।
कुलालिङ्गन-सम्भिन्नचूर्णिताशेष-तामसाः॥

कुलशिष्यै परिवृताः पूर्णान्तः करणोद्यताः।
वराभयकराः सर्वे कुलतंत्रार्थवादिनः॥

इसके बाद बृहस्पति मंत्र वाग्भव बीज 'ऐं' का 108 बार जप करें। तदंतर बृहस्पति स्तोत्र और कवच का पाठ कर संयतचित्त होकर बृहस्पतिदेव को नमस्कार करें।

॥ कवच पाठ ॥

देव्युवाच

भूतनाथ महादेव! कवचं तस्य मे वद।
बृहस्पतिदेवस्य देवेश! साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणः॥

ईश्वरोवाच

अथातो कथयामीशे कवचं मोक्षदायकम्।
यस्य ज्ञानं विना देवि! न सिद्धिर्न च सद्गतिः॥
ब्रह्मादयोऽपि गिरिजे सर्वत्र याजिनः स्मृताः।
अस्य प्रसादात् सकला वेदागमपुरः सराः॥
कवचस्यास्य देवेशि! ऋषिर्विष्णुरुदाहृतः।
छन्दो विराड् देवता च बृहस्पतिदेवः स्वयं शिवः॥
चतुर्वर्गज्ञानमार्गे विनियोगः प्रकीर्तितः।
सहस्त्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो बृहस्पतिः॥
वामोरुस्थित-शक्तिर्यः सर्वत्र परिरक्षतु।
परमाख्यो गुरु पातु शिरसं नभ वल्लभे॥
परापराख्यो नासां मे परमेष्ठी मुखं सदा।
कंठं मम सदा पातु प्रह्लादानंद नाथकः॥
बाहू द्वौ सनकानंद कुमारानंदनाथकः।
वशिष्ठानंदनाथश्च हृदयं पातु सर्वदा॥

क्रोधानंदः कटिं पातु सुखानंद पदं मम।
ध्यानानंदश्च सर्वाङ्गे बोधानंदश्च कानने॥
सर्वत्र गुरवः पातु सर्व ईश्वररूपिणः।
इति ते कथितं भद्रे! कवचं परमं शिवे॥
भक्तिहीने दुराचारे दत्वैतं मृत्युमाप्नुयात्।
अस्यैव पठनाद् देवि! धारणात् श्रवणात् प्रिये॥
जायते मंत्रसिद्धिश्च किमन्यत् कथयामि ते।
कंठे वा दक्षिणे बाहौ शिखायां वीरवन्दिते॥
धारणान्नशयेत् पापम् अङ्गयां कल्मषं यथा।
इदं कवचमज्ञात्वा यदि मंत्र जपेत् प्रिये॥
तत् सर्वं निष्फलं कृत्वा बृहस्पतिर्याति सुनिश्चितम्।
शिवे रुष्टे बृहस्पतिस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥

॥ इति कङ्कालमालिनी तंत्रे बृहस्पति कवचम् सम्पूर्णम् ॥

गुरु ध्यान

रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलं दक्षात्किरन्तं करादासीनं
विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम्।
पीतालेपन पुष्प वस्त्र मखिलालङ्कारं संभूषितं
विद्यासागरपारगं सुरबृहस्पति वन्दे सुवर्णप्रभम्॥

मन के स्थिर होते ही वायु स्थिर हो जाती है। कुम्भक हो जाता है। पुनः वायु स्थिर होने से ही मन एकाग्र हो जाता है। भक्ति-प्रेम से भी कुम्भक अपने आप होने लगता है, वायु स्थिर हो जाती है। व्याकुलतापूर्वक अन्तःकरण से स्मरण-मनन करनें और मंत्र जपने से प्राणायाम अपने आप ही होने लगता है।

श्रीबृहस्पति स्तोत्रम्

श्रीमहादेव्युवाच

गुरोरर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा।
विशेषस्तु महादेव! तद् वदस्व दयानिधे॥

श्रीमहादेव उवाच

जीवात्मनं परमात्मनं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम्।
उत्कलकाशीगङ्गामरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१॥
प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम्।
भर्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥२॥
वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकचरितम्।
साधोः सेवां बहुसुखभुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥३॥
विष्णो भक्तिं पूजनरक्तिं वैष्णवसेवां मातरि भक्तिम्।
विष्णोरिव पितृसेवनयोगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥४॥
प्रत्याहारं चेन्द्रियजनं प्राणायां न्यासविधानम्।
इष्टे पूजा जप तपभक्तिर्न न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥५॥
काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा।
श्रीमातङ्गी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥६॥
मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरसिंहरूपं वामनचरितम्।
नरनारायण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥७॥
श्री भृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम्।
अवतारा दश वेदविधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥८॥
गङ्गा काशी काञ्ची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा।
यमुना रेवा पुष्करतीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥९॥

गोकुलगमनं गोपुररमणं श्रीवृन्दावन-मधुपुर रटनम्।
एतत् सर्वं सुन्दरि! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१०॥
तुलसीसेवा हरिहरभक्तिः गङ्गासागर-सङ्गममुक्ति।
किमपरमधिकं कृष्णेभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥११॥
एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽपि च धन्यम्।
ब्रह्माण्डान्तर्यद्-यद् ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्॥१२॥

।। बृहद्विज्ञान परमेश्वरतंत्रे त्रिपुराशिवसंवादे श्रीगुरोः स्तोत्रम् ।।

शनि प्रार्थना

किसी दूर के परिचितों में एक ने जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। अभी वह अस्पताल में ही था, मैंने शनि भगवान से प्रार्थना की। मेरा गला अन्दर से घाव से भर गया। तीन दिन तक कुछ नहीं खा पाया, परेशान रहा। तभी एक भक्त ने प्रार्थना लिखने को कहा। बस फिर क्या था प्रार्थना लिखी गई और घाव रात्रि को ही छूमंतर हो गया। व्यक्ति भी पूर्णरूपेण ठीक हो गया। वही प्रार्थना नीचे दे रहा हूँ-

शनि कष्टों ने मुझे आ घेरा। दारिद्रय मुझको सताय रहा॥
रहे हाड़ चाम तन में केवल। मुख फिर भी गुण तेरे गाय रहा॥
कर किरपा देओ हे नाथ जी अब। चरणों में शीश नवाय रहा॥
निज भक्ति देओ जो आप मिलो। मम टेर शनि मैं सुनाय रहा॥
प्रभु पाप हो कुछ अक्षमा कीजै। मन दीप बना के जलाय रहा॥

शुक्र

दैत्यों के गुरु शुक्र का वर्ण श्वेत है। उनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा गले में माला है। वे श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र तथा वरमुद्रा सुशोभित रहती है।

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा सर्वदा बरसती रहती है। इन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। उसके बल से ये युद्ध में मरे हुए दानवों को जिला देते थे। (महाभारत आदि. 76/8)

मत्स्यपुराण के अनुसार शुक्राचार्य ने असुरों के कल्याण के लिये ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया, जैसा आज तक कोई नहीं कर सका। इस व्रत से उन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। शिव ने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्ध में देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा। भगवान शिव ने इन्हें धन का भी अध्यक्ष बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक की सारी सम्पत्तियों के स्वामी बन गये।

महाभारत आदिपर्व (78/39) के अनुसार सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य औषधियों, मंत्रों तथा रसों के भी स्वामी हैं। इनकी सामर्थ्य अद्भुत है। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरों को दे दी और स्वयं तपस्वी-जीवन ही स्वीकार किया।

ब्रह्मा जी की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, सभी अवृष्टि, कभी भय, कभी

अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं। ये ग्रह के रूप में ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते हैं। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं तथा वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शांत कर देते हैं। इनके अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। मत्स्यपुराण (94/5) के अनुसार शुक्राचार्य का वर्ण श्वेत है। इनका वाहन रथ है, उसमें अग्नि के समान आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएँ फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। शुक्र वृष और तुला राशि के स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 20 वर्ष की होती है।

शुक्र ग्रह की शांति के लिये गोपूजा करनी चाहिये तथा हीरा धारण करना चाहिये। चाँदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, चीनी, गौ तथा भूमि ब्राह्मण को दान देना चाहिये।

नवग्रह मण्डल में शुक्र का प्रतीक पूर्व में श्वेत पंचकोण है। शुक्र की प्रतिकूल दशा में इनकी अनुकूलता और प्रसन्नता हेतु वैदिक मंत्र- ***'ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥'*** पौराणिक मंत्र- ***'हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्।'*** बीज मंत्र- ***'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'*** तथा सामान्य मंत्र- ***'ॐ शुं शुक्राय नमः'*** है। इनमें से किसी एक का नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिये। कुल जप संख्या 16000 तथा जप का समय सूर्योदय काल है।

श्रीशुक्रअष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ शुं शुक्राय नमः, 2. ॐ शुं शुचये नमः, 3. ॐ शुं शुभगुणाय नमः, 4. ॐ शुं शुभदाय नमः, 5. ॐ शुं शुभलक्षणाय नमः, 6. ॐ शुं शोभनाक्षाय नमः, 7. ॐ शुं शुभ्रग्राहाय नमः, 8. ॐ शुं शुभ्रवाहाय नमः, 9. ॐ शुं शुद्धस्फटिकभास्वराय नमः, 10. ॐ शुं दीनार्तिहराय नमः, 11. ॐ शुं दैत्यगुरवे नमः, 12. ॐ शुं देवाभिनन्दिताय नमः, 13. ॐ शुं काव्यासक्ताय नमः, 14. ॐ शुं कामपालाय नमः, 15. ॐ शुं कवये नमः, 16. ॐ शुं कल्याणदायकाय नमः, 17. ॐ शुं भद्रमूर्तये नमः, 18. ॐ शुं भद्रगुणाय नमः, 19. ॐ शुं भार्गवाय नमः, 20. ॐ शुं भक्तपालनाय नमः, 21. ॐ शुं भोगदाय नमः, 22. ॐ शुं भुवनाध्यक्षाय नमः, 23. ॐ शुं

चारुशीलाय नमः, 24. ॐ शुं चारुचन्द्रनिभाननाय नमः, 25. ॐ शुं निधये नमः, 26. ॐ शुं निखिलशास्त्रज्ञाय नमः, 27. ॐ शुं नीतिविद्याधुरन्धराय नमः, 28. ॐ शुं सर्वलक्षणसम्पन्नाय नमः, 29. ॐ शुं सर्वपूजिताय नमः, 30. ॐ शुं सर्वावगुणवर्जिताय नमः, 31. ॐ शुं समानाधिकनिर्मुक्ताय नमः, 32. ॐ शुं सकलागमपारगाय नमः, 33. ॐ शुं भृगवे नमः, 34. ॐ शुं भोगकराय नमः, 35. ॐ शुं भूसुरपालनतत्पराय नमः, 36. ॐ शुं मनस्विने नमः, 37. ॐ शुं मानदाय नमः, 38. ॐ शुं मान्याय नमः, 39. ॐ शुं मायातीताय नमः, 40. ॐ शुं महाशयाय नमः, 41. ॐ शुं बलिप्रसन्नाय नमः, 42. ॐ शुं अभयदाय नमः, 43. ॐ शुं बलिने नमः, 44. ॐ शुं बलपराक्रमाय नमः, 45. ॐ शुं भवपाशपरित्यागाय नमः, 46. ॐ शुं बलिबन्धविमोचनाय नमः, 47. ॐ शुं धनाशयाय नमः, 48. ॐ शुं धनाध्यक्षाय नमः, 49. ॐ शुं कम्बुग्रीवाय नमः, 50. ॐ शुं कलाधराय नमः, 51. ॐ शुं कारुण्यरसपूर्णाय नमः, 52. ॐ शुं कल्याणगुणवर्धनाय नमः, 53. ॐ शुं श्वेताम्बराय नमः, 54. ॐ शुं श्वेतवपुषे नमः, 55. ॐ शुं चतुर्भुजसमन्विताय नमः, 56. ॐ शुं अक्षमालाधराय नमः, 57. ॐ शुं अचिन्त्याय नमः, 58. ॐ शुं अक्षीणगुणभासुराय नमः, 59. ॐ शुं नक्षत्रगणसञ्चाराय नमः, 60. ॐ शुं नयदाय नमः, 61. ॐ शुं नीतिमार्गदाय नमः, 62. ॐ शुं वर्षप्रदाय नमः, 63. ॐ शुं हृषीकेशाय नमः, 64. ॐ शुं क्लेशनाशकराय नमः, 65. ॐ शुं कवये नमः, 66. ॐ शुं चिन्तितार्थप्रदाय नमः, 67. ॐ शुं

शान्तिमते नमः, 68. ॐ शुं चित्तसमाधिकृते नमः, 69. ॐ शुं आधिव्याधिहराय नमः, 70. ॐ शुं भूरिविक्रमाय नमः, 71. ॐ शुं पुण्यदायकाय नमः, 72. ॐ शुं पुराणपुरुषाय नमः, 73. ॐ शुं पूज्याय नमः, 74. ॐ शुं पुरुहूतादिसन्नुताय नमः, 75. ॐ शुं अजेयाय नमः, 76. ॐ शुं विजितारातये नमः, 77. ॐ शुं विविधाभरणोज्जवलाय नमः, 78. ॐ शुं कुन्दपुष्पप्रतीकाशाय नमः, 79. ॐ शुं मन्दहासाय नमः, 80. ॐ शुं महामनसे नमः, 81. ॐ शुं मुक्ताफलसमानाभाय नमः, 82. ॐ शुं मुक्तिदाय नमः, 83. ॐ शुं मुनिसन्नुताय नमः, 84. ॐ शुं रत्नसिंहासनारूढाय नमः, 85. ॐ शुं रथस्थाय नमः, 86. ॐ शुं रजतप्रभाय नमः, 87. ॐ शुं सूर्यप्राग्देशसञ्चाराय नमः, 88. ॐ शुं सुरशत्रुसुहृदे नमः, 89. ॐ शुं कशये नमः, 90. ॐ शुं तुलावृषभराशीशाय नमः, 91. ॐ शुं दुर्धराय नमः, 92. ॐ शुं धर्मपालनाय नमः, 93. ॐ शुं भाग्यदाय नमः, 94. ॐ शुं भव्यचारित्राय नमः, 95. ॐ शुं भवबन्धविमोचनाय नमः, 96. ॐ शुं गौडदेशेश्वराय नमः, 97. ॐ शुं गोप्त्रे नमः, 98. ॐ शुं गुणिने नमः, 99. ॐ शुं गुणविभूषणाय नमः, 100. ॐ शुं ज्येष्ठानक्षत्रसम्भूताय नमः, 101. ॐ शुं ज्येष्ठाय नमः, 102. ॐ शुं श्रेष्ठाय नमः, 103. ॐ शुं शुचिस्थिताय नमः, 104. ॐ शुं अपवर्गप्रदाय नमः, 105. ॐ शुं अनन्ताय नमः, 106. ॐ शुं सन्तानफलदायकाय नमः, 107. ॐ शुं सर्वैश्वर्यप्रदायकाय नमः, 108. ॐ शुं सर्वगीर्वाणसन्नुताय नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

शुक्रस्तवराज:

अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप छन्दः।
शुक्रो देवता शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥
नमस्ते भार्गव श्रेष्ठ दैत्य दानव पूजितः।
वृष्टि रोध प्रकंत्रे च वृष्टि कत्रे नमो नमः॥
देवयानि पितः तुभ्यम् वेद वेदांग पारग॥
परेण तपसा शुद्धः शंकरः लोक सुन्दरः॥
प्राप्तः विद्यां जीवनाख्यां तस्मै शुक्रात्मने नमः॥
नमः तस्मै भगवते भृगु पुत्राय वेधसे॥
तारा मण्डल मध्यस्थ स्व भासा सित अम्बर॥
यस्य उदये जगत सर्वम् मंगल अर्ह भवेत् इह॥
अस्तम् यः ते हिं अरिष्टम् स्यात् तस्मै मंगल रूपिणे॥
त्रिपुरा वासिनः दैत्यान् शिव बाण प्रपीडितान॥
विद्यया अजीवयः शुक्रः नमस्ते भृगु नन्दन॥
ययाति गुरवे तुभ्यम् नमस्ते कवि नन्दन॥
बलि राज्य प्रदः जीवः तस्मै जीवात्मने नमः॥
भार्गवाय मः तुभ्यम् पूर्व गीर्वाण वन्दितः॥
जीव पुत्राय यः विद्याम् प्रादात् तस्मै नमः नमः॥
नमः शुक्राय काव्याय भृगुपुत्रायः धीमहि॥
नमः कारण रूपाय नमस्ते कारणात्मने॥
स्तवराजम् इमम् पुण्यम् भार्गवस्य महात्मनः॥
यः पठेत् श्रेणुयात् वा अपि लभते वाञ्छितम् फलम्॥
पुत्रकामः लभेत् पुत्रान् श्रीकामः लभते वियम्॥

राज्य कामः लभेत् राज्यम् स्त्री कामः स्वियम् उत्तमाम्॥
भृगुवारे प्रयत्नेन पठितव्यम् समाहितैः॥
अन्य वारे तु होरायाम् पूजयेत् भृगु नन्दनम्॥
रोगार्तः मुच्यते रोगात् भयार्तः मच्यते भयात्॥
यत्-यत् प्रार्थयते जन्तुः त5त्-तत् प्राप्नोति सर्वदा॥
प्रातःकाले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नत॥
सर्व पाप विनिर्मुक्त प्राप्नुयात् शिव सन्नि धिम्॥

नोट- सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा पूर्ण रति सुख प्राप्ति हेतु नित्य 108 पाठ करने चाहिएं।

शुक्र देव

यह सूक्ष्म मानव चेतनाओं की विचारक क्रियाओं के प्रतीक हैं। निःस्वार्थ प्रेम व वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना उत्पन्न करते हैं। इनका सम्बन्ध सुन्दर वस्तुओं, आभूषण व आनन्द प्रदान करने वाली क्रियाओं जैसे नाच, गाना, वाद्य, सजावट की वस्तुएँ, कलात्मक पदार्थ एवं भोग-उपभोग की वस्तुओं से होता है। आन्तरिक दृष्टि से स्नेह, सौन्दर्य, ज्ञान, विश्राम, मदनेच्छा, स्वच्छता, परख बुद्धि तथा कार्यक्षमता आदि से यह सम्बन्ध रखते हैं। शरीर के अवयवों में गला, गुर्दा, आकृति, वर्ण, केश (सौन्दर्यात्मक), शरीर संचालित करने वाले अंग-लिंग आदि को प्रभावित करते हैं।

शनि

शनैश्चर की शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान है। इनके सिर पर स्वर्ण मुकुट, गले में माला तथा शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गिद्ध पर सवार रहते हैं। हाथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान सूर्य तथा छाया (संवर्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्मपुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है- बचपन से ही शनि देवता भगवान श्रीकृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुँची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हें बाह्य संसार की सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गई। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसलिए उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायेगा। ध्यान टूटने पर शनिदेव ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि इनके द्वारा किसी का अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी नक्षत्र भेद कर दें तो पृथ्वी पर बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ जाये और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाये। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाते

हैं, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषाचार्यों ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का योग आ जायेगा तो प्रजा अन्न-जल के बिना तड़प-तड़पकर मर जायेगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिए महाराज दशरथ अपने रथ पर सवार होकर नक्षत्रमण्डल में पहुँचे। पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भाँति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारास्त्र संधान किया। शनि देवता महाराज दशरथ की कर्त्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर माँगने के लिये कहा। महाराज दशरथ ने वर माँगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शकट-भेदन न करें। शनिदेव ने उन्हें वर देकर संतुष्ट कर दिया।

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गिद्ध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक-एक राशि में तीस-तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुम्भ राशि के स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 19 वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिए मृत्युंजय मंत्र, नीलम-धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली गौ, जूता, कस्तूरी और सुवर्ण का दान देना चाहिये। इनके जप का वैदिक मंत्र- 'ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।' पौराणिक मंत्र- 'नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।' बीज मंत्र- 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः' तथा सामान्य मंत्र- 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' है। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्यकाल तथा कुल संख्या 23000 होनी चाहिये।

राहु

राहु का मुख भयंकर है। ये सिर पर मुकुट, गले में माला तथा शरीर पर काले रंग का वस्त्र धारण करते हैं। इनके हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, त्रिशूल और वरमुद्रा है तथा ये सिंह के आसन पर आसीन हैं। ध्यान में ऐसे ही राहु प्रशस्त माने गये हैं।

राहु की माता का नाम सिंहिका है, जो विप्रचित्ति की पत्नी तथा हिरण्यकशिपु की पुत्री थी। माता के नाम से राहु को सैंहिकेय भी कहा जाता है। राहु के सौ और भाई थे, जिनमें राहु सबसे बड़ा था। (श्रीमद्‌भागवत 6/6/36)

जिस समय समुद्रमंथन के बाद भगवान विष्णु मोहिनीरूप में देवताओं को अमृत पिला रहे थे, उसी समय राहु देवताओं का वेष बनाकर उनके बीच में आ बैठा और देवताओं के साथ उसने भी अमृत पी लिया। परन्तु तत्क्षण चन्द्रमा और सूर्य ने उसकी पोल खोल दी। अमृत पिलाते-पिलाते ही भगवान ने अपनी तीखी धारवाले सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट डाला। अमृत का संसर्ग होने से वह अमर हो गया और ब्रह्माजी ने उसे ग्रह बना दिया। (श्रीमद्‌भागवत 8/9/26)

महाभारत भीष्मपर्व (12/40) के अनुसार, राहु ग्रह मण्डलाकार होता है। ग्रहों के साथ राहु भी ब्रह्मा की सभा में बैठता है। मत्स्यपुराण (28/61) के अनुसार पृथ्वी की छाया मण्डलाकार होती है। राहु इसी छाया का भ्रमण करता है। यह छाया का अधिष्ठातृ देवता है। ऋग्वेद (5/40/5) के अनुसार असूया (सिंहिका) पुत्र राहु जब सूर्य और चन्द्रमा को तप से आच्छन्न कर लेता है, तब इतना अंधेरा छा

जाता है कि लोग अपने स्थान को भी नहीं पहचान पाते। ग्रह बनने के बाद भी राहु वैर-भाव से पूर्णिमा को चन्द्रमा और अमावस्या को सूर्य पर आक्रमण करता है। इसे ग्रहण या राहु पराग कहते हैं। मत्स्यपुराण के अनुसार, राहु का रथ अन्धकाररूप है। इसे कवच आदि से सजाये हुए काले रंग के आठ घोड़े खींचते हैं। राहु के अधिदेवता काल तथा प्रत्यधिदेवता सूर्य हैं। नवग्रहमण्डल में इसका प्रतीक नैर्ऋत्य-कोण में काला ध्वज है।

राहु की महादशा 18 वर्ष की होती है। अपवादस्वरूप कुछ परिस्थितियों को छोड़कर यह क्लेशकारी ही सिद्ध होता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यदि कुण्डली में राहु की स्थिति प्रतिकूल या अशुभ है तो यह अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधियाँ उत्पन्न करता है। कार्यसिद्धि में बाधा उत्पन्न करने वाला तथा दुर्घटनाओं का यह जनक माना जाता है।

राहु की शांति के लिये मृत्युंजय-जप तथा पिरोजा धारण करना श्रेयस्कर है। इसके लिये अभ्रक, लोहा, तिल, नीला वस्त्र, ताम्रपात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, तेल, कम्बल, घोड़ा तथा खड्ग का दान करना चाहिये। इसके जप का वैदिक मंत्र- ***'ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।'*** पौराणिक मंत्र- ***'अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।'*** बीज मंत्र- ***'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः'*** तथा सामान्य मंत्र- ***'ॐ रां राहवे नमः'।*** इसमें से किसी एक का निश्चित संख्या में नित्य जप करना चाहिए। जप का समय रात्रि तथा कुल संख्या 18000 है।

श्रीराहुअष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ रां राहवे नमः, 2. ॐ रां सैंहिकेयाय नमः, 3. ॐ रां विदुतुन्दाय नमः, 4. ॐ रां सुरशत्रवे नमः, 5. ॐ रां तमसे नमः, 6. ॐ रां प्रणये नमः, 7. ॐ रां गार्ग्यानानाय नमः, 8. ॐ रां सुरागवे नमः, 9. ॐ रां नीलजीमूतसंकाशाय नमः, 10. ॐ रां चतुर्भुजाय नमः, 11. ॐ रां खड्गखेटकधारिणे नमः, 12. ॐ रां वरदायकहस्ताय नमः, 13. ॐ रां शूलायुधाय नमः, 14. ॐ रां मेघवर्णाय नमः, 15. ॐ रां कृष्णध्वजपताकवते नमः, 16. ॐ रां दक्षिणाशामुखस्थाय नमः, 17. ॐ रां तीक्ष्णदंष्ट्राकराय नमः, 18. ॐ रां शूर्पाकारासनस्थाय नमः, 19. ॐ रां गोमेदाभरणप्रियाय नमः, 20. ॐ रां माषप्रियाय नमः, 21. ॐ रां काश्यपर्षिनन्दनाय नमः, 22. ॐ रां

भुजगेश्वराय नमः, 23. ॐ रां उल्कापातयित्रे नमः, 24. ॐ रां शूलनिधिपाय नमः, 25. ॐ रां कृष्णसर्पराज्ञे नमः, 26. ॐ रां वृषत्वराव्रतास्याय नमः, 27. ॐ रां अर्धशरीराय नमः, 28. ॐ रां जाड्यप्रदाय नमः, 29. ॐ रां रवीन्दुभीकराय नमः, 30. ॐ रां छायास्वरूपिणे नमः, 31. ॐ रां काठिनांगाय नमः, 32. ॐ रां द्विषचक्रभेदकाय नमः, 33. ॐ रां करालास्याय नमः, 34. ॐ रां भयंकराय नमः, 35. ॐ रां क्रूरकर्मणे नमः, 36. ॐ रां तमोरूपाय नमः, 37. ॐ रां श्यामात्मने नमः, 38. ॐ रां नीललोहिताय नमः, 39. ॐ रां किरीटिने नमः, 40. ॐ रां नीलवसनाय नमः, 41. ॐ रां शनिसामन्तवर्त्मगाय नमः, 42. ॐ रां चाण्डालवर्णाय नमः, 43. ॐ रां आत्मर्क्षभवाय नमः, 44. ॐ रां मेषभवाय नमः, 45. ॐ रां शनिवत्फलदाय नमः, 46. ॐ रां शूलाय नमः, 47. ॐ रां अपसव्यगतये नमः, 48. ॐ रां उपरागकराय नमः, 49. ॐ रां सूर्येन्दुच्छविह्लादकराय नमः, 50. ॐ रां नीलपुष्पविहाराय नमः, 51. ॐ रां ग्रहश्रेष्ठाय नमः, 52. ॐ रां अष्टमग्रहाय नमः, 53. ॐ रां कबन्धमात्रदेहाय नमः, 54. ॐ रां यातुधानकुलोद्भवाय नमः, 55. ॐ रां गोविन्दवरपात्राय नमः, 56. ॐ रां देवजातिप्रविष्टकाय नमः, 57. ॐ रां क्रूराय नमः, 58. ॐ रां घोराय नमः, 59. ॐ रां शनेर्मित्राय नमः, 60. ॐ रां शुक्रमित्राय नमः, 61. ॐ रां अगोचराय नमः, 62. ॐ रां मौनये नमः, 63. ॐ रां गंगास्नानदात्रे नमः, 64. ॐ रां स्वगृहेभूबलाढ्याय नमः, 65. ॐ रां स्वगृहेऽन्यबलहृते नमः, 66. ॐ रां मातामहकारकाय नमः, 67. ॐ रां

चन्द्रयुतचाण्डालजन्मसूचकाय नमः, 68. ॐ रां जन्मसिंहाय नमः, 69. ॐ रां राज्यदात्रे नमः, 70. ॐ रां महाकायाय नमः, 71. ॐ रां जन्मकर्त्रे नमः, 72. ॐ रां राज्यधात्रे नमः, 73. ॐ रां मत्तकाज्ञानदाय नमः, 74. ॐ रां जन्मकान्याराज्यदात्रे नमः, 75. ॐ रां जन्महानिदाय नमः, 76. ॐ रां नवमेपित्ररोगाय नमः, 77. ॐ रां पञ्चमेशोकदायकाय नमः, 78. ॐ रां द्यूनेकलत्रहन्त्रे नमः, 79. ॐ रां सप्तमेकलहप्रदाय नमः, 80. ॐ रां षष्ठेवित्तदात्रे नमः, 81. ॐ रां चतुर्थेवैरदात्रे नमः, 82. ॐ रां नवमेपापदात्रे नमः, 83. ॐ रां दशमेशोकदात्रे नमः, 84. ॐ रां आदौयशःप्रदात्रे नमः, 85. ॐ रां अन्तेवैरप्रदात्रे नमः, 86. ॐ रां कलात्मने नमः, 87. ॐ रां गोचराचराय नमः, 88. ॐ रां धने ककुत्प्रदाय नमः, 89. ॐ रां पञ्चमेदृषद्शृंगदाय नमः, 90. ॐ रां स्वर्भानवे नमः, 91. ॐ रां बलिने नमः, 92. ॐ रां महासौख्यप्रदात्रे नमः, 93. ॐ रां चन्द्रवैरिणे नमः, 94. ॐ रां शाश्वताय नमः, 95. ॐ रां सूरशत्रवे नमः, 96. ॐ रां पापग्रहाय नमः, 97. ॐ रां पूज्यकाय नमः, 98. ॐ रां पाठीरपुरनाथाय नमः, 99. ॐ रां पैठीनसकुलोद्भवाय नमः, 100. ॐ रां भक्तरक्षाय नमः, 101. ॐ रां राहुमूर्तये नमः, 102. ॐ रां सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः, 103. ॐ रां दीर्घाय नमः, 104. ॐ रां कृष्णाय नमः, 105. ॐ रां अशिरसे नमः, 106. ॐ रां विष्णुनेत्रारये नमः, 107. ॐ रां देवाय नमः, 108. ॐ रां दानवाय नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

केतु

केतु की दो भुजाएँ हैं। वे अपने सिर पर मुकुट तथा शरीर पर काला वस्त्र धारण करते हैं। उनका शरीर धूम्रवर्ण का है तथा मुख विकृत है। वे अपने एक हाथ में गदा और दूसरे में वरमुद्रा धारण किये रहते हैं तथा नित्य गिद्ध पर समासीन हैं।

भगवान विष्णु के चक्र से कटने पर सिर राहु कहलाया और धड़ केतु के नाम से प्रसिद्ध हुआ। केतु राहु का ही कबन्ध है। राहु के साथ केतु भी ग्रह बन गया। मत्स्यपुराण के अनुसार केतु बहुत-से हैं, उनमें धूमकेतु प्रधान है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार, यह छायाग्रह है। व्यक्ति के जीवन-क्षेत्र तथा समस्त सृष्टि को यह प्रभावित करता है। आकाश-मण्डल में इसका प्रभाव वायव्यकोण में माना गया है। कुछ विद्वानों के मतानुसार राहु की अपेक्षा केतु विशेष सौम्य तथा व्यक्ति के लिये हितकारी है। कुछ विशेष परिस्थितियों में यह व्यक्ति को यश के शिखर पर पहुँचा देता है। केतु का मण्डल ध्वजाकार माना गया है। कदाचित् यही कारण है कि यह आकाश में लहराती ध्वजा के समान दिखाई देता है। इसका माप केवल छः अंगुल है।

यद्यपि राहु-केतु का मूल शरीर एक था और वह दानव-जाति का था। परन्तु ग्रहों में परिगणित होने के पश्चात् उनका पुनर्जन्म मानकर उनके नये गोत्र घोषित किये गये। इस आधार पर राहु पैठीनस-गोत्र तथा केतु जैमिनी-गोत्र का सदस्य माना गया। केतु का वर्ण धूम्र है। कहीं-कहीं इसका कपोत वाहन भी मिलता है।

केतु की महादशा सात वर्ष की होती है। इसके अधिदेवता

चित्रकेतु तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा है। यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली में केतु अशुभ स्थान में रहता है तो वह अनिष्टकारी हो जाता है। अनिष्टकारी केतु का प्रभाव व्यक्ति को रोगी बना देता है। इसकी प्रतिकूलता से दाद, खाज तथा कुष्ठ जैसे रोग होते हैं।

केतु की प्रसन्नता हेतु दान की जाने वाली वस्तुएँ इस प्रकार बताई गई हैं–

वैदूर्य रत्नं तैलं च तिलं कम्बलमर्पयेत्।
शस्त्रं मृगमदं नीलपुष्पं केतुग्रहाय वै॥

वैदूर्य नामक रत्न, तेल, काला तिल, कम्बल, शस्त्र, कस्तूरी तथा नीले रंग का पुष्प दान करने से केतु ग्रह साधक का कल्याण करता है। इसके लिए लहसुनिया धारण करने तथा मृत्युंजय जप का भी विधान है। नवग्रह मंडल में इसका प्रतीक वायव्यकोण में काला ध्वज है।

केतु की शांति के लिए वैदिक मंत्र– ***'ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। सुमुषद्भिरजायथाः।'*** पौराणिक मंत्र– ***'पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तमक्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।'*** बीज मंत्र– ***'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः'*** तथा सामान्य मंत्र– ***'ॐ कें केतवे नमः'*** है। इसमें किसी एक का नित्य श्रद्धापूर्वक निश्चित संख्या में जप करना चाहिये। जप का समय रात्रि तथा कुल जप संख्या 17000 है। हवन के लिये कुश का उपयोग करना चाहिये।

श्रीकेतुअष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ कें केतवे नमः, 2. ॐ कें स्थूलशिरसे नमः, 3. ॐ कें शिरोमात्राय नमः, 4. ॐ कें ध्वजाकृतये नमः, 5. ॐ कें नवग्रहयुताय नमः, 6. ॐ कें सिंहिकागर्भसम्भवाय नमः, 7. ॐ कें महाभीतिकराय नमः, 8. ॐ कें चित्रवर्णाय नमः, 9. ॐ कें पिंगलाय नमः, 10. ॐ कें फलधूम्रसंकाशाय नमः, 11. ॐ कें तीक्ष्णदंष्ट्राय नमः, 12. ॐ कें महोरगाय नमः, 13. ॐ कें रक्तनेत्राय नमः, 14. ॐ कें चित्रकारिणे नमः, 15. ॐ कें महासुराय नमः, 16. ॐ कें तीव्रकोपाय नमः, 17. ॐ कें पापकण्टकाय नमः, 18. ॐ कें क्रोधनिधये नमः, 19. ॐ कें छायाग्रहविशेषकाय नमः, 20. ॐ कें अन्त्यग्रहाय नमः, 21.

ॐ कें महाशीर्षाय नमः, 22. ॐ कें सूर्यारये नमः, 23. ॐ कें पुष्पवत्ग्रहिणे नमः, 24. ॐ कें वरहस्ताय नमः, 25. ॐ कें गदापाणये नमः, 26. ॐ कें चित्रशुभ्रधराय नमः, 27. ॐ कें चित्रध्वजपताकाय नमः, 28. ॐ कें घोराय नमः, 29. ॐ कें चित्ररथाय नमः, 30. ॐ कें शिखिने नमः, 31. ॐ कें कुलुत्थभक्षकाय नमः, 32. ॐ कें वैडूर्याभरणाय नमः, 33. ॐ कें उत्पातजनकाय नमः, 34. ॐ कें शुक्रमित्राय नमः, 35. ॐ कें मन्दसखाय नमः, 36. ॐ कें शिखिनेनापकाय नमः, 37. ॐ कें अन्तर्वेदिने नमः, 38. ॐ कें ईश्वराय नमः, 39. ॐ कें जैमिनिगोत्रजाय नमः, 40. ॐ कें चित्रगुप्तात्मने नमः, 41. ॐ कें दक्षिणमुखाय नमः, 42. ॐ कें मुकुन्दवरपात्राय नमः, 43. ॐ कें असुरकुलोद्भवाय नमः, 44. ॐ कें घनवर्णाय नमः, 45. ॐ कें लम्बदेहाय नमः, 46. ॐ कें मृत्युपुत्राय नमः, 47. ॐ कें उत्पातरूपधराय नमः, 48. ॐ कें अदृश्याय नमः, 49. ॐ कें कालाग्निसन्निभाय नमः, 50. ॐ कें नरपीठकाय नमः, 51. ॐ कें ग्रहकारिणे नमः, 52. ॐ कें सर्वोपद्रवकारकाय नमः, 53. ॐ कें चित्रप्रसूताय नमः, 54. ॐ कें अनलाय नमः, 55. ॐ कें सर्वव्याधिनाशनाय नमः, 56. ॐ कें अपसव्यप्रचारिणे नमः, 57. ॐ कें नवमेपापदाय नमः, 58. ॐ कें पञ्चमेशोकदाय नमः, 59. ॐ कें उपरागगोचराय नमः, 60. ॐ कें पुरुषकर्मणे नमः, 61. ॐ कें तुरीयेसुखप्रदाय नमः, 62. ॐ कें तृतीयेवैरदाय नमः, 63. ॐ कें पापग्रहाय नमः, 64. ॐ कें स्फोटकारकाय नमः, 65. ॐ कें प्राणनाथाय नमः, 66. ॐ कें पञ्चमेश्रमकारकाय नमः, 67. ॐ कें द्वितीयेस्फुटवाक्दात्रे

नमः, 68. ॐ कें विषाकुलितवक्त्रकाय नमः, 69. ॐ कें कामरूपिणे नमः, 70. ॐ कें सिंहदन्ताय नमः, 71. ॐ कें सत्येऽप्यनृतवते नमः, 72. ॐ कें चतुर्थेमातृनाशनाय नमः, 73. ॐ कें नवमेपितृनाशनाय नमः, 74. ॐ कें अन्तेवैरप्रदाय नमः, 75. ॐ कें सुतानन्दनबन्धकाय नमः, 76. ॐ कें सर्पाक्षिजाताय नमः, 77. ॐ कें अनंगाय नमः, 78. ॐ कें कर्मराश्युद्भवाय नमः, 79. ॐ कें उपान्तेकीर्तिदाय नमः, 80. ॐ कें सप्तमेकलहप्रियाय नमः, 81. ॐ कें अष्टमेव्याधिकर्त्रे नमः, 82. ॐ कें धनेबहुसुखप्रदाय नमः, 83. ॐ कें जननेरोगदाय नमः, 84. ॐ कें ऊर्ध्वमूर्धजाय नमः, 85. ॐ कें ग्रहनायकाय नमः, 86. ॐ कें पापदृष्टये नमः, 87. ॐ कें खेचराय नमः, 88. ॐ कें शाम्भवाय नमः, 89. ॐ कें अशेषजनपूजिताय नमः, 90. ॐ कें शाश्वताय नमः, 91. ॐ कें नटाय नमः, 92. ॐ कें शुभाशुभफलप्रदाय नमः, 93. ॐ कें धूम्राय नमः, 94. ॐ कें सुधापायिने नमः, 95. ॐ कें अजिताय नमः, 96. ॐ कें भक्तवत्सलाय नमः, 97. ॐ कें सिंहासनाय नमः, 98. ॐ कें केतुमूर्तये नमः, 99. ॐ कें रवीन्दुद्युतिनाशकाय नमः, 100. ॐ कें अमराय नमः, 101. ॐ कें पीडकाय नमः, 102. ॐ कें अमर्त्याय नमः, 103. ॐ कें विष्णुदृष्टाय नमः, 104. ॐ कें असुरेश्वराय नमः, 105. ॐ कें भक्तरक्षाय नमः, 106. ॐ कें वैचित्र्यकपोतस्यन्दनाय नमः, 107. ॐ कें विचित्रफलदायिने नमः, 108. ॐ कें भक्ताभीष्टफलप्रदाय नमः।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

केतु तान्त्रिकमंत्राः

षडक्षर मंत्र– कें केतवे नमः।

सप्ताक्षर मंत्र– ॐ कें केतवे नमः।

दोनों मंत्रों के ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। षडक्षर के बीव एवं शक्ति के हैं।

ध्यानम्– **वन्दे केतुं कृष्णवर्णं, कृष्णवस्त्र विभूषणम्।**
वामोरू-न्यस्त-तद्धस्तं साभयेत्तर-पाणिकम्।।

दशाक्षर मंत्र– ॐ प्रां प्रीं प्रौं कं केतवे स्वाहा।

अन्यच्च– ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

यंत्रार्चनम्– षट्कोण एवं भूपूर युक्त बनायें।

प्रथमावरणम् (षट्कोणे)– ॐ कां हृदयाय नमः। ॐ कीं शिरसे स्वाहा। ॐ कूं शिखायै वषट्। ॐ कैं कवचाय हुं। ॐ कौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कः अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम्– भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों एवं तृतीयावरणम् में उनके आयुधों का पूजन करें। मंत्रों का पुरश्चरण करके कुशों से होम करें।

केतुस्तोत्रम् (पाठान्तर)

अस्य श्रीकेतु पंचविंशविनाय स्तोत्रस्य मधुछन्दो ऋषि गायत्री छन्दः केतुर्देवता। केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोग।

केतुः काल कलपिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः।
लोककेतुः महाकेतुः सर्वकेतुः भयप्रदः।।१।।
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक।
पलाशधूम संकाश चित्रयज्ञोपवीत् धृक।।२।।
तारागण विमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः।
पंचविंशति नामानि केतोर्यः सततं पठेत।।३।।
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वा केतु प्रसादतः।
धनधान्य पशूनां च भवेत् वृद्धिर्च संशय।।४।।

।।इति श्रीस्कन्दपुराणे पंचविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीकेतुकवचम्

विनियोग– ॐ अस्य श्री केतु कवचस्य त्र्यम्बकः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकेतुर्देवता श्रीकेतुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास– शिरसि त्र्यंबकऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छंदसे नमः। हृदि श्रीकेतुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीकेतुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।।

ध्यानम्– क्रूरं करालवदनं चित्रवर्ण किरीटिनम्।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम्।।
चित्रवर्ण शिरः पातु भालं धूम्र समद्युतिः।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुती मे रक्त लोचनः।।
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः।।
हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महाऽसुरः।।
उरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽति कोपनः।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्गं नरपिङ्गलः।।

(श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीकेतुकवचम्।)

शीश पर तेरे सोहे, कीरीट का मुकुट है।
गल प्रभु विराजत, मुक्तन माला है।
तन पर सुशोभित, बलकारी चार भुजा।
धनुष त्रिशूल गदा, एक कर भाला है।
तिरछी भई भृकुटि, पीले पीले नयन हैं।
भीम रूप तेरा शनि, परम विशाला है।
नील आभा नील पद, नीलाम्बर धारे हैं।
'मनु' मन मोहे तेरा, रंग रूप काला है।

जय शनिदेव

शनि नमन्

ॐ मंगलं शनिदेव प्रभु मंगलं सूर्यसुतम्।
मंगलं कालाग्नि रूपं मगलं भय दारूणम्।।
नमस्ते शनिदेव छायात्मजाय।। नमस्ते कालाग्ने सूर्य सुताय।।
नमस्ते रौद्राय भीम रूपाय।। नमस्ते सौरयाय पिप्पलाय।।
नमस्ते बभ्रु नमो यमाय।। नमस्ते कोणस्थाय मन्दाय।।
नमस्ते कृष्णाय पिंगलाय।। नमस्ते स्वीकुरु शनैश्चराय।।
नमस्ते नमस्ते नमस्कराय

नमस्तं दयालं, नमस्तं कृपालं
नमस्तं शनैश्चर, नमस्तं हे ईश्वर
नमस्तं योगेश्वर, नमस्तं करूणेश्वर
नमस्तं मनोहर, नमस्तं सहोदर
नमस्तं भयहारी, नमस्तं पुरारी
नमस्तं त्वं विष्णु, नमस्तं सहिष्णु
नमस्तं सुखराशी, नमस्तं अविनाशी
नमस्तं निरंजन, नमस्तं भव भञ्जन
शरण मोहे लीजौ, कृपा कर दीजौ
मैं चरण बलिहारी, हे भगत हितकारी
कालस्वरूप प्रबोधाय, भक्त संताप हारिणे।

छाया भानू सुपुत्राय, शनैश्चराय ते नमः।
क्षतजाय कलिनाथाय, ग्रह राजाय देवपतेः।
मंदगताय शुष्काय, सर्व भक्षाय नमो नमः।
श्यामांगाय खज्जाय, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
शिव गणाय हरि भक्ताय, यमुनानुजाय ते नमः।
धन दातारं पिप्पलै, सौरये स्थूल रौम्णे।
कोधनाय च काव्याय, राशि नाथे नमो नमः।
धनु खञ्ज गदा हस्ते, भक्ति मुक्ति प्रदायिने।
'मनु' दाताय पिंगलाय, शिंगण वासी ते नमः।

कृष्ण वर्ण और नील वर्ण शनिदेव,
कालाग्निस्वरूप दाता तुम्हें नमस्कार है।
दुर्भिक्ष कारक प्रभु, अति रुद्र रूप तेरा।
मन्दगते सुर्यसुत तुम्हें नमस्कार है।
अग्नि समान शनि, योग में मगन भए।
पल माँही प्रलय करें, तुम्हें नमस्कार है।
स्थूल बाल वाले शनि, भैंसे पै सवार भए।
दण्डवत 'मनु' करे तुम्हें नमस्कार है।

जब ढूँढ़ने लगा तो कोई फर्क ना पाया।
तू दीवाना है काले श्याम का, मुझ पर काले का सरमाया।
तू दीनों का है दाता, मैं दीनों का जाया।
हाँ ये मेरे गुनाहों का वजूद है सारा।
जिसके कारण तू जमाने में न्यायकारी कहलाया।।

शनि प्रार्थना

शनिदेव जी वर दीजिये, हर लीजिये सब पाप मेरे।
गुण गाऊँ तेरे सदा, अब दूर कर संताप मेरे।।

हे मन्दगते सूर्यसुते, यम-यमुना भाई लख जरा।
कर अभय महाराज मुझको, बीच भंवर में मैं पड़ा।।

नक्षत्र दोष मैं भोगूँ ना, दाता कृपा कर दीजिये।
प्रेम से ये तेल डालूँ, नाथ अब तो भीजिये।।

तिल्ल से लड्डू बना, ये फूल फल मैं लाया हूँ।
माया के सब फन्द काटो, जिसमें मैं अलसाया हूँ।।

सद्गुण सदा दृष्टव्य हों, दीनों की सेवा में रहूँ।
प्रेम तेरे की नदी में, देव मैं हर पल बहूँ।।

माता-पिता की आज्ञा का, पालन करूँ मैं सर्वदा।
सार्थक हो मनुष्य जीवन, पुत्र हक होवे अदा।।

वैदिक क्रिया करता रहूँ, अनुष्ठान कर और हवन कर।
पूजूँ तुमको मैं सदा, तेरा जाप कर और ध्यान धर।।

शनि भक्ति से फीके 'मनु', सुख सारी दुनिया दारी के।
भक्ति में डूबे जहाँ, शनिदेव जी भयहारी के।।

सूर्यसुतम् महेश अंशं मातुछायानन्दम्
कालरूपं कृष्णवर्णं मन्दगते तव वन्दनम्।।

भगवान के पावन नाम का नित्य स्मरण ही कलिकाल में मुक्ति का मुख्य साधन है।

शनि अमृतवाणी

कांगितेन रोदेन तुम, तुम गणपति गणराज।
आदि पूजूँ विनायका, पूरण कीजौ काज।।
महादेव को ध्यान धर, पूजूँ माँ जगदम्ब।
तुम्हरा आशिष पाय कर, मिट जावे सब दम्भ।।
हरि सिमरूँ ब्रह्मा सिमरूँ, सिमरूँ सीता राम।
कृपा मुझ पर कीजिये, हे राधावर श्याम।।
नभ यह हो साक्षी सदा, तन भी होय प्रमाण।
कुलदेवा विनती करूँ, दीजौ इतना ज्ञान।।
भारद्वाज उत्पन्न भए, सदा श्रेष्ठ सन्तान।
मुवानिया शाषण भए, निपट हो प्रवर थान।।
आशिष दे माँ झुनझुनी, पितु सुन सुनिया मीत।
मात-पिता के संग मुझे, मिले शनि की प्रीत।।
गगन बसे नवदेव जी, करिये कृपा खास।
बसो संग शनि हिरदय में, इतना हो आभास।।
पूर्वज जन को नमन करूँ, दीजौ ये वरदान।
शनि नाम स्मरण रहे, जब तक घट में प्राण।।
गुरू चरणों में बैठकर, धरूँ शनि का ध्यान।
देव बड़े जग में शनि, बरनूँ सहित प्रमाण।।
अमृत वाणी देव की, करता हूँ आरम्भ।
मार्ग दर्शन कीजिए, गौरी सुत हेरम्ब।।
जयति जयति सचिदानन्दाय, जयति हंसाय शांतिदाय।
जय जय सर्वदाय सुघोषाय, जयती सहस्र जप सुप्रियाय।

जयती सुलभाय सर्वज्ञाय, जयति जय सौम्य सदा तुष्टाय।
जय सर्वरूपा शक्तिधराय, जयति जय शान्ते विरोचनाय।
जयति जयति जय अघोररूपा, अघहर अति बलवान अनूपा।
जयति जयति पुण्य फलदायक, नाशे अविद्या भक्त सहायक।
जयति जय आदित्य संभवाय, जयति जयति जय आदिदेवाय।
जय जय शततूणीर धारिणे, जयति उर्ध्व लोक सच्चारिणे।
जय जय गृहपतये घोराय, जयती छाया देवी सुताय।
जयाय जय प्रदाय जय जय, जय जयदाय डंभाय जय जय।
जयति ज्ञानमूर्तये स्वामी, तत्वज्ञाय जय अन्तरयामी।
जयति जय धर्मरूपा धारी, पिप्पल महिमा अमित तुम्हारी।
जयति पिंगल प्राण कारिणे, प्राणरूपिणे कष्ट हारिणे।
जयति अनन्तो जय अन्नदाता, जयति महाभुज मंजुल भ्राता।
जयती भूतात्म भयहारी, जय भुवनेश्वर प्रियकारी।
जयति घनाय वैराग्य दाय, जय वाम नाम जय पावनाय।

दोहा– तज विषय शनिदेव का, पूजन करे त्रिकाल।
शनिदेव दाता करें, जीवन जीव निहाल।।
शनि अनन्त महिमा अनन्त, अनन्त कलि का काल।
सर्व जन उद्धार हित, जाग्रत शनि तत्काल।।

नमो नमो शनि महाशान्ताय, नमो सौम्य भानुज योगाय।
नमो नमो शनि वज्रदेहाय, नमो नमो शनि विश्ववन्द्याय।
नमो नमो शनि श्रुतिरूपाय, नमो नमो त्वम् शनैश्चराय।
नमो शनैश्चर पुष्टिदाय, नमो रवि वंशज प्रदीपनाय।
नमो नमो शनि क्षिति भूषाय, नमो हविषे हिरण्य वर्णाय।
नमो नमो शनि महाकायाय, नमो मन्दार कुसुमप्रियाय।

नमो विष्णवे विश्व भावाय, नमो नमो शनि भक्तवत्सलाय।
नमो नमो शनी मुक्ति दाताय, ज्ञानी ज्ञान ज्योतिष ज्ञाताय।

दोहा–नीलद्युति आभा तेरी, शंकर सदृश रूप।
नमन तुम्हें शनिदेव है, हे कालाग्नि स्वरूप।।
रक्षक हों शनिदेव जी, संकट कटे समूल।
शनि संकीर्तन कीजिये, जीवन हो अनुकूल।।

कानन कनक जड़ित भिन्न मोती, राजे कटिबंध मोतिन ज्योति।
भाल मुकुट दीपे सम पारस, नीलकान्ति तन फैली तैजस।
कोटर सदृश नयन विशाला, गदा त्रिशूल ढाल कर भाला।
भाल तिलक सूर्याकृति सोहे, सब देवन के मन को मोहे।
चतुर भुजा बाजूबंद सुंदर, हस्त कंकण गल माल मनोहर।
अलकें घूंघर वाली प्यारी, तेजोमय मुख अति उजियारी।
अभय हस्त दीर्घ तनधारी, योगी अमर धीर भयहारी।
चरण कमल रज गंध सुवासित, योगासन शनि सदा विराजित।

दोहा–रवि छाया ने लाल का, नाम रखा शनिदेव।
करमन फल को देत हैं, कष्टों के हर लेव।।
रूप चतुर्भुज धारे हैं, निराकार साकार।
उनका बेड़ा पार है, जिन्हें शनि से प्यार।।

करें भानु मण्डल सञ्चारण, जीवन व्याकुलता के कारण।
सद उपाय प्रिय तोहि दाता, जो जन करता सुख सो पाता।
विधिवत मन से कीजे पूजन, सफल सत्य से होये जीवन।
शनि संकीर्तन शनि मन रञ्जन, भक्ति शनी नर हित भव भञ्जन।
विधि प्रेम से मंगल गावें, शनि चरणन में शीश नवावें।
तापर शनि प्रसन्न हो जावें, मोक्ष राह पर पैर रखावें।

ग्रहराजा महाबल पिंगला, सेवित सदा हरि संग कमला।
मंदचारी भूतात्म कृष्णा, शांति दें भक्तन मृग तृष्णा।
नन्हे जीवों के रखवारे, सबकी जीवन रेख सम्भारे।
जलचर नभचर नाना भूचर, सबका भार प्राणमय तुम पर।
जिन तज माया मोह पसारा, तिन तन कष्ट किया निस्तारा।
दुःखहन्ते दुःस्वपन नाशक, प्रिय शनी सब मंत्र उपासक।
कृष्णा गऊँ प्रिय शनि देवा, कोकिल वन में करते सेवा।
तिल तेल अरू शनि अमावस, नाम प्रिय अति हैं शनि को दस।
शनी ग्रह के तुम हो स्वामी, जय शनिदेवा अन्तरयामी।
पावें कृपा सुमार्ग गामी, पार उतारे कलि के कामी।

दोहा- भव भय हरणी बीच जग, शनि भक्ति को जान।
मिटे भ्रम अज्ञान का, मिलता मुक्ति ज्ञान।।
दृष्टि जो देखें शनी, गावें श्रुति का गान।
दीन बन्धु शनिदेव जी, कर देते कल्याण।।

सर्वारिष्ट प्रभु शनि भगाओ, भक्त सखे सब पीर नसाओ।
शुभकर्मी शनि नाम सहाई, दुष्कर्मी दें खाक मिलाई।
मिटे सकल संकट भव पीरा, निर्मल नित्य रहे शरीरा।
कोटिक जन्म पाप के नाशक, 'मनु' जीवन के गुण प्रकाशक।
अभीष्ट फल दे अतिसुखकारी, अभय करे सर्वानन्द धारी।
अन्नदाता अविगत अविकारी, अतुल अमोघ अनन्त उदारी।
बहु पतित कलि माँही उबारे, करूणा कीन्हीं विरदविचारें।
छल पाखण्ड द्वेष सबत्यागो, शनि नाम सुमिरण में लागो।
दिन दिन नर यह छीजत काया, विषय वासना मन भरमाया।
दानव काल बड़ा बलकारी, शनि गुण गा छूटे नर नारी।

शनि कृपा पावे जो कोई, रोग शोक ना ताको होई।
नर सुर असुर किन्नर विद्याधर, करें प्रभावित सब राशि घर।
ऋग्वेद ब्रह्माण्ड पुराणा, नाम महिमा करें बखाना।
कश्यप वंश की शोभा बढ़ाई, सूर्य कीरति नेक निभाई।
मंद शांत विधि रूप तुम्हारा, भक्तन देवें बेगि उबारा।
किरपा वृष्टि सदा बरसाओ, भूल पाप सारे बिसराओ।

दोहा- लगन लगी शनिदेव से, मिटे द्वैत अज्ञान।
अभय रहे जीवन सदा, मूरख बीच सुजान।।
करिये शनि संकीर्तन, पाइये कृपा खास।
स्वाति बूँद चातक लिये, मिट जाती है प्यास।।

अति क्रूर हों करे उत्पाता, दे बहु कष्ट और संतापा।
सर्व पीड़ा मृत्यु के कारक, निंदक कपटी छली सुधारक।
वैरी विरोधि अमंगलकारी, भूत प्रेत सर्पादिक भारी।
दुष्ट अरू हिंसक जीवादी, बच न पाए कोई अपराधी।
संकट दुख भंजन भगवाना, हूँ शरणागत कर कल्याणा।
सुख दुख द्वन्द क्लेश नसाओ, सब कष्टों से मुक्ति दिलाओ।
क्रोध दृष्टि न झेलूँ तुम्हारी, दारूण दुख शनि सहूँ न भारी।
मैं मूरख शनि निपट अनारी, करूँ प्रार्थना मति अनुसारी।
क्या गुण शनि तुम्हारे गाऊँ, अल्पमति मैं अज्ञ कहाऊँ।
काम क्रोध मद लोभअनेका, मिटा समूल दीजौ विवेका।
छाया सुत यम यमुना भ्राता, 'मनु' जतन से तुमको पाता।
रघुवंशी सम शनि आराध्य, भए गम्भीर धीर अति साध्य।
कुरूवंश पूजे तुमकों विधिवत, माने कलि जन करे नमन शत।
सकल जन्म के पापनिवारे, पावन नाम शनि का प्यारे।

राम से वर द्वापर में पाए, पूजित राम सम शनि कहलाए।
हों प्रसन्न परशुराम दीन्हें वर, पूजें कलि जन मुझसे बढ़कर।
दोहा- न्यायधीश बड़े सख्त शनि, भगतन को सुखकार।
ज्यों गन्ने की डाँड है, पौर पौर रसदार।।
सकल जगत जाति सभी, जाने शनि प्रभाव।
बिन शनि पूजन के रहे, सुख सम्पत्ति अभाव।।
सुलक्षण सती पतिव्रत नारी, पावें शनि से पदार्थ चारी।
जिन पशुओं सम उम्र गुजारी, दे शनि कष्ट उसे अति भारी।
भूमि रत्न शनि को प्यारे, खान खदान खाद्यन्न सारे।
लौह सिंहासन अति ही भाए, प्रथम पूजें जन मान बढ़ाए।
तिल अन्न दान तिल जो करते, शनि संतुष्ट हो संकट हरते।
पीर तेल तिल दीपक हरता, तुष्टि शनी सम्मुख जब जरता।
ओमकार भज शिव को ध्यावे, शनि प्रसन्नता नर वह पावे।
मूर्ति मंदिर शनि प्रकाशा, पीपल ऊपर करें निवासा।
'मनु' मन चक्षु भए विवेकी, अलौकिक छवि शनि सूक्ष्म देखी।
कृपावंत कीरति निरंतर, कलि माँही फैलेगी घर-घर।
जो जन करे नित शनि आरती, सकल विपद को तुरत टारती।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई, शनि संकट ते तारे सोई।
तुम्हरी महिमा सब दिशि छाइ, नाम कीरतन सबै सुखदाइ।
ग्रंथ पंथ शनि कीर्ति बखानी, तुम सम कोइ दयालु न दानी।
पूजन विधि जन नाहीं आवे, विनय कर सन्मुख शीश नवावें।
हरो विघ्न मंगल शनि कर दो, भक्तों के भण्डारे भर दो।
दोहा- करते मंगल कामना, साधक तेरे द्वार।
भर झोली ले जाते हैं, मिलकर के नर नार।।

दास भावना मन रखे, सेव करे दिन रात।
सब साधन जग में मिले, मिले शनी का साथ।।
तिल उड़द लौह तेल चढ़ाऊँ, मन रंजन गाथा तब गाऊँ।
बुद्धि मन प्राणों से सेवा, करूँ सदैव नियम से देवा।
जोरी जुगल कर शनि मनाऊँ, विकरम सम किरपा पा जाऊँ।
हो अति प्रसन्न कष्ट मिटाओ, किरपा भक्तों पर बरसाओ।
तुम भक्तन के भक्त तुम्हारे, पूरण करते कारज सारे।
कलि मल हरण नाम शनि पावन, दीनदयाल भक्त मन भावन।
पतित शरण हों पावे मुक्ती, कलि में श्रेष्ठ शनि की भगती।
जो जन शरण तुम्हारीआवे, धन वैभव यश तुमसे पावे।
जो शनि गान मनोहर गावे, उत्थित ब्रह्मनाद हो जावे।
जो नर मान ईष्ट शनि ध्यावे, तिस के काज सफल हो जावे।
जन कल्याण जो रहते तत्पर, शनिदेव प्रसन्न हो उस पर।
जो जन शनि का नाम बिसारे, सो जीवन ना कोइ उबारे।
दान करे जो वस्तु अनेका, दो धन वैभव न्याय विवेका।
शनि यमराज दोउ दंडधारी, सब दुष्टों की तुरत मति मारी।
सखा भैरव हनुमत बुध राहु, हठी त्यागी गम्भीर सुभाउ।
आनन तेज अमित बरसावे, कोटि काम तुमसे डरपावे।
दोहा- शनि देव दरबार से, खाली जाय न कोय।
झोली भर दें सुख सभी, जो भगतन के होय।
शनि की कृपा का कभी, नहीं होता है अंत।
भजन करो शनिदेव का, मिल नर नारी संत।।
गज वाहन शनि बैठि के आवे, अन धन साधन घर भरि जावे।
आवें शनि बैठि के जम्बुक, बुद्धि नष्ट हो मिट जावे सुख।

मृग ऊपर शनि देवा आवे, कष्ट प्राण संहार बढ़ावै।
आवे जब शनि बैठि स्वान पर, संभव चोरी होने का डर।
बैठि ऊपर गर्दभ के आवै, चहुँ और से हानि करावै।
सिंह बैठि आवे शनि देवा, बन अधिकारी भोगे सेवा।
काक वाहन शनि बैठि आवे, भक्तन सुख दे काज बनावे।
गिद्ध भैंसा पे आवे जबहि, सफल मनोरथ होवे तबहि।
तैसे चारि चरण शनि आये, ताम्र रजत लौह स्वर्ण बताये।
लौह चरण पर जब पग राखे, साधन मिटे पड़े फिर फाँके।
ताम्र रजत पर अति शुभकारी, स्वर्ण आवें हों मंगल भारी।
मन्दिर जो शनिदेव बनायें, सब सुख जीवन तुमते पायें।
करे शनि के वार उपवासा, पूरण करते मन की आशा।
शनिवार जप करे गिन स्वाँसा, स्वर्ग लोक में पावें वासा।
तेल उड़द गुड़ कपड़ा काला, आक शमी पुष्प चढ़त निराला।
शनिवार जो अमावश होये, सब जन तेल चढ़ावे तोये।

दोहा– रखे टेक शनिदेव जी, तारे भव से पार।
चौरासी के फेर से, कर देवे उद्धार।।
कर्म किए जाए मना, सकल ग्रह फल देत।
शुभ कर्मी सुख पावे हैं, शनि पूजन से चेत।।

नजर पड़े पशु पंछी मानव, महाभयंकर देव व दानव।
दृष्टि से हो जाये दीना, नष्ट नगर राष्ट्र भी कीन्हा।
दृष्टि शनि की अति विकराला, रवि पर टिकी कुष्ठ कर डाला।
सूर्य सारथि पंगु कर डाला, अंध अश्व दृग गया उजाला।
मस्तक शिवा सुवन का छेदा, शनि दृष्टि से होये विच्छेदा।
बृत्संहिता में सविस्तारा, शकट रोहिणी भेदन भारा।

गुरू वशिष्ठ गर्भ में देखा, चिन्ता दशरथ मस्तक रेखा।
आये बारह वर्ष अकाला, छाया संकट महा विशाला।
दिव्य रथ का किया आवाहन, ऊपर गये तीन लख योजन।
भास्कर मण्डल ऊपर जाकर, लगा तीर धनु डोर चढ़ाकर।
प्रतीक्षा शनिदेव की कीन्ही, शपथ अनोखी धार मन लीन्ही।
शनी सामने पा सकुचाये, वर देने को हस्त उठाये।
हो दशरथ साहस से प्रसन्न, किया अभय अकाल से जीवन।
नृप दशरथ शनि स्तुति कीन्ही, विपदा सकल शनि हर लीन्ही।
प्रजा रहने लगी सुखारी, टला रोहिणी भेदन भारी।
पुरवो आस सभी की देवा, जन दर तेरे करते सेवा।

दोहा– महिमा बड़ी शनिदेव की, सब सुख क्षण में देत।
रक्षक बन शनिदेव जी, संकट सब हर लेत।।
विनती जो शनि से करे, कातर सम सुग्रीव।
आँधी तूफाँ में कभी, उखड़ ना पावै नींव।।

हरिश्चन्द्र नृप सत्य धारी, शनि दृष्टि ने किया दुखारी।
छीन लई सम्पत्ति सारी, बिछड़े हिय से बालक नारी।
रामचन्द्र राशी शनी आए, वर्ष चौदह बनवास दिलाए।
चले भार्या संग बन वासा, राजतिलक की छूटी आशा।
करते सुर नर मुनिजन वंदन, असुर निकंदन हे रवि नंदन।
भुगताया नल को राशि फल, शुद्धात्मा किया राजा नल।
स्नान शनि तीरथ नल कीन्हा, साम्राज्य पदवी शनि दीन्हा।
स्वपन में मंत्र दे नृप नल को, वर दे पुष्ट किया भुज बल को।
राशी पर सुग्रीव की आये, महाघोर अपमान कराये।
प्रिया विहीन हुए अपराधी, छीने सहोदर सुख भोगादि।

रावण राशी पर शनी आए, सभी देव संग युद्ध कराए।
ब्रह्म अस्त्र देवों पे चलाए, नवग्रह रावण बंदी बनाए।
सिंहासन संग बांध रखाए, श्री रघुबीर बजरंगी धाए।
हनुमत नवग्रह मुक्त कराये, शनी दृष्टि विकराल दिखाये।
स्वर्ण लंक को लाख बनाये, हनुमत रावण नगर जलाये।
बाद दशा अति आई भारी, मिटा वंश बनी हेतू नारी।

दोहा- शत तूणीर धार चले, शनिदेव महाकाल।
भक्तन कृपा मिल गई, दुष्ट मरे तत्काल।।
काम क्रोध मद लोभ का, घट में फैला जाल।
शनि दृष्टि से जन दुखी, हो जाते कंगाल।।

पीर सही पाण्डव ने भारी, बचि अपमानित होती नारी।
धर्मराज नारद मुनि ध्याये, नारद शनि स्तवन बतलाये।
कीन्हा धर्मराज शनि ध्याना, रक्षा कीजै तनु अंग नाना।
सुर शशि मरूत घोर अकारा, मन्द जटाधर खञ्ज कुमारा।
तीन ताप के हरने वाले, देव सिद्ध योगेश्वर काले।
ला चित्त चरणा सिमरूँ तोहे, पार उतारो भव से मोहे।
सुन स्तवन शनि प्रकटे सन्मुख, दीन्हा धर्मराज को वर सुख।
हुआ युद्ध कालान्तरभारी, हारे कौरव अत्याचारी।
धर्म स्थापना हुइ जग माहीं, प्रभु श्री भगवद्गीता गाई।
राजा विकरम अति बलवन्ता, छलि कपटी के नाश करन्ता।
हुए राज्य जन अति ही सुखारी, छाया यश महि ऊपर भारी।
शनी दृष्टि ने किया दुखारी, अन्त माना शनि न्याय कारी।
अहम् मिटाया नृप का सारा, सपन में दुख का किया निस्तारा।
पूड़ी सब्जी किया भण्डारा, हलवा चना बनाया प्यारा।

प्रथम भोग शनि को खिलाये, पाछे ब्राह्मण सात जिमाये।
भूखों का फिर पेट भराये, सब सुख सम्पत्ति शनि से पाये।

दोहा- शनि से मन भय उपजे, सुन प्राणी नादान।
शनी देव दाता करें, करमन फल प्रदान।।
सब देवों में हैं बड़े, कृष्ण वर्ण शनिराज।
जो नर ध्यावे नित्य ही, पूरण करते काज।।

उद्भव लीला प्रसंग न्यारा, भया शनि महिमा काविस्तारा।
भ्रमवश शनि हनुमत ललकारा, एक अंश एक रूप अपारा।
श्री राम की करे सेवकाई, स्वयं रूद्र शिव ध्यान लगाई।
क्रोध वश शनि मति भरमाई, बढ़ा अहं तन रहा अघाई।
समझ उन्हें साधारण वानर, गर्जे टूट पड़े शनि उन पर।
हुआ युद्ध बड़ा ही भारी, लड़कर हारे शनि बलकारी।
महावीर भए पर्वत कारी, क्षण में पूँछ बढ़ाई भारी।
पाश बनाय शनी लिपटायें, परवत परिक्रमा को धाये।
पत्थर पत्थर शनि टकराये, घाव बदन पर शनि के आये।
तब शनि ने कपि को पहिचाना, अवतारी महिमा को जाना।
मन ही मन फिर किया प्रणामा, टूटा अहं धार हिय नामा।
फिर शनि देव गुहार लगाई, हनुमत मति मेरी बौराई।
तुम प्रिय सखा आज से मोरे, भगतन नहीं सताऊँ तोरे।
हनुमत शनि को तेल लगाये, भगत तभी से तेल चढ़ाये।
तब शनि महिमा छाई भारी, शनिवार पूजे संसारी।
मंगल दिवस जो शनि पूजते, शनि विकट संकट सब हरते।

दोहा- लीला श्री शनिदेव की, अद्भुत और विचित्र।
कलियुग में कल्याण करे, बनकर 'मनु' के मित्र।।

मंगल जो शनि पूजते, धार हिय विश्वास।
शनी सकल भय हर करें, पूरण मन की आश।।

शुभ कारज में शनी मनाओ, मंगल फल श्री शनि से पाओ।
ग्रह आरम्भ या ग्रह प्रवेशा, शनिवार कीजिये हमेशा।
मिले दान फल अतिशय भाई, मध्य पहर महिमा अधिकाई।
मन्दिर दर्शन पूजन अर्चन, बढ़े प्रताप होए शनि प्रसन्न।
साधु योगी या संसारी, पार लगाए विरद संभारी।
सहस्र नाम जप सम सुखदाई, शनी किरपा दुर्लभ फलदाई।
पुत्र पौत्र परिवर्धन कारी, शत जप से मिलते फल चारी।
अमृत वाणी गावै जो कोइ, नित्य नेह शनी चरणन होइ।

छंद- शनिदेव नर, हर पलसुमिर, कलिकाल बड़ दुखदाइ है।
मिटता अविद्या जाल जिन, शनि चरनन्हि लौ लाइ है।।
मंदिर शनि के जाय जो, शनि अमृत वाणी गावते।
हो पूर्ण 'मनु' मनकामना, अरू मुक्ति पद को पावतै।।

दोहा- शनी चरण में राग हो, ताप मिटे फिर तीन।
अल्पमती मति पाइ के, बरनै कीर्ति नवीन।।

छूट है कर्म की, किए जा तू मन से।
शुभ और अशुभ का ध्यान जरूरी है।
फल किए कर्मों का शनि ग्रह भुगतावें।
जाको जैसा कर्म की भावना भी पूरी है।
होवें अनुकूल शुभ कर्मी के शनिदेव।
साढ़ेसाती ढैय्या से राखी वाकी दूरी है।
संकट कटे दुख विपत्ति से दूर होवे।
'मनु' परमार्थी पगडंडी नूरी है।।

शनि चालीसा

ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव जी, मैं सेवक मतिहीन।
राखो सर पे हाथ प्रभु, कर अपने आधीन।।
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुमरूँ तेरा नाम।
कृपा कर निज दास के, करियो पूर्ण काम।।

जय जय तेरी छायानन्दन। दोऊ हाथ जोड़ करूँ वन्दन।।
नीले पद और कृष्ण वर्ण तन। लौह प्रतिमा पूजे जन जन।।
मन्दगते हे कपालधारी। अधोदृष्ट हे अभीष्टकारी।।
जाग्रत तुम कलियुग में देवा। सेव करे जो पावे मेवा।।
उग्र तेज अति अगाध तेरा। काटो चौरासी का फेरा।।
रूप चतुर्भुज जो कोइ ध्यावे। साधक वो वांछित फल पावे।।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावे। शनि कृपा उस पर हो जावे।।
ग्रह दशा तेरी भई जिस पर। भाग्य विवश जीवन हुआ दुष्कर।।
हरिश्चन्द्र नृप सत्यवादी। नारी बेचन हुई मुनादी।।
खुद भरे नीर डोम घर माँय। मृत सुत को लकड़ी भी नाँय।।
राम दियो वन कैकयी माता। लक्ष्मण रेखा खींची भ्राता।।
मृग सोने का कपट दिखाया। बदल रूप लंकेश्वर आया।।
रावण पर शनि जब पग धारा। हुआ युद्ध कुल सहित संहारा।।
श्री कृष्ण राशि पर आए। तब से ही रणछोड़ कहाए।।
दशा भई पाण्डु पुत्रों पर। वन वन भटके भए अगोचर।।
हुआ द्रोपदी का अपमाना। सह गए चुप पांचों बलवाना।।
दुखी भए शनि दृष्टि से जब। गोविन्द नेक उपाय दियो तब।।
धर्मराज करो व्रत शनिवारा। मेटे दुख शनिदेव तुम्हारा।।
ग्रह दशा कौरव पर आई। महाभारत की हुई लड़ाई।।

राजा विक्रम अति दुख पायो। तेली के घर कोल्हू चलायो॥
हाथ पैर नृप दिए कटवाये। अन्त सपन में दर्शन पाये॥
डाला जब शनि दृग प्रकाशा। उड़ गयो शीश गणेश अकाशा॥
रोहिणी शकट का भेदन भारी। अकाल बारह वर्ष दुखारी॥
दशरथ धारी मन दृढ़ निष्ठा। आज्ञा दी तब गुरू वशिष्ठा॥
सप्त द्वीपाधि पति नृप दशरथ। गुरू से वर ले निकले नभ पथ॥
रोहिणी शकट के पीछे जाकर। लगा तीर धनु डोर चढ़ाकर॥
धन्य हुए शनि दर्शन पाकर। पाया दशरथ ने इप्सित वर॥
शनिदेव भय सरिता तारण। सब कष्टों का करो निवारण॥
पीपल निकट ले नाम शनि दस। सूत लपेटे सात बार कस॥
दीप जलावे और जल देवे। रोग दोष सब शनि हर लेवे॥
मन जिसके शनि प्रेम है राचा। दूर रहे बेताल पिशाचा॥
हिय पतंग सत हो अनुरागा। सूक्ष्म दर्श हो भए बड़-भागा॥
जो जन कर्म करेगा जैसा। फल देंगे शनि उसको वैसा॥
मात-पिता का करे निरादर। देवे दुख शनिदेव निरन्तर॥
दीनन को जो भोज करावे। पुत्र रूप में धन वो पावे॥
कर्म किए फल भोगे कारा। नाम लेत होये छुटकारा॥
पाठ करे चालीसा पावन। मिल जाता है फल मन भावन॥
नित उठ पाठ करे जो कोई। पीड़ा शनि की कबहू न होई॥
पिंगल शौरी बभ्रु मंद रूपा। कोणस्थ रौद्र यमाय अनूपा॥
पिप्पलाय कृष्णा सुखकारी। आओ शनि 'मनु' डगर बुहारी॥

शनिधाम में जाय के, करे तेल अभिषेक।
'मनु' चालीसा जाप कर, मिलते फल अनेक॥
शनिवार को दान करे, उड़द तिल और लोह।
काला कम्बल दीन को, मन ले प्रभु का मोह॥

श्री शनि चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल।।
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज।।

जयति जयति शनिदेव दयाला, करत सदा भक्तन प्रतिपाला।
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै, माथे रतन मुकुट छवि छाजै।
परम विशाल मनोहर भाला, टेढ़ी दृष्टि भृकुति विकराला।
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके, हिये माल मुक्तन मणि दमके।
कर में गदा त्रिशूल कुठारा, पल बिच करैं शत्रु संहारा।
पिंगल, कृष्णो, छाया नन्दन, यम कोणस्थ, रौद्र दुःख भंजन।
सौरी, मंद, शनी, दस नामा, भानु पुत्र पूरहिं सब कामा।
जापर प्रभु प्रसन्न हो जाहीं, राव करैं रंकहि क्षण माहीं।
पर्वतहू कण होई निहारत, कण को पर्वत सम करिडारत।
राज मिलत बन रामहिंदीन्हयो, कैकेई की मति हरि लीन्हयो।
बन में मृग कपटी दिखराई, मातु जानकी गई चुराई।
रावण की मति गई बौराई, रामचन्द्र सों करी लड़ाई।
दियो क्षारि करि कंचन लंका, बाजो बजरंग बीर का डंका।
लक्ष्मन विकल शक्ति के मारे, रामा दल चिन्तित भय सारे।
नृप विक्रम पर दशा जो आई, चित्र मयूर हार गा खाई।
हार नौलख की लगि चोरी, हाथ पैर डरवायो तोरी।
अति निन्दामय बीता जीवन, तेली सेवा लायो नृप तन।
विनय राग दीपक महँ कीन्हयों, तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हयों।
हरिश्चन्द्र नृप-शनि बिकारी, राजा भरयो डोम घर पानी।
वक्र दृष्टि जब नल पर आई, भुंजी मीन जल पैठी जाई।

श्री शंकरहिं गहयो जब जाई, जगजननी कह भस्म कराई।
तनिक विलोकत करि कुछ रीसा, नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी, अपमानित भई द्रोपदी नारी।
कौरव कुल की गति-मति हारी, युद्ध महाभारत भयो भारी।
रवि कहँ मुख महँ धरि तत्काला, कूदि परयो सहसा पाताला।
शेष देव तब विनती कीन्ही, मुख बाहर रवि को कर दीन्ही।
वाहन प्रभु के सात सुजाना, दिग्गज,गर्दभ, मृग अरू स्वाना।
जम्बुक सिंह आदि नख धारी, सौ फल ज्योतिष कहत पुकारी।
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं, हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं।
गर्दभ हानि करै बहु काजा, सिंह सिद्धकर राजा समाजा।
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै, मृग दे कष्ट प्राण संहारै।
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी, चोरी आदि होय डर भारी।
तैसहि चारि चरण यह नामा, स्वर्ण लौह चांदी अरु तांमा।
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं, धन जन सम्पति नष्ट करावैं।
समता ताम्र रजत शुभकारी, स्वर्ण सदा शुभ मंगलकारी।
जो यह शनि चरित्र नित गावै, दशा निकृष्ट न कबहुं सतावै।
नाथ दिखायें अदभुत लीला, निबल करैं जै हैं बलशीला।
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई, विधिवत शनि ग्रह शांति कराई।
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत, दीप दान दै बहु सुख पावत।
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा, शनि सुमिरत सुख होत प्रकासा।

भरोसा है फक्त तेरा नहीं जमाने का।
ना अब तेरे सिवा किसी को आजमाने का।
जवाब है ही नहीं पास अब फसाने का।
ना दिल तोड़ना चरणों के इस दीवाने का।।

शनि शर

(शनि कृपा प्राप्ति का अमोघ कवच)

शनी प्रेम हिरदय बसा, नित्य करे गुणगान।
मंगल हो कारज सभी, चहुँ दिश हो प्रभान।।

जय शनिदेव भगत प्रतिपाला। दुख विनशो हे दीन दयाला।।
सब भगतों को आप हैं रोचन। सुखी करो हे संकट मोचन।।
दशरथ नृप को दे वरदाना। जग भय रहित कियोसन्माना।।
लाख किये सोने की लंका। बजवायो बजरंगी डंका।।
कौरव कर्म को फल भुगताया। धर्मराज फिरि राज दिलाया।।
चक्कवत विकरम न्यायकारी। दर्शन दे प्रभु कियो सुखारी।।
देरी काहे नाथ लगाओ। नक्षत्र दोष सब शनि भगाओ।।
सुर रक्षा का भार उठाया। राक्षस जन को मार गिराया।।
चरण कमल प्रभु सहस्र गजबल। दोउ हस्त हैं सिंहों का दल।।
काल रूप हे कपालधारी। कोटि प्रणाम भीम आकारी।।
पूजित प्रथम गणप तोहि कारण। मिली शक्ति शिव से हे शिवगण।।
तेरी किरपा होये विधावित। मारे शत्रु निज भक्तन हित।।
जय जय जय जय जय शनिदेवा। तीन ताप के तुम हर लेवा।।
जयति भक्त वत्सल जय निर्मल। जाग्रत हो कलियुग में हरपल।।
ॐ शं शं शं शनिदेव निराले। जय शिव रूप मस्त मतवाले।।
ॐ प्रां प्रिं प्रोम् परम परमेशा। शरणागत के हरहू क्लेषा।।
सूर्यसुत यम यमुना भाई। सन्त मुनि जन महिमा गाई।।
प्रेत पिशाच डाक चण्डाला। भूत निशाचर और बेताला।।

सामने तोरे टिक न पावें। मुखातेज से जरि जरि जावें॥
भक्तन हृदय राखो वासा। करो शनि दोर्भाग्य नाशा॥
कर्म किए का फल तुम देते। मांगो क्षमा दुःख हर लेते॥
विकट क्लेष शोक संतापा। नष्ट करे हर पाप और शापा॥
कामादि मद दम्भ विस्तारा। देवे जला लगा अंगारा॥
ॐ शर शर शर शौरी सरदारा। दुख झेले क्यों दास तुम्हारा॥
ॐ शनि शनि शनि शनिशनैश्चराया। भक्तन पें संकट गहराया॥
ॐ रों रों रों रों रौद्र रूपा। मेटो समूल भव भय कूपा॥
मेटो ताप कसम तोहे माँ की। राखो लाज छाया की छाँ की॥
मैं कोदन प्रभु अतिहि निभागा। जोड़ा तुमसे प्रेम को धागा॥
पढ़े शनि शर धार दिल माँही। ताको शत्रु जगत में नाँही॥
रख जीभ्या जो छोड़े शनि शर। रोग रहे ना तिस तन ऊपर॥
तेइस दिन तक जपत निरंतर। भूत प्रेत भए 'मनु' छू मंतर॥
करे स्नेहन जपे हमेशा। रक्ष करें शनि अनन्त वेषा॥

रोग भयानक शूल दे, अन्तक तक पहुँचाय।
तेईस सहस्र के जाप से, पूर्ण नष्ट हो जाय॥
शनि शर का नर हृदय से, 'मनु' करे जो जाप।
अपा मृत्यु आवे नहीं, मिट जावे संताप॥

शनि मंत्र

ॐ प्रिं शनैश्चराय सूर्यपुत्राय शं नमः
ॐ शं प्रिं ह्रीं श्रीं खीं खां प्रां प्रौं खों सः शनये नमः
खौं प्रौं प्रां खां खीं श्रीं ह्रीं प्रिं शं नमः ॐ

श्री शनि शिंगणा साठिका

जय जय जय लम्बोदरा, गौरी ललन गणेश।
निर्मल बुद्धि दान कर, कृपा करो विशेष॥१॥
नमन करूँ गुरुदेव जी, दीजै आशीर्वाद।
कलम लिखे जो दीन की, यह जग राखे याद॥२॥
जयति जय जय शनैश्वरा, श्री शिंगण महाराज।
प्रभु ध्यान में आय कर, पूरण कीजौ काज॥३॥

जय जय जय शिंगणापुर वासी। अतिजागर अगणित सुखराशी॥
छायासुत हे जग विख्याता। उपकारी कलियुग के दाता॥
निरवद्य नाथ असुर संहारि। लख चौरासी के उद्धारी॥
अमिट अचल अनुपम अविकारी। अति दानी अविगत औदारी॥
कहुँ किस मुख से कथा तुम्हारी। सब देवों में महिमा न्यारी॥
महाराष्ट्र में तहसील नेवा। गांव शिंगणापुर शनिदेवा॥
स्वयंभू रूप श्याम शिला धारा। शिंगणापुर का भाग्य संवारा॥
डेढ़ शतक पहले की कहानी। पूर्वज शिंगणापुर ने बखानी॥
अधिक बाढ़ पानस में आई। भई सभी जन को दुखदाई॥
छाई घटा वर्षा भई भारी। बेरी अटकी शिला एक न्यारी॥
बीते कुछ दिन पानी सूखा। थल चर भूख प्यास से कूका॥
फिर उस और गये चरवाहे। लेकर अपने सब चौपाये॥
काली शिला देख चरवाहे। अचरज माने लकुटि लगाये॥
एक ने लकुटि जोर से लगाइ। तुरत लहू की धारा आयी॥
देख लहू मन में भय व्यापे। काया रोम अंग सब कांपे॥
घाव दीखने लागा भारी। चमत्कार हुआ विस्मयकारी॥
गऊँए छोड़ गांव में आये। सारा ही विस्तार बताये॥

सकल गांव पहुँचा उस थाना। देख लहू को अचरज माना॥
इसी अचरज में दिवस गुजारा। फैल गया घर-घर विस्तारा॥
एक भगत को शनि चुन्ह लीना। रात सपन में दर्शन दीना॥
श्याम शिला है शनि अवतारी। समदर्शी दुख नाशन हारी॥
भगत बतायो रख मर्यादा। लगे उठाने आई बाधा॥
श्याम शिला हो गई अति भारी। भाग देत सब ही नर नारी॥
उसी दास के सपन में आये। फिर सारा विस्तार बताये॥
रिश्ते से जो भांजा मामा। उठा शिला करें पूर्ण कामा॥
मामा भांजा दोनों आये। शनि रूप वह शिला उठाये॥
मामा भांजा बैल जुताये। तब गाड़ी आगे चल पाये॥
उसी भगत मन लालच आया। कल्पित स्थापन थान बताया॥
गाड़ी रूकी बैल हठ कीन्हा। स्थापन शनि शिला कर दीन्हा॥
धाम हुआ यूँ जग में न्यारा। कलि के देव शनि का द्वारा॥
कीन्ही रक्षा बन परकोटा। खड़े निरावृत बिन किसीचोटा॥
इच्छा लेकर लोढ़ा आयो। पुत्र रूप में धन वो पायो॥
चबूतरा ऊँचा बनवाया। फिर भी शिला को उतना पाया॥
पांच फुट नौ इंच ऊँचाई। एक फुट छः इंच चौड़ाई॥
बिन दरवाजे सब जनसोवे। चौरय नीच कर्म ना होवे॥
लग जावे जिस घर में ताला। दीखै साँप रात में काला॥
जिनको भी विषधर डस लेवे। जहर दूर प्रभु शनि कर देवे॥
जो वर्षा ना होये सुखारी। कौल लगावे मिल नर नारी॥
मिलता बड़ा सुखद परिणामा। बादल बरसे शनि के धामा॥
जो भी निंदा करे दर आके। अंग भये सब आँके बाँके॥
कैसा ये दरबार निराला। उज्जल करे देवता काला॥
करें दूर से नारी दर्शन। इतने से शनि होवे प्रसन्न॥

नहा नर तेल चढ़ावे मल मल। छँटे दूर जीवन की दल दल॥
माँग मनौती ले लो सब धन। पूरण करे हर मंशा थणु गण॥
जाकी शिंगणापुर लौ लागी। अन्न धन पुत्र मुक्ति का भागी॥
लागे जयंती मेला भारी। पतवारी कलि के बलकारी॥
दर्शन करन शिंगणा आवै। रोग दुःख दारिद्र्य मिटावै॥
पर नारी जो तके आँख भर। दुख देवे शनिदेव भयंकर॥
व्यथित हुए कारण जिन प्रेता। शनि भगतन का करते हेता॥
गौ रक्ष्य जिस जन का प्रण हो। शनि कृपा से उस घर धन हो॥
जो जग बीच भये निर्नाथा। नाम लेत सर राखे हाथा॥
हिय नरक सम होय क्लापा। निरिंग शनि करें निरसन तापा॥
सब जग अंतक व्यापक रूपा। पार करावै भव-भय कूपा॥
इनके जन सुमिरण में लागो। नशा व्यसन दुर्गुण सब त्यागो॥
नाम शनि का है अति पावन। काम क्रोध मद लोभ मिटावन॥
भक्त उदासी कीर्ति गाई। दर तेरे पे सद्गति पाई॥
एक शत बार पढ़ै जो कोई। आधि व्याधि से छूटे सोई॥
पाठ करे मन से दिन राति। दुख में सुख में भए शनिसाथी॥
बनी प्रेरणा भक्तन आशा। 'मनु' घट माँही हुआ प्रकाशा॥
कोई नहीं सम तुमसा भू-पर। कृपा दृष्टि राखो मम ऊपर॥

सब तापों का कर हरण, शिंगणापुर शनिराज।
अनन्त कोटि सुख दीजिए, रख भक्तन की लाज॥
शिंगणा साठिका पढ़ै, धरै सदा शनि ध्यान।
मुक्ति पद अधिकारी हो, जग में होवे मान॥

कुत्सित कुरूप स्वरूप, सुन्दर शनी महेश।
कुर्मागं गरिष्ठ वरेण्य, खद्योताय सरवेश॥

शनि रक्षा कवच

विनियोग– अस्य श्री शनि रक्षा कवच स्तोत्र मन्त्रस्य शनैश्चर देवता मनु भक्त कृत दोहा छन्दः सकल बीज समाहिता मम भक्तिशक्तिनियंत्रिता शनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

(दायें हाथ में जल लेकर 'अस्य श्री शनि रक्षा कवच स्तोत्र मन्त्रस्य' से 'पाठे विनियोग' तक बोलकर जल नीचे छोड़ दें, फिर पाठ करें)

ध्यानम्

ॐ सूर्यसुतं महेश अंशं, मातु छाया नन्दनम्।
कालरूपं कृष्णवर्णं, मन्दगते तव वन्दनम्॥

भगवान सूर्य के सुपुत्र, भगवान शंकर के अंशरूप व माता छाया के लाल, जो कालस्वरूप व काले रंग के हैं तथा मंदगति चलने वाले है। मैं उनके चरणों की वन्दना करता हूँ।

सर्वसौख्यप्रदातारं दुष्टदर्पविमर्दकम्।
भक्तार्तिनाशनं देवं, शं शनिं प्रणमाम्यहम्॥

सभी सुख प्रदान करने वाले तथा दुष्टों के अहम् का नाश करने वाले, भक्तों के दुःखों का शमन करने वाले, शं बीज वाले भगवान शनि को मैं प्रणाम करता हूँ।

कोणस्थ, रौद्र, बभ्रु, यम, शनि शौरी पिंगलः।
अधिदैव अक्षय कृष्णा, मन्दअरू पिप्पलः॥१॥

वे कोणस्थ, रौद्रान्त, बभ्रवै, पिंगल, शौरी, मन्द, पिप्पल, शनैश्चर, कृष्ण, किसी भी काल में जिनका क्षय नहीं होता, अविनाशी तथा सभी देवों में प्रधान देवता हैं।

अज अगम्य अजेय अनघ, अल्पभोज विख्यात।

होत विषम पीडा विकट, बढ़े असगुन उत्पात॥२॥

जिनका वर्णन बुद्धि से नहीं हो सकता, जो असीमित, अजन्मा और शोकहीन है तथा अल्प भोजन ग्रहण करने वाले विश्वविख्यात हैं, जिनके विषम होने पर अत्यधिक पीडा अपशकुन व उपद्रव भोगने पड़ते हैं।

जिनकी सकल संसार में, विस्तृत कीर्ति अनूप।
भूप से वो रंक करें, करें रंक से भूप॥३॥

जिनकी अद्वितीय कीर्ति सकल संसार में व्याप्त है, जो राजा को भिखारी व भिखारी को राजा बना देते हैं।

निर्भय करो रक्षा करो, जान मुझे अनजान।
वन्दन चरणों में करूँ, नाथ तुम्हें पहचान॥४॥

हे देव! मुझे अनजान जानकर मेरे भय का हरण करो, मेरी रक्षा करो, तुम्हीं मेरे नाथ हो, यह जानकर मैं आपके चरणों की वन्दना करता हूँ।

पूरब में शनिदेव जी, पश्चिम में कोणस्थ।
शत्रु शीश खंडित करे, भक्त शीश वर-हस्त॥५॥

शनिदेव जी पूरब में, कोणस्थ पश्चिम में जो शत्रु के शीश को काट देने वाले तथा भक्तों के शीश पर वरदायी हस्त रखने वाले हैं, मेरी रक्षा करें।

उत्तर में बभ्रु सदा, दक्षिण में पिंगल।
अभिघाती का देव जी, कीजै विफल सब बल॥६॥

उत्तर दिशा में बभ्रु तथा दक्षिण दिशा में पिंगल, जो शत्रु मेरे विनाश की इच्छा रखते हैं, उनको बलहीन करें।

अग्निकोण कालाग्नि करे, संकट सारे दूर।
प्रबाधक शनिदेव जी, करें असुर बल चूर॥७॥

पूर्व-दक्षिण में कालाग्नि मेरे सारे संकट दूर करें। वे भक्तों के कष्टों

का निवारण करने वाले सभी शत्रुओं के बलों का मर्दन करें।

नैऋत में पिप्पल रहें, लेकर कर में भाल।
नीलवर्ण वायव्य में, बनें दुष्ट का काल॥८॥

पश्चिम-दक्षिण में पिप्पल हाथ में भाल लेकर मेरी रक्षा करें। उत्तर-पश्चिम में नीलवर्ण दुष्टों का काल बन मेरी रक्षा करें।

ईशान यम विराजे सदा, लेकर अंकुश हाथ।
सजग रहे रक्षित करें, प्रहर दिवस अरू रात॥९॥

उत्तर-पूर्व में यम सजग होकर अंकुश हाथ में लेकर दिन और रात के सभी प्रहरों में मेरी रक्षा करें।

ऊपर रहे शौरी सदा, नीचे देवा मंद।
भव बन्धन का नाश कर, करें हर्ष आनंद॥१०॥

शौरी ऊपर से व मंदगति नीचे की ओर से भव बंधन मायादि बंधन व दुष्टों का विनाश कर हर्ष और आनन्द प्रदान करें।

दाएँ विराजे वज्रदेह, बाएँ छाया लाल।
दशों दिशा रक्षित करें, शनिदेव महाकाल॥११॥

दाएँ से वज्रदेह, बाएँ से छाया माँ के सुत दशों दिशा सब और से महाकाल शनि मेरी रक्षा करें।

दिव्य देह रक्षें शिखा, सिर पर शोभे शांत।
घोर विराजे ललाट में, अतुलित बल विक्रांत॥१२॥

दिव्य देह शिखा (चोटी) की सिर के ऊपर शांत रक्षा के लिए विराजित हों, मस्तक की घोर जो अपार बलशाली व प्रतापी हैं, मेरी रक्षा करें।

जटाधर सदा केश की, रौद्र रहे भ्रू-मध्य।
भव्य विराजे भौंह में, रोमकूप सुरवन्द्य॥१३॥

बालों की जटाधर भौंह, बीच रौद्र भव्य भौंह की सुरवन्द्य रोमकूप में

स्थित होकर रक्षा करें।

नाकद्वार में ही रहें, ग्रहराज और खञ्ज।
आँख बीच विश्वस्थ हों, शमन शीघ्र सब झंझ॥१४॥

नाक के द्वारों पर दाएँ ग्रहराज, बाएँ खञ्ज व आँखों के बीच विश्वस्थ सभी तूफानों व कष्टों का शीघ्रता से शमन करें।

शिखिकण्ठ रक्षा करें, दोनों कर्ण की आन।
केतु कपोल रक्षा करें, भीषण रक्षें घ्राण॥१५॥

दोनों कानों की शिखिकण्ठ, दोनों गालों की केतु और भीषण घ्राण शक्ति की रक्षा करें।

कर्णमूल क्रोधन बसें, दीर्घ नासिका माँहि।
करें प्रहार रिपु पुंज पर, जान भीषिका खाँहि॥१६॥

कान के मूल में क्रोधन, नासिका में दीर्घ वास कर मेरे महावैरियों के समूह पर प्रहार कर उन्हें विकट विपत्ति जानकर उनका भक्षण करें।

कृष्ण वर्ण रक्षा करें, ऊपर वाले ओठ।
आत्म-भू रक्षा करें, बसकर मम अधरोठ॥१७॥

ऊपर वाले ओष्ठ की कृष्णवर्ण व नीचे वाले ओष्ठ की आत्म-भू स्थित होकर रक्षा करें।

सूर्यपुत्र जिह्वा बसें, करें वाणी कल्याण।
दुर्निरीक्ष्य दन्तावलि, करें नाथ परित्राण॥१८॥

जिह्वा की सूर्यपुत्र वाणी का कल्याण करते हुए रक्षा करें व दंत पंक्तियों की दुर्निरीक्ष्य नाथ पूर्ण रूप से रक्षा करें।

कोटर नेत्रों की करें, कटि रक्षे बली मुख।
मिटे अमंगल तीव्र गति, देवें अविलंब सुख॥१९॥

दोनों नेत्रों की कोटर व बलीमुख मेरी कमर की रक्षा करें, जिससे

अमंगल तीव्रता से नष्ट हों व शीघ्रता से सभी सुख मुझे मिलें।

भयदायी भुजा रक्षे, संवर्त्तक दोनों कंध।
शनैश्चर नाभि में रहे, बनकर अरि गल फंद॥२०॥

भयदायी बाँहों की, संवर्त्तक दोनों कंधों की, नाभि की शनैश्चर, दुष्टों के गलों का फंदा बनकर रक्षा करें।

कंठ विराजे विभीषणा, सदा बचावे अंग।
अखण्ड दण्ड धारी शनि, रहे सदा ही संग॥२१॥

गल में विभीषण स्थित होकर सूक्ष्म नाड़ियों की व अखण्ड दण्डधारण करने वाले शनि सदा साथ रहकर रक्षा करें।

ग्रहेश्वर ग्रीवा बसे, पोषे चंद्र समान।
महाबली रक्षा करें, मेरुदण्ड की आन॥२२॥

ग्रहेश्वर ग्रीवा में स्थित होकर जैसे चन्द्रमा वनस्पतियों का पोषण करता है, ऐसे पोषण करें व महाबली मेरी रीढ़ की रक्षा करें।

कंठ नली कालात्मा, बसें बना निज धाम।
भयहारी निर्भय करो, करूँ स्तुति प्रणाम॥२३॥

गल नलिका में कालात्मा धाम बना स्थित हों, हे भयहारी मुझे भयहीन कीजिए, जिससे मैं आपकी स्तुति वंदन कर सकूँ।

सब चक्रों की रक्षा करें, कलीनाथ सुरराज।
भक्त ढाल बन हो खड़ें, काँपे असुर समाज॥२४॥

शरीरस्थ सभी चक्रों की, कलियुग के नाथ सुरराज रक्षा करें व सदा भक्तों की ढाल बनें, जिससे असुरों में भय व्याप्त हो।

खद्योत रक्षें अंगुलिका, श्री ईशान नखवृन्द।
कुक्षिदेश भुवनेश्वर, बसें सदा सानन्द॥२५॥

अंगुलियों को खद्योत व नखों को ईशान व भुवनेश्वर मेरे कुक्षिप्रदेश

में आनन्द सहित स्थित होकर रक्षा करें।

राशीनाथ रक्षा करें, नित्य मम स्तन देश।
विनशे शोक मन का 'मनु', काटे सभी क्लेश॥२६॥

मेरे स्तन प्रदेश की राशीनाथ, मेरे मन के शोक को खत्म कर रक्षा करें।

सिद्धसंकल्प हृदय की, रक्षा करें सदैव।
भीषण उदर समाय कर, नाशे सब दुर्दैव॥२७॥

वे सिद्धसंकल्प मेरे हृदय की सदैव रक्षा करें व भीषण पेट में स्थित होकर मेरे दुर्भाग्य का विनाश करें।

कालपुरूष रक्षें सदा, मर्मस्थल गुह्यांग।
प्रलयंकर नित ढाल बन, रक्षे मम लिगांग॥२८॥

नाजुक गुप्तांगों की कालपुरूष व मेरे लिंगादि की प्रलयंकर ढाल बनकर रक्षा करें।

महाघोर गुद की करें, रक्षा नित्य आय।
असुर संहारक देव शनि, प्रतिकूलता खाय॥२९॥

नित्य ही महाघोर मेरी गुदा की रक्षा करें व असुरों का दलन करने वाले शनि मेरी सभी प्रतिकूलताओं का हनन करें।

भैरव करें सब ओर से, टखनों को निर्मल।
पाद पृष्ठ रक्षित रखें, नाशे विरोधि दल॥३०॥

भैरव सभी ओर से मेरे टखनों को निर्मल करे व विरोधियों के दल का विनाश कर मेरे पैरों के पिछले भाग की रक्षा करें।

भयानक रूप जानु की, वरेण्य दोऊ जंघ।
रक्षें नित्य देव जी, लेकर कर में खंग॥३१॥

नित्य हाथ में तलवार लेकर वरेण्य दोनों पिंडलियों की व भयानक मेरे घुटनों की रक्षा करें।

कृष्ण रक्षें पादांगुली, बन दुर्दम दुर्जेय।
तलवें रक्षे महासिद्ध, नखगण धरमी ध्येय॥३२॥

पैर की अंगुलियों की कृष्णा प्रबल व सदा विजयी रहने वाले तलवों की महासिद्ध व नखगणों की महान धरमी रक्षा करें।

त्वचा रखें धनुर्धर, अशुष्क सदा अभेद्य।
अस्थि मज्जा माँस मेद, शुद्ध रक्त अरू स्वेद॥३३॥

धनुर्धर त्वचा (शरीर के ऊपरी भाग का चमड़ा) को शुष्क न होने दें, बिना भेदने वाली कठोरतम करें, रक्त व पसीने को, मज्जा, वसा, माँस व हड्डियों की शुद्ध कर रक्षा करें।

आँतों की रक्षा करें, द्विज श्रेष्ठ द्विज रूप।
पित्त रखें निर्मल मेरा, नानाद्विपाधि भूप॥३४॥

मेरी आँतों को द्विजों में श्रेष्ठ व द्विज रूप धारी सुरक्षित रखें व नानाद्विपों का पालन करने वाले मेरे पित्त को शुद्ध बनाये रखें।

पद्म कोष तन में बसे, जहाँ जहाँ जिस देश।
रूप चतुर्भुज धार कर, रक्षो क्रूर सविशेष॥३५॥

तन के जिस-जिस स्थान पर पद्म कोष स्थित हैं वहाँ पर चतुर्भुजधारी क्रूर मेरी रक्षा करें।

कफ को श्री तिथ्यात्मा, रखें सदा निर्दोष।
यमभ्राता नखतेज को, आजीवन अभिपोष॥३६॥

मेरे कफ को श्री तिथ्यात्मा सदा निर्दोष रखें व यमभ्राता नखों के तेज का जीवन भर पोषण करें।

संधिस्थल तन के सभी, मार्गी से परित्रात।
अभिमर्दन अरि हेतु सदा, बनो निषंगी तात॥३७॥

मेरे तन के सभी संधिस्थल (जोड़) मार्गी से रक्षा प्राप्त हों, वे

खड्गधारी धनुर्धारी मेरे पिता होकर शत्रुओं को सदा ही कुचल डालें।

गणना से जो रह गये, इस तन के संस्थान।
मृत्युंजय रक्षित रखें, कर लेकर धनु बाण॥३८॥

इस तन के ऐसे सभी संस्थान जिनका यहाँ वर्णन नहीं हुआ, हाथों में धनुष बाण लेकर मृत्यंजय उनकी रक्षा करें।

अहंकार मन बुद्धि भी, सदा जो आत्म साथ।
रक्षित कर पोषण करे, यमुनानुज शनि नाथ॥३९॥

अहंकार मन बुद्धि भी जो अत्यन्त सूक्ष्म व आत्म साथ रहते हैं, वे यमुना के भाई मेरे शनि नाथ उनका पोषण करें व रक्षा करें।

प्राणापान उदान भी, व्यान संग समान।
प्राण रूप पिंगल करें, सभी प्राण बलवान॥४०॥

प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान– इन सभी पाँचों प्राणों को वे प्राण रूप पिंगल बलवान करें।

जय गगन जल धरनी से, भानुज हृदय पाप।
सर्वजित सभी भयों से, नखेश नाशों ताप॥४१॥

आकाश, जल, पृथ्वी से जय, हृदयस्थ सभी पापों से, भानुज सब प्रकार के भयों से सर्वजित व सभी तापों से नखेश मेरी रक्षा करें।

प्रथम प्रहर दिवस में, रक्षें श्री महाकाय।
द्वितीय तृतीय चतुर्थ में, बचावें राज्यदाय॥४२॥

दिन के प्रथम प्रहर में महाकाय व द्वितीय, तृतीय और दिन के अंतिम प्रहर में राज्यदाय मेरी रक्षा करें।

रात्रि आरम्भ सर्वज्ञ, घन अर्द्ध रात्रान्त।
गृह बीच अन्दर बाहर, रक्षें मम कृतान्त॥४३॥

रात्रि के आरम्भ में सर्वज्ञ, घन अर्द्धरात्रि में, रात्रि के अन्त में घर के

बीच में अन्दर व बाहर कृतान्त मेरी रक्षा करें।

शत्रु से रणभूमि में, सदा करावें जीत।
वनचर हिंसक जीव से, रक्षें वरिष्ठ अजीत॥४४॥

रणभूमि में शत्रु से, वन में विचरण करने वाले हिंसक जीवों से कभी ना हरने वाले अजेय वरिष्ठ मेरी रक्षा करें।

पाखण्ड से प्रमाद से, लगे न मुझे कलंक।
जन सेवा अपराध से, कृशतनु करे निरंक॥४५॥

पाखण्डियों से, आलस्य से मेरी रक्षा कर कृशतनु मुझे जन सेवा के समय हुए अपराधों से विमुक्त करें।

पिशाच व ब्रह्म राक्षस, प्रेत अरू बेताल।
भूत, यक्ष को भी करें, योगाधीश निढाल॥४६॥

भूत, पिशाच, यक्ष, ब्रह्मराक्षस, प्रेत, बेताल जो भी मेरे वैरी हों, उन्हें योगाधीश निढाल कर मेरी रक्षा करें।

बुरे स्वपन शकुन गति, दुर्भिक्ष अपथ उत्पात।
दुर्व्यसन संताप विषभय, रक्षें राशिग नाथ॥४७॥

बुरे स्वप्न, अपशकुन, गति, अकाल, दुर्गम मार्ग, उत्पात, बुरी आदतें, दुखों और विष के भय से राशिग नाथ मेरी रक्षा करें।

ग्रह-पीडा उच्चाटनादि, काल भय सकल रोग।
क्षुधा-तृषा निवारिये, विशालाक्ष महोग॥४८॥

ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीडा, शत्रु द्वारा किए गए उच्चाटन काल के भय व सकल रोग, अधिभूख व अधिप्यास का विशालाक्ष महोग निवारण करें।

कलिदोष कुपथ्य मार्ग से, रक्षे अक्षयफलदाय।
योग विघ्न अपवाद से, राहु सखा बचायें॥४९॥

कलियुग में उत्पन्न दोषों से, गलत कार्यों से अक्षयफल देने वाले व योग में आने वाले विघ्न व बदनामी से राहु सखा सदैव मेरी रक्षा करें।

कालकृत रक्षा करें, शब्द स्पर्श गंध रस।
रूप रहे रक्षित सदा, निकट न आवे अयश॥५०॥

शब्द, स्पर्श, गंध, रस आदि विषयों का अनुभव करते समय कालकृत रक्षा करें व मेरे रूप, कीर्ति का विस्तार करें।

लक्ष्मी यश अरू कीर्ति, पुत्र भी रहे सबल।
भार्या की रक्षा करें, महाग्रह संग दल॥५१॥

महाग्रह दल सहित धन, यश, पुत्र तथा मेरी भार्या की रक्षा करें।

आयु को रक्षें सदा, गोत्र की रखें लाज।
धर्म मेरा रक्षित करें, सिद्धेश्वर महाराज॥५२॥

सिद्धेश्वर महाराज मेरा धर्म, गौत्र तथा आयु की सदैव रक्षा करें।

सत्व बढ़े रज तम घटे, रहे सदा ही शांत।
मन को भी कंचन करे, गुणाढ्य अरू अक्रांत॥५३॥

इस तन में सतोगुण बढ़े व रज, तम (शांति पाये) घटे व अविजित गुणाढ्य मेरे मन को भी पावन व त्रिगुण को दोष रहित करें।

विमुक्ति कर्मबन्धन से, करे भैंसा वाहन।
वैरी विषधर सर्पों का, कुचले जटाधर फन॥५४॥

शनि वाहन भैंसा मुझे सभी कर्मबन्धनों से मुक्त करे व मेरे वैरी भयंकर विष वाले सर्पों का जटाधर फन कुचल डालें।

वामवेध जन्मांग से, रहे शनि जी दूर।
भीषण द्वादस भाव में, न डालें दृष्टि क्रूर॥५५॥

शनि जी वामवेध व जन्मांग से दूर रहवें और बारह भावों में भीषण शनि किसी भी स्थान में अपनी क्रूर दृष्टि न डालें।

कुजाय न्यास क्रम से, करे पाठ परिपूर्ण।
सौम्य विषय विकार से, रक्षें मम सम्पूर्ण॥५६॥

मंगल शनि रक्षा कवच को न्यास क्रम से परिपूर्ण करें व सौम्य विषय विकारों से मेरी रक्षा करें।

काल बचावें काम से, गिद्ध देव अपराध।
गज बचावें नरकों से, पाकर गति अबाध॥५७॥

वे कालरूप मुझे काम के तीव्र आघात से व उनका वाहन गिद्ध देव सेवा में किए गए अपराधों से, उनका वाहन हाथी मुझे नरकों से अपार गति पाकर बचायें।

निश्चल बाधाएँ सकल, नष्ट करे तत्काल।
टाले अकाल मृत्यु शनि, काटे द्वन्द्वा जाल॥५८॥

सभी बाधाओं को उसी क्षण नष्ट कर अकाल मृत्यु को टालकर व सभी द्वन्द्वों को काटकर वे निश्चल शनि मेरी रक्षा करें।

तपोरूप निज क्षेत्र से, देवें सिद्धि अनेक।
नीलछत्र रक्षित रखें, सकल स्तुति मम लेख॥५९॥

तपोरूप (कल्याणकरी क्षेत्रों में) अपने अधिकार क्षेत्रों में सिद्धि प्रदान करें व मेरे द्वारा विरचित सभी स्तुति व लेखों को नीलछत्र रक्षित रखें।

गोचर जन्म लग्न में, महादशा आ जाय।
शनि रक्षा कवच शक्तिवत, करो पठन मन लाय॥६०॥

गोचर में जन्म, लग्न में या शनि की महादशा में साढ़ेसाती, ढैय्या, अन्तर्दशा में शनि रक्षा कवच का शक्तिवत पाठ कीजिए।

भय बन्धन पीड़ा सकल, ग्रह बाधा हो दूर।
जन्म लगन दोष हर दें, धन यश सुख भरपूर॥६१॥

भयबन्धन सकल पीड़ा व जन्म लग्न से उपस्थित दोष अन्य ग्रह द्वारा

उपस्थित बाधा दूर कर यह शनि रक्षा कवच धन, यश और पूर्ण सुख प्रदान करता है।

सब संकट दुर्भिक्ष में, कवच ले हृदय धार।
वाम दृष्टि रक्षा करें, बन अभेद्य प्राकार॥६२॥

सभी संकटों में, अकाल में यह कवच हृदय में धारण करने से वे वामदृष्टि, आपके चारों ओर अभेद्य वृत बनाकर आपकी रक्षा करेंगे।

ब्रह्मचर्य अरू मूक हो, पठन करे शुद्ध चित्त।
हो पूजित महि पर सदा, होकर कवचावृत्त॥६३॥

ब्रह्मचारी व मौन होकर शुद्ध चित्त से जो इसका पठन करते हैं, कवचधारी होकर वे इस भूमि पर सदा वन्दनीय होते हैं।

दुर्लभ शनि का कवच यह, करे पाठ त्रिकाल।
अपराजित भू-लोक पर, बनें शनि प्रतिपाल॥६४॥

शनि का यह कवच अति ही दुर्लभ व शीघ्र फलदायी है जो लोग इसका पाठ करते हैं, वे इस पृथ्वी लोक पर अपराजित होकर शनिदेव की कृपा प्राप्त करते हैं।

इति श्री शनिभक्त मनु विरचितं शनि रक्षा कवच स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शनिदेव मैं शरण तुम्हारी, बेड़ा पार करो उद्धारी।
सकल जगत है माया फंदा, गल फाँस छुड़ाओ विरद विचारी।
काम क्रोध मद लोभ सतावे, मार गिराओ बारी बारी।
बहु-कष्ट तन उपर छाए, इन्हें भगाओ बन उपकारी।
श्वाँस-श्वाँस तेरा गुण गाऊँ, 'मनु' कहाऊँ नाम प्रचारी॥

श्री शनिदेव प्रसन्नाष्टक

सूर्य छाया सुत कहलावें, जग जन श्री शनिदेव उच्चारें।
मन्दगते महिमा अति भारी, नील वस्त्र हैं तन पर धारे।
भक्तन के भारी संकट को, पल माँही शनिदेव निवारें।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

न्याय उपाधि से शनि विभूषित, कलि देवा हैं सबसे न्यारे।
महाज्ञानी हो योगी योगेश्वर, सब भक्तन को प्राणों से प्यारे।
मग्न सदा कृष्णानन्द रहते, गूँजे यश संसार में सारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

देवें योग समाधि साधन, मुक्ति कामी आये जो द्वारे।
नेह सभी जन के प्रति राखें, दुष्टन को भी नाहीं विडारे।
ऋषि मुनि दर्शन पा हर्षे, और गावें गुणगान तुम्हारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

राशीफल तुम शनि भुगताओ, राशी नाथ तुम्हें ही पुकारें।
शुभकर्मी के सदा सहाई, पातकी नीच को दो दुख भारे।
कीरति नेक बखाने शनि हम, वन्दन करते तेरा सारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

साढ़े साती निर्मल करती, वाणी शनि की संशय टारे।
शिव स्वरूपा भव सागर से, नाम जहाज बैठा के उतारे।
पल में योग अमर पा जाये, जिन शनिदेव की शरण सिधारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

दयानिधि दीनन हितकारी, करूणा सागर तुम अविकारे।
वेद पुराण बखाने महिमा, देवन के भी काज सँवारे।
तन-मन-धन अर्पण सब तुमको, कर निर्मल हे पातकहारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

चौरासी लख त्राश मिटावें, जो ले शरणा ध्यान विचारे।
अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता, नाशे अविद्या मूल पिटारे।
मन आनन्द शनि भर देते, जो जन शनि का नामउच्चारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

शनि चरणन पे वारी जाऊँ, छोड़ूँ जगत के कारज सारे।
काल पाश से मुक्ति देओ, भवबन्धन के मेटन हारे।
भेंट नहीं कोई मेरे संग में, 'मनु' न्यौछावर प्राण हमारे।
ऐसे श्री शनि के चरणन में, कोटि-कोटि प्रणाम हमारे।।

दोहा- निर्मल मन श्रद्धा धरें, शनी नवावें शीश।
तापर शनैश्चर खुश रहें, आशिश देत कपीश।।

प्रेत निवारण

1. रविवार को काले धतूरे की जड़ बाँह में बाँधे तो भूत-बाधा फिर कभी नहीं सताती।

2. लहसुन एकड़िया के रस में हींग पीसकर भूत-ग्रस्त को सुँघावें या अंजन करें तो भूत-बाधा फिर नहीं सताती।

3. रविवार को तुलसीपत्र, काली मिर्च प्रत्येक आठ-आठ तथा सहदेइया की जड़ लाकर तीनों को ताँबे के यंत्र में भर धूप देकर धारण करने से भूतादिक दूर हो जाते हैं।

शनि कष्ट निवारण मन्त्र

दो०- संकट पड़े गरीब का, ना जग देता साथ।
तेरे द्वारे आ गया, सुध लो हे शनी नाथ।।

सुनाऊँ शनिदेव फरियाद ऐसी,
कि शायद कभी ना सुनी होगी वैसी।
छाया है भारी कष्टों का झमेला।
कैसे मैं इसको सहूँगा अकेला।।
मेरी आज तुमसे यही है लड़ाई।
ना देवा मुँह मोड़ो मेरी बारी आई।।
कहूँ इस कलह की कहाँ तक कहानी।
कि दुनिया मेरी अब हुई है वीरानी।।
आया हूँ शरणा, ना मुख को छिपाओ।
ऐ दीनों के मालिक, गले से लगाओ।।
जग में नाम तेरे का बजता है डंका।
मिटाओ हिरदय की शनिदेव शंका।।
देख तेरे दर का प्यारा नजारा।
अब जाग इस गाफिल ने तुझको पुकारा।।
मैं पापी अधम हूँ बड़ा ही अभागा।
तेरे नाम से जोड़ा है प्रेम धागा।।
जो आते हैं दर तेरे पे शनिदेवा।
दया कर के करता ग्रहण उनकी सेवा।।
कहता हूँ शनि, मेरे पाप हैं भारी।
मुझ पर जो छाये, वे शाप हैं भारी।।

विश्वास है तेरी मुझे कृपा की डोर पर।
मेरे गुनाह माफ कर रहमत के जोर पर।।
काली छाया कष्टों की, मंडराने लगी अब।
जीना हुआ दूभर मेरा, हो गया गजब।।
दर तेरे आ गया हूँ शनि अब न जाऊँगा।
मर मिटूँगा या तेरी कृपा मैं पाऊँगा।।
दया दृष्टि फेर दो, इस अनाथ पर।
मुझको भरोसा आज मेरे कृपानाथ पर।।
दर तेरे होते रोज चमत्कार बहुत हैं।
श्री शनिदेव तेरे व्यापार बहुत हैं।।
तुझको पता है शनिदेव भक्तों के हाल का।
तू ही तो मात देता, कलियुग की चाल का।।
है तू ही रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी।
तू ही है लाज शनि भक्तों की आन की।।
तुम ब्रह्मा तुम विष्णु और तुम ही महेश हो।
तुम ही गणेश शारदा और तुम ही शेष हो।।
लाखों की बिगड़ी हे शनि तुमने बनाई है।
आज भक्त दर तेरे देता दुहाई है।।
परिवार जो मेरा रहा, हुआ अनाथ है।
तन पर नहीं है वस्त्र, ना घर में दाल भात है।।
हाथों में ना ही फूल फल, आँखों में नीर है।
हृदय के लाख टुकड़े हैं, जलता शरीर है।
अब मौत का सामान देख हुआ अधीर मैं।
कैसे सहूँगा शनिदेव भारी पीर मैं।।

कितने ही जलते मरतों को तुमने बचाया है।
वीरानों में सदा ही तुमने, फूल खिलाया है।।
स्वीकार कर शनि मेरे कोटि प्रणाम को।
विस्तार दे फिर आज अपने पावन नाम को।।

शिंगणापुर में वास तेरा शिलारूप है।
तू ही है ईष्ट सबका वहाँ तू ही भूप है।।
है आज तेरे नाम का लगता वहाँ मेला।
सब है तेरे भक्त वहाँ ना गुरू चेला।।

कर्मों के सारे भोग से निजात दिला दे।
शनिदेव अपने नाम की बूँटी तू पिला दे।।
हूँ बड़ा आकिल, मुझे कुछ होश नहीं है।
ए देव शनि तेरा इसमें दोष नहीं है।।

दर-दर भटकता रहा, तेरे दर पे ना आया।
दूसरा कोई दर फिर भी मुझको ना भाया।।
जब सुना दर तेरे सदा रहमत है बँटती।
दु:ख की सब जंजीर तेरे दर पे है कटती।।

उन हवस परस्तों के साये से बचा भागा।
गफलत की भारी नींद से मनवा तभी जागा।।
फिर बनाया नाम को तेरे ही आधार।
अब विनती मेरी सुन ले शनि परवर दिगार।।

है कौन काम जग में, जो तेरे वश में नहीं है।
रूतबा तेरा ऊँचा बड़ा, कोई यूँ ही नहीं है।।
तेरा बड़ा ही शनि है इतिहास निराला।
बड़े से बड़ा काम चुटकियों में कर डाला।।

हिंदू हो या मुस्लिम या फिर सिक्ख ईसाई।
सबने ही शनिदेव तेरी शरण है पाई।।
किस्मत के ताले खोल शनि तुमने रख दिये।
भक्तों को सुधा पिलाई खुद प्याले विष पिये।।

दुष्टों को काली रात, तेरा नाम है शनी।
भक्त को उबारना, तेरा काम है शनी।।
हृदय में बसाकर जो शनि नाम आ गये।
ओ जग के पालन हार तेरी कृपा पा गये।।

भरता है जो भी पेट वो है शनी हमारा।
है तू ही जगदाधार शनी तू ही करतारा।।
भोगेगा तेरा भक्त क्यों कष्ट की कारा।
तेरा द्वार सबको है मोक्ष का द्वारा।।

तू ही है सिरजन हार, सिरताज तू ही है।
अब डूबते इस भक्त की लाज तू ही है।।
तुझको है शनि वास्ता तेरे जमीर का।
बिगड़ा तू आज काज कर मुझसे फकीर का।।

ये मेरी जिंदगी पर अहसान हो तेरा।
'मनु' को भी शनिदेव कुछ भान हो तेरा।।
कीचड़ में कमल खूब तुमने खिलाये हैं।
मरते हुए बहुत तुमने ही जिलाये हैं।।

ये गगन चाँद सितारे सारे गवाह हैं।
मेरे दिल में बस चुकी शनि तेरी चाह है।।
अन्धों को तूने आँख दी, बाँझों को पुत्र दिये।
दी कोढ़ियों को काया, बुजुर्गों को सुख दिये।।

आँधी से तूफानों से, कश्ती को निकाला है।
शनि नाम का विरद तुमने ही सम्भाला है॥
घबरा के जो दु:खों से मरने को थे चले।
रहमत से रोक डाले तुमने ऐसे काफिले॥
संकट में भक्तों पर किया एहसान है।
हर भक्त में बसे शनी तेरे प्राण हैं॥
भक्तों के लिये तू ही खुद जानो जहान है।
रहा भक्त जहाँ टेर वहीं तेरे कान हैं॥
गाते जो रोज मुश्किलों में शनि नाम हैं।
हो जाते हैं उजाले, कटें संकट तमाम हैं॥
है तू ही जग में सार, कुछ भी सार नहीं है।
तेरे द्वार जैसा, दरबार नहीं है॥
कलियुग में आज भारी अनाचार बढ़ रहा।
हुई धर्म की हानि अत्याचार बढ़ रहा॥
ऐसे में कहाँ जाऊँ, न कोई ठौर ठिकाना।
दर तेरे सत्य हँस रहा है, मैंने ये जाना॥
मुझको अपने प्रेम की तू राह दिखा दे।
कर मेरा कल्याण, सोया भाग जगा दे॥
चिंताएँ सारी मेरी, हो जाएँ छू मंतर।
जले प्रेम ज्योत सदा मेरे हिय अन्दर॥
सुमिरण सदा जिह्वा से तेरा करता रहूँगा।
मैं साधुओं की झोली लाजमी ही भरूँगा॥
प्रचार तेरा करूँ, ले हाथ पताका।
अब तो सँवार बिगड़ी मेरी, हे शनि दाता।

है आज इम्तिहाँ तेरे प्रेम का शनी।
पत्थर से हीरा कर मुझे लाज रख अपनी॥
विनती करे भक्त मनु संसार संग।
जमाना सदा गाए शनि मेरा ये अभंग॥
त्रिकाल ज्योति जगा शुद्ध मुख से जो गाए।
जीवन में शनिदेव की कृपा वो पाए॥
हृदय में धारण करे, शनी वचन मान।
युगों युग याद रखे, उसको ये जहान॥
भूत प्रेत राक्षस बेताल हो जहाँ।
कष्ट निवारण जाप कर शुद्धि हो वहाँ॥
मन्त्र शनि कृपा का, ये बड़ा निराला।
संकट में जपने वाले को अभय कर डाला॥
दीनों की दूर दीनता हो, इसको जाप कर।
शनि पुत्र की आकांक्षा भी देते पूरी कर॥

दोहा– कष्ट निवारण मंत्र को, लीजै मन में धार।
शनि कृपा 'मनु' मिल जाय, बढ़ें सकल व्यापार॥

शनि

शनिदेव अन्त:करण के प्रतीक हैं। बाह्य प्रवृत्तियों और आंतरिक चेतना को मिलाने में पुल का कार्य करते हैं। अहं भाव द्योतक हैं। आत्मज्ञान, तत्वज्ञान, स्वतंत्र विचार, आत्म संयम, धैर्य, दृढ़ता, गाम्भीर्य, विचारशीलता के प्रतीक हैं। शरीर की हड्डियाँ, नीचे के दाँत, बड़ी आँतें एवं मांसपेशियों पर प्रभाव डालते हैं।

शनिवार व्रत कथा

नमन करूँ गणनायका, सुमिर शारदा मात।
कंठ विराजो शारदे, बनिये गणपति हाथ।।
बजरंगी रघुनाथ को, पूजूँ सीता साथ।
लक्ष्मण भरत शत्रुघ्ना, करें सुखद प्रभात।।
करूँ शनी आराधना, देखूँ ना दिन रात।
आदित्य संग बृहस्पति, सफल करो पुण्यार्थ।।
कथा शनि व्रतवार की, करता हूँ आरम्भ।
मार्ग दर्शन कीजिए, त्रिपुरारि जगदम्ब।।

हिन्दुस्तान के मध्य बस्ती, उज्जयनी एक पावन नगरी।
महाकालेश्वर पावन लिंग से, बनी सुंदर मन भावन नगरी।
चक्कवत विक्रम न्यायकारी, इस नगरी के बन अधिकारी।
प्रजा का कल्याण हैं करते, भगवन का भी नाम सुमिरते।
योद्धा परम थे शक्तिशाली, महाकाली की किरपा पाली।
सभी कलाएँ निधि में डाली, करे सभी जन की रखवाली।
प्रेमवीर प्रेमी था जन का, बजता विकरम नाम का डंका।
करता था सम्मान सभी का, ज्ञानी पंडित संतन जी का।
अनेक बरस किया राज नगर पर, रहता संग बेताल गुणी खर।
नव-रत्नों से दरबार सुसज्जित, दुश्मन रहते थे सब लज्जित।
उग्र तपस्या विकरम कीन्ही, सब देवों की किरपा लीन्ही।
दिया इन्द्र वरदान अनोखा, स्वर्ग यात्रा का मिला मौका।
इन्द्र दीपक राग सिखाया, सहस्त्र बरस जियो आशिष पाया।

बैठाकर सिंहासन अपने, किये पूरे विक्रम के सपने।
तीन बार जा स्वर्ग गमन को, महकाया इस धरा चमन को।
राज करें राजा न्यायकारी, प्रजा रहने लगी सुखारी।
देव लोक में हुआ फिर झगड़ा, बढ़ते-बढ़ते बढ़ गया रगड़ा।

दो०- अंधकार अभिमान का, छाया नभ के लोक।
बल पड़े देव ललाट पर, कोई न पाया रोक।।

सब देवों में ठन गई तन गई, हममें सब में बड़ा है कौन।
देवराज निर्णय कैसे हो, खड़े रहे वो होकर मौन।
सूझा एक उपाय कहा, आप मृत्युलोक में जाइये।
राजा विकरम न्यायकारी, उनसे न्याय कराइये।
पहुँचे नवग्रह राजा जी, विकरम के दरबार में।
कैसे न्याय हो इन देवों का, पड़ गये सोच विचार में।
सोचा कुछ आसन लगवाये, उनके एक कतार में।
बड़ा वही जो देर से बैठे, कहलाये संसार में।
बृहस्पत बैठे, सूर्य बैठे, चन्द्र देव भी बैठ गये।
बुध मंगल राहू केतु भी, अपना आसन ग्रहण किये।
धर्म संकट आया राजन पर, शनिदेव पिछवारी थे।
सब देवों में शक्तिशाली, वो ही अमंगलकारी थे।
हंसे बृहस्पति हंसे सूर्य, हंस पड़े वहाँ देव सभी।
आँखें क्रोध से लाल हो गईं, तनी शनि भृकुटि तभी।
मुझसे वैर लेकर राजन, तुमने अच्छा नहीं किया।
क्या समझकर तुमने मेरा, नृप विकरम अपमान किया।
चन्द्र दशा सवा दो दिन, बुध सूर्य शुक्र आधा मास।

दो माह रहे सोम और मंगल, गुरू रहते हैं तेरह मास।
राहु केतु अठारह महीने, साढ़े सात वर्ष मैं आऊँ।
अन्न धन से खाली मैं कर दूँ, तन तक भी मैं बिकवाऊँ।
बीता कुछ समय राजन जी, भूल गये बाते सभी।
विकरम के दरबार में, घोड़े वाला आ गया तभी।
पसन्द किया राजा जी ने एक, भंवर घोड़े का नाम था।
पवन समान दौड़ना, ये ही उसका काम था।
लेने परीक्षा विक्रम जी, अश्व पीठ पर हुये सवार।
अकड़ कर में पकड़ लगाम हुए, दौड़ाने को अश्व तैयार।
दौड़ पड़ा तेजी से वो, भयानक वन में पहुँच गया।
गिरा दिया राजा जी को, जाने कहाँ गायब हुआ।
जंगल में जब राजा जी, भूख प्यास से व्याकुल हुए।
कौन वन है कौन दिशा है, जानने को आकुल हुए।
लगे चिल्लाने जंगल में जब, अंधकार छाने लगा।
पूरा जंगल एक स्वर में, तभी गीत गाने लगा।

दो०- प्यास बढ़ी भारी भई, भूप भए बेचैन।
तन मन सब व्याकुल हुआ, नीर भरे दोउ नैन।।

ग्वाला एक उस रस्ते आया, राजा जी को शीश नवाया।
कुशल क्षेम राजा का पूछा, जान बुद्धि से कुल का ऊँचा।
लाकर नीर नदी का पिलाया, पानी पिलाकर इनाम पाया।
मध्यमा से मुद्रिका निकाली, ग्वाले को नृप ने दे डाली।
ग्वाले ने मार्ग दिखलाया, ताम लिंदा पुर नगरी लाया।
तामलिंदा पुर पहुँच भूप ने, पूर्ण किए अमाशय सपने।

बैठ लगे करने विश्राम, ताम लिंदा पुर नगर के धाम।
भोर भई रवि सर पर आये, राजा जी आकर के जगाये।
उसी चौक खुली एक दुकान, जहाँ मिटी राजा की थकान।
नंदलाल था सेठ सर्राफ, बोला सज्जन उठिये आप।
बैठे थोड़ा जाकर दूर, फरमाये विश्राम हुजूर।
करने लगे सेठ फिर काम, लगी भीड़ न मिला आराम।
धन वर्षा हुई अजब अनोखी, आज तलक ना मैंने देखी।
दरसन हुए मुझे किसके आज, बनी माँ लक्ष्मी मेरा साज।
याद आ गई वो पुण्य आत्मा, था मुसाफिर या परमात्मा।
दर्शन मिले बड़े भाग्यवान, लगा ढूँढ़ने बढ़ा दुकान।
मंदिर था नजदीक वहाँ पर, नृप विकरम बैठे थे जहाँ पर।

दो०- नंदलाल पहचान कर, बोला दोउ कर जोर।
भाग्यवान हे हरि प्रिय, किरपा कीजै और।।

कौन हैं सज्जन कहाँ से आए, ताम लिंदा पुर के धाम।
राजा जैसा वेष आपका, परिचय दीजिये मुझे तमाम।
सुंदर मुख है हरि के जैसा, तन भी भया है सुवर्ण समान।
जब से दर्शन हुए आपके, धन से भरी है मेरी दुकान।
मैं हूँ जात का क्षत्री लाला, स्वीकारो मेरा प्रणाम।
दूर देश वासी हूँ जी मैं, सफर रहा कर हर एक ग्राम।
पहचान छुपायी अपनी विकरम, नंदलाल का रखा मान।
आतिथ्य स्वीकार किया फिर, पहुँच गये सर्राफ मकान।
भोज अनेक राजा सम्मुख, रखवा दिये लाला ने तमाम।
छक कर खाये राजा जी ने, मन से शिव को किया प्रणाम।

शनिदेव जी की लीला को, पहचान ना पाये जगत तमाम।
कभी भटकाये नाथ अरण्य में, कभी खिलवाये सभी मिष्ठान।
परिचय कराया फिर पुत्री से, आलोलिका जिसका था नाम।
गुण यौवन से महक रहा था, तन उसका पद्म गंध समान।
मुख दर्शन कर सुध-बुध खोयी, विकरम भूला जगत तमाम।
रति काम का मिलन अनोखा, अब जाने क्या होगा राम।
नौजवान ये बड़ा रूपवर, लगता कोई राजकुमार।
मेरा जीवन स्वामी हो ये, लिया मन में आलोलिका ने धार।
शयनागार में शयन को चले, संग सोये नंदलाल जी।
हार उतारे मयूर चित्र पर, लटका दिये तत्काल जी।
शयन कर रहे राजा जी के, स्वप्न में आये शनि महाराज।
हंस करे बोले जोर-जोर से, सुख से सो ले विकरम आज।
आँखें खुली विकरम जी की, उठ गये संग नंदलाल सर्राफ।
चित्र मयूर पर हार ना पाया, लागे चोर-चोर कह काँप।
शनि दृष्टि ने बुद्धि पलटी, जिसको समझा हरि समान।
अभी उसी का हाथ पकड़कर, कहने लगे तू चोर महान।
सभी कर्मों का फल भुगताये, नहीं दूजा कोई शनी समान।
सब देवों में बड़े कहलावें, कलि के देव को पूजे जहान।
राजा चन्द्रसेन के सम्मुख, नंदलाल ने नृप किए पेश।
हाथ पैर कटवाये भूप ने, उनके जिनसे मिला था देश।
चंद्रसेन पहचान ना पाये, शनि दृष्टि ने डाला फेर।
सिंह गर्जना हिरण है करता, संग में खाने लगा है शेर।
दो०- शनि दृष्टि अति क्रूर है, जो न हो अनुकूल।

तन पीड़ित धन नष्ट हो, मिट जाए सुख मूल।।
दृष्टि शनैश्चर की पड़े, छाये तिमिर अपार।
सम्बंध धूमिल हो सभी, सिमटे सब व्यापार।।
न्यायकारी विकरम राजा का, किया शनि ने ऐसा हाल।
चन्द्रसेन ने धमकी देकर, कहा निकाल दे सारा माल।
मौन हुए विकरम राजा जी, नष्ट अहम् सारा हुआ।
काम न आया बल पौरुष भी, काम नहीं आई दुआ।
हाथ और पैर काटकर इसके, डाल आओ जंगल में आज।
चेहरे से है नूर झलकता, मगर अशोभन इसके काज।
हस्त पद काट विकरम के, किया सैनिक ने पूर्ण फरमान।
उज्जैनी प्रजा थी सारी, स्थिति विकरम की से अन्जान।
बिना जाँच पड़ताल किए ही, न्याय ये कैसा हुआ है आज।
चक्रवर्ती सम्राट घूमता, नगर नगर में खोकर ताज।
मन ही मन फिर किया आवाहन, विकरम ने माँ महाकाली।
हे माँ मेरी विपदा ये क्यूँ ना, तूने अब तक है टाली।
माँ महाकाली प्यार से बोली, बेटा नहीं भूली वरदान।
मगर शनि की निंदा करके, तूने किया अपराध महान।
शनिदेव के क्रोध ताप को, विकरम सहना ही पड़े।
मिट जायेंगे इससे विकरम, संस्कार कष्टकारी बड़े।
शनि दशा दुख और भोग, सबको सहना पड़ता है।
जैसे दशा में शनि जी रक्खे, वैसा रहना ही पड़ता है।
तेरे मन की शक्ति बनकर, रहती हर पल तेरे साथ।
तेरा संयम अब से तेरा, पैर बना और बना है हाथ।

जल बिन जैसे मछली तड़फे, वैसे विकरम तड़फे आज।
दौड़ रहा है काल गति से, छिन गयी विकरम की सब लाज।
हस्तपद खंडित हुए तन से, टूट गया सब देहाभिमान।
रह गया फिर अंतिम साधन, करना महाकाल का ध्यान।
शनिदेव ने स पन में जाकर, चन्द्रसेन को चेता दिया।
हुआ नहीं अपराध सिद्ध, हे चन्द्रसेन क्या न्याय किया।
अब उसके अन्नजल का प्रबंध, होगा कृपा से मेरी।
इसका पश्चाताप तू कर ले, होगी शुद्ध बुद्धि तेरी।
तेली एक पत्नी के संग में, उस रस्ते से जा निकला।
पत्नी उज्जयनी की वासी, विकरम को पहचान लिया।
बोली अपने स्वामी से हे, नाथ ये उज्जयनी राजा।
विवाह इन्होंने सम्पन्न कराया, था सब इनका गाजा बाजा।
अब इनको इस दारूण दुख में, नहीं छोड़ना हमको नाथ।
डोली में विकरम को बैठा के, पैदल चलने लगे वो साथ।
तामलिंदा नगर पहुँचकर, अपने घर नृप लिये उतार।
तेली ने फिर मन ही मन में, किया विकरम सेवा का विचार।
शयन कक्ष तैयार कराकर, करवाया तन का उपचार।
मन ही मन दम्पत्ति सोचे, किसका बने राजन हैं शिकार।

दो०- 'मनु' तेरे संस्कार का, होगा जब भुगतान।
तन मन पीड़ित हो तबहिं, शनी दशा को जान।।

होश तभी विकरम को आया, देखा फिर अपना सब हाल।
तेली तेलन की सेवा से, हो गये विकरम जी निहाल।
स्वस्थ जानकर अपने तन को, तेली का दिया जता आभार।

बोले भैया किया क्यों मुझ पर, तुमने बड़ भारी उपकार।
तेली की पत्नी ने आकर, दिया राजन को परिचयतमाम।
मात-पिता सब ही तुम मेरे, तुमसे सुख वैभव ये धाम।
भोग खिलाया राजन को फिर, थी आँखों में अश्रु धार।
छककर खाया विकरम जी ने, समझ सत्य का प्रेम व्यवहार।
स्वाभिमानी राजा ने फिर, किया आग्रह करने को काम।
लगे हाँकने कोल्हू बैल को, सुबह से हो जाती थी शाम।
लक्ष्मी को तेली के घर में, मिल गया रहने को अस्थान।
तेली ने हिरदय से माना, राजा को साक्षात् भगवान।
कोल्हू के बैलों को हाँकते, समय कष्ट का बीत गया।
अहम मिटा चक्कवत राजा का, तन-मन भी नवनीत भया।
साढ़े साती के दो दिनकेवल, रह गये राजा जी के शेष।
वक्रदृष्टि शनिदेव ने बदली, कृपा दृष्टि का हुआ प्रवेश।
इन्द्र देव से सीखे राग का, हिरदय ने किया गायनआदेश।
दीपक राग के गायन का, अभी हुआ था समय विशेष।
लगे गुनगुनाने विकरम जी, महक उठी नगरी सारी।
जैसे गाने लगी धरा पर, मधुरित कोयलिया प्यारी।
प्रहर रात का गाते-गाते, ना जाने कब शुरू हुआ।
गूँज उठा फिर स्वर विकरम का, राजमहल तक पहुँच गया।
राजकुमारी पदमावती के कर्ण, हृदय को छूने लगा।
भाव हिय में निपट प्रेम का, पदमा के बढ़ने लगा।
महल की छत पर पदमावती थी, मंत्र मुग्ध-सी खड़ी हुई।
सुध-बुध भूल गयी अपनी सब, आज हैरानी बड़ी हुई।

तभी जल उठे दीप राज्य के, राजमहल जगमगा उठा।
राजकुमारी दंग रह गई, आज नगर में क्या ये हुआ।
दीपक राग खत्म हुआ तो, श्री राग गाने लगे।
भाव अनोखे पदम सेना के, हृदय में आने लगे।
खत्म हुआ श्री राग ज्योंहि, फिर से नगर अंधेर हुआ।
पदमावती के दिल यौवन को, दूर से ही विकरम ने छुआ।
दो०- चित्त निर्मल हो भक्ति से, तन निरमल पा कष्ट।
खत्म दशा शनिदेव की, सुख आवे दुख नष्ट।।
आदेश हुआ परिचारिका को, उसे ढूँढ़ो जिसने गाया राग।
वो ही हो प्रियतम अब मेरा, वो ही होवे मेरा भाग।
हुआपालन आदेश दिया फिर, परिचय सखि ने लाकर खास।
हाथ पैर बिन एक नवयुवक, तेली के घर का है दास।
थी विस्मय में रानी पदमा, पर संकल्प लिया मन धार।
केवल भाग्य वही अब मेरा, वही हो मेरे प्राण आधार।
दिया आदेश बुलाकर लाओ, दे आतिथ्य और सत्कार।
अब से केवल राजमहल में, होगा उनका दुख परिहार।
पदमावती के सम्मुख जब, विकरम को लाया गया।
अजब अनोखा रानी महल में, सन्नाटा विस्तृत हुआ।
लगे निहारने एक दूजे को, घड़ियाँ बीतती जाती थीं।
नैनों ही नैनों में भेजीं, पदमा ने प्रेम की पाती थी।
रही थी रूप निहार विक्रम का, अजब बड़ा व्यवहार था।
अजनबी दोनों एक हो गए, प्रथम मिलन ही प्यार था।
हस्तपद खंडित होने पर, मुख पर तेज अपार था।

हुए मोहित पदमा पर राजन, केवल शनी आधार था।
गायन शुरू किया राजन ने, पदमा के एक इशारे पर।
रानी महल में पुरुष गान सुन, पहुँचे राजन द्वारे पर।
जान हाल गुस्से में भभके, दिया सैनिकों को आदेश।
इस चौरंगे को ले जाकर, दे दो कारागार विशेष।
पदमा राजन के पद पर, रख मस्तक बोली पिताश्री।
अब मेरे तन का प्राण यही है, और जीवन आधार यही।
उधर नैनों में अश्रु भर कर, विकरम जी ने किया शनि ध्यान।
बड़ी तेरी अद्भुत लीला है, मैंने लिया है अब ये मान।
सब देवों में आप बड़े हो, आप ही बलशाली शनिदेव।
मंदिर एक निर्माण कराकर, सदा करूँगा तेरी सेव।
आलोक हुआ फिर उसी महल में, प्रकटे सम्मुख श्री शनिराज।
बोले हे विकरम अब तेरे, बनाऊँगा बिगड़े मैं काज।
किया प्रणाम मन ही मन में, शीश झुकाकर शनि सम्मुख।
अवरूद्ध हुआ कंठ राजा का, फिर से मिल गया वैभव सुख।
हस्त उपजे फिर पैर भी उपजे, विक्रम तन सम्पूर्ण भया।
बहु दिव्य रत्नों से सुसज्जित, मुकुट शीश पे रखा नया।
बोले अहम् तुम्हारा राजन, चित्त शुद्धि में बदल गया।
नवजीवन नवरूप ये तेरा, कृपा से मेरी निखर गया।
जो तुमको हो श्रेष्ठ वही, माँग लेओ मुझसे वरदान।
अभीष्ट करूँ पूर्ण सब तेरे, हे नरश्रेष्ठ हे भूप महान।
दो०- विकरम ने शनी सम्मुख, प्रकट किया निज भाव।
सब देवों में हो बड़े, करते रंक से राव।

एक यही वर मुझे चाहिए, हे जन पालक सर्वाधार।
जैसी विपदा मैंने भोगी, भोगे ना कोई करो स्वीकार।
कह तथास्तु प्रेम से बोले, और कोई वर माँगो साल्हाद।
सुख वैभव धन यश कीर्ति, और देता तुम्हें अभय प्रसाद।
विकरम जी ने शीश झुकाकर, हाथ जोड़ फिर नमन किया।
स्तुति की श्री शनिदेव की, प्राणों से शनि हवन किया।
वरद हस्त सर विकरम के, शनैश्चर ने रक्खा तत्काल।
तुमसा इस पूरे कलियुग में, होगा नहीं कोई महिपाल।
जो भी विकरम कथा तुम्हारी, श्रवण पाठ करे शनिवार।
उसकी भक्ति से प्रसन्न हो, दूँगा उसको फल मैं चार।
सर्व रोग हर भय मुक्त कर, सब बाधा का नाश करूँ।
अष्टम व्ययस्थ जन्मस्त द्वितीयस्त, सब पीड़ा तत्काल हरूँ।
सब और से रक्षा मैं करूँ, शमन करूँ सब कष्ट क्लेश।
जो मंदिर मेरे दर्शन करके, कहें कथा चढ़ाए पुष्प विशेष।
अंतर्धान हुए शनिदेवा, पूर्ण मनोरथ किए सकल।
हस्त पद सम्पूर्ण हो गए, लौट आया विकरम का बल।
चन्द्रसेन पदमा और सखियाँ, निद्रा माया से जो थे अचल।
स्मृति लौटी चन्द्रसेन की, देख विक्रम को हुए विकल।
हाल जानकर फिर यह सारा, कन्या देने का जिक्र किया।
सहमति विक्रम की पा ली, बाद विवाह का फिक्र किया।
उधर खूंटी ने हार था उगला, देखा स्वयं ही सेठ सर्राफ।
हे भगवन मेरे हाथों से, हुआ बड़ा ही यह महापाप।
आलोलिका को संग लेकर, चन्द्रसेन सम्मुख आए सर्राफ।

कथा सारी राजा को सुनायी, मन में भरकर भारी विषाद।
विकरम के दर्शन करवाकर, करवाया नंदलाल संवाद।
पाणिग्रहण कर आलोलिका का, दिया सेठ को पूर्ण प्रसाद।
कथा नगर वासी कर्णों तक, पहुँच नया सुख देने लगी।
सभी जन आनन्द में भरकर, गाने लगे जय जय श्री शनि।
तेली तेलन को अपार स्नेह दे, और दिया सुंदर उपदेश।
पीड़ित की सदा सेवा करना, होगी किरपा शनि जी की विशेष।
राजाचन्द्र सेन और सेठ ने, रीति सहित फिर कियाविदा।
आलोलिका पदमा के संग में, सुख वैभव यश भोगो सदा।
हाथी घोड़े सेना धन ले, पहुँचे विकरम अपने धाम।
प्रजा सुखी हुई फिर सारी, कष्ट हो गये दूर तमाम।
फिर सभा में बैठ किया, शनी मंदिर निर्माण विचार।
सब देवों में बड़े शनि हैं, सभासदों ने किया स्वीकार।
मंदिर एक निर्माण कराया, लेकर 'मनु' शनि सेवा भार।
उज्जैनी प्रजा पर करते, तब से शनि कृपा अपार।
पूर्ण हुई कथा अनोखी, कैसे विक्रम का हुआकल्याण।
पूजन करना सदा शनि का, कलियुग में उत्पन्न इन्सान।

दो०- शनि लीला की यह कथा, करे पठन शनिवार।
विकरम सम किरपा मिले, आये सुख घर द्वार।।

शांत धनी मन्द चेष्ट हैं, शुष्क गूढ़ अरू धीर।
नित्य क्रूर अरू श्रेष्ठ हैं, भव्य वन्द्य अति वीर।।
नीलांजन निभ अरू शत, तूणीर सर्व धार।
भक्ति के वश भानू पुत्र, वरदायक बलकार।।

शनिवार व्रत कथा

शनिदेव साधना तथा पूजा अर्चना से सहज ही प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। शनिदेव जब किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है किन्तु यदि किसी पर शनिदेव की कृपा हो जाए तो वह भिखारी से राजा हो जाता है। शनिवार का व्रत शनिदेव को प्रसन्न करने व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

शनि का तांत्रिक मंत्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः।

विधि विधान – शनिवार को पीपल वृक्ष के नीचे अथवा भैरव मंदिर में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के लिए शनिदेव की लोहे की मूर्ति रखकर, काली वस्तुओं, सरसों का तेल, मिट्टी का दीपक तथा लोहे के पाशों का प्रयोग करें। तांत्रिक मंत्र द्वारा शनिदेव का पूजन करें, व्रत कथा पढ़ें, तत्पश्चात पीपल को अर्घ्य दें। भोजन एक ही समय करें तथा उड़द और तिल का प्रयोग अवश्य करें।

व्रत कथा – एक समय सूर्य चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु आदि ग्रहों में परस्पर विवाद हो गया कि हम सब में बड़ा कौन है। सभी ग्रह अपने आपको बड़ा कहने लगे।

जब काफी समय तक निर्णय न हो सका तो सब झगड़ते हुए इंद्रराज के पास गए और कहने लगे कि आप देवताओं के राजा हैं इसलिए ये न्याय करके बताइए कि हम नव ग्रहों में कौन बड़ा है। देवराज इन्द्र ग्रहों का यह प्रश्न सुनकर भयभीत हो गए तथा कहने लगे कि मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं किसी को छोटा बतला सकूँ।

इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं। वे सबकी समस्याओं

का समाधान अत्यंत बुद्धिमानी से करते हैं। अतः आप सभी उनके पास जाएँ। राजा विक्रमादित्य आपके विवाद का समाधान करेंगे।

सभी ग्रह देवता भू लोक से चलकर विक्रमादित्य की सभा में पहुँचे तथा अपना प्रश्न राजा के सामने रखा। राजा विक्रमादित्य ग्रहों की बात सुनकर चिंतित हो गए तथा सोचने लगे कि मैं अपने मुख से किस ग्रह को छोटा अथवा बड़ा बताऊँ। जिसे छोटा बताऊँगा वही क्रोध करेगा। विवाद निपटाने के लिए उन्होंने एक उपाय सोचा। राजा ने सोना, चांदी, कांसा, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक तथा लोहा आदि नौ धातुओं के नौ आसन बनवाए तथा सभी आसनों को उनके मूल्य के अनुसार बिछवा दिया।

इसके पश्चात् राजा ने नवग्रहों से कहा आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा तथा जिसका आसन सबसे पीछे वह सबसे छोटा जानिए क्योंकि लोहा सबसे पीछे तथा शनिदेव का आसन था इसलिए शनिदेव ने सोचा कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है।

राजा के इस निर्णय पर शनिदेव को बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चंद्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ़ महीना। बुध और शुक्र एक महीना और बृहस्पति तेरह महीने विचरण करते हैं परन्तु मैं एक राशि पर ढाई वर्ष से लेकर साढ़े सात वर्ष तक रहता हूँ। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दुःख दिया है। सुनो राजन- रामचंद्र जी को साढ़े साती आई तो उन्हें वनवास हो गया। रावण पर आई तो राम ने वानरों सहित उसकी लंका पर चढ़ाई कर उसके कुल का सर्वनाश कर दिया। हे राजन! तुमने मुझे अपमानित किया है। अतः अब तुम सावधान रहना।

राजा विक्रमादित्य ने कहा- जो कुछ भाग्य में होगा देखा जाएगा। ऐसा सुनकर सभी ग्रह प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गए किंतु शनिदेव जी अत्यंत क्रोध में वहाँ से सिधारे।

कुछ काल व्यतीत होने पर जब विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों का सौदागर बनकर सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी में आए। जब राजा ने घोड़ों का सौदागर के आने की खबर सुनी तो उन्होंने अपने अश्वपाल को अच्छी-अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदने की सलाही दी।

अश्वपाल इतने अच्छे घोड़े देखकर तथा उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया तथा तुरन्त ही राजा को सूचना दी। राजा विक्रमादित्य ने उन घोड़ों को देखा तथा उन घोड़ों में से एक अच्छे नस्ल के घोड़े को चुनकर सवारी के लिए उस पर चढ़े।

राजा के पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा तेजी से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक घने जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अंतर्ध्यान हो गया। इसके पश्चात राजा विक्रमादित्य अकेले जंगल में भटकते फिरते रहे। भूख प्यास से व्याकुल राजा ने एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकालकर ग्वाले को दी तथा स्वयं शहर की ओर चल दिये। राजा शहर में जाकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गए तथा उन्होंने उसे अपना नाम वीका बताया।

सेठ ने उसे एक कुलीन व्यक्ति समझकर जलादि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बहुत बिक्री हुई। सेठ उसे भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन के लिए ले गया।

भोजन करते समय राजा ने एक आश्चर्यजनक घटना देखी, जिस

खूंटी पर हार लटक रहा था वह खूंटी हार को निगल रही थी। भोजन के पश्चात जब सेठ कमरे में आया तो उसे खूंटी पर हार नहीं मिला। उसने सोचा कि वीका के अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं आया। अतः उसने ही हार चोरी किया है। परन्तु वीका ने हार की चोरी से मना कर दिया। तब कुछ व्यक्ति उसे पकड़कर नगर फौजदार के पास ले गए।

फौजदार ने उसे राजा के सामने उपस्थित किया तथा कहा कि यह व्यक्ति भला प्रतीत होता है किंतु सेठ इस पर चोरी का आरोप लगा रहा है। राजा ने आज्ञा दी कि इसक हाथ-पैर कटवाकर चौरंगिया किया जाए।

राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ तथा वीका के हाथ-पैर काट दिये गए। कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली ने राजा को देखा तथा दयावश वह उसे अपने घर ले गया। तेली ने उसे कोल्हू पर बैठा दिया।

वीका उस पर बैठा हुआ अपनी जुबान से बैलों को हांकता रहता था। इस काल में राजा की शनि की दशा समाप्त हो गई। वर्षा ऋतु के समय चौरंगिया राजा विक्रमादित्य मल्हार राग गाने लगा। यह राग सुनकर शहर के राजा की प्रिय पुत्री मनभावनी उसकी वाणी पर मुग्ध हो गई।

राज कन्या ने अपनी दासी को मल्हार राग गाने वाले की खबर लाने के लिए भेजा। दासी सारे शहर में घूमती रही। जब वह तेली के घर के पास से निकली तो उसने देखा कि राजा चौरंगिया मल्हार राग गा रहा है।

ण्दासी ने लौटकर राजकुमारी को सब वृतान्त कह सुनाया। उसी समय राजकुमारी मनभावनी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं इसी चौरंगिया के साथ विवाह करूँगी। प्रातः काल होते ही दासी ने जब राजकुमारी मनभावनी को जगाया तो वह

अनशन व्रत लेकर बिस्तर पर पड़ी रही। राजकुमारी की अनशन की बात दासी ने जाकर रानी को बताई रानी ऐसा सुनकर राजकुमारी के पास आई और पुत्री से कारण पूछा। राजकुमारी बोली– माता मैंने यह प्रण लिया है कि तेली के घर जो चौरंगिया है मैं उससे ही विवाह करूँगी। माता ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि क्या तू पागल हो गई है? तेरा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। राजकुमारी बोली– हे माता! ये मेरा अटल प्रण है जिसे मैं नहीं तोड़ूँगी। चिंतित हो रानी ने यह बात राजा को बताई। राजा ने पुत्री को समझाया– हे पुत्री! ये कैसी जिद है? तुम्हारा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। तुम्हें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। परन्तु राजकुमारी भी अपने प्रण पर अडिग थी। उसने कहा– पिताजी प्राण दे सकती हूँ पर अपना प्रण नहीं तोड़ सकती। यह सुनकर राजा ने कहा– यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो यही सही। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर में चौरंगिया रहता है मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूँगा।

तेली ने आश्चर्य से कहा– महाराज आप ये क्या कह रहे हैं? कहाँ राजकुमारी और कहाँ एक चौरंगिया। राजा ने कहा– ये सब भाग्य का खेल है। तुम जाकर विवाह की तैयारियाँ करो। राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर राजकुमारी का विवाह चौरंगिया के साथ कर दिया। रात को जब विक्रमादित्य महल में सो रहे थे तो शनिदेव ने विक्रमादित्य को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा– हे राजा! मुझे छोटा बतलाकर तुमने कितने कष्ट उठाए। राजा ने शनिदेव से कहा– प्रभु मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो। शनिदेव राजा से प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने राजा को क्षमा कर दिया और राजा को उसके हाथ–पैर वापिस कर दिये।

तब राजा ने हाथ जोड़कर शनिदेव से विनय की– हे शनिदेव!

मेरी आपसे विनती है कि आपने जैसे कष्ट मुझे दिए, ऐसे किसी को कभी नहीं देना।

शनिदेव ने प्रसन्न होकर कहा– राजन्! तुम्हारी विनती मुझे स्वीकार है। जो व्यक्ति नित प्रति मेरा ध्यान करेगा, मेरी कथा सुनेगा, कहेगा उसे मेरी दशा में कभी कोई दुख नहीं होगा तथा जो भी मनुष्य प्रतिदिन मेरा ध्यान कर चीटियों को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह कहकर शनिदेव अंतर्ध्यान हो गए।

सवेरे जब राजकुमारी मनभावनी की आँख खुली तो उसने चौरंगिया को हाथ–पैर सहित देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उसने विक्रमादित्य को जगाया और उससे इसका कारण पूछा। तब राजा ने अपना सारा वृतांत राजकुमारी को कह सुनाया।

यह सुनकर राजकुमारी अति प्रसन्न हुई। प्रातः काल मनभावनी की सखियों ने पिछली रात्रि का हालचाल पूछा तो उसने रात्रि की घटना का तथा उसके हाथ–पैर सही हो जाने का सारा वृतांत कह सुनाया। जब उस सेठ को यह घटना पता चली तो वह विक्रमादित्य के पास आया और उसने राजा से क्षमा मांगी और कहा– हे महाराज! मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। मुझे क्षमा कर दीजिए। राजा ने कहा– यह सब मेरे भाग्य तथा शनिदेव के कोप के कारण हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं था।

तब सेठ ने कहा– हे महाराज! यदि आपने वास्तव में मुझे क्षमा कर दिया तो फिर मेरे घर चलकर भोजन ग्रहण करें, तभी मुझे शांति प्राप्त होगी। राजा ने कहा– जैसा आप उचित समझें।

घर जाकर सेठ ने नाना प्रकार के व्यंजन बनवाए और राजा विक्रमादित्य को आमंत्रित किया। जब राजा विक्रमादित्य और

राजकुमारी भोजन कर रहे थे तो सबने एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना देखी। जो खूंटी पहले हार निगल चुकी थी वही खूंटी हार उगल रही थी। भोजन की समाप्ति पर सेठ ने हाथ जोड़कर राजा से कहा- महाराज मेरी श्रीकंवरी नाम की एक कन्या है। आप उसे पत्नी के रूप में वरण करें। राजा विक्रमादित्य ने सेठ की बात स्वीकार कर ली और सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दिया और बहुत सी भेंट राजा को दी। इस प्रकार आनन्दपूर्वक कुछ समय तक सेठ के राज्य में रहने के पश्चात् राजा विक्रमादित्य अपने श्वसुर राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने की इच्छा है।

कुछ दिन बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकंवरी तथा दोनों जगह से दहेज में प्राप्त अनेक दास-दासी, रथ और पालकियों सहित राजा विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब वे शहर के निकट पहुँचे और उज्जैनवासियों ने राजा के आने का समाचार सुना तो उज्जैन की समस्त प्रजा अगवानी के लिए आई। प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे नगर में भारी उत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने अपने पूरे राज्य में घोषणा करवाई कि शनि देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दु:ख प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सारे राज्य में सदा शनिदेव की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिदेव की इस कथा को पढ़ता या सुनता है, शनिदेव की कृपा से उसके सब दु:ख दूर हो जाते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे भवन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:ख भाग भवेत्।।
ॐ शान्ति:! ॐ शान्ति:!! ॐ शान्ति:!!!

शनि स्तुति

जिन्हें श्रेष्ठ, कवियों का उत्सव प्रिय है, जो उर्ध्वलोकों को ऊर्जा प्रदान करते हैं, जो वेदों, पुराणों, उपनिषदों द्वारा वन्दनीय हैं, जिन्हें ओंकार शिव मंत्र प्रिय है, जो वृन्दावन के कान्हा की छवि दर्शन के लिए लालायित हैं, जिन्हें गोघृत से प्रीत है तथा गौ-दान प्रिय है, शान्तस्वरूप, काम दग्ध करने वाले, कुरु वंश द्वारा पूजित, ग्रहराज महाबली ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक, ज्ञान की महानिधि, जगत जनों के मंगल के लिए मनोहर रूप धारण करने वाले करूणानिधि, जब इन्द्र भोग के समान भक्तों को साधन देते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जिनको तिल, तेल, तिल होम, तिल चूर्ण, तिल भक्षण, काली उड़द प्रिय है, जो तिल दीप दान करने वालों की पीड़ा का निवारण करते हैं, जिन्होंने चक्रवर्ती दशरथ को अभय कर दुर्भिक्षकाल से संसार को बचाया है, जो सिद्धों तथा ऋषि मुनियों द्वारा सेवित हैं। दैत्यों का विनाश करने वाले तथा भक्तों के दुखों का हनन करने वाले हैं, धनदाता जब धर्म की स्थापना करते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जो द्विजों के हृदय में रमण करते हैं, जिन्होंने विक्रम, नल और धर्मराज की स्तुतियों से प्रसन्न हो श्रेष्ठ वर दिये हैं, जो पृथ्वी के नाना द्वीपों के पालनकर्त्ता हैं, जो अष्टग्रहों की पीड़ा हरने वाले हैं, जो वन्दन, स्तुति गान से जल्द प्रसन्न होते हैं, जो प्राणियों को पीड़ा देने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षसों को आग्रह से ही भस्म करने वाले हैं,

जब वे प्रेमवश भक्त चित्त को निर्मल करते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जो दीर्घलोचन, त्रिदंडी, सूर्य तथा छाया के हृदय में रमण करने वाले हैं, जो शनि ग्रह के स्वामी हैं, शिला रूप से शिंगणापुर में वास करने वाले, भयंकर से भयंकर, शांत से भी शांत, असुरारि मणि रत्नों से विभूषित, दिव्य सुगंधि वाले, मुक्तिमार्ग के प्रदर्शक, योगदाता, यम के अग्रज, राशियों के स्वामी, लौह प्रतिमा विग्रह के प्रेमी, विश्व व्यापार के हेतु, शमी मूल, अश्वत्थ व शमशान निवासी, सभी दोषों का नाश करने वाले, जब भक्तों के सर्वार्थ सम्पूर्ण करते हैं, तो भक्त गण कह उठते हैं, हे सूर्यनंदन शनि आपकी जय हो।

जो छायानन्दन हैं। पिता के वर्ण से विपरीत होते हुए जिनकी आभा नीलवर्ण है। जिनका रंग काला है, जो भक्तों के भयभक्षक हैं। जिनकी क्रोधाग्नि ही प्रलयाग्नि है। जो अपने ही बाल्यापन से सर्वथा विपरीत हैं अर्थात् योग द्वारा चांचल्य त्याग चुके हैं। जो रिद्धि-सिद्धि दाता भक्तों को मनोवांछित फल देते हैं, जो भाव के भूखे हैं, निपट प्रेम के भिखारी हैं, जिनके तरकश में अत्यन्त तीक्ष्ण सौ तूणाीर शोभा पाते हैं, जो गगनाचारी हैं, मंद हैं, क्षुधा त्यागी हैं, भक्तवत्सल हैं, मुझ दीन को उनकी शरण मिले।

यक्ष, राक्षस, भूत-प्रेत, निशाचर जिनसे भय खाते हैं, द्विज, सिद्ध, चारण, ऋषि, तारागण जिनसे अभय पाते हैं। अलग-अलग फल देने वाली जिनकी नववाहन से सुसज्जित सवारियाँ हैं। जिनके आकाशीय रथ में अत्यन्त शक्तिवान चितकबरे रंग के अश्व जुते हुए हैं, जिनके नेत्रों से काल को भी मात देने वाला मृत्युंजय स्तोत्र का उद्‌भव हुआ

है, जो भक्तों के हित में सदा संलग्न रहते हैं, मुझ दीन को उनकी शरण मिले।

जिनका मार्ग रोकने का साहस तीनों लोकों में किसी में नहीं, जिनके भय से अन्य देवगण उनकी मित्रता स्वीकार करते हैं, जो त्रिशूल, भाला, ढाल लिए हुए हैं, जिनके गले में शमी पुष्पों की माला है, जिन्हें मंदार प्रिय है। जिनके विशाल भाल पर किरीट मुकुट शोभा पाता है, जो शिव शिष्य हैं, सम्पूर्ण लोकों के स्वामी कान्हा के मान्य भक्त हैं, जिनके सुवासित बदन पर नील वस्त्र शोभा पाते हैं, जो भक्तों का भीषण आपत्तियों से संरक्षण करते हैं, मुझ दीन को उनकी शरण मिले।

जो सभी प्राणियों को कर्म फल भुगताकर पावन करते हैं, प्रारब्ध जिनके वशीभूत होकर फलता है। जो कोटि जन्मों के संचय का भुगतान करवा मुक्त कर देते हैं। जो स्मरण मात्र से ही कृपा करने वाले हैं। जो अजरामर हैं। जो मानवों में शक्तिशाली ग्रह होकर जाने जाते हैं। जिनकी अनुकूल किरणें सुख व आनंद प्रदान करती हैं, जिनकी प्रतिकूल दशायें धन-हानि, अनन्त दुख व भाई बान्धवों का नाश करने वाली हैं, जो दुष्टों के लिए अति क्रूर क्रोधी हैं, जिनकी आराधना भक्तों को अक्षय सुख प्रदान करती है, जिनकी शरणागति से वंश गति पाता है, ऐसे श्री शनिदेव के महाराज के चरण कमलों में मेरा आश्रय हो।

देवर्षि नारदादि जिनकी कृष्ण भक्ति का उन्मुक्त कंठ से यशगान करते हैं, जो सदा ध्यान मग्न रहते हैं, जिन्होंने सदा विष्णु अवतारों के सहायक हो, दुष्ट राक्षसों को प्रतिकूल दशाओं का मजा चखाया है। जिनकी प्रतिकूलता से राम वनवासी कृष्ण रणछोड़ कहलाये। जो

अपने ही नहीं, अन्यान्य देवों के भक्तों पर भी कृपा वृष्टि करते हैं, जो पृथ्वी का भार उतारने में सदा ही सहायक हैं, जो दीन दयाल और भक्त वत्सल हैं, मुझ दीन को अपने चरणों का आश्रय प्रदान करें।

जो कलियुग के अधिपति हैं, जो नाना प्रकार के मणि-माणिक्यों के उत्पन्नकर्त्ता हैं, जो नाना द्वीपों के अधिकर्त्ता हैं, जिनसे नाना प्रकार की लिपियों व भाषाओं का उद्‌गम हुआ है, जो नाना लोकों पर राज करते हैं, और नाना रूपों में जगत के सृष्टिकर्त्ता हैं, जिनके नाना रूपों पर जगत जन आश्रित हैं, ऐसे सूर्यनंदन शनि मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे शरणागति प्रदान करें।

हे शनि आप योगियों में श्रेष्ठ योगी, निर्मल और कल्याणमय हैं। हे शिव रूप आप भोग और मोक्ष देने में सक्षम हैं। आप छाया हृदयनन्दन, सदा कृष्ण ध्यान में खोये रहने वाले, खड्‌गधारी, धनुष बाण वाले, महाकाल शनि समस्त असुरों का नाश करने वाले हैं। आपको नमस्कार है।

हे अभयदान देने वाले, अकाल मृत्यु का शमन करने वाले, आपत्तियों का शमन करने वाले, कालात्मा सभी राशियों के स्वामी, राशिफल दाता। हे दयानिधान, सर्वपाप विनाशक, कल्पवृक्ष रूप, ऐवर्श्य प्रदान करने वाले, शरणागत वत्सल, कालों के भी महाकाल आपको नमस्कार है।

मोटे रोम वाले, बड़े नेत्रों वाले, आपके स्मरण मात्र से तीनों ताप शान्त हो जाते हैं। आप उन भगवानसूर्य के पुत्र हैं जो परात्पर रूप में भगवान ब्रह्मा शिव हरि के भी स्वामी हैं। जिस प्रकार आसमान से

देखने पर विशाल समुद्र नीला दिखाई देता है उसी प्रकार आपके शरीर की नील कान्ति दिखाई देती है। जिसके सम्मुख सहस्त्रों नीलम भी फीके प्रतीत होते हैं। आपको नमस्कार है।

हे शनि आपका श्याम वर्ण काली घटा के समान प्रतीत होता है, जो पृथ्वीवासियों के लिए बारिश रूप में सुख लेकर आती है। आपके कवच कुण्डल तथा वलय कंकण और गले में शोभा पा रहे हार से अनेकों माणिक्य की शोभा मुखरित हो रही है। आपका वक्षस्थल नभ के समान विशाल है। हे मन्दगते, कपालधारी, देवताओं में शिरोमणि कृपानाथ, आपकी वक्र दृष्टि ब्रह्मा-ऋषि-तारागण को भी राज्य भ्रष्ट कर सकती है। आपको नमस्कार है।

हे रौद्रे, सभी संसारी आपकी न्याय पद्धति से परिचित हैं, आपके क्रोध के डर से कोटि मनुष्य अपना कर्म विधान बदल देते हैं। हे राम भक्त हनुमान के परम मित्र आप योगियों के ध्यान से परे तथा सूक्ष्म रूप में सर्वत्र विद्यमान हैं। हे सिद्धिदाता, आप पल में प्रलय कर सकते हैं। हे मृत्युञ्जय, आपकी भुजाओं में अनन्त बल पराक्रम का धाम है। आप आनन्दमय तथा करुणामय हैं। आप वरदायक हैं, भैंसे की सवारी आपको अतिप्रिय है। अपनी कामना करने वाले भक्तों के लिए आप प्राण-वल्लभ हैं। आपको नमस्कार है।

हे भक्त दुखहारी, परम शान्त, सभी ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीड़ा को शांत करने वाले आपको काली उड़द, काले तिल, तेल, मोदक, नीलम, कृष्ण तुलसी, शमीपत्र व शमीपुष्प और आक का गजरा अतिप्रिय है। आप पीपल तथा श्मशान में निवास करते हो। हे 108

नाम वाले मनु रूप शनि देव 'मनु' चित्त नाथ आपको नमस्कार है।

जो नील वस्त्र धारण किए हुए हैं, जिनका वक्षस्थल नभ के समान विशाल हैं, जो खड्गधारी, धनुर्धारी तथा कपालधारी हैं, जिनके पादारविंद नीले हैं, जो सबसे दीर्घ हैं तथा मन्दगति वाले हैं। जिनका रंग काला है तथा आभा नील वर्ण है। जो योगियों में श्रेष्ठ योगी हैं, जो महाकाल के भी काल हैं, जो कलियुग में सभी धर्मों के लिये पूज्य हैं तथा सदैव जाग्रत रहने वाले हैं। जिनके चरणों के भार से पृथ्वी डोल जाती है, जिनके भय से समस्त ब्रह्माण्ड कम्पित होता है, जो छाया तथा रवि के लाल हैं, जो साक्षात् भगवान शिव के स्वांस हैं, जिनका जन्म असुरों का विनाश करने के लिए हुआ है, जिनके होने से सभी देवता स्वच्छन्द होकर विचरते हैं, जिनके नौ वाहन हैं, जिनकी दृष्टि मात्र से ब्रह्मा–ऋषि–तारागण तक पथ भ्रष्ट हो जाते हैं, जिनके ललाट की रेखाओं से सदा भक्तिक्षुधा का अनुभव होता है, जो मुमुक्षुओं की चाह पूरी करने वाले हैं, जो न्यायकारी हैं, जो भक्तों का भीषण आपत्तियों में संरक्षण करते हैं। जो धर्माचरण तथा दान करने वालों को संसार के सभी ऐश्वर्य क्षणमात्र में दे देते हैं, जो धर्मत्राता हैं, जो अल्पाहारी हैं, जो अत्यंत क्रोधी हैं, जिनका तिरस्कार करना ही जीवन पराजय है, जो सम्पूर्ण विश्व में प्रतिख्यात हैं तथा सभी देवों में परम वन्दनीय हैं। ऐसे श्री शनिदेव महाराज को मेरा बारम्बार, कोटि–कोटि व दण्डवत प्रणाम है।

जो सुन्दर गोलाकार सोने से मढे हुए सींग वाले विशाल भैंसे पर सवार होकर सम्पूर्ण लोकों में भक्तों की रक्षा हेतु विचरते हैं, जो रात्रि के अधिपति हैं, जिनके ओष्ठ कमलों से भक्तों के लिए सदा ही आशीर्वाद

प्रस्फुटित होते हैं, जिनके चरणों की रज मुक्ति का अति उत्तम साधन है, जो भक्तों को पीड़ा देने वाले दुष्टों को अंकुश से पीटकर निम्न लोकों में गिरा देते हैं। जिनके रोम–रोम से अनन्त नाद उत्थित है। जिनके नाभिकमल से अनेक दिव्य सुगंधियाँ छिटककर देवताओं और पितृगणों का मन मोहती हैं, जिनके विशाल हस्त की अंगुलियों के पौर चटकने से प्रसारित भयंकर शब्द दुष्टों को व्याकुल कर देता है। जो ग्रह–अधिपति हैं, पाप फल भुगताकर समस्त राशि वाले जातकों के पापों का उच्छेदन करते हैं तथा पुण्यों की श्रृंखला उजागर करते हैं और अन्य ग्रहों द्वारा दी जाने वाली पीड़ाओं का हरन करने वाले हैं। ऐसे श्री शनिदेव महाराज को मेरा कोटि–कोटि दण्डवत व अक्षरशः प्रणाम है।

शनि प्रार्थना-मंत्र (शनि-स्तुति)

क्रोडं नीलांजनप्रख्यं नीलवर्णसमस्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं नमस्यामि शनैश्चरम्।।
नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय।
श्रुत्वा रहस्यं भवकामदश्च फलप्रदो मे भव सूर्यपुत्र।।
नमोऽस्तु प्रेतराजाय कृष्णदेहाय वै नमः।
शनैश्चराय क्रूराय शुद्धबुद्धिप्रदायिने।।
य एभिर्नामभिः स्तौति तस्य तुष्टो भवाम्यहम्।
मदीयं तु भयं तस्य स्वप्नेऽपि न भविष्यति।।

(जब राजा नल का राज–पाठ छिन गया तब शनिदेव ने राजा नल को स्वप्न में उपरोक्त मंत्र दिया था। इसी मंत्र का जप करने पर राजा नल को अपना खोया हुआ राज–पाठ वापस मिल गया।)

शनि गायत्री

- ॐ रौद्रान्तकाय विद्महे शनैश्चराय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ छायात्मजाय विद्महे रूद्ररूपाय धीमहि तन्नौ पिप्पलैः प्रचोदयात्।
- ॐ नीलाञ्जनाय विद्महे सौम्य रूपाय धीमहि तन्नौ दिव्यदैहः प्रचोदयात्।
- ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे कालरूपाय च धीमहि तन्नौ शनैश्चर प्रचोदयात्।
- ॐ महाग्रहाय विद्महे मन्दगताये च धीमहि तन्नौ महाकालः प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वमांगलाय विद्महे शत्रुविमर्दनाय च धीमहि तन्नौ मृत्युञ्जयः प्रचोदयात्।
- ॐ थणु गणाय विद्महे श्याम वर्णाय धीमहि तन्नौ शौरी प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वरोगविनाशनाय विद्महे आयुवृद्धाय धीमहि तन्नौ देवः प्रचोदयात्।
- ॐ रविपुत्राय विद्महे शिव शिष्याय च धीमहि तन्नौ शनैश्चरः प्रचोदयात्।
- ॐ विष्णुभक्ताय विद्महे बभ्रु कोणस्थाय धीमहि तन्नौ पिप्पलः प्रचोदयात्।
- ॐ कृष्णाय विद्महे महाकाल स्वरूपाय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।

- ॐ महारौद्राय विद्महे भगभवाय धीमहि तन्नौ यमानुजः प्रचोदयात्।
- ॐ नक्षत्रदोष निवारणाय विद्महे कालभीतिहराय च धीमहि तन्नौ नीलमयूखः प्रचोदयात्।
- ॐ सुवर्णात्मजाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नौ भानवे प्रचोदयात्।
- ॐ कालप्रबोधाय विद्महे यमुनानुजाय धीमहि तन्नौ मन्दः प्रचोदयात्।
- ॐ कोणस्थाय विद्महे पिंगलाय च धीमहि तन्नौ यमः प्रचोदयात्।
- ॐ मंदचराय विद्महे खड्गधारिणे च धीमहि तन्नौ प्रसन्नः प्रचोदयात्।
- ॐ क्रूरगृहाय विद्महे भस्मधारिणे च धीमहि तन्नौ शनिदेवः प्रचोदयात्।
- ॐ शनिग्रहाय विद्महे योगिराजाय धीमहि तन्नौ भीष्मः प्रचोदयात्।
- ॐ छायासुताय विद्महे कोकिलावन राजाय धीमहि तन्नौ उग्रः प्रचोदयात्।
- ॐ कालाग्नाय विद्महे नीलवर्णाय धीमहि तन्नौ निश्चलः प्रचोदयात्।
- ॐ घोररूपाय विद्महे दन्डाधिकारये च धीमहि तन्नौ रौद्रः प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वभक्षणाय विद्महे कलि नाथाय धीमहि तन्नौ भव्यः प्रचोदयात्।

- ॐ सर्वान्तकाय विद्महे सत्यस्वरूपाय धीमहि तन्नौ योगेश्वरः प्रचोदयात्।
- ॐ दीर्घरूपाय विद्महे वक्रदृष्टाय धीमहि तन्नौ सिद्धः प्रचोदयात्।
- ॐ दक्षदृष्टाय विद्महे वामदृष्टये च धीमहि तन्नौ क्रूरः प्रचोदयात्।
- ॐ राशिगाय विद्महे राशिभोक्ते धीमहि तन्नौ राशिनाथः प्रचोदयात्।
- ॐ राशिफलदात्रे विद्महे राशिनाथाय च धीमहि तन्नौ शौरी प्रचोदयात्।
- ॐ राहुसखाय विद्महे भीमरूपाय धीमहि तन्नौ प्रलयंकरः प्रचोदयात्।
- ॐ सूक्ष्मरूपाय विद्महे शिंगणापुर वासाय च धीमहि तन्नौ दाता प्रचोदयात्।
- ॐ काल शरीराय विद्महे काल पुत्राय च धीमहि तन्नौ कालयः प्रचोदयात्।
- ॐ रवि नन्दनाय विद्महे शिव शिष्याय च धीमहि तन्नौ भीष्मः प्रचोदयात्।
- ॐ दुष्टनाशाय विद्महे शनैश्चराय धीमहि तन्नौ महाग्रहः प्रचोदयात्।
- ॐ दुर्निरीक्षाय विद्महे स्थूलरोम्णे धीमहि तन्नौ भीषणः प्रचोदयात्।
- ॐ दीर्घलोचनाय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नौ कालपुरुषः प्रचोदयात्।

- ॐ चण्डीशाय विद्महे क्षतजाय च धीमहि तन्नौ सौरि प्रचोदयात्।
- ॐ वैवस्वताय विद्महे ग्रहपतये च धीमहि तन्नौ मन्दः प्रचोदयात्।
- ॐ जन्म लग्न दोष नाशनाय विद्महे छायात्मजाय धीमहि तन्नौ पिप्पलः प्रचोदयात्।
- ॐ हरिभक्ताय विद्महे थणुगणाय च धीमहि तन्नौ सौरि प्रचोदयात्।
- ॐ नीलोत्पलनिभाय विद्महे कृष्णाय च धीमहि तन्नौ शितिकण्ठः प्रचोदयात्।
- ॐ बलीमुखाय विद्महे शुष्कोदराय धीमहि तन्नौ शुष्कः प्रचोदयात्।
- ॐ विभीषणाय विद्महे भयानकाय धीमहि तन्नौ रौद्रः प्रचोदयात्।
- ॐ ग्रहराजाय विद्महे करालाय च धीमहि तन्नौ भौमः प्रचोदयात्।
- ॐ सिहिंकासुताय विद्महे काव्याय च धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ श्यामांगाय विद्महे धनदाताय धीमहि तन्नौ कर्मविरोधः प्रचोदयात्।
- ॐ खञ्जाय विद्महे कोधनाय धीमहि तन्नौ देवपतये प्रचोदयात्।
- ॐ कुबेराय विद्महे ईशानाय च धीमहि तन्नौ मन्दः प्रचोदयात्।

- ॐ नक्षत्रेशो विद्महे ग्रहेश्वराय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ ग्रहपीडाहराय विद्महे महाकाय च धीमहि तन्नौ महाबल: प्रचोदयात्।
- ॐ भयदाताय विद्महे आदित्याय धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ स्वतिथिरूपाय विद्महे नक्षत्रगणनायकाय धीमहि तन्नौ नील: प्रचोदयात्।
- ॐ सर्वरोग हराय विद्महे देवगणस्तुताय धीमहि तन्नौ सिद्धै: प्रचोदयात्।
- ॐ कृष्णांगाय विद्महे शुष्कोदराय च धीमहि तन्नौ शनयै: प्रचोदयात्।
- ॐ अधोक्षजाय विद्महे धनुर्धराय च धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ चतुर्भुजाय विद्महे ग्रहराजाय धीमहि तन्नौ पिप्पलै: प्रचोदयात्।
- ॐ अभीष्टकराय विद्महे श्यामवर्णाय च धीमहि तन्नौ कपाली प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे शान्तस्वरूपाय च धीमहि तन्नौ देव: प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे कोटराक्षाय च धीमहि तन्नौ सौरये प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे धनदाताय धीमहि तन्नौ देवेश: प्रचोदयात्।
- ॐ मनुदाताय विद्महे दग्धदेहाय धीमहि तन्नौ शौरी प्रचोदयात्।

श्री शनि अष्टोत्तरशत नामावली

1. ॐ शं शनैश्चराय नम:। 2. ॐ शं शांताय नम:। 3. ॐ शं सर्वाभीष्टप्रदायिने नम:। 4. ॐ शं शरणाय नम:। 5. ॐ शं वरेण्याय नम:। 6. ॐ शं सर्वेशाय नम:। 7. ॐ शं सैन्याय नम:। 8. ॐ शं सुर वन्द्याय नम:। 9. ॐ शं सुरलोक विहारिणे नम:। 10. ॐ शं सुखासनोपविष्ठाय नम:। 11. ॐ शं सुन्दराय नम:। 12. ॐ शं घनाय नम:। 13. ॐ शं घनरूपाय नम:। 14. ॐ शं घनाभरणधारिणे नम:। 15. ॐ शं खद्योताय नम:। 16. ॐ शं मन्दाय नम:। 17. ॐ शं मन्दचेष्टाय नम:। 18. ॐ शं वेदास्वादस्वभावाय नम:। 19. ॐ शं वज्रदेहाय नम:। 20. ॐ शं वैराग्यदाय नम:। 21. ॐ शं वीराय नम:। 22. ॐ शं वीतरोगभयाय नम:। 23. ॐ शं विपत्परं परेशाय नम:। 24. ॐ शं विश्ववन्द्याय नम:। 25. ॐ शं गृध्रवाहनाय नम:। 26. ॐ शं गूढ़ाय नम:। 27. ॐ शं कर्मांगाय नम:। 28. ॐ शं कुरूपिणे नम:। 29. ॐ शं कुत्सिताय नम:। 30. ॐ शं गुणाढ्याय नम:। 31. ॐ शं गोचराय नम:। 32. ॐ शं अविद्यामूलनाशनाय नम:। 33. ॐ शं विद्याऽविद्यास्वरूपिणे नम:। 34. ॐ शं महनीयगुणात्मने नम:। 35. ॐ शं मर्त्यपावनपादाय नम:। 36. ॐ शं महेशाय नम:। 37. ॐ शं छायापुत्राय नम:। 38. ॐ शं शर्वाय नम:। 39. ॐ शं शततूणीर धारिणे नम:। 40. ॐ शं शुष्काय नम:। 41. ॐ शं चरस्थिरस्वभावाय नम:। 42. ॐ शं चञ्चलाय नम:। 43. ॐ शं नीलवर्णाय नम:। 44. ॐ शं नित्याय नम:। 45. ॐ शं नीलाञ्जननिभाय नम:। 46. ॐ शं नीलम्बरविभूषाय नम:। 47. ॐ शं निश्चलाय नम:। 48. ॐ शं वेद्याय नम:। 49. ॐ शं विधिरूपाय नम:। 50. ॐ शं विरोधाधारभूमये नम:। 51. ॐ शं गरिष्ठाय नम:। 52. ॐ शं वज्रांकुशधराय नम:। 53. ॐ शं वरदाय नम:। 54. ॐ शं अभयहस्ताय नम:। 55. ॐ शं वामनाय नम:। 56. ॐ शं ज्येष्ठापत्नीसमेताय नम:। 57.

ॐ शं श्रेष्ठाय नमः। **58.** ॐ शं मितभाषिणे नमः। **59.** ॐ शं कष्टौघनाशिने नमः। **60.** ॐ शं आयुर्पुष्टिदाय नमः। **61.** ॐ शं स्तुत्याय नमः। **62.** ॐ शं स्तोत्रकामाय नमः। **63.** ॐ शं भक्तिवश्याय नमः। **64.** ॐ शं भानवे नमः। **65.** ॐ शं भानुपुत्राय नमः। **66.** ॐ शं भव्याय नमः। **67.** ॐ शं आयुष्यकारणाय नमः। **68.** ॐ शं आपदुद्धर्ते नमः। **69.** ॐ शं विष्णुभक्ताय नमः। **70.** ॐ शं वाशिने नमः। **71.** ॐ शं विविधागमवेदिने नमः। **72.** ॐ शं विधिस्तुत्याय नमः। **73.** ॐ शं वन्द्याय नमः। **74.** ॐ शं विरूपाक्षाय नमः। **75.** ॐ शं वरिष्ठाय नमः। **76.** ॐ शं पशूनां पतये नमः। **77.** ॐ शं खेचराय नमः। **78.** ॐ शं घननीलाम्बराय नमः। **79.** ॐ शं काठिन्यमानसाय नमः। **80.** ॐ शं आर्यगणस्तुताय नमः। **81.** ॐ शं नीलच्छत्राय नमः। **82.** ॐ शं नित्याय नमः। **83.** ॐ शं निर्गुणाय नमः। **84.** ॐ शं गुणात्मने नमः। **85.** ॐ शं निरामयाय नमः। **86.** ॐ शं निन्द्याय नमः। **87.** ॐ शं वन्दनीयाय नमः। **88.** ॐ शं पावनाय नमः। **89.** ॐ शं धनुर्मण्डलसंस्थिताय नमः। **90.** ॐ शं धनदाय नमः। **91.** ॐ शं धनुष्मते नमः। **92.** ॐ शं तनुप्रकाशदेहाय नमः। **93.** ॐ शं तामसाय नमः। **94.** ॐ शं अशेषजनवन्द्याय नमः। **95.** ॐ शं विशेषफलदायिने नमः। **96.** ॐ शं वशीकृतजनेशाय नमः। **97.** ॐ शं धीराय नमः। **98.** ॐ शं दिव्यदेहाय नमः। **99.** ॐ शं दीनार्तिहरणाय नमः। **100.** ॐ शं दैन्यनाशनाय नमः। **101.** ॐ शं आर्यजनगण्याय नमः। **102.** ॐ शं क्रूराय नमः। **103.** ॐ शं क्रूरचेष्टाय नमः। **104.** ॐ शं कामक्रोधकराय नमः। **105.** ॐ शं कलत्रपुत्रशत्रुत्व कारणाय नमः। **106.** ॐ शं परितोषितभक्ताय नमः। **107.** ॐ शं परभीतिहराय नमः। **108.** ॐ शं भक्तसंघमनोभीष्टफलदाय नमः।

यदि शनि अष्टोत्तरनामावली से हवन करना हो तो खेजड़ी की समिधा, शमीपत्र, काले तिल, जल से हवन करना चाहिए तथा नमः की जगह 'स्वाहा' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

शनि अष्टोत्तर नामावली स्तोत्र

शनिवार के दिन जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र को पढ़ता है। उसको शनि की दशा व गोचर सब अनुकूल होकर शनि पीड़ा शांत हो जाती है। उस दिन शमी वृक्ष खेजड़ी के पुष्प, पत्ते, अक्षत, कालावस्त्र, लौह प्रतिमा से शनिदेव की पूजा की जाए तो व्यक्ति सभी प्रकार के दुःख व कष्टों से मुक्त हो जाता है।

सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः।
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः॥१॥
शितिकण्ठ निभो नीलश्छाया-हृदयनन्दनः।
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमावली मुखः॥२॥
दीर्घो निर्मांस-गात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः।
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः॥३॥
मन्दोमन्दगतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः।
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी॥४॥
कुजो बुधो गुरुः काव्यो, भानुजः सिंहिका सुतः।
केतुर्देव पतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा॥५॥
शशी मरुत् कुबेरश्च ईशानः सुरः आत्मभूः।
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः कामो ईश्वरः॥६॥
कर्त्ता हर्त्ता पालयिता राज्येशो राज्यदायकः।
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्त्ता धनप्रदः॥७॥
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः।
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः॥८॥
ग्रहपीड़ा हरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः।

स्थिरासनः स्थिरगतिः महाकायो महाबलः॥९॥
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः।
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्य-नन्दनः॥१०॥
शतभिद्रुक्ष दायिने त्रयोदशी तिथि प्रियः।
तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगण नायकः॥११॥
योग राशिर्मुहूर्त्तात्मा कर्त्ता दिनपतिः प्रभु।
शमीपुष्पप्रियः श्यामः त्रैलोक्य भयदायकः॥१२॥
नीलावासाः क्रियासिन्धुः नीलाञ्जन च यच्छविः।
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगण स्तुतः॥१३॥

॥ फलश्रुति ॥

अष्टोत्तर शतंनाम्नां सौरेष्छाया सुतस्य यः।
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम्॥१॥
कृत्वा पूजां पठेन् मृर्त्यो भक्तिमान् यो स्तव राजम्।
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति॥२॥
जन्म लग्ने स्थितिर्वाऽपि गोचरे क्रूरराशिगे।
दशासु च गते सौरे तदा स्तवमिमं पठेत्॥३॥
पूजयेद् यः शनि भक्तया शमीपुष्पाक्षताम्बरैः।
विधाय लौहप्रतिमां नरो दुःखात् विमुच्यते॥४॥
बाधा याऽन्य ग्रहाणां च यः पठेत् तस्य नश्यति।
भीतो भयात् विमुच्येत् बद्धो मुच्यते बन्धनात्।
रोगी रोगात् विमुच्येत् नरः स्तवमिमं पठेत्॥५॥

इस स्तोत्र को पढ़ने से रोगी रोग से मुक्त हो जाता है तथा भयग्रस्त व्यक्ति भय से मुक्त हो जाता है। बन्दी (कैदी) कैद से छूट जाता है। इस का अत्यधिक महत्व माना गया है।

पिप्पलादऋषिकृत शनिस्तोत्रम्

यः पुरा नष्टराज्याय, नलाय प्रददौ किल।
स्वप्ने तस्मै निजं राज्यं, स मे सौरिः प्रसीद तु॥1॥
केशनीलाञ्जन प्रख्यं, मनश्चेष्टा प्रसारिणम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं, नमस्यामि शनैश्चरम्॥2॥
नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय, नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय।
श्रुत्वा रहस्यं भव कामदश्च, फलप्रदो मे भव सूर्य पुत्र॥3॥
नमोऽस्तु प्रेतराजाय, कृष्णदेहाय वै नमः।
शनैश्चराय क्रूराय शुद्धबुद्धिप्रदायिने॥4॥
य एभिर्नामभिः स्तौति, तस्य तुष्टो भवाम्यहम्।
मदीयं तु भयं तस्य स्वप्नेऽपि न भविष्यति॥5॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रूः, कृष्णो रोद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः, प्रीयतां मे ग्रहोत्तमः॥6॥
नमस्तु कोणसंस्थाय, पिंगलाय नमोऽस्तुते।
नमस्ते बभ्रूरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥7॥
नमस्ते रौद्र देहाय, नमस्ते बालकाय च।
नमस्ते यज्ञ संज्ञाय, नमस्ते सौरये विभो॥8॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय, शनैश्चर नमोऽस्तुते।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनस्य प्रणतस्य च॥9॥

पिप्पलाद ऋषिकृत इस स्तोत्र के नित्य पाठ से व्यक्ति को नष्टराज्य की प्राप्ति हो जाती है। शनिदेव प्रसन्न हो जाते हैं। पूर्वकाल में राजा नल ने इसी स्तोत्र का पाठ करके अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त किया था।

श्री शनि वज्र पञ्जर कवचम्

शनि वज्रपंजर कवच का वर्णन ब्रह्मांडपुराण में मिलता है। यह कवच स्वयं ब्रह्मा द्वारा देवर्षि नारद को बतलाया गया था।

श्रीब्रह्मोवाच

शृणुश्वमृषयः सर्वे, शनि पीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य, सौरेरिदमनुत्तमम्॥
कवचं देवतावासं, वज्र पञ्जर संज्ञकम्।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्वं, सौभाग्यदायकम्॥

विनियोग

ॐ अस्य श्रीशनैश्चर कवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्द, शनैश्चरो देवता, शीं शक्तिः, शूं कीलकम्, शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोग।

विनियोग बोलकर जल भूमि पर छोड़ दें। इसके पश्चात् ध्यानोपरांत कवच का पाठ करें।

ऋष्यादिन्यासः- शिरसि कश्यप ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप छन्दसे नमः। श्रीशनैश्चरः देवतायै नमः। सर्वांगे श्रीशनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय।

ध्यानम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यस्तः प्रसन्न सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः॥

अथ कवचम् (ब्रह्मोवाच)

श्रृणुश्व मृषयः सर्वे शनि पीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्॥1॥

कवचं देवतावासं वज्रपंजर संज्ञकम्।
शनैश्चर प्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्॥2॥
ॐ श्री शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु, पातु कर्णौ यमानुजः॥3॥
नासां वैवस्वतः पातु, मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्ध कंठश्च मे कंठं, भुजौ पातु महाभुजः॥4॥
स्कंधौ पातु शनिश्चैव, करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता, कुक्षिं पात्वसितस्तथा॥5॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु, मंद पातु कटि तथा।
उरू ममांतकः पातु, यमो जानुयुंग तथा॥6॥
पादौ मन्द गतिः पातु, सर्वांग पातु पिप्पलः।
अंगोपांगानि सर्वाणि, रक्षेत् मे सूर्यनन्दनः॥7॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः॥1॥
व्यय जन्म द्वितीयस्थो मृत्युस्थान गतोऽति वा।
कालस्थ गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥2॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्म द्वितीयगे।
कवचं पठतो नित्यं न पीडा जायते क्वचित्॥3॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं, सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टम् जन्मस्थ, दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान् नाशयते प्रभु॥4॥

॥ श्रीब्रह्माण्ड पुराणे श्री शनिवज्र पञ्जर कवचं सम्पूर्णम् ॥

शनि तंत्रोक्त साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्री शनि मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्द: शनैश्चर देवता शं बीजं आप शक्ति श्री शनैश्चर प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

ऋष्यादिन्यास–

ॐ ब्रह्म ऋषये नम: सिरशि, ॐ गायत्री छन्दसे नम: मुखे, ॐ शं शनैश्चर देवतायै नम: हृदय, ॐ शं बीजाय नम: गुह्ये, ॐ आप शक्तये नम: पादयो।

करान्यास–

ॐ शं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ शं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ शं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ शं करतलपृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयादिन्यास–

ॐ शं हृदयाय नमः। ॐ शं शिरसि स्वाहा। ॐ शं शिखायै वषट्। ॐ शं कवचाय हुं। ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ शं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र–

सूर्यसुतं महेश अंशं मातु छाया नन्दनम्।
कालरूपं कृष्णवर्णं मन्दगते तव वन्दनम्।।

मंत्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः।

तंत्रसार में वर्णित इस मंत्र का 7,11,21,31,51 माला रोज करने से शनिदेव अनुकूल फल प्रदान करते हैं। यदि इस मंत्र के एक करोड़ जप कर लिये जाएं या किसी योग्य ब्राह्मण से कराये जाएं तो व्यापारिक, शारीरिक व कानूनी समस्या से तुरंत राहत मिलती है।

वैदिक शनि साधना

यह साधना शनिवार को पड़ने वाले किसी शुभ मुहूर्त में शास्त्रोक्त विधि से संकल्प लेकर प्रारंभ की जाती है। इसमें नीचे लिखे मंत्र का जाप 21 दिनों तक करना पड़ता है। इस साधना में शनि यंत्र, पहनने के लिये काले वस्त्र, बैठने के लिए काले ऊन का आसन, चौकी या पटरा, शनि यंत्र हेतु काला वस्त्र, तेल का दीपक, रुद्राक्ष की माला और शमी पुष्प व आक पुष्प या काला गुलाब उपयोग में लायें।

मंत्र

ॐ शन्नौ देविरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये। शंयोरभि स्रवंतु नः।

विनियोग– **शन्नोदेवीरिति मंत्रस्य दध्यङडाथर्वण ऋषि गायत्री छन्दः। शनिर्देवता। आपो बीजम्। वर्तमान इति शक्तिः। शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।**

ऋष्यादि न्यास– **ॐ दध्यङडाथर्वणऋषये नमः शिरसि।।१।। ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे।।२।। ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः हृदये।।३।। ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये।।४।। ॐ वर्तमानशक्तये नमः पाद्यो।।५।। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।**

करन्यास– **ॐ शन्नोदेवीरित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।।१।। ॐ अभिष्टये तर्जनीभयां नमः।।२।। ॐ आपोभवंतु मध्यमाभ्यां नमः।।३।। ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः।।४।। ॐ शंय्योरिति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।५।। ॐ अभिस्त्रवंतुनः करतल पृष्ठाभ्यां नमः।।६।। इति करन्यासः।**

हृदयादिन्यास– **ॐ शन्नोदेवीरिति हृदयाय नमः।।१।। ॐ**

अभिष्टये शिरसे स्वाहा॥२॥ ॐ आपो भवन्तु शिखायै वषट्॥३॥ ॐ पीतये कवचाय हुं॥४॥ ॐ शंय्योरिति नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ ॐ अभिस्त्रवंतुनः अस्त्राय फट्॥६॥
मंत्रन्यास– **ॐ शन्न इति शिरसि॥१॥ ॐ देवीरिति ललाटे॥२॥ ॐ अभिष्टये मुखे॥३॥ ॐ आपो हृदये॥४॥ ॐ भवन्तु नाभौ॥५॥ ॐ पीतये कट्याम॥६॥ ॐ शंय्योरूर्वोः॥७॥ ॐ अभिस्त्रवन्तु जानुनोः॥८॥ ॐ पादयोः॥९॥ इति मंत्रन्यासः॥**

ध्यान

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गजस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशांतः सदास्तु मह्यं वरदो शनैश्चरा॥

शनिग्रह की शांति हेतु की जाने वाली इस साधना का प्रारंभ शनिवार को करना चाहिए और शनिवार से प्रारंभ करें और प्रतिदिन 21 माला का जाप अवश्य करना चाहिए। एक बात का विशेष ध्यान रखें कि जितनी माला पहले दिन हुई है, उतनी ही माला का जाप 21 दिन तक होना चाहिए, माला का क्रम न तोड़ें। इस बीच शनि से संबंधित वस्तुओं का नियमित दान भी आवश्यक है। जितने दिनों तक साधना चले, साधक को नियमपूर्वक यम, नियमादि का पालन करते हुए ब्रह्मचर्य रहना चाहिए। साधना के दौरान तामसी भोजन का परित्याग आवश्यक है।

साधना के पहले दिन साधक को शनिदेव के यंत्र को चौकी या पटरे पर काला वस्त्र बिछाकर स्थापित करना चाहिए और स्वयं स्नानोपरांत पवित्र होकर काले वस्त्र धारण कर काले ऊन के आसन पर बैठकर श्री गणेश प्रार्थना करने के बाद साधना का संकल्प लेना चाहिए। शनि यंत्र के पास तेल का दीपक व धूप प्रज्ज्वलित करते

हुए शनि प्रतिमा व शनि यंत्र या शनि चित्र का ध्यान करने के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का जाप प्रारंभ करना चाहिए। शनि यंत्र को हमेशा किसी लौह पात्र में स्थापित करना चाहिए। मंत्र जाप करते समय अपनी दृष्टि शनि यंत्र, शनि प्रतिमा या शनि चित्र पर केन्द्रित रखनी चाहिए और यथाशक्ति उसे एकटक देखते रहना चाहिए। यदि आँसू बहने लगे तो कुछ देर आँखों को बंद किया जा सकता है। किंतु उस समय भी मन से शनि यंत्र, शनि प्रतिमा या शनि चित्र का ध्यान अवश्य करना चाहिए। नित्य प्रति 21 माला जाप करने के बाद शनि यंत्र पर सरसों का तेल चढ़ाकर आसन से उठ जाना चाहिए। किंतु ध्यान रहे, जब तक साधना चले, तब तक शयन भी उसी कक्ष में करें, जहाँ साधना की जा रही है।

साधना के दौरान संभव है शनिदेव भय उत्पन्न करते हैं, लेकिन किसी भी स्थिति में भयभीत होकर मंत्रजाप न रोकें। बीच में ही साधना से उठ जाने पर भारी अनिष्ट होने की संभावना रहती है। नित्य प्रति की जाने वाली साधना में माला समाप्ति के बाद हवन, मार्जन, तर्पण के बाद चावल व काले उड़द को पकाकर शनिदेव को भोग अवश्य लगायें।

साधना के अंतिम दिन जितने अभी तक मंत्र हुए हैं, उनका दशांश हवन, मार्जन व तर्पण भी करें। हवन के दौरान साधक को शनिदेव का दर्शन भी हो जाया करता है। ध्यान रहे, यदि दर्शन न भी हों तो भी उक्त साधना निष्फल नहीं जाती। साधक को इसका फल अवश्य मिलता है। इस वैदिक साधना से उक्त शनि मंत्र सिद्ध हो जाता है, जिससे अपने कल्याण के साथ दूसरों का भी कल्याण बड़ी आसानी से किया जा सकता है।

यदि कोई व्यक्ति उक्त मंत्र इस वैदिक विधि से सिद्ध कर लेता है तो उसकी सभी ग्रह बाधाएँ दूर हो जाती हैं। शत्रु-भय से छुटकारा पाने के लिए उक्त मंत्र की 21 माला जाप पर्याप्त रहता है। किसी यात्रा की सफलता हेतु उक्त शनिमंत्र का 11 या 21 बार जाप पर्याप्त है। यदि ऐसा लगे कि कोई प्रिय कार्य सम्पन्न होने में बाधाएँ आ सकती हैं तो बाधा निवारण के लिए उक्त मंत्र का 108 बार जाप आवश्यक है। साथ ही, रोज सोने के पहले मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप करना भी बहुत कारगर सिद्ध होता है। मंत्र के जाप से मन:स्थिति तुरन्त ठीक हो जाती है। यदि किसी के कारोबार में समस्या आ रही हो तो इस मंत्र का मध्य रात्रि में स्थान पवित्र करके तेल का दीपक जलाकर 21 दिन तक प्रतिदिन पाँच माला जाप करने से कैसी भी कारोबारी समस्या ठीक हो जाती है।

अथ दानद्रव्याणि

माषांश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम्।
कृष्णा च धेनुः प्रवदन्ति नूनं दृष्टाय दानं रविनंदनाय॥

शनिदेव बलकारी, गिद्ध तेरी है सवारी।
रूप चतुर्भुज धारी, अति ही विशाल है।
सूर्यदेव पिता तेरे छाया तेरी महतारी।
महिमादेवों में न्यारी करते निहाल हैं।
तेल अभिषेक करें, लौह प्रतिमा पे थारी।
मोदक चढ़ावें, चढ़ें उड़द की दाल है।
भगतन हितकारी, सुमिरत नर-नारी।
नीलाम्बर धारी 'मनु', कालों के भी काल हैं।

तंत्रोक्त शनि साधना

तंत्रोक्त साधना में काले तिल, काले वस्त्र, काले ऊन के आसन, मूंगे की माला, धूप, दीप, शनियंत्र, काले रंग में रंगे सरसों तेल में भीगे अक्षत (चावल) और काले उड़द की जरूरत पड़ती है। साधना का स्थान एकांत में अवस्थित नदी किनारे या गंगा-यमुना किसी पुराने पीपल के पेड़ के नीचे होना चाहिए। यदि पीपल किसी शमशान में हो तो और बेहतर है। इस साधना में प्रयुक्त होने वाला तांत्रिक मंत्र इस प्रकार है- **'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।'**

यह साधना करने के लिए साधक को स्नानोपरांत काले वस्त्र पहनकर गणेश आराधन व गुरू पूजन करना चाहिए, तदोपरांत शनि से प्रार्थना करें। हे शनि आप मुझे धैर्य और साधना की सफलता का आशीर्वाद प्रदान करें। इस प्रार्थना के बाद मार्गदर्शक गुरु के निर्देशानुसार संकल्प करके साधना के आसन पर अवस्थित हो शनि प्रतिमा व शनियंत्र को काले वस्त्र का आसन देकर पूजन करें और पूजनोपरांत विधिवत मंत्र जाप प्रारंभ करने के पूर्व साधक को अपने शरीर में सरसों का तेल अवश्य लगा लेना चाहिए। इस साधना में प्रयुक्त होने वाली पूजन सामग्रियों को अपने पास में रखकर जाप प्रारंभ करना चाहिए। शनिवार से प्रारंभ होकर चलने वाली यह साधना 40 दिनों में समाप्त होती है। इसमें प्रतिदिन 108 माला का जाप अति आवश्यक है और जाप के बाद उक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए जितने मंत्र जाप हुए हैं, उन मंत्रों का दशांश हवन करना चाहिए और दशांश का मार्जन व मार्जन का तर्पण करना चाहिए। आहुति तिल व तेल से करनी चाहिए। इस साधना में साधक को

केवल दूध या फलों का सेवन संध्याकाल में करना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का पूरा पालन भी आवश्यक है। यह साधना अर्धरात्रि में प्रारंभ की जाती है। मंत्र जाप के दौरान शनि प्रतिमा या शनि यंत्र पर अपनी दृष्टि एकाग्र करनी चाहिये। साधक को शयन भी उसी आसन पर करना चाहिए। साधना के अंतिम दिन अब तक जितने मंत्र जाप हुए हैं, उन मंत्रों का दशांश हवन उसका मार्जन व तर्पण करें। श्रद्धापूर्वक की गई साधना के फलस्वरूप इष्टदेव के दर्शन होते हैं और मनोनुकूल इच्छाएँ भी पूरी होती हैं। साधक को साधना के दौरान अहंकार और भय से रहित रहना चाहिए। भयभीत और अहंकार युक्त हृदय में दर्शनों का आनंद नहीं मिलता। साधना के दौरान अनेकों प्रकार के विचित्र अनुभव भी होने लगते हैं। इसलिए साधक को दृढ़ निश्चय और प्रभु की प्रार्थना के बल पर अडिग बने रहना चाहिए। किसी भी स्थिति में आसन से उठना नहीं चाहिये।

अत: हर स्थिति में जप जारी रखें और शनिदेव को प्रणाम कर अपनी सफलता की कामना को मन ही मन अवश्य दुहराते रहें। 40 दिनों की इस साधना में उक्त मंत्र पूर्ण सिद्ध हो जाता है, जिसके द्वारा साधक अपने साथ दूसरों का कल्याण भी करने में समर्थ हो जाते हैं। तत्पश्चात् किसी भी कार्य की सफलता के लिए मात्र इस मंत्र का 108 बार जाप पर्याप्त होता है। किंतु यदि मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विद्वेषण आदि अभिचार कर्म करना हो तो साधक को उक्त मंत्र का 11 माला अवश्य जाप करना चाहिए और उसका दशांश हवन, मार्जन व तर्पण भी यथाविधि अवश्य करना चाहिए, परंतु किसी अनिष्ट कार्य के लिए सिद्धि नहीं लगानी चाहिए, अन्यथा मंत्र सिद्धि लुप्त हो जायेगी।

प्रमुख शनि साधना मंत्र

सर्वबाधा निवारक वैदिक गायत्री मंत्र–

शनि गायत्री

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरुपाय धीमहि,
तन्नौ शौरिः प्रचोदयात्।

प्रतिदिन श्रद्धानुसार शनि गायत्री का जाप करने से घर में सदैव मंगलमय वातावरण बना रहता है।

वैदिक शनि मंत्र

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये
शं योरभिस्रवन्तु नः।।

शनिदेव को प्रसन्न करने का सबसे पवित्र और अनुकूल मंत्र है। इसकी पाँच माला सुबह-शाम करने से शनिदेव की भक्ति व प्रीति मिलती है।

पौराणिक शनि मंत्र

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

यह बहुत ही सटीक फल देने वाला शनि मंत्र है। इसका यदि सवा करोड़ जाप स्वयं करे या विद्वान साधकों से करवाएं तो जातक राजा के समान सुख प्राप्त करता है।

शनि ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र

सूर्यपुत्रो दीर्घ देहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मंदचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।

सूर्योदय के समय, सूर्य दर्शन करते हुए 21 या 7 बार इस मंत्र का

पाठ करना शनि शांति में विशेष उपयोगी होता है।

कष्ट निवारण शनि मंत्र

नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चर्तुभुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तुं मह्यं वरदोऽल्पगामी॥

इस मंत्र से अनावश्यक समस्याओं से छुटकारा मिलता है। प्रतिदिन एक माला सुबह शाम करने से शत्रु चाहकर भी नुकसान नहीं पहुँचा पायेगा।

सुख-समृद्धि दायक शनि मंत्र

कोणस्थ पिंगलो बभ्रु कृष्णौ रोद्रान्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः॥

इस शनि स्तुति को प्रातःकाल 21 या 7 बार पाठ करने से शनिजनित कष्ट नहीं व्यापते और सारा दिन सुखपूर्वक बीतता है।

किसी शनिवार से आरंभ करके 21 दिनों में शनि के तांत्रिक शनि मंत्र– **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः** का 23000 जाप करने से घर में सुख–शांति आती है।

शनि पत्नी नाम स्तुति

ॐ शं शनैश्चराय नमः

ध्वजनि धामिनी चैव कंकाली कलहप्रिया।
कंटकी कलही चाऽथ तुरंगी महिषी अजा॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः

यह बहुत ही अद्‌भुत और रहस्यमय स्तुति है। यदि आपको कारोबारी, पारिवारिक या शारीरिक समस्या हो। इस मंत्र का विधिविधान से जाप और अनुष्ठान किया जाये तो कष्ट आपसे कोसों दूर रहेंगे। यदि आप अनुष्ठान न कर सकें तो प्रतिदिन इस मंत्र की एक माला अवश्य करें, घर में सुख–शांति का वातावरण रहेगा।

श्री शनैश्चर स्तोत्र

दशरथकृतस्तोत्र साधना

विनियोग

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुप छन्दः, शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

कोणाऽन्तकोरौद्रयमोऽथबभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरीः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥१॥
सुराऽसुराः किंपुरुषोनगेन्द्रागन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥२॥
नरानरेन्द्राः पशवोमृगेन्द्रावन्याश्च ये कीटपतंगभृंगा।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥३॥
देशाश्चदुर्गाणिवनानि यत्रसेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥५॥
प्रयागकूलेयमुना तटे च सरस्वती पुण्य जले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्म तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥६॥
अन्य प्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥७॥
स्त्रष्टास्वयं भूर्भुवनत्रयस्यत्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥८॥
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रै पशुबान्धवैश्च।

पठेत्तुसौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते॥९॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः॥१०॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति॥११॥

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥१॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥३॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥४॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥५॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥६॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥७॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥

॥ इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री शनिस्तवराजः

संकट निवारण व मनोवांछित फलों की प्राप्ति में विशेष उपयोगी

विनियोग

अस्य श्रीशनैश्चरस्तवराजस्य सिन्धुद्वीपऋषिः। गायत्री छन्दः, आपो देवता, शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

नारद उवाच-
ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम्॥१॥
शिरो मे भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती॥२॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं वलिमुखोऽवतु।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु॥३॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः॥४॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरनेमिबलैर्युताम्॥५॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नैव संशयः।
ॐ सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः॥६॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।
शितिकण्ठनिभो नीलश्चछायाहृदयनन्दनः॥७॥
कालदृष्टिः कोटराक्ष स्थूलरोमा बलीमुखः।

दीर्घो निर्मासंगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः ॥८॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः ।
मन्दो मन्दगतिः खञ्जोस्ततश्च संवर्तको यमः ॥९॥
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी ।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः ॥१०॥
केतुदेवपतिबार्हुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ।
कुशी मरूत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभू ॥११॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वर ।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्यभुग् राज्यदायकः ॥१२॥
छायासुतः श्यामलाङ्गो धनहर्ता धनप्रदः ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्माविरोधकः ॥१३॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥१४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ॥१५॥
आदित्यः भयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः ।
शतभिद्रुक्षदयिता त्रयोदशितिथिप्रियः ॥१६॥
तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगणनायकः ।
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥१७॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्य भयदायकः ।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्चयजनच्छविः ॥१८॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः ॥१९॥

पठेन्नित्यं तस्य पीड़ा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान् य स्तवं सदा ॥२०॥
विशेषतः शनिदिने पीड़ा तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥२१॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥२२॥
विधाय लौहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।
बाधाचान्यग्रहाणां च यः पठेतस्य नश्यति ॥२३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥२४॥
रोगी रोगाद्विमुच्येत बद्धो नरः इमं पठेत् ।
पुत्रबान्धनवान् श्रीमाञ्जायते नात्र संशयः ॥२५॥

नारद उवाच

स्तवं निशम्य पार्थस्य, प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः ।
दत्त्वा राज्ञे वरं, कामं शनिश्चरान्तर्दधे तदा ॥२६॥

प्रस्तुत शनि स्तोत्र का जाप प्रतिदिन करने से शनि की कृपा प्राप्त होती है, ग्रहबाधा शान्त होती है तथा गृह क्लेश मिटता है। मन में श्रद्धा और विश्वास से यदि इस स्तोत्र का जाप प्रतिदिन ग्यारह बार किया जाये तो मनुष्य की सभी मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं।

मनु हृदय शनिदेव का, प्रेम अजब संजोग।
हँसते जग के लोग सब, कैसा पाला रोग॥
शनैश्चर सुरवन्द्य मन्द, घन स्वरूप विधिरूप।
ये छाया के लाल हैं, विद्या अविद्या स्वरूप॥

श्रीदशरथकृतशनिस्तोत्रम्

विनियोग– **श्री गणेशाय नमः। ॐ अस्य श्री शनिस्तोत्रमन्त्रस्य, कश्यपऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, सौरिर्देवता, रां बीजम्, निःशक्ति, कृष्णवर्णेति कीलकम्, धमार्थ, काम-मोक्षात्मक-चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्धहर्थे जपे विनियोगः।**

अथ न्यासः

करन्यास– **शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः॥१॥ अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णाङ्गाय अनामिकाभ्यां नमः॥२॥ शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥३॥**

हृदयादिन्यास– **शनैश्चराय हृदयाय नमः। मन्दगतये नमः शिरसे स्वाहा॥ अधोक्षजाय नमः शिखायै वौषठ्। कृष्णाङ्गाय कवचाय हुं। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय नमः अस्त्राय फट्॥**

दिग्बन्धनम्– ॐ भूर्भुवः स्वः, इति दिग्बन्धनम्।

(इस मंत्र को 5 बार पढ़कर, सभी दिशाओं में जल छिड़कें)

ध्यानम्

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम्।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्॥१॥

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रह निवारणम्।
शनैश्चर प्रसादार्थचिन्तयामास पार्थिवः॥२॥
रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा।
चक्रवर्ती च यज्ञेयः सप्तद्वीपाधिपोऽभवत्॥३॥

कृतिकान्तेशनिंज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः।
रोहिणीं भेदयित्वातु शनिर्यास्यिति साम्प्रतं॥४॥
शकटं मेधमित्युक्तं सुराऽसुरभयङ्करम्।
द्वादशाब्दंतु दुर्भिज्ञे भविष्यति सुदारूणम्॥५॥
एतच्छ्रुत्वातुतद्वाक्यंमन्त्रिभिः सह पार्थिवः।
व्याकुलंचजगद्दृष्टवा पौर जानपदादिकम्॥६॥
ब्रुवन्तिसर्वलोकाश्च भयमेतत्समागतम्।
देशाश्चनगरग्रामाः भयभीता समागताः॥७॥
पप्रच्छ प्रयतोराजा वसिष्ठप्रमुखान् द्विजान्।
समाधानं किमत्राऽस्ति ब्रूहिमे द्विजसत्तमाः॥८॥

वशिष्ठ उवाच

प्रजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्नेकुतः प्रजाः।
अयंयोगोऽध्यवसायश्चब्रह्माशक्रादिभिःसुरैः॥९॥
तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहसं परमं ययौ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमन्वितं॥१०॥
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम्।
त्रिलक्षयोजनं स्थानं चन्द्रस्योपरिसंस्थितम्॥११॥
रोहिणीपृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः।
रथकेतुकाञ्चने दिव्ये मणिनातद्द्विभूषिते॥१२॥
हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतु समुच्छ्रिते।
दीप्तमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्वलैः॥१३॥
व्यराजच्च तदाकाशे द्वितीय इव भास्करः।
आकर्णचापामाकृष्य सहस्रास्त्रं नियोजितं॥१४॥
कृतिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्रविशतांच रोहिणीम्।

दृष्ट्वा दशरथंचाग्रे तस्थौतु भृकुटामुखः॥१५॥
संहास्त्रास्त्रं शनिर्दृष्टवा सुराऽसुरनिषूदनम्।
प्रहस्य चभयात् सौरिरिदं वचनमब्रवीत्॥१६॥

शनिरुवाच

पौरुषं तव राजेन्द्र! मया दृष्टं न कस्यचित्।
देवासुरामनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगाः॥१७॥
मयाविलोकिताः सर्वेभयं गच्छन्ति तत्क्षणात्।
तुष्टोऽहे तव राजेन्द्र! तपसापौरुषेण च॥१८॥
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन।

दशरथ उवाच

प्रसन्नोयदि मे सौरे! एकश्चास्तु वरः परः॥१९॥
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी॥२०॥
याचितं तु महासौरे! नान्यमिच्छाम्यहं परम्।
एवमस्तुशनि प्रोक्तं वरंलब्ध्वा तु शाश्वतम्॥२१॥
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरय सुब्रत॥२२॥
प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा।
नभेत्तव्यं न भेत्तव्यं त्वया भास्करनन्दन॥२३॥
द्वादशाब्दं तुं दुर्भिक्षं न कर्त्तव्यं कदाचन।
कीर्तिरेषामदीयां च त्रैलोक्ये स्थापय प्रभो॥२४॥
एवं वरं तु संप्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः।
रथोपरिधनुः स्थाप्यभूत्वा चैव कृताञ्जलिः॥२५॥
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकम्।

राजादशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत्॥२६॥

दशरथ उवाच

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः सुरूपगात्राय स्थूलरोमे नमो नमः॥२७॥
नमोनित्यं क्षुधार्त्ताय अतृप्ताय च वै नमः।
नमः कालाग्निरूपायकृष्णाङ्गाय च वै नमः॥२८॥
नमोदीर्घाय शुष्काय कालदृष्टे नमो नमः।
नमोऽस्तुकोटराक्षाय दुर्भिक्षाय कपालिने॥२९॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।
नमो मन्दते! रौद्र भानुज! भयदायिने॥३०॥
अधोदृष्टे! नमस्तेऽस्तु संवर्तकभयाय च।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च॥३१॥
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेतु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासिवै राज्यं रूष्टोहरसि तत्क्षणात्॥३२॥
सुर्यपुत्र! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः।
देवाऽसुर मनुष्याश्च पशु-पक्षि-सरीसृपः॥३३॥
त्वया विलोकिताः सर्वे देवाचाशुव्रजन्तिते।
ब्रह्माशक्रोहरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः॥३४॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येयेत्वयादृष्ट्यावलोकिता।
देशाश्चनगरग्रामा द्वीपाश्चैवतथाद्रुमाः॥३५॥
त्वयाविलोकिता सर्वे विनश्यन्ति समूलतः।
प्रसादं कुरु हे सौरे! वरदो भव भानुज॥३६॥
एवं स्तुतस्तदा सौरिः सः राजो महाबलः।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः॥३७॥

तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत।
एवं वरं दास्यामि यत्ते मनसि वर्तते॥३८॥

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सौरे! वरं देहि ममेप्सितम्।
अद्य प्रभृतिपिंगाक्ष! पीडादेया न कस्यचित्॥३९॥
प्रसादं कुरू मे सोरे! वरोऽयं मे मयेसिप्तः।

शनिरुवाच

अदेयस्तु वरोयुस्मत् तुष्टोऽहं च ददामि ते॥४०॥
त्वयाप्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्तिमानवाः।
देवासुर मनुष्याश्चसिद्ध विद्याधरोरगाः॥४१॥
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन।
मृत्यु स्थानचतुर्थेवाजन्मं-व्यय-द्वितीयगे॥४२॥
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेद् द्वि-त्रिसन्ध्यायां वा शुचिर्भूत्वासमाहितः॥४३॥
न तस्य जायते पीडा कृता वै ममनिश्चितम्।
प्रतिमां लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्थजाम्॥४४॥
वरदांच धनुः शूल बाणांकितकरांशुभाम्।
अयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः॥४५॥
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैघृतनीलपंकजैः।
पायसंशर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्॥४६॥
ब्राह्मणान् भोजयेत्तत्र स्वशक्त्याघृत पायसैः।
तैले वा तिलराशौ वा प्रत्यक्षं चयथाविधि॥४७॥
पूजनं चैव मन्त्रेण कुकुंमंच विलेपयेत्।
नील्यावाकृष्णतुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः॥४८॥

ददन्मे प्रीतये यस्तुकृष्णवस्त्रादिकं शुभम्।
धेनुवृषभंवाऽपि सवत्सां च पयस्विनीम्॥४९॥
एवं विशेषपूजां यः मद्द्वा कुरूते नृप।
मन्त्र द्वारा विशेषेन स्तोत्रेणानेन पूजयेत्॥५०॥
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृतांजलि।
तस्यपीडां नचैवाहं करिष्यामि कदाचन॥५१॥
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्यच।
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत्॥५२॥
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा।
मत्वा कृतार्थमात्मनं नमस्कृत्य शनैश्चरं॥५३॥
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारूह्य वीर्यवान्।
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्तकामोऽभक्त्तदा॥५४॥
स्वार्थसिद्धिभवाप्याथ विजयी सर्वदाऽभवत्।
कोणस्थः पिङ्गलोवभ्रुः कृष्णोरौद्रान्तको यमः॥५५॥
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयसंस्थितः।
एतानिशनिनामानिजपेदश्वत्थ सन्निधौ॥५६॥
शनैश्चरकृता पीडा न कदापि भविष्यति।
अल्पमृत्युविनाशाय दुःखस्योद्धारणायच॥५७॥
स्नातव्यं तिलतैलेन धान्य माषादिंक तथा।
लौहं देव च विप्राय सुवर्णेन समन्वितम्॥५८॥
उशनिस्तोत्रं पठेद्यस्तु श्रृणुयाद्वा समाहितः।
विजयंचार्थकामंचारोग्यं सुखमवाप्नुयात्॥५९॥

(इति श्रीशनिस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

दशरथकृत शनि स्तोत्र

(हिन्दी पद्यांश, भक्त बजरंगकृत)

हे श्यामवर्णवाले, हे नीलकण्ठ वाले।
कालाग्नि रूप वाले, हल्के शरीर वाले,
स्वीकारो नमन मेरे, शनिदेव हम तुम्हारे।
सच्चे सुकर्म वाले हैं, मन से हो तुम हमारे॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हे दाढ़ी-मूंछों वाले, लम्बी जटायें वाले,
हे दीर्घ नेत्र वाले, शुष्कोदरा निराले।
भय आकृति तुम्हारी, सब पापियों को मारे॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हे पुष्ट देहधारी, स्थूल-रोम वाले,
कोटर सुनेत्र वाले, हे बज्र देह वाले।
तुम ही सुयश दिलाते, सौभाग्य के सितारे॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हे घोर रौद्र रूपा, भीषण कपालि भूपा,
हे नमन सर्वभक्षी बलिमुख शनी अनूपा।
हे भक्तों के सहारे, शनि! सब हवाले तेरे॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हे सूर्य-सुत तपस्वी, भास्कर के भय मनस्वी,
हे अधो दृष्टि वाले, हे विश्वमय यशस्वी।
विश्वास श्रद्धा अर्पित सब कुछ तू ही निभाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

अतितेज खड्गधारी, हे मन्दगति सुप्यारी,
तप-दग्ध-देहधारी, नित योगरत अपारी।
संकट विकट हटा दे, हे महातेज वाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

नितप्रियसुधा में रत हो, अतृप्ति में निरत हो,
हो पूज्यतम जगत में, अत्यंत करुणा नत हो।
हे ज्ञान नेत्र वाले, पावन प्रकाश वाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

जिस पर प्रसन्न दृष्टि, वैभव सुयश की वृष्टि,
वह जग का राज्य पाये, सम्राट तक कहाये।
उत्तम स्वभाव वाले, तुमसे तिमिर उजाले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हो वक्र दृष्टि जिसपै, तत्क्षण विनष्ट होता,
मिट जाती राज्यसत्ता, हो के भिखारी रोता।
डूबे न भक्त-नैय्या पतवार दे बचा ले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

हो मूलनाश उनका, दुर्बुद्धि होती जिन पर,
हो देव असुर मानव, हो सिद्ध या विद्याधर।
देकर प्रसन्नता प्रभु अपने चरण लगा ले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

होकर प्रसन्न हे प्रभु! वरदान यही दीजै,
बजरंग भक्त गण को दुनिया में अभय कीजै।
सारे ग्रहों के स्वामी अपना विरद बचा ले॥
स्वीकारो नमन मेरे। स्वीकारो भजन मेरे॥

श्रीशनैश्चरसहस्त्रनामस्तोत्र

विनियोग एवं न्यास

अस्य श्रीशनैश्चरसहस्त्रनामस्तोत्र महामन्त्रस्य। कश्यपऋषिः अनुष्टप्छन्दः। शनैश्चरो देवता। शम् बीजम्। नम शक्तिः। मम् कीलकम्। शनैश्चरप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः। मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः। सौरये अनामिकाभ्यां नमः। शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। शनैश्चराय हृदयाय नमः। मन्दगतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट्। सौरये कवचाय हुम्। शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्। छायात्मजाय अस्त्राय फट्। भूर्भुस्वसुवरोमिति दिग्बन्धः।

शनिदेव का ध्यान

**चापासनो गृध्रधरस्तु नीलः प्रत्यङ्मुखः काश्यप गोत्रजातः।
सशूलचापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनास्थो विकृताननश्च।
केयूरहारादि विभूषितांग स्सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः॥**

शनिसहस्त्रनामस्तोत्रम्

**अमिताभाष्यघहरः अशेषदुरितापहः।
अघोररूपोऽतिदीर्घकायोऽशेषभयानकः ॥१॥
अनन्तोअन्नदाता चाश्वत्थमूलजपे प्रियः।
अतिसम्पत्प्रदोऽमोघः अन्यस्तुत्याप्रकोपितः॥२॥
अपराजितो अद्वितीयः अतितेजोऽभयप्रदाः।**

**अष्टमस्थोऽञ्जननिभः अखिलात्मार्कनन्दनः॥३॥
अतिदारुण अक्षोभयः अप्सरोभिः प्रपूजितः।
अभीष्टफलदोऽरिष्टमथनोऽमरपूजितः ॥४॥
अनुग्राह्यो अप्रमेय पराक्रम विभीषणः।
असाध्ययोगो अखिल दोषघ्नः अपराकृतः॥५॥
अप्रमेयोऽतिसुखदः अमराधिपपूजितः।
अवलोकात् सर्वनाशः अश्वत्थाम द्विरायुधः॥६॥
अपराधसहिष्णुश्च अश्वत्थाम सुपूजितः।
अनन्तपुण्यफलदो अतृप्तोतिबलोपिच॥७॥
अवलोकात् सर्ववन्द्यः अक्षीणकरुणानिधिः।
अविद्यामूलनाशश्च अक्षय्यफलदायकः॥८॥
आनन्दपरिपूर्णश्च आयुष्कारक एवच।
आश्रितेष्टार्थवरदः आधिव्याधिहरोपिच॥९॥
आनन्दमय आनन्दकरौ आयुधधारकः।
आत्मचक्रकाधिकारी च आत्मस्तुत्यपरायणः॥१०॥
आयुष्करो आनुपूर्व्यः आतायत्तजगत्रयः।
आत्मनापजपप्रीतः आत्माधिकफलप्रदः॥११॥
आदित्यसंभवो आर्तिभञ्जनो आत्मरक्षकः।
आपद्बान्धव आनन्दरूपो आयुः प्रदोपिचः॥१२॥
आकर्णपूर्णचापश्च आत्मोदिष्ट द्विजप्रदः।
आनुकूल्यो आत्मरूप प्रतिमादान सुप्रियः॥१३॥
आत्मारामो आदिदेवो आपन्नार्ति विनाशनः।
इन्दिरार्चितपादश्च इन्द्रभोगफलप्रदः॥१४॥
इन्द्रदेवस्वरूपश्च इष्टेष्टवरदायकः।**

इष्टापूर्तिप्रदो इन्दुमनीष्टवरदायकः॥१५॥
इन्दिरारमणः प्रीतः इन्द्रवंशनृपार्चितः।
इहामुत्रेष्टफलदः इन्दिरारमणार्चितः॥१६॥
इंद्रियो ईश्वरप्रीतः ईषणात्रयवर्जितः।
उमास्वरूपउद्बोध्यः उशना उत्सवप्रियः॥१७॥
उमादेव्यर्चनप्रीतः उच्चस्थोच्चफलप्रदः।
उरुप्रकाशो उच्चस्थ योगदः उरुपराक्रमः॥१८॥
ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारी ऊर्ध्वलोकादिनायकः।
ऊर्जस्वी ऊनपादश्च ऋकाराक्षरपूजितः॥१९॥
ऋषिप्रोक्त पुराणज्ञः ऋषिभिः परिपूजितः।
ऋग्वेदवन्द्यो ऋग्रूपी ऋजुमार्ग प्रवर्तकः॥२०॥
लुलितोद्धारको लूत भवपाशप्रभञ्जनः।
लूकाररूपकोलब्धर्ममार्गप्रवर्तकः ॥२१॥
एकाधिपत्यसाम्रज्यप्रदो एनौघनाशनः।
एकपाद्येक ऐकोनविंशतिमासभुक्तिदः॥२२॥
एकोनविंशतिवर्षदशो एणांकपूजितः।
ऐश्वर्यफलदो ऐन्द्र ऐरावतसुपूजितः॥२३॥
ओंकार जपसुप्रीतः ओंकार परिपूजितः।
ओंकारबीजो औदार्य हस्तो औन्नत्यदायकः॥२४॥
औदार्यगुण औदार्य शीलो औषधकारकः।
करपंकजसन्नद्धधनुश्च करुणानिधिः॥२५॥
कालः कठिनचित्तश्च कालमेघसमप्रभः।
किरीटी कर्मकृत्कारयिताकालसहोदरः॥२६॥
कालाम्बरः काकवाहः कर्मठः काश्यपान्वयः।

कालचक्रप्रभेदी च कालरूप च कारणः॥२७॥
कारिमूर्तिः कालभर्ता किरीटमकुटोज्चलः।
कार्यकारण कालज्ञः काञ्चनाभरथान्वितः॥२८॥
कालदंष्ट्रः क्रोधरूपः कराली कृष्णकेतनः।
कालात्मा कालकर्ता च कृतान्तः कृष्णगोप्रियः॥२९॥
कालाग्निरुद्ररूपश्च काश्यपात्मजसंभवः।
कृष्णवर्णहयश्चैव कृष्णगोक्षीरसुप्रियः॥३०॥
कृष्णगोघृतसुप्रीतः कृष्णगोदधिषुप्रियः।
कृष्णगावैकचित्तश्च कृष्णगोदानसुप्रियः॥३१॥
कृष्णगोदत्तहृदयः कृष्णगोरक्षणप्रियः।
कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकः॥३२॥
कृष्ण गोदान शान्तस्य सर्वशान्त फलप्रदः।
कृष्णगोस्नान कामस्य गंगास्नान फलप्रदः॥३३॥
कृष्णगोररक्षणस्यागु सर्वाभीष्टफलप्रदः।
कृष्णगावप्रियश्चैव कपिलापुद्युषु प्रियः॥३४॥
कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदः।
कपिलादानसुप्रीतः कपिलाज्यहुतप्रियः॥३५॥
कृष्णश्च कृत्तिकान्तस्थः कृष्णगोवत्ससुप्रियः।
कृष्णमाल्यांबरधरः कृष्णवर्णतनूरुहः॥३६॥
कृष्णकेतुः कृशकृष्णदेहः कृष्णांबरप्रियः।
क्रूरचेष्टः क्रूरभाव क्रूरदंष्ट्र कुरूपि च॥३७॥
कमलापति संसेव्यः कमलोद्भवपूजतः।
कामितार्थप्रदः कामधेनु पूजनसुप्रियः॥३८॥
कामधेनुसमाराध्यः कृपायुष विवर्धनः।

कामधेन्वैकचित्तश्च कृपराज सुपूजितः॥३९॥
कामदोग्धा च क्रुद्धश्च कुरु वंशसुपूजितः।
कृष्णाङ्गमहिषीदोग्धा कृष्णेन कृतपूजनः॥४०॥
कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियः कोणस्थ एवच।
कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपः कामपूजितः॥४१॥
क्रूरावलोनात्सर्वनाशः कृष्णाङ्गदप्रियः।
खद्योतः खण्डनः खड्गधरः खेचरपूजितः॥४२॥
खरांशुतनयश्चैव खगानां पतिवाहनः।
गोसवासक्तहृदयः गोचरस्थानदोषहृत्॥४३॥
गृहराश्याधिपश्चैव गृहराज महाबलः।
गृध्रवाहो गृहपतिः गोचरो गानलोलुपः॥४४॥
घोरो घर्मो घनतमो घर्मी घनकृपान्वितः।
घननीलाम्बरधरो डादिवर्ण सुसंज्ञितः॥४५॥
चक्रवर्तिसमाराध्यः चन्द्रमत्या समर्चितः।
चन्द्रमत्यार्तिहारी च चराचर सुखप्रदः॥४६॥
चतुभुर्जश्चापहस्तः चराचरहितप्रदः।
छायापुत्रः छत्रधरः छायादेवीसुतस्तथा॥४७॥
जयप्रदो जगन्नीलो जपतां सर्वसिद्धि।
जपविध्वस्तविमु खो जंभारिपरिपूजितः॥४८॥
जभांरिवन्द्यो जयदो जगज्जनमनोहरः।
जगत्त्रयप्रकुपितो जगत्त्राणपरायणः॥४९॥
जयो जयप्रदश्चैव जगानम्दकारकः।
ज्योतिश्च ज्योतिषां श्रेष्ठो ज्योतिश्शास्त्र प्रवर्तकः॥५०॥
झर्झरीकृतदेहश्च झल्लरीवाद्यसुप्रियः।

ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानगम्यो ज्ञानी ज्ञानमहानिधिः॥५१॥
ज्ञानप्रबोधकश्चैव ज्ञानदृष्टयावलोकितः।
टङ्किताखिललोकश्च टङ्कितैन स्तमोरविः॥५२॥
टङ्कारकश्चैव टिङ्कृतो टाम्भदप्रियः।
ठकारमय सर्वस्वः ठकारकृतपूजितः॥५३॥
डक्कारवाद्यप्रीतिकरः डमड्डमरुकप्रियः।
डम्भरप्रभवो डम्भः डक्कानादप्रियङ्करः॥५४॥
डाकिनी शाकिनी भूत सर्वोपद्रवकारकः।
डाकिनीशाकिनीभूत सर्वोपद्रवनाशकः॥५५॥
ढकाररूपो डाम्भीको णकारजपसुप्रियः।
णकारमयमन्त्रार्थः णकारैकशिरोमणिः॥५६॥
णकारवचनानन्दः णकारकरुणामय।
णकारमय सर्वस्वः णकारैकपरायणः॥५७॥
तर्जनीधृतसमुद्रश्च तपसां फलदायकः।
त्रिविक्रमनुतश्चैव त्रयीमयवपुर्धरः॥५८॥
तपस्वी तपसा दग्धदेहः ताम्राधरसतधा।
त्रिकालवेदितव्यश्च त्रिकालमतितोषितः॥५९॥
तुलोच्चयः त्रासकरः तिलतैलप्रियस्तथा।
तिलान्न सन्तुष्टमनाः तिलदानप्रियस्तथाः॥६०॥
तिलभक्ष्यप्रियश्चैव तिलचूर्णप्रियस्तथा।
तिलखण्डप्रियश्चैव तिलापूपप्रियस्तथा॥६१॥
तिलहोमप्रियश्चैव तापत्रयनिवारकः।
तिलतर्पणसन्तुष्टः तिलतैलान्नतोषितः॥६२॥
तिलैकदत्तहृदयः तेजस्वी तेजसान्निधिः।

तेलसादित्यसङ्काशः तेजोमय वपुर्धरः॥६३॥
तत्वज्ञः तत्वगस्तीव्रः तपोरूपः तपोमयः।
तुष्टिदस्तुष्टिकृत् तीक्ष्णः त्रिमूर्ति त्रिगुणात्मकः॥६४॥
तिलदीपप्रियश्चैव तस्य पीडानिवारकः।
तिलोत्तमामेनकादिनर्तन प्रियएवचः॥६५॥
त्रिभागमष्टवर्गश्च स्थूलरोमा स्थिरस्तथा।
स्थितः स्थायी स्थापकश्च स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकः॥६६॥
दशरथार्चितपादश्च दशरथस्तोत्रतोषितः।
दशरथप्रार्थक्लृप्त दुर्भिक्ष विनिवारकः॥६७॥
दशरथ प्रार्थनाक्लृप्त वरद्वय प्रदायकः।
दशरथस्वात्मदर्शी च दशरथाभीष्टदायकः॥६८॥
दोर्भिर्धनुर्धरश्चैव दीर्घश्मश्रुजटाधरः।
दशरथस्तोत्रवरदः दशरथाभीप्सितप्रदः॥६९॥
दशरथस्तोत्रसन्तुष्टः दशरथेन सुपूजितः।
द्वादशष्टजन्मस्थो देवपुङ्गवपूजितः॥७०॥
देवदानवदर्पघ्नो दिनं प्रतिमुनि स्तुत।
द्वादशस्थो द्वादशात्मा सुतो द्वादश नामभृत॥७१॥
द्वितीयस्थो द्वादशार्कसूनुः दैवज्ञपूजितः।
दैवज्ञचित्तवासी च दमयन्त्या सुपूजितः॥७२॥
द्वादशाब्दंतु दुर्भिक्षकारी दुस्स्वप्ननाशनः।
दुराराध्यो दुराधर्षः दमयन्ती वरप्रदः॥७३॥
दुष्टदूरो दुराचार शमनो दोषवर्जितः।
दुस्सहो दोषहन्ता व दुर्लभो दुर्गमस्तथ॥७४॥
दुःखप्रदो दुःखहन्ता दीप्तरन्जित दिङ्भुखः।

दीप्यमान मुखांभोजः दमयत्याशिवप्रदः॥७५॥
दुर्निरोक्षो दृष्टमात्र दैत्यमण्डलनाशकः।
द्विजदानैकनिरतो द्विजाराधनतत्परः॥७६॥
द्विजसर्वार्तिहारी च द्विजराज समर्चितः।
द्विजदानैकचित्तश्च द्विजराज प्रियङ्करः॥७७॥
द्विजो द्विजप्रियश्चैव द्विजराजेष्टदायकः।
द्विजरूपो द्विजश्रेष्ठः दोषदो दुस्सहोपिच॥७८॥
देवादिदेवो देवेशो देवराज सुपूजितः।
देवराजेष्ट वरदो देवराज प्रियङ्करः॥७९॥
देवादिवन्दितो दिव्यतनुर्देवशिखामणिः।
देवगानप्रियश्चैव देवदेशिकपुङ्गवः॥८०॥
द्विजात्मजसमाराध्यः ध्येयो धर्मी धनुर्धरः॥
धनुष्मान् धनदाता च धर्माधर्मविवर्जितः॥८१॥
धर्मरूपो धनुर्दिव्यो धर्मशास्त्रात्मचेतनः।
धर्मराज प्रियकरो धर्मराजस्सुपूजितः॥८२॥
धर्मराजेष्टवरदो धर्माभीष्टफलप्रदः।
नित्यतृप्तस्वभावश्च नित्यकर्मरतस्तथा॥८३॥
निजपीडार्तिहारी च निजभक्तेष्टदायकः।
निर्मांसदेहो नीलश्च निजस्तोत्र बहुप्रियः॥८४॥
नलस्तोत्र प्रियश्चैव नलराजसुपूजितः।
नक्षत्रमण्डलगतो नमतां प्रियकारकः॥८५॥
नित्यार्चितपदाम्भोजो निजाज्ञा परिपालकः।
नवग्रहरो नीलवपुर्नलकरार्चितः॥८६॥
नलप्रियानन्दितश्च नलक्षेत्रेनिवासकः।

नलपाक प्रियश्चैव नलपद्मञ्जनक्षमः॥८७॥
नलसर्वार्तिहारी च नलेनात्मार्थपूजितः।
निपाटवीनिवासश्च नलाभीष्टवरप्रदः॥८८॥
नलतीर्थ सकृत्स्नान सर्वपीडानिवारकः।
नलेशदर्शनस्याशु साम्राज्यपदवीप्रदः॥८९॥
नक्षत्रराश्याधिपश्च नीलध्वजविराजितः।
नित्योगरतश्चैव नवरत्नविभूषितः॥९०॥
नवधा भज्यदेहश्च नवीकृतजगत्त्रयः।
नवग्रहाधिपश्चैव नवाक्षरजपप्रियः॥९१॥
नवात्मा नवचक्रात्मा नवतत्वाधिपस्तथा।
नवोदन प्रियश्चैव नवधान्यप्रियस्तथा॥९२॥
निष्कण्टको निस्पृहश्च निरपेक्षो निरामयः।
नागराजार्चिपदो नागाराजप्रियङ्करः॥९३॥
नागराजेष्टवरदो नागाभरण भूषितः।
नागेन्द्रगान निरतः नानाभरणभूषितः॥९४॥
नवमित्र स्वरूपश्च नानाश्चर्यविधायकः।
नानाद्वीपाधिकर्ता च नानालिपिसमावृतः॥९५॥
नानारूप जगत् स्रष्टा नानारूपजनाश्रयः।
नानालोकाधिपश्चैव नानाभाषाप्रियस्तथा॥९६॥
नानारूपाधिकारी च नवरत्नप्रियस्तथा।
नानाविचित्रवेषाढयः नानाचित्र विधायकः॥९७॥
नीलजीमूतसङ्काशो नीलमेघसमप्रभः।
नीलाञ्जनचयप्रख्यः नीलवस्त्रधरप्रियः॥९८॥
नीचभाषा प्राचरज्ञो नीचे स्वल्पफलप्रदः।

नानागम विधानज्ञो नाननृपसमावृतः॥९९॥
नानावर्णाकृतिश्चैव नानावर्णस्वरार्तवः।
नागलोकान्तवासी च नक्षत्रत्रयसंयुतः॥१००॥
नाभादिलोकसंभूतो नामस्तोत्रबहुप्रियः।
नामपारायणप्रीतो नामर्श्चनवरप्रदः॥१०१॥
नामस्तोत्रैकचित्तश्च नानारोगार्तिभञ्जनः।
नवग्रहसमाराध्यः नवग्रह भयापहः॥१०२॥
नवग्रहसुसंपूज्यो नानावेद सुरक्षकः।
नवग्रहाधिराजश्च नवग्रहजपप्रियः॥१०३॥
नवग्रहमयज्योतिः नवग्रह वरप्रदः।
नवग्रहाणामधिपो नवग्रह सुपीडितः॥१०४॥
नवग्रहाधीश्वरश्च नवमाणिक्यशोभितः।
परमात्मा परब्रह्म परमैश्चर्यकारणः॥१०५॥
प्रपन्नभयहारी च प्रमत्तासुरशिक्षकः।
प्रासहस्तः पङ्गुपादो प्रकाशात्मा प्रतापवान्॥१०६॥
पावनः परिशुद्धात्मा पुत्रपौत्र प्रवर्धनः।
प्रसन्नावत्सर्वसुखदः प्रसन्नेक्षण एवच॥१०७॥
प्रजापत्यः प्रियकरः प्रणतेप्सितराज्यदः।
प्रजानां जीवहेतुश्च प्राणिनां परिपालकः॥१०८॥
प्राणरूपी प्राणधारी प्रजानां हितकारकः।
प्राज्ञः प्रशान्तः प्रज्ञावान् प्रजारक्षणदीक्षितः॥१०९॥
प्रावृषेण्यः प्राणकारी प्रसन्नोत्सववन्दितः।
प्रज्ञानिवासहेतुश्च पुरुषार्थैकसाधनः॥११०॥
प्रजाकरः प्रानुकूल्यः पिङ्गलाक्षः प्रसन्नधीः।

प्रपञ्चात्मा प्रसविता पुराण पुरुषोत्तम॥१११॥
पुराण पुरुषश्चैव पुरुहूतः प्रपञ्चधृत्।
प्रतिष्ठितः प्रीतिकरः प्रियकारी प्रयोजन॥११२॥
प्रीतिमान् प्रवरस्तुत्यः पुरूरवसमर्चितः।
प्रपञ्चकारी पुण्यश्च पुरुहूत समर्चितः॥११३॥
पाण्डवादि सुसंसेव्यः प्रणवः पुरुषार्थदः।
पयोदसमवर्णश्च पाण्डुपुत्रार्तिर्दभञ्जनः॥११४॥
पाण्डुपुत्रेष्टदाता च पाण्डवानां हितङ्करः।
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदः॥११५॥
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्ट निवारकः।
पाण्डुपुत्राद्यर्चितश्च पूर्वजश्च प्रपञ्चभृत॥११६॥
परचक्रप्रभेदी च पाण्डवेषु वनप्रदः।
परब्रह्म स्वरूपश्च पराज्ञा परिवर्जितः॥११७॥
परात्परः पाशहन्ता परमाणुः प्रपञ्चकृत्।
पातङ्गी पुरुषाकारः परशंभुसभुद्भवः॥११८॥
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रपञ्चोद्भवसंभवः।
प्रसन्नः परमोदारः पराहङ्कारभञ्जनः॥११९॥
परः परमकारुण्यः परब्रह्ममयस्तथा।
प्रपन्नभयहारी च प्रणतार्तिहरस्तथा॥१२०॥
प्रसादकृत् प्रपञ्चश्च पराशक्ति समुद्भवः।
प्रदानपावनश्चैव प्रशान्तात्मा प्रभाकरः॥१२१॥
प्रपञ्चात्मा प्रपञ्चोपशमनः पृथिवीपतिः।
परशुराम समाराध्यः परशुरामवरप्रदः॥१२२॥
परशुराम चिरञ्जीविप्रदः परमसावनः।

परमहंसस्वरूपश्च परमहंससुपूजितः॥१२३॥
पञ्चनक्षत्राधिपश्च पञ्चनक्षत्रसेवितः।
प्रपञ्च रक्षितश्चैव प्रपञ्जस्य भयङ्करः॥१२४॥
फलदानप्रियश्चैव फलहस्तः फलप्रदः।
फलाभिषेकप्रियश्च फल्गुनस्य वरप्रदः॥१२५॥
पुटच्छमित पापौघः फल्गुनेन प्रपूजित।
फणिराजप्रियश्चैव पुल्लाम्बुज विलोचनः॥१२६॥
बलिप्रियोबली बभ्रुः ब्रह्मविष्ण्वीश क्लेशकृत्।
ब्रह्मविष्णीशरूपश्च ब्रह्मशक्रादिदुर्लभः॥१२७॥
बासदष्टर्या प्रमेयाङ्गो बिभ्रत्कवचकुण्डलः।
बहुश्रुतो बहुमतिः ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः॥१२८॥
बलप्रमथनो ब्रह्मा बहुरूपो बहुप्रदः।
बालार्क्द्युतिमान्बाले बृहद्वक्षो बृहत्तमः॥१२९॥
ब्रह्माण्डभेदकृच्चैव भक्तसर्वार्थसाधकः।
भव्यो भोक्ता भीतिकृच्च भक्तानुग्रहकारकः॥१३०॥
भीषणो भैक्षकार च भूसुरादि सुपूजितः।
भोगभाग्यप्रदश्चैव भस्मीकृत जगत्त्रयः॥१३१॥
भयानको भानुसूनुः भूतिभूषित विग्रहः।
भास्वद्रतो भक्तिमतां सुलभो भ्रुकुटीमुखः॥१३२॥
भवभूत गणैस्स्तुत्यो भूतसंघसमावृतः।
भ्राजिष्णुर्भगवान्भीमो भक्ताभीष्टवरप्रदः॥१३३॥
भवभक्तैकचित्तश्च भक्तिगीतस्तवोन्मुखः।
भूतसन्तोषकारी च भक्तानां चित्तशोधक॥१३४॥
भक्तिगम्यो भयहरो भावज्ञो भक्तसुप्रियः।

भूतिदो भूतिकृत् भोज्यो भूतात्मा भुवनेश्वरः॥१३५॥
मन्दो मन्दगतिश्चैव मासमेव प्रपूजितः।
मुचुकुन्द समाराध्यो मुचुकुन्द वरप्रदः॥१३६॥
मुचुकुन्दार्चितपदो महारूपो महायशाः।
महाभोगी महायोगी महाकायो महाप्रभुः॥१३७॥
महेशो महदैश्चर्यो मन्दार कुसुमप्रियः।
महाक्रतुर्महामानी महाधीरो महाजयः॥१३८॥
महावीरो महाशान्तो मण्डलस्थो महाद्युतिः।
महासुतो महोदरो महनीयो महोदयः॥१३९॥
मैथिलीवरदायी च मार्ताण्डस्य द्वितीयजः।
मैथिलीप्रार्थनाक्लप्त दशकण्ठ शिरोपहृतः॥१४०॥
मरामरहराराध्यो महेन्द्रादि सुरार्चितः।
महारथो महावेगो मणिरत्नविभूषितः॥१४१॥
मेषनीचो महाघोरो महासौरिर्मनुप्रियः।
महादीर्घो महाग्रासो महदैवर्श्यदायकः॥१४२॥
महाशुष्को महारौद्रो मुक्तिमार्ग प्रदर्शकः।
मकरकुभ्भाधिपश्चैव मृकण्डुतनयार्चितः॥१४३॥
मन्त्राधिष्ठानरूपश्च मल्लिकाकुसुमप्रियः।
महामन्त्र स्वरूपश्च महायन्त्रस्थितस्तथा॥१४४॥
महाप्रकाशदिव्यात्मा महादेवप्रियस्तथा।
महाबलि समाराध्यो महर्षिगणपूजितः॥१४५॥
मन्दचारी महामायी माषदानप्रियस्तथा।
माषोदन प्रीतचित्तो महाशक्तिर्महागुणः॥१४६॥
यशस्करो योगदाता यज्ञाङ्गोपऽपि युगन्धरः।

योगी योग्यश्च याम्यश्च योगरूपी युगाधिपः॥१४७॥
यज्ञभृद्यजमानश्च योगो योगविदां वरः।
यक्षराक्षसवेताल कुष्माण्डादिप्रपूजितः॥१४८॥
यमप्रत्यधिदेवश्च युगपत् भोगदायकः।
योगप्रियो योगयुक्तो यज्ञरूपो युगान्तकृत्॥१४९॥
रघुवंश समाराध्यो रौद्रौ रौद्राकृतिस्तथा।
रघुनन्दन सल्लापो रघुप्रोक्त जपप्रियः॥१५०॥
रौद्ररूपी रथारूडो राघवेष्ट वरप्रदः।
रथी रौद्राधिकारी च राघवेण समर्चितः॥१५१॥
रोषात्सर्वस्वहारी च राघवेण सुपूजितः।
राशिद्वयाधिपश्चैव रघुभिः परिपूजितः॥१५२॥
राज्यभूपाकरश्चैव राजराजेन्द्र वन्दितः।
रत्नकेयूरभूषाढ्यो रमानन्दनवन्दितः॥१५३॥
रघपौ षसन्तुष्टो रघुस्तोत्रबहुप्रियः।
रघुवंशनृपैः पूज्यो रणन्मञ्जीरनूपुरः॥१५४॥
रविनन्दन राजेन्द्रो रघुवंशप्रियस्तथा।
लोहजप्रतिमादानप्रियो लावण्यविग्रहः॥१५५॥
लोकचूडामणिश्चैव लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियः।
लोकरक्षो लोकशिक्षो लोकलोचनरञ्जितः॥१५६॥
लोकाध्यक्षो लोकवन्द्यो लक्ष्मणाग्रजपूजतः।
वेदवेद्यो वज्रदेहो वज्राङ्कुशधरस्तथा॥१५७॥
विश्वन्द्यो विरूपाक्षो विमलाङ्गविराजितः।
विश्वस्थो वायसारूढो विशेषसुखकारकः॥१५८॥
विश्वरूपी विश्वगोप्ता विभावसु सुतस्तथा।

विप्रप्रियो विप्ररूपो विप्राराधन तत्परः॥१५९॥
विशालनेत्रो विशिखो विप्रदानबहुप्रियः।
विश्वसृष्टि समुद्भूतो वैश्वानरसमद्युतिः॥१६०॥
विष्णुर्विरिञ्चिर्विश्वेशो विश्वकर्ता विशाम्पतिः।
विराडाधारचक्रस्थो विश्वभुग्विश्वभावनः॥१६१॥
विश्वव्यापारहेतुश्च वक्रक्रूरविवर्जितः।
विश्वोद्भवो विश्वकर्मा विश्वसृष्टि विनायकः॥१६२॥
विश्वोमूलनिवासी च विश्वचित्रविधायकः।
विश्वधारविलासी च व्यासेन कृतपूजितः॥१६३॥
विभीषणेष्टवरदो वाञ्चितार्थप्रदायकः।
विभीषणसमाराध्यो विशेषसुखदायकः॥१६४॥
विषमव्ययाष्ट जन्मस्थोप्येकादशफलप्रदः।
वासवात्मजसुप्रीतो वसुदो वासवार्ञ्चितः॥१६५॥
विश्वत्राणैकनिरतो वाङ्भनोतीविग्रहः।
विराणमन्दिरमूलस्थो वलीमुखसुखप्रदः॥१६६॥
विपाशो विगतातङ्को विकल्पपरिवर्जितः।
वरिष्ठो वरदो वन्द्यो विचित्राङ्गो विरोचनः॥१६७॥
शुष्कोदरः शुक्लवपुः शान्तरूपी शनैश्वर।
शूली शरण्यः शान्तश्च शिवायामप्रियङ्करः॥१६८॥
शिवभक्तिमतां श्रेष्ठः शूलपाणेश्शुचिप्रियः।
श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञः श्रुतिजालप्रबोधकः॥१६९॥
श्रुतिपारग संपूज्यः श्रुतिश्रवणलोलुपः।
श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञः श्रुत्येष्ठवरदायकः॥१७०॥
श्रुतिरूपः श्रुतिप्रीतः श्रुतीस्प्सितफलप्रदः।

श्रुचिश्रुतः शान्तमूर्तिः श्रुतिः श्रवणकीर्तनः॥१७१॥
शमीमूलनिवासी च शमीकृतफलप्रदः।
शमीकृतमहाघोरः शरणागतवत्सलः॥१७२॥
शमीतरुस्वरूपश्च शिवमन्त्रज्ञमुक्तिदः।
शिवागभैकनिलयः शिवमन्त्रजपप्रियः॥१७३॥
शमीपत्रप्रियश्चैव शमीपर्णसमर्चितः।
शतोपनिषदस्तुत्यो शान्त्यादिगुणभूषितः॥१७४॥
शान्त्यादिषड्गुणोपेतः शंखवाद्यप्रियस्तथा।
श्यामरक्तसितज्योतिः शुद्धपञ्चाक्षरप्रियः॥१७५॥
श्रीहालास्यक्षेत्रवासी श्रीमान् शक्तिधरस्तथा।
षोडशद्वयसंपूर्णलक्षणः षण्मुखप्रियः॥१७६॥
षड्गुणैश्वर्यसंयुक्तः षडङ्गावरणोज्वलः।
षडक्षरस्वरूपश्च षट्चक्रोपरि संस्थितः॥१७७॥
षोडशी षोडशान्तश्च षट्छक्तिव्यक्तमूर्तिमान्।
षड्भावरहितश्चैव षड्ङ्गश्रुतिपारगः॥१७८॥
षट्कोणमध्यनिलयः षट्छास्त्रस्मृतिपारगः।
स्वर्णेन्द्रनीलमकुटः सर्वाभीष्टप्रदायकः॥१७९॥
सर्वात्मा सर्वदोषघ्नः सर्वगर्वप्रभञ्जनः।
समस्तलोकाभयदः सर्वदोषाङ्गनाशकः॥१८०॥
समस्तभक्तसुखदः सर्वदोषनिवर्तकः।
सर्वनाशक्षमस्सौम्यः सर्वक्लेशनिवारकः॥१८१॥
सर्वात्मा सर्वदा तुष्टः सर्वपीडानिवारकः।
सर्वरूपी सर्वकर्मा सर्वज्ञः सर्वकारकः॥१८२॥
सुकृती सुलभश्चैव सर्वाभीष्टफलप्रदः।

सूरात्मजस्सदातुष्टः सूर्यवंशप्रदीपनः ।।१८३।।
सप्तद्वीपाधिपश्चैव सुरासुरभयङ्करः ।
सर्वसंक्षोभहार च सर्वलोकहितङ्करः ।।१८४।।
सर्वौदार्यस्वभावश्च सन्तोषात्सकलेष्टदः ।
समस्तऋषिभिस्स्तुत्यः समस्तगणपावृतः ।।१८५।।
समस्तगणसंसेव्यः सर्वारिष्टविनाशनः ।
सर्वसौख्यप्रदाता च सर्वव्याकुलनाशनः ।।१८६।।
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वारिष्ट फलप्रदः ।
सर्वव्याधिप्रशमनः सर्वमृत्युनिवारकः ।।१८७।।
सर्वानुकूलकारी च सौन्दर्यमृदुभाषितः ।
सौराष्ट्रदेशोद्भवश्च स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदः ।।१८८।।
सोमयाजि समाराध्यः साताभीष्ट वरप्रदः ।
सुखासनोपविष्टश्च सद्यःपीडानिवारकः ।।१८९।।
सौदामनीसन्निभश्च सर्वानुल्लङ्घ्यशासनः ।
सूर्यमण्डलसञ्चारी संहारास्त्रनियोजितः ।।१९०।।
सर्वलोकक्षयकरः सर्वारिष्टविधायकः ।
सर्वव्याकुलकारी च सहस्त्रजपसुप्रियः ।।१९१।।
सुखासनो पविष्टश्च संहारास्त्रप्रदर्शितः ।
सर्वालङ्कारः संयुकतकृशणगोदानसुप्रियः ।।१९२।।
सुप्रसन्नस्सुरश्रेष्ठः सुघोषः सुखदस्सुहृत् ।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सर्वज्ञस्सर्वदस्सुखी ।।१९३।।
सुग्रवीस्सुधृतिस्सारस्सुकुमारस्सुलोचन ।
सुव्यक्तस्सच्चिदानन्दः सुवीरस्सुजानाश्रयः ।।१९४।।
हरिश्चन्द्रसमाराध्यो हेयेपादेयवर्जितः ।

हरिश्चन्द्रेष्टवरदो हंसमन्त्रादि संस्तुतः ।।१९५।।
हंसवाह समाराध्यो हंसवाहवरप्रदः ।
हृद्यो हृष्टो हरिसखो हंसो हंसगतिर्हविः ।।१९६।।
हिरण्यवर्णोहितकृद्धर्षदो हेमभूषणः ।
हविर्होता हंसगतिर्हंसमन्त्रादिसंस्तुतः ।।१९७।।
हनुमदर्चितपदो हलधृत् पूजितस्सदा ।
क्षेमदः क्षेमकृत्यक्षेम्यः क्षेत्रज्ञः क्षामवर्जितः ।।१९८।।
क्षुद्रघ्नः क्षान्तिदः क्षेमः क्षितिभूषः क्षमाश्रयः ।
क्षमाधरः क्षयद्वारो नाम्नामष्टसहस्त्रकम् ।।१९९।।
वाक्येनैकेन वक्ष्यामि वाञ्चितार्थं प्रयच्छति ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नियमेन जपेत्सुधीः ।।२००।।

।।श्रीशनैश्चरसहस्त्रनामस्तोत्रंसम्पूर्णम्।।

तू ही माता पिता मेरा बहन तू भैया है।
मैं सुदामा हूँ तेरा, तू मेरा कन्हैया है।।
तू ही भगतों की लाज का शनि रखैया है।
तू ही गरीबों के भण्डार का भरैया है।।
बड़े-बड़े पापयों के पाप का छुड़ैया है।
'मनु'' मन रात दिन लेता तेरी बलैया है।।

तुम्हीं विश्व रूप मैंने देव जी ये पाया है।
तुम्हीं में कृष्ण शिव सूर्य समाया है।
सभी दुष्टों को तुमने काल बन डराया है।
'मनु' भक्तों की तुमने लाज को बचाया है।।

शनि पूजनम्

आवाहनम्– **ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात।**
सभूमिर्ठ सर्वतस्पृत्वात्यत्ष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
सौरि! त्वं समागच्छ मम कल्याणकारक।
पूजां गृहाणमेदेवः पात्रेऽस्मिन् सुस्थिरोभवः।।

हे मेरे कल्याणकारक शनिदेव महाराज! आप यहाँ आकर इस चित्र प्रतिमा या यंत्र में स्थित हों और हमारी पूजा स्वीकार करें।

आसनम्– **ॐ पुरुष एवेदंठ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्।**
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहतिः।।
रम्यैकुसुमैर्दिव्यैरासनं ते विनिर्मितम्।
उपवेशय मन्द! त्वं सफलं पूजनं कुरु।।

अति सुंदर अलौकिक पुष्पों से बनाया गया आसन आपके बैठने के लिए दे रहा हूँ, कृपया पूजन सफल करें।

ध्यानम्– **सौराष्ट्रजातमष्टम्यां पौष्णभं धनुराकृतिम्।**
सूर्यपुत्रं चतुर्वाहुं कृष्णाङ्गं तं शनिं नुमः।।

सौराष्ट्र में अष्टमी तिथि, पुष्य नक्षत्र धनु के समान आकृति युक्त जन्म लिये हुए, कृष्ण वर्ण, चार भुजा धारी हे सूर्यपुत्र शनि आपको नमस्कार है।

पाद्यम्– **एताव्वानस्य महिमातो, ज्यायांश्च पुरुषः पादोऽस्य**
विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि।
रम्यं श्रमहरं वारि गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
पाद्यं तुभ्यं प्रयच्छामि गृहाण रविनन्दन।।

चंदन, पुष्प, अक्षतों से मिले हुए, थकावटों को दूरन करने वाला सुंदर

जल आपके पाद्य के लिये अर्पित है। हे रविनन्दन, इसे ग्रहण करें।

अर्घ्यम्– **त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः।**
ततो विष्वंव्यक्रामत्साशनानशने‌ऽभिः।।
तिलसर्सप दूर्वाभिः गन्धपुष्पाक्षतैश्च यत्।
शीतलं शोभनमर्घ्यं ते अर्पयामि यमाग्रज।।

पुष्प, चंदन, अक्षत, तिल, सरसों और दूर्वा मिला हुआ अतिशीतल और सुंदर जल आपके अर्घ्य के लिए अर्पित कर रहा हूँ। हे यमाग्रज स्वीकार करें।

मधुपर्कम्– **मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः माध्वीर्णः**
संतोषधीः मधुनक्त मुतोषसो।
मधुपर्कं मयानीतं सितघृतमधुनिर्मितम्।
गृहाणग्रहनाथत्वं सफलंकुरुमे सदा।।

दही, घृत, मधु से युक्त मधुपर्क मैं लाया हूँ। हे ग्रह नाथ, कृपया स्वीकार कर मेरे मनोरथ सफल करें।

पयस्नानम्– **ॐ पयः पृथिव्यां पया ओषधीषु**
पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मयम्।
इत्यनेन पयः स्नानम्।
पयः सुशोभनं दिव्यं गोसम्भूतं च निर्मलम्।
स्नानार्थं ते प्रयच्छामि सफलं कुरु मे सदा।।

सुंदर, शीतल, आलौकिक गाय का दूध आपके स्नान के लिए समर्पित है। कृपया स्वीकार करें।

दधिस्नानम्– **ॐ दधिक्राव्णोऽकारिषञ्जिणोरश्वस्य व्वाजिनः।**
सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयु षितारिपत।

इति दधिस्नानम्॥

शीतलं स्वादु मधुराम्लं दधि नवनीत निर्मितम्।
मयानीतं तवार्थंहि स्नानं कुरु शनैश्चर॥

मक्खन से युक्त मधुर, शीतल दही आपके स्नान के लिए लाया हूँ। हे शनिश्चर महाराज! कृपया इससे स्नान करें।

घृतस्नानम्– घृतं घृत पावानः पिवतवसांपावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशः आदिशः उदिशः विदिशः दिग्भ्य स्वाहा॥ घृतं स्निग्धं सुधारूपं तुष्टिपुष्टिकरं प्रभो। स्नानीयंते मयानीतं गृहाणकुरु मंगलम्॥

अमृत रूप, पुष्टि और संतोषकारक, कोमल घृत आपके स्नान के लिये लाया हूँ। स्वीकार कर मंगल प्रदान करें।

मधुस्नानम्– मधु व्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माघ्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवां रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः माध्वीर्गांवो भवन्तु नः। मधुमाक्षिकसम्भूतं मधुरंपुष्टिवर्धनम्। स्नानार्थं ते मयादत्तमङ्गीकुरुमुदान्वित॥

मधुमक्खियों से उत्पन्न मीठा, पुष्टिवर्धक मधु स्नान के लिए अर्पित है। कृपया स्वीकार करें।

शर्करास्नानम्– ॐ अपा रसमुद्वस्यस सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युतममुपयाम गृहीतोसिन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्ये एषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।

इक्षुरससमुद्रभूता शर्करा मधुराप्रिया।
ग्रहनाथ प्रसन्नार्थं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गन्ने के रस से बनी हुई मीठी और प्रिय शक्कर आपकी प्रसन्नता के लिए उपस्थित है। कृपया स्नान के लिए स्वीकार करें।

पंचामृतस्नानम्– ॐ पंच्चनद्यः सरस्वती मपयंति सस्त्रोतसः सरस्वती तु पंचधासो देशे भवत् सरित्। पयोदधिघृतंगव्यं माक्षिकं शर्करानिव्तं। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृहताम्॥

दूध, दही, घृत, मधु और शक्कर से बना पंचामृत सेवार्पित है। कृपया स्नान करें।

शुद्धोदकस्नानम्– ॐ शुद्ध बालः सर्व शुद्धबालो मणिबालस्त आश्विनः। श्येत श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभौ रूपापार्जन्याः।
शुद्धोदकं शीतलं च निर्मलं गंध संयुतम्।
गंगादि सर्वतीर्थेभ्यो स्नानीयं ते समर्पितम्॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः– 5 बार उच्चारण करें।

शीतल, स्वच्छ, चंदनयुक्त गंगा और तीर्थों का जल शुद्धोदक स्नान के लिए समर्पित है।

गन्धोदकस्नानम्– श्रीखण्ड केसरयुतं रम्यं वारिसशीतलम्। गन्धोदकं मयानीतं गृहाणग्रहनायक॥

हे ग्रह नायक, श्रीखण्ड चंदन, केसर युक्त स्वच्छ, शीतल, गन्धोदक मैं लाया हूँ। कृपया ग्रहण करें।

आचमनीयम्– ॐ आचम्यतां मयानीतं सुस्वादु निर्मलं जलम्।

पिंगलायनमस्तुभ्यं गृहाणाचमनीयकम्॥
हे पिंगल! स्वादिष्ट, निर्मल, शीतल जल आपके आचमन के लिए उपस्थित है, ग्रहण करें।

वस्त्रम्– **युवासुवासा परिवीत आगात्, सउश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीराशः कवयउन्वन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥**
क्षेमपट्ट विनिर्मीतं स्निग्धंचारु सुकोमलम्। वस्त्रं ददामि ते कृष्ण गृहाण मुदयान्वित॥
हे कृष्ण! रेशम निर्मित स्निग्ध, सुंदर कोमल वस्त्र दे रहा हूँ। प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करें।

ततः आचमनीयम्– फिर अनुष्ठान कर्ता शनिदेव को आचमनीय समर्पित करें।

यज्ञोपवीतम्– **ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवःसुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।**
यज्ञोपवीतम् शुद्धं पवित्रं परमं शुभम्। अर्पयामि प्रभो गृह्य सफलं कुरु मनोरथम्॥
हे प्रभो, शुद्ध पवित्र, सुंदर, यज्ञोपवीत अर्पित कर रहा हूँ। स्वीकार कर हमारा मनोरथ सफल करें।

ततः आचमनीयम्– फिर अनुष्ठानकर्ता शनिदेव को आचमनीय समर्पित करें।

गंधम्– **गन्ध द्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टाङ्करींषिणीम् ईश्वरीं सर्वभूतानां तमिहोपह्वये श्रियम्।**
मलयाचल संभूतं श्रीखण्डं गंधसंयुतम्।

मयोपपादितं तुभ्यं लेपनं स्वीकुरुप्रभो॥
हे प्रभो, मलयागिरी सुगंधित श्रीखण्ड चंदन मैंने आपके लिए तैयार किया है, कृपया स्वीकार करें।

कुंकुमम्– **कुंकुमं कोमलं रक्तं कांतिदं परमं शुभम्। कामनापूर्तिदं देव गृहाणसुमनोहरम्॥**
हे देव! अति मनोहर, कान्तिवर्धक, सुंदर, कोमल, कामना पूर्ति करने वाला लाल कुंकुम समर्पित है।

इत्रम्– **नाना पुष्प समुद्भूतं नाना गन्धसुसंयुक्तम्। मनः प्रह्लादकमित्रं ददामि प्रतिगृह्यताम्॥**
अनेक पुष्पों के रस से बनाया हुआ, अनेक गंधों से युक्त मन को आनन्दित करने वाला इत्र दे रहा हूँ, स्वीकार करें।

अक्षत– **ॐ अक्षन्नमी मदन्त्यस्यवप्रिया अधोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योयान्विन्दते हरिः॥**
अखण्डं तंडुलं देव अक्षतं परिकल्पितम्। अरिष्टं शमनार्थं ते ददामि प्रतिगृह्यताम्॥
अखण्डित चावलों का अक्षत उपस्थित है। कृपया स्वीकार करें।

पुष्पम्– **ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवरी प्रशूवरी अश्वाइव सजित्वरी विरुधः पार इष्णवः।**
मालती चम्पकाब्जादि पाटलावकुलादिभिः। पुष्पैर्मयार्चितोदेव प्रसन्नोभव सर्वदा॥
हे प्रभु! मालती, चंपा, कमल, पाटल, वकुल आदि पुष्पों के द्वारा मैं अर्चन कर रहा हूँ। आप सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

माला– **नानापुष्पविचित्रैश्चमाल्यंमूर्धनिशोभनम् । सुगंधितंपरंरम्यंगृह्यतां सुमनोहरम्॥**

अनेक रंग-बिरंगे पुष्पों से निर्मित सिर पर सुशोभित होने वाली सुगंधित पुष्पमाला को ग्रहण करें।

दूर्वाम्– **ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्तिपरुष परुषस्परि**
एवानो दूर्वेप्रतनु सहस्रेनशतेन च।
तुष्टिपुष्टिकरादूर्वा हरिताकोमलाशुभा।
मनः प्रह्लादकरीरम्या अर्पिता मे प्रगृह्यताम्॥

मन को आनंद देने वाली, सुंदर हरे रंग की कोमल संतुष्टि और पुष्टि प्रदान करने वाली दूर्वा समर्पित है। कृपया स्वीकार करें।

बिल्वपत्रम्– **ॐ नमोः विल्मिने च कवचिने च, नमोः व्वर्म्मिणे च व्वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चहनन्याय च नमो धृष्णवे॥**
श्रीवृक्षोद्भवं पत्रं श्री शंकर सदाप्रियम्।
त्रिनेत्र रूप पत्रं ते अर्पयामिमुदाप्रभो॥

श्री वृक्ष के त्रिनेत्र रूप बिल्वपत्र शंकर को सदा प्रिय लगने वाले समर्पित हैं।

धूपम्– **ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढयो गन्धउत्तमः।**
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥
वनस्पति रसोदभूतमुत्तमं गन्धसंयुतम्।
धूपं मया समानीतं गृहाण रविनंदनः॥

हे रविनंदन! अनेक वनस्पतियों के रस से तैयार किया हुआ उत्तम सुगंधित धूप मैं लाया हूँ। कृपया, स्वीकार करें।

दीपम्– **ॐ साज्यं च वर्त्ति संयुक्तं वह्निनां योजितं मया।**
दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्य तिमिरापह।

घृतवर्ति समायुक्तं दीपं प्रज्वलितं मया॥
अंधकार विनाशार्थं गृहाण परमेश्वरः॥

हे प्रभो! घी और बत्तियों से प्रज्वलित दीपक अंधकार को दूर करने के लिए स्वीकार करें। (दीप दिखाने के बाद हाथ धो लें।)

नैवेद्यम्– **ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्य नमीवश्य शुष्मिणः।**
प्रप्रदातारंतारिषऽउर्ज्जन्नोधेहि द्विपदेचतुष्पदे॥
षडरस स्वादुसंयुक्तं नवनीत सुदामयम्।
नैवेद्यमर्पितं तुम्यं गृहाण परमेश्वरः।

हे परमेश्वर, अमृत रूप, मक्खन से युक्त, षडरस नैवेद्य अर्पित है। कृपया ग्रहण करें।

आचमनम्– **शीतलं शान्तिदं शुभ्रं निर्मलं सुमनोहरम्।**
पानीयं ते मयादत्तमाचमनीयं प्रगृह्यताम्॥

शीतल, स्वच्छ, शान्ति प्रदाय आचमनीय जल स्वीकार करें।

ताम्बूलम्– **ॐ यत्पुरुषेण हविषादेवा यज्ञमतन्वत।**
व्वसन्तोस्याशीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
ताम्बूलंगृह्यतां देव लवंगैलासमन्वितम्।
मुखवासार्थं द्रव्योऽयं सदा तुष्टि प्रदायकः॥

हे प्रभो! लौंग व इलायची से सुगंधित तांबूल मुख-शुद्धि के लिए संतोषजनक द्रव्य उपस्थित है। स्वीकार करें।

फलम्– **ॐ याः फलि निर्या अफलाः अपुष्पा याश्च पुष्पिणी बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुंच तृ हस।**
फलान्यमृतकल्पानिरसानि मधुराणि च।
कर्म साफल्यप्राप्तयर्थं गृहाण सूर्यपुत्रक॥

हे सूर्यपुत्र, मधुर, रसयुक्त अमृत के समान सुंदर फल सेवार्पित है।

कृपया कर्मसाफल्यता प्रदान करें।

दक्षिणाम्– हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
दक्षिणायज्ञपत्निस्तुष्टासा फलदायिनी।
तस्माद्धिरण्य रूपां हि दक्षिणां प्रतिगृह्यताम्॥

यज्ञपत्नी दक्षिणा से संतुष्ट होने पर फल देने वाली है। अतः स्वर्ण रूप यह दक्षिणा स्वीकार करें।

आरार्तिक्यम्– ॐ इंदृ हवि प्रजननं मे अस्तु दशवीरं सर्वगणं स्वस्तये आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽस्मासुधत्त।
कर्पूरेण समायुक्तं वार्तिकं ज्वलितं प्रभो।
आरार्तिक्यं ते मयानीतं गृहाण परमेश्वरः॥

हे परमेश्वर! कर्पूर और बत्तियों से युक्त प्रज्वलित आरती को ग्रहण करें।

पुष्पांजलि– ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

प्रदक्षिणाम्– ॐ सप्तान्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः देवाः यज्ञन्तन्वाना। अबध्नन् परुषं पशु॥
यानि यानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

मंत्रपुष्पांजलि– श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हृदिप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ शनैश्चर देवताभ्यो नमो नमः॥

नमस्कार– सर्वसौख्य प्रदातारं दुष्टदर्पविमर्दकम्।
भक्तार्तिनाशनं देवं शं शनिं प्रणमाम्यहम्।
प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि॥

चरणामृत पान– अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
शनैश्चर पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

चरणामृत को पात्र में लेकर ग्रहण करें। सिर पर भी चढ़ा लें।

आरती (नीराजन)– आरती शनि बलकारी की कीजै......

क्षमा याचना– मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीन रविनन्दनः।
यत्पूजितं तव देव! परिपूर्णं तदस्तु मे॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व शनैश्चर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्यभावेन रक्ष मां शनैश्चर॥

हे देव जिस प्रकार भौंरा गुंजार करता हुआ पुष्प के रस का आस्वादन करता रहता है, उसी प्रकार मैं भी भौंरे के समान गुंजार करता हुआ (ॐ शं शनैश्चराय नमः) आपकी रसमयी भक्ति का आस्वादन ले पाऊँ, हे दाता यही वरदान चाहता हूँ।

मानस पूजा

(1)

1. ॐ पादयोः पाद्यं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

इस मंत्र को बोलकर शुद्ध जल से शनि भगवान के चरण कमलों को धोकर अपने मस्तक पर धारण करें।

2. ॐ अर्घ्यो समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

भगवान के हस्त कमलों पर पवित्र जल छोड़ें।

3. ॐ आचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

इस मंत्र से शनि भगवान को आचमन करायें।

4. ॐ गन्धं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

शनि भगवान के ललाट पर रोली लगायें।

5. ॐ मुक्ताफलं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

शनि भगवान के ललाट पर मोती लगायें।

6. ॐ पुष्पं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

मस्तक नासिका के सामने आकाश पर पुष्प छोड़ें।

7. ॐ मालां समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

पुष्पों की माला शनि के गले में पहनायें।

8. ॐ धूपमाघ्रापयामि शनैश्चराय नमः।

भगवान के सामने अग्नि में धूप छोड़ें।

9. ॐ दीपं दर्शयामि शनैश्चराय नमः।

तेल का दीपक जलाकर सामने रखें।

10. ॐ नैवेद्यं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

भगवान को भोग लगायें।

11. ॐ आचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

12. ॐ ऋतुफलं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

केले आदि का भोग लगायें।

13. ॐ पुनराचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

शनि भगवान को फिर आचमन करायें।

14. ॐ पूंगीफलं सताम्बूलं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

सुपारी सहित नागर पान भगवान को अर्पण करें।

15. ॐ पुराचमनीयं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

आचमन कराकर फिर स्वर्ण थाल में कपूर प्रदीप्त कर शनि आरती करें।

16. ॐ पुष्पांजलिं समर्पयामि शनैश्चराय नमः।

पुष्प अंजलि में लेकर मस्तक पर छोड़ें। सात प्रदक्षिणा करें व दण्डवत प्रणाम करें। भगवान को मन ही मन चँवर ढुलावें व स्तुति करें।

(2)

1. ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनिदेव! मैं पृथ्वीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।

2. ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।

3. ॐ यं वायवात्मकं धूपं परिकल्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनि! मैं वायुदेव के रूप में आपको धूप प्रदान करता हूँ।

4. ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं दर्शयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनिदेव! मैं अग्निदेव के रूप में दीपक प्रदान करता हूँ।

5. ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

प्रभो! मैं अमृत के समान आपको नैवेद्य निवेदन करता हूँ।

6. ॐ शं शक्ति तत्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। श्री शनैश्चराय नमः।

हे शनिदेव! मैं पान रूप में शक्ति तत्व आपको निवेदन करता हूँ।

क्रमानुसार वैदिक शनि साधना

1. साधना पथ में दृढ़ विश्वास के साथ स्थिरचित्त होकर साधक आगे बढ़े। श्री शनि मूर्ति को उत्तम स्थान (पूजा गृह) में स्थापित कर यथा नियम भक्तिपूर्वक गंध-पुष्पादि द्वारा नाना उपचार (षोडशोपचार) अभीष्ट कामना या साधनानुसार (स्तोत्र या अष्टोत्तरशत नाम, सहस्त्रनाम व बीज मंत्र जप) करें। आरम्भ में दैहिक क्लेश, संताप, मानसिक चांचल्य उत्पन्न होगा। वैषयिक (घरेलू चिंता) आदि उत्पात होंगे, इनसे न घबराकर नियम की रक्षा करें। श्री शनिदेव का मन ही मन जप करते हुए मूर्ति चिंतन एकाग्रता के साथ करते जाएं, उन्हें अपना शरण्य माने। चरण से लेकर शीश तक, फिर शीश से लेकर चरण तक ध्यान करें। निरंतर अभ्यास करें, कुछ काल अभ्यास के बाद इसमें परिपक्वता आ जाएगी।

2. इसके बाद शनि के पूर्णांग स्वरूप का चिंतन करें। सर्वावस्था में जप ध्यान करें, दृढ़ता आने पर नाद अभिव्यक्ति होगी, उसकी ओर उन्मुख हों, एकाग्रता के साथ दाहिने कान से उसका श्रवण करें (शंख, घंटा, वंशीरव, काँसर के बजने का शब्द तथा दिन-रात्रि में एक-दो बार पटाखा फटने का शब्द सुने)। श्री शनिदेव का पूर्णांग स्वरूप मानस पटल पर स्थायीभाव से रखें। आँसू, शारीरिक अंगों में कम्पन, देह पुलकित होना, हल्का महसूस होना व मन में आनन्द प्राप्त होना।

3. अब जप करते-करते श्री शनिदेव महाराज के पूर्णांग चिंतन को प्रश्रय देकर देह उन्हें ही समर्पित करें। देह को उनकी इच्छा मात्र से चलायें। अंतर में सर्वदा शनि दर्शन करें, इससे नेगेटिव शक्ति सर्वदा के लिए लुप्त हो जायेगी। काम, क्रोध, लोभ, मोह, भीषणता से

घटेंगे। मन शांत होकर प्रसन्नता लाभ करेगा, सांसारिक भावों का उदय कम होगा, श्री शनि पर श्रद्धा विश्वास दृढ़ होगा। सिद्धियाँ सहजता से प्राप्त होंगी, फिर शनिदेव की चिन्मयता-दिव्यता आपके अंदर प्रकट हो जायेगी। सकल देह, मन, बुद्धि उनके अनुरूप चलने लगेंगे। चित्त का उनसे तादातम्य लाभ होगा। अभेद खत्म होगा। एकत्व स्थापित होगा। अपने समस्त दायित्व शनि में न्यस्त करके फिर निरपेक्ष भाव से विचरण होगा। यह शनि की दुर्लभ भक्ति है।

इतनी उन्नति पाकर ध्यान करते हुए अखण्डता से जप करते जाएं। अभिमान चला जाएगा। फिर शनिदेव महाराज आपके द्वारा अनेक अलौकिक कार्य सम्पन्न करायेंगे। (परंतु सावधान अपना अभिमान लगाने से सब गल जाएगा और उसकी कृपा समझने से बढ़ता जाएगा।)

4. इसके बाद भजन उन्हीं की शक्ति द्वारा सम्पन्न होगा। फिर साधन संस्कार बाकी नहीं रहेगा। चित्त में भाव प्रकाश होगा। अखण्ड जप व ध्यान के बाद साधक के चित्त में इष्ट शनि स्वरूप की अभिव्यक्ति होगी।

नमन् नमन् नमन् नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
हे कलि देवा करूँ नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
हे प्रणेता तुम्हें नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
मैं प्रणामी करूँ नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
प्रणतपाल प्रण प्रणत त्वं, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
स्वीकारो शनि मेरा नमन्, नमन् नमन् प्रण्य नमन्
करूँ नमन प्रण्य नमन्, नमन् नमन् शनिदेव नमन्

विशिष्ट शक्ति शनि साधना

ॐ शं शनैश्चराय नमः

ॐ शं सौरये नमः

प्रातः, सायं, रात्रि में सबके सो जाने पर एकान्त में बैठो। स्थान या तो बस्ती से बाहर नदी तटया शिवाला या अपने ही मकान में स्थित पूजा गृह हो, उसमें पूजा सामान के अतिरिक्त कुछ न हो। अगरबत्ती की खुशबू फैली हो, दरवाजा बंद हो। आसन पर बैठकर आधे घंटे से एक घंटे तक ऐसा ध्यान बाँधो कि उपरोक्त मंत्र तुम्हारे हृदय में सुनहले प्रकाश से लिखा हुआ है, जी चाहे तो मन ही मन उसका उच्चारण भी करते जाओ, अगर ना चाहो तो खाली उसे ही देखते रहो। दृष्टि लक्ष्य को न छोड़ने पावे, मन उसे छोड़ के बाहर विचरने ना जाने पावे। ऐसा लगातार त्रिकाल करते जाओ, एक माह पश्चात् जान पड़ेगा मंत्र के अक्षर मिटते जा रहे हैं। एक दिव्य प्रकाश आ रहा है, जिसे मंत्र चैतन्य कहते हैं। मन्त्राक्षर बिल्कुल लोप हो जायेंगे। हृदय आनन्दमय तेज से भर जाएगा। तेज के अन्दर एक मूर्ति झलक पड़ेगी, जो स्वयं शनि भगवान हैं। करते-करते दृश्य साफ होता जाएगा। वह तुम्हारे सम्मुख होंगे, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देंगे। सहायता माँगने पर तुम्हें सहायता देंगे। अनुष्ठान पूरा हुआ, मंत्र पूरा हुआ, अभीष्ट मिल गया। यह ध्यान व उपासना की क्रिया है। जो बड़ी जल्द सफलता प्रदान करती है और शनिदेव पीड़ा हर कर कृपा प्रदान करते हैं, साधक को शक्तिपात कराते हैं। इसमें भय नहीं रहता। आवेश इसमें भी कभी-कभी आ जाता है। मगर यह पागल नहीं करता। उल्टे मनोवांछित फल प्रदान करता है।

शनि-तीर्थ कोकिला वन की महिमा

कोकिला वन वह परम पावन स्थान है, जहाँ शनिदेव को भी कृष्ण कृपा प्राप्त हुई थी। जैसा कि सब जानते हैं, शनिदेव भगवान कृष्ण के परम-भक्त हैं और कृष्णानन्द में मग्न रहने के कारण ही इन्हें अपनी पत्नी के शाप का भाजन बनना पड़ा था और इनकी आँखें सदा के लिए अधोदृष्ट हो गईं । पत्नी ने समझा कि शनिदेव जानबूझ कर मेरी सुंदरता की उपेक्षा कर मेरी ओर नहीं देख रहे हैं। अतः उसने उन्हें सदा नीची दृष्टि रखने के साथ यह भी शाप दे डाला कि जिसे वे देखेंगे, वह शिरश्च्छेद हो जायेगा।

पत्नी के शाप की वजह से वह अपने प्रियजनों को भी देखने में अमसर्थ हो गये। अतः भगवान कृष्ण के अवतार लेने पर सभी देवता तो उनकी लीलाओं को देखने का आनंद लेने लगे, परंतु शनिदेव उससे वंचित होने की वजह से बड़े दुःखी हो गये थे। कहते हैं, इसी कोकिला वन में शनिदेव की ईष्टदर्शन की मनोकामना भगवान कृष्ण की कृपा से पूरी हुई थी।

यही वजह है कि आज भी लोग पूर्णमनोरथ होने के लिए कोकिला वन की यात्रा करते हैं, जहाँ शनिदेव की सिद्ध प्रतिमा स्थापित है और इस स्थान की बहुत महिमा है। हजारों लोग इस प्रतिमा के दर्शन कर शनिदेव पर तेल चढ़ाते हैं, दीपक जलाते हैं और शनिदेव का स्मरण करते हुए कोकिला वन की परिक्रमा करते हैं। इस पर शनि महाराज प्रसन्न होकर जातकों को पीड़ा से मुक्ति प्रदान करते हैं। इस वन में शनिदेव की प्रतिमा स्थापित होने के पीछे यह कथा है कि द्वापरयुग की समाप्ति काल से बैठे हुए हैं।

कथा है कि शनिदेव जो कि कृष्ण भगवान के अनन्य उपासक हैं, एक बार द्वापर में भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का आनंद लेने के लिए ब्रजधाम में मानव रूप धारण कर पधारे। नन्द गाँव में उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा था। शनिदेव भी वहाँ उपस्थित थे। माता यशोदा को यह बात किसी देवता ने बता दी कि शनिदेव तेरे पुत्र के दर्शन के लिए महल में आ गये हैं। उस देवता ने यशोदा जी को शनिदेव की पहचान यही बताई कि उनका रंग श्याम और नेत्र विशाल हैं। वे शुष्कोदर हैं तथा सदैव नीची दृष्टि किये रहते हैं। उन लक्षणों के आधार पर माता यशोदा ने उन्हें पहचान लिया और विनती की कि आप महल से बाहर रहकर ही श्रीकृष्ण की बाल- लीलाओं का आनंद लें, क्योंकि ब्रजवासी आपको देखकर डर जाएंगे।

माँ यशोदा की विनती सुन शनिदेव तत्काल महल से बाहर जाकर रूदन करते हुए अपने आराध्य देव कृष्ण से मन ही मन प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु! आपकी लीलाओं का आनंद लेने के लिए ऋषि मण्डल, देव मण्डल, सभी लता-पुष्प आदि के रूप में प्रकट हो गये हैं। वे सब गोप-गोपियाँ बनकर आपकी लीलाओं का आनंद ले रहे हैं। किंतु मुझे अकारण ही इस लाभ से वंचित होना पड़ रहा है। आपको तो यह भली-भांति मालूम है कि मैं अपनी ओर से किसी को कोई कष्ट नहीं देता। सभी अपने कर्मों का ही फल भोगते हैं। किंतु जीवों के निज कृत कर्मों का फल भोगवाने की वजह से मेरे माथे पर ऐसा कलंक लग गया है कि लोग मुझे देखना भी पसंद नहीं करते। उसी का फल है कि आज माता यशोदा ने मुझे महल से बाहर निकल जाने का आदेश दे दिया। के करुणानिधान! मैं आपकी आज्ञा से ही जीवों को उनके

कर्मानुसार भयानक दंड देता हूँ। लेकिन ये लोग अपने आपको बुरा न कहकर, उल्टे मुझे ही बुरा कहते हैं। मेरा क्या होगा, प्रभु मुझ पर कृपा करें। मैं आपका आज्ञाकारी पुत्र हूँ, मुझ पर दया करें।

ऐसी विनती करते हुए शनिदेव करुण-क्रंदन करने लगे। उनके करुण-क्रंदन को सुन कृष्ण भगवान प्रकट हुए और बोले- शनिदेव, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मेरी आज्ञा के अनुसार कोकिला वन में निवास करो। वहीं रहकर तुम मेरी सभी लीलाओं का आनन्द उठाओ। मैं स्वयं तुम्हें आनन्दित करने कोकिला वन आऊँगा। वहीं पर तुम्हें मेरी आह्लादिनी शक्ति श्री राधिका जी के साक्षात दर्शन होंगे। कलियुग आने पर लोग उस कोकिला वन की परिक्रमा व पूजा करेंगे और मेरी कृपा से वे शनि ग्रह पीड़ा से मुक्त हो जायेंगे।

तभी से कोकिला वन में सैकड़ों किलोमीटर से लोग शनि दर्शन के लिए आते हैं और सिद्ध मनोरथ हो अपने घर वापस लौटते हैं।

वहाँ शनिदेव के बीज मंत्र 'ॐ शं शनैश्चराय नम:' का पाठ करते हुए 24 परिक्रमा करनी चाहिए। फिर शनि की प्रतिमा पर श्रद्धापूर्वक तेल व फल-फूल आदि चढ़ाना चाहिए। वहाँ छाया-पात्र का दान भी अवश्य करना चाहिए। साथ ही, काले कपड़े में काले तिल व उड़द बाँधकर डकौत को दान देना चाहिए। सवा पाँच किलो चने शुक्रवार को भिगोयें व शनिवार को तेल, नमक, मिर्च का छौंक लगाकर लोगों में हलवा मिलाकर बाँट देने से भी शनिदेव प्रसन्न होते हैं व कष्टों से मुक्ति दिलाते हैं।

शनि शिंगणापुर

महाराष्ट्र में शनिदेव के अनेक मंदिर व सिद्ध स्थान हैं, जहाँ जाकर लोग शनि की कृपा से विविध विघ्न बाधाओं से छुटकारा पाते हैं। लेकिन शिंगणापुर का सिद्ध शनि पीठ सबसे अद्‌भुत व चमत्कारी है। वहाँ शनिदेव की स्वयंभू शिला प्रतिष्ठित है, जिसके दर्शनों व पूजा अर्चना से लोग विगत डेढ़ शतक से लाभान्वित होते आ रहे हैं। उससे पहले लोगों को इस स्वयंभू शनि शिला की जानकारी नहीं थी।

कहते हैं करीब 150 वर्ष पहले शिंगणापुर गाँव के पूर्व में स्थित एक नाले में भयंकर बाढ़ आई थी, जिसमें एक बहुत बड़ा काला पत्थर कहीं से बहकर आया और एक बेर के पेड़ के सहारे रूक गया। नाले को स्थानीय भाषा में वहाँ पनशाला कहते हैं। बाढ़ समाप्त होने पर तत्कालीन लोगों ने पानस नाले के किनारे एक बेर के पेड़ के पास एक काली शिला को देखा तो बड़े चकित हुए। कुछ चरवाहों ने उत्सुकतावश उस शिला पर डंडे से प्रहार किया तो उससे खून निकल गया। पत्थर से खून बहता देख चरवाहे दौड़ कर गाँव में गये और यह खबर बिजली की तरह पूरे इलाके में फैल गई। लोग दिन भर तर्क-वितर्क करते रहे कि यह अद्‌भुत शिला क्या है? इसमें ऐसी कौन-सी दैवी-शक्ति है जिसकी वजह से इस शिला में भी सजीव प्राणियों की तरह रक्त का संचार हो रहा है। अब इस शिला का क्या किया जाये? कहीं इसे उपेक्षित छोड़ देने से इस इलाके को किसी दैवी-प्रकोप का सामना न करना पड़ जाये। लेकिन लोग किसी निर्णय पर पहुँच नहीं पाये।

रात में शनिदेव ने एक भक्त को स्वप्न में आदेश दिया कि वह शिला जिसे तुमने पनशाले में देखा है, वह कोई सामान्य शिला नहीं, बल्कि मुझ शनिदेव की स्वयंभू शिला है। तुमको मेरा आदेश है कि

उस शिला की विधिवत स्थापना कर पूजा-अर्चना करो, जिससे तुम्हारे कल्याण के साथ-साथ असंख्य लोगों का भी कल्याण होगा।

दूसरे दिन भक्त के कहने पर लोग बड़ी तत्परता से वहाँ बैलगाड़ी लेकर पहुँचे ताकि एक नियत स्थान पर ले जाकर उस अद्‌भुत शिला की स्थापना की जा सके। किंतु पचासों व्यक्तियों ने मिलकर उसे उठाने की कोशिश की, किंतु शिला टस से मस नहीं हुई। दूसरी रात में अपने भक्त को स्वप्न में शनिदेव ने अपनी शिला को उठाकर ले जाने की युक्ति बताते हुए कहा– यदि शिला को मामा-भांजा मिलकर उठायें और काले बैलों वाली गाड़ी में रखें तो बड़ी आसानी से उस शिला को पानस नाले से निकालकर उपयुक्त स्थान पर ले जाया जा सकता है। दूसरे दिन ऐसा ही किया गया। लोगों के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा, केवल दो व्यक्तियों (मामा-भांजे) ने शनि शिला को उठाकर बैलगाड़ी पर रख दिया। इस घटना से इस स्वयंभू शनि शिला की महिमा चारों तरफ फैल गई।

कहते हैं, शनिदेव की स्वयंभू शिला से लदी गाड़ी अचानक एक स्थान पर रूक गई और लाख कोशिश करने पर भी आगे नहीं बढ़ी। यानि शनिदेव ने अपने लिए वही स्थान पसंद किया। अत: उसी स्थान पर उस स्वयंभू शिला की विधिवत स्थापना कर शनिदेव की पूजा-अर्चना प्रारंभ कर दी गई, जो अब तक जारी है। शनिदेव अपने इस स्वयंभू शिला पर कोई मंदिर या छत्र रखना पसंद नहीं करते। अत: स्वयंभू शनि शिला खुले आसमान के नीचे मौजूद है। शनि कृपा से पूरे शिंगणापुर में किसी भी व्यक्ति के घर में किवाड़ नहीं लगाया जाता और न उस गांव में कोई चोरी ही करता है। शनिदेव की कृपा से सब आनन्द से है। जो भक्त श्रद्धा से यहाँ शनिदेव का पूजन करता

है, उसकी सारी कामनाएँ पूरी होती हैं। यही वजह है कि यहाँ भक्तों की भीड़ बराबर लगी रहती है।

शिंगणापुर में विराजमान स्वयंभू शनि शिला के दर्शनों के लिए जाते समय निम्नांकित नियमों का पालन जरूरी है–

1. दर्शनार्थी अपने सिर पर टोपी या पगड़ी न रखें।
2. जो स्त्रियाँ रजस्वला हों अथवा जिन व्यक्तियों के घर में सूतक हो, वे दर्शनों के लिए न जायें।
3. बिना स्नान किये दर्शन करना मना है।
4. शिला के दर्शन–पूजन के लिए स्त्रियों का चबूतरे पर जाना मना है।
5. पुरुष भी शनि शिला के दर्शन–पूजन के लिए शनि वाले चबूतरे पर स्नानोपरांत गीले वस्त्रों में ही जायें।

शिंगणापुर में शनि पूजन के लिए निम्नलिखित सामग्रियाँ साथ ले जानी चाहिएं–

1. काला वस्त्र, 2. सरसों का तेल, 3. प्रसाद, 4. आक पुष्प माला, 5. नारियल, 6. लोहे की नाल।

उक्त सामग्रियाँ साथ लेकर गये दर्शनार्थी शनिदेव को तेल चढ़ाते हैं और काला वस्त्र अर्पण करने के उपरांत माला व प्रसाद चढ़ाते हैं। फिर नारियल व घोड़े की नाल शनिदेव के चरणों से स्पर्श कराकर अपने कल्याण की कामना करते हुए चबूतरे से नीचे आ नारियल फोड़ते हैं और अपने हाथों में नाल लिए हुए शनि परिसर की परिक्रमा करते हैं। नाल को घर ले जाकर उसकी पूजा करते हैं और उसे पूजा वाले स्थान पर रख उसे नित्यप्रति धूप–बत्ती दिखाते हैं। ऐसा करने वाले भक्तों के सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। यही वजह है कि यहाँ भक्तों का तांता बराबर ही लगा रहता है।

श्री परशुराम चालीसा

दोहा- पूजन कर गणनाथ का, धरूँ शारदा ध्यान।
मुझ पर किरपा कीजिये, परशुराम भगवान।।
मैं कुमति अति दीन हूँ, भगति से अनजान।
नाथ शरण ले लीजिये, अपना बालक जान।।

चौपाई

जयति जयति जय रेणु लाला। परशुराम प्रभु परम दयाला।।
चर्म श्याम मृग तन पर भारी। नाथ जगत के परशु धारी।।
दीर्घ जटाएँ सर पर राजे। कर्ण दंत गज कुण्डल साजे।।
कर परसा राखे प्रतिपाला। गौर वर्ण तन नयन विशाला।।
सूत जनेऊ काँधे राजित। गल रुद्राक्ष माल अति साजित।।
भाल तिलक आकार मनोहर। अविनाशी अव्यक्त भक्तेश्वर।।
श्वेत अश्व वाहन सुखकारी। पवन समान गति अति भारी।।
परम शाश्वत सत्य सनातन। करते हित भगतन मन रंजन।।
ले द्विज रूप धरा पर आये। नभ सदृश सर्वत्र समाये।।
तुम हो राम दया के सागर। भृगु नन्दन आनन्द उजागर।।
सकल सिद्धि चरणन रज धारे। नव निधि दासी तेरे द्वारे।।
कलि अवसाद मिटा जग तारण। प्रकट भए प्रभु धर्म उबारन।।
ध्यान धरत मन कंचन होवे। सुख उपजे दुःख दुर्मति खोवे।।
तेरा पार ना कोई पावे। नारद शारद शीश झुकावे।।
अजर अतुल अविगत अविकारी। हरे ताप तम मंगल कारी।।
हिय बसै तेरे वेद पुराना। शिव अनुरागी सब जग जाना।।
ऋषि मुनि यति योगी तपधारी। पावें तुमसे पदारथ चारी।।

तुम्हरी शरण गहे जो स्वामी। कहलावे मुक्ति पथ गामी॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी। जननि रेणुका प्राण तै प्यारी॥
पालन पोषण करते दाता। छठ अवतार ब्रह्म विख्याता॥
ब्राह्मण हित अवतार तुम्हारा। नारायण माने जग सारा॥
धार मनोरथ मन जो लावे। भक्ति दे भव पार करावे॥
धाम रेणुका संग विराजे। निरखत छवि दुख सारे भाजे॥
ज्ञान गूढ़ रावण को दीन्हा। शिव शक्ति प्रचार है कीन्हा॥
रूप धार प्रभु अति विकराला। क्षत्रिय वंश नष्ट कर डाला॥
क्षत्री जीते इक्कीश बारा। नृप विहीन किया संसारा॥
पापी कार्तवीर्य मारा। सकल वंश हैहय संहारा॥
ब्रह्मपुत्र भू अंचल लाये। सींच धरा जन बहु सुख पाये॥
धनुष दिया अति कृपा कीन्ही। कलाएँ दो रघुनाथ को दीन्ही॥
करे राम जो तेरा सुमिरण। सब कष्टों का होय निवारण॥
जो सुमिरै तुमको चित्त लावै। भूत पिशाच भय उससे खावै॥
वैष्णव जन को जो भी सतावै। वंश उसका परशुराम मिटावे॥
कू-दृष्टि पर नारी पे लावै। होय अपंग मति मारी जावै॥
ब्रह्म तेज अति शोभित प्रभु मुख, विपद विदारण हरण सकल दुःख॥
करे तपस्या महेन्द्र परवत, हाथ जोड़ कलि करे नमन शत॥
नित नित तुमको शीश नवाऊँ, कहूँ कथा किस विधि रिझाऊँ॥
सुयश तेरा 'मनु' क्योंकर गाऊँ, अल्पमति कोदन कहलाऊँ॥
किरपा थोड़ी कीजे दाता। शरण गहुँ संग पितु और माता॥
पढ़े चालीसा जन सुखकारी। सब सुख दे विष्णु अवतारी॥
चालीस दिन नित पढ़ै पढ़ावै। राम कृपा से परमपद पावै॥

दोहा– पाठ चालीसा का करे, ध्यान धरे दिन रात।
परशुराम प्रभु जी रखे, उस जन सर पर हाथ॥

पूजा से पहले

विनियोग

अपसर्पन्त्विति मन्त्रस्य वाम देव ऋषिः, शिवो देवता अनुष्टुप छन्दः, भूतादिविघ्नोत्सादने विनियोगः।

भूतोत्सादन मंत्र

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूतलेस्थिताः
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

देव ध्यान (गणपति व गुरू ध्यान करें)।

आसन पवित्र करने का विनियोग एवं मंत्र

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसन पवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्॥

राग भैरवी ताल कहरवा

मेरे काला मन भाया री

छाया नन्दन दुष्ट निकन्दन हिरदय मेरे समाया री
अज अगम्य अविनाशी अनहद भक्तन को सरमाया री
कहे शनैश्चर शनि कहे कोइ कोइ कहे रवि को जाया री
न्यायधीश कर्म फल भुगतावे, जिन ढूँढ़ा 'मनु' पाया री।

शीश मुकुट कर भाल है, उर पर मुक्तन माल।
रवि छाया के लाल का, क्रोध अजब मंद चाल॥

जपादि में सहायक नियम

1. सदा पूर्वाभिमुख व उत्तराभिमुख होकर जप करना चाहिये।
2. सामने ईष्ट मूर्ति व तस्वीर होनी चाहिए।
3. आसन ऊनी हो और केवल बैठकर जप करने के लिये हो।
4. माला स्वच्छ हो, सभी दाने समान हों।
5. धूप, अगरबत्ती व घी का तेल का दीपक जप समय जलायें रखें।
6. ईष्ट चिन्तन चरण से शीश तक करते रहें।
7. मन्त्रार्थ चिन्तन हो (न्यास विधि ठीक से करें)।
8. सदैव उपांशु और मानस जप करना चाहिए।
9. मन्त्र के दोनों और प्रणव रहने से मंत्र काल और बाह्य वायु से प्रभावित नहीं होता।
10. हितकारी, श्रद्धावान, माता-पिता व गुरूजन से आशीर्वाद लेना चाहिए।
11. श्रद्धा व विश्वास की तीव्रता सफलता प्रदान करती है। दीर्घकालीन फल अल्पकाल में फल प्रदान करता है।
12. अन्य देवों में भेदबुद्धि न हो, ईष्ट कृपा लाभ में बाधक है। सभी देवों को नमन कर अपने ईष्ट चिंतन में संलग्न रहें, सब देवों में ईष्ट दर्शन करें।
13. ध्यान रखें, जो दृढ़विश्वासी हैं, उनके मन में ऐसा संकल्प आते ही कि मूर्ति या तस्वीर चेतन है, उसका आधार निर्मल होने लगता है और अदृष्ट चेतन प्रकट हो जाता है। तब वह चेतन का व्यवहार करने लगता है। चलना, बोलना, प्रश्नों

के उत्तर देना आदि। (यह बात सर्वप्रसिद्ध है कि रामकृष्ण परमहंस माँ काली की मूर्ति से बात किया करते थे।) जो सत्य व विश्वासी हैं भक्त, योगी, दानी उनके लिए असम्भव कुछ भी नहीं है।
14. जब शिष्य गुरूमुख से मंत्र सुनते हैं तब यह शिष्य के कानों में प्रविष्ट होकर हृदयक्षेत्र में चला जाता है। मन्त्र बीजस्वरूप होने पर चित्त शक्ति से अनुप्राणित है। जो शिष्य द्वारा किये गये जप से पालित व अंकुरित होकर शिष्य की मनोभूमि का आश्रय लेता है। दीर्घजपोपरान्त सिद्धि प्रदान करता है। क्षण (समय) मात्रा का ख्याल रखते हुए नियमित जप करना चाहिए।
15. मंत्र, जप, ध्यान व ईष्ट सिद्धि श्रद्धा व विश्वास का विषय है। तीव्र संवेग व वैराग्य ईष्ट चिंतन आदि तत्व प्राप्ति का अत्युत्तम साधन है। यह सब सूक्ष्म विषय है। मेरे ईष्ट रवि व छाया के सुपुत्र तथा यमाग्रज शनिदेव भगवान हैं। (यम ने नचिकेता को आत्मज्ञान प्रदान किया- कठोपनिषद्) शनिदेव नियमाधीन हैं, उनकी क्षमता अतुल्य है, वे कर्मफल प्रदान करने वाले हैं। भक्तों को पुरुषार्थ के सभी साधन प्रदान करने वाले हैं। उनकी कृपा अहंकारहीन होने से ही प्राप्त होती है।

40-40 दिन की 5 बार लगातार मौन साधनाएँ कीं। इसके अलावा 23 दिन की कई मौन साधनाएँ व 11 तथा 9 दिन की साधनाएँ कीं। गृहस्थ में ही प्रभु कृपा से अनासक्त होकर निर्वाह कर रहा हूँ। उड़ीसा, मुम्बई, पंजाब (स्वरूप नगर), वृन्दावन, कोकिलावन, बरसाना, नन्दगाँव, इलाहाबाद, हरिद्वार, वाराणसी (काशी) आदि साधना स्थल रहे। कई सिद्ध पुरुषों के दर्शन हुए, उनकी सेवा सुश्रुषा का दिव्य अवसर प्राप्त हुआ। उनसे अन्यान्य देव-देवियों की साधना की। अनुपम व अध्यात्म मार्ग में अग्रसर होने की विधियाँ प्राप्त हुईं तथा हृदयाकाश में अनन्त दर्शन हुए। बहुत-सी साधनाएँ गुप्त व रहस्यमयी हैं, जो केवल पुत्र को व उत्तम अधिकारी को ही दी जा सकती हैं तथा जिनका केवल लोक कल्याण हेतु ही उपयोग किया जा सकता है। स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी, स्वामी ज्ञानानन्द जी, स्वामी नीमानन्द जी, हरिद्वार के एक संत (जो नाम भी नहीं बताते और जिनका समाधि काल सुबह 9 से शाम 5 बजे तक निरन्तर रहता है) की अविरल व सतत कृपा आज भी ध्यान मार्ग से प्राप्त कर रहा हूँ।

श्री शरभेश्वर माला मंत्र

ॐ नमः पक्षिराजाय निशि-कुलिश-वर-दृष्टा-नखायानेक-कोटि-ब्रह्म-कपाल-मालालंकृताय-सकल-कुल-महानाग भूषणाय सर्वभूत निवारणाय नृसिंह-गर्व-निर्वापण-कारणाय सकलरिपु-रभांटवी-विमोटन-महानिलाय शरभ-सालुवाय ह्रां ह्रीं ह्रूं प्रवेशय प्रवेशय रोग-ग्रहं बंधय-बंधय बालग्रहं बंधय बंधय आवेशय आवेशय भाषय भाषय मोहय-मोहय कंपय-कंपय बंधय-बंधय भूतग्रहं बंधय रोगग्रहं बंधय यक्षग्रहं बंधय पातालग्रहं बंधय चातुर्थग्रहं बंधय भीमग्रहं बंधयापस्मार ग्रहं बंधय उन्मत्त ग्रहं बंधय राक्षसगृहं बंधय जवालाग्रहं बंधय ज्वालामुखग्रहं बंधय तमोहारग्रहं बंधय भूचरग्रहं बंधय खेचरग्रहं बंधय बेतालग्रहं बंधय कुष्मांडग्रहं बंधय स्त्रीगृहं बंधय पापग्रहं बंधय विक्रमग्रहं बंधय व्युत्क्रमग्रहं बंधय प्रेतग्रहं बंधय पिशाचग्रहं बंधय बन्धयावेशग्रहं बंधय अनावेशग्रहं बंधय सर्वग्रहान्मर्दय सर्वगृहान त्रोटय-त्रोटय प्रैं त्रैं हैं मारय शीघ्रं मारय मुंच मुंच दह दह पच पच नाशय नाशय सर्वदुष्टान्नाशय ह्रूं फट् स्वाहा।

अरूणभरूणमालालंकृता संकराग्रैर्विधृत
परसुशक्तिं पुष्पबाणेक्षु चापम्।
विविध फणफणीन्द्रैर्भूषणैर्भूषितांगं
शरभमखिलनाथं नौम्यहं सालुवेशम्।।

इसके चिन्तन तथा स्मरण से सिद्धियाँ साधक के करस्थ होती हैं।

ॐ नमो भगवते शमशानरूद्राय नररूधिर मासंभक्षणाय कपालमालाधराय प्रेतवाहनाय खड्गकपाल हस्ताय सर्वभूताधिपतये क्लां दां हां एह्येहि आगच्छागच्छ समस्त भूतरोगान् नाशय-नाशय सर्वरिपुन नाशय-नाशय क्लें दें ह्लें श्रीं इदं भुंक्ष्व-भुंक्ष्व क्लूं ब्लूं हलूं सर्वसौभाग्यं देहि देहि स्वाहा।

इस मंत्र के जप से स्मरण मात्र से बलिकर्मादि विविध क्रियाओं में अपनी सब प्रकार से रक्षा होती है।

बृहत्साम क्षत्रभृद्बृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजा शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष।।

लाल रंग के सूत को यथाविधि अभिमंत्रित करते हुए 3,4,7,11 गाँठें रक्षविधिनुसार डालकर रक्षासूत्र को सिर में धारण करने से यक्ष गंधर्व राक्षसादि भी भयभीत होकर भाग जाते हैं। भूत प्रेत पिशाचादिक का तो कहना ही क्या।

सकलशत्रु दमनहेतु भद्रकाली प्रयोग

ॐ भद्रकाल्याश्च मंत्रस्य सद्योजात ऋषि जगती छंद भद्रकाली च देवता ह्लीं बीजं स्वाहा शक्ति श्री भद्रकाली देवी प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

ह्लीं बीज से ही षडंगन्यास करें।

ई ॐ काली ह्लीं कंकाली मह्यं सदा त्वं कल्याणी मनोहरी इह कवितां अव्याहतं सौभाग्यं देहि अस्मिन् परमन्त्रहारिणी रं, पर यन्त्र हारिणी रं, अहो परविद्याच्छेदिनी रं ह्लीं स्वाहा।

भद्रकाली ध्यान

नीलाभा हेमवस्त्रा नररूधिर-वसा-मांसनिर्भिष्यवकत्रा
शूल-कुंतु-रथांगं-फणि-मुसल-गदा-तोमरं-पट्टिशं च।
पाशं शक्तिं च शंखं ध्वज-हल-दहनं वज्रखेटं कराब्जैर्विभ्राणा
भीमवेषा विजयतु भुवने विद्रुता भद्रकाली।।

मंत्र के प्रभाव से शत्रु द्वारा फैलाया गया जाल नष्ट होकर शत्रु पक्ष का ही विनाश हो जाता है। अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। 10,000 जप शत्रु के पराक्रम को छीन लेता है।

धूमावती (7000 जप)

ॐ अस्य श्री भगवती धूमावती मंत्रस्य नृसिंह ऋषि पंक्ति छंद देवी ज्येष्ठा देवता धूं बीजं स्वाहा शक्ति श्री भगवती धूमावती प्रीत्यर्थे पाठे जपे विनियोग।

ध्यान– **ध्यायेत्कालाभ्रनीलां विलिखित-वदनां काकनासां विकर्णां संमार्जन्युल्क-शूपैर्युत-मूसलकरां वक्रदंताविषास्याम् ज्येष्ठां निर्वाणवेषां भृकुटितनयनां मुक्तकेशामुदाराम शुष्कोत्तुंगातितिर्यक्-स्तनभरयुगलां निष्कृपां शत्रुहंत्रीम्।**

मंत्र– **ॐ धूं धूमावती स्वाहा।**

शत्रु संहार और आशुफल प्रदान करने वाली

जिधर देखूँ उधर तू है, चराचर में तेरी बू है,
है काशी में है गोकुल में, हर एक नर में तू ही तू है।
गुलिस्तां में है सागर में, हर एक दिल में रू-ब-रू है,
फना तुझमें मैं हो जाऊँ, यही मेरी आरजू है।

शनि आरती

आरती शनि बलकारी की कीजै, श्री नीलाम्बर धारी की कीजै।
मुक्तन माला जाके गल सोहे, शीश मुकुट सब जन मन मोहे।।
वलय कंकण शोभित प्रभु तोहे, जयति जय दु:ख परिहारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

एक कर गदा, एक कर भाला, नववाहन है एक एक आला।
तिस पर रंग प्रभु जी काला, अधोदृष्ट असुरारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

विक्रम राजा अति ही दु:ख पाया, तेली के घर कोल्हू चलाया।
स्वपन में दर्शन प्रभु दिखलाया, करमन फल दातारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

ना भेदूँ रोहिणी ये माना, अवधपति को दिया वरदाना।
करवाया जग में सम्माना, दशरथ नृप भयहारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

शिंगणापुर में वास है तेरा, जग में बड़ा इतिहास है तेरा।
लगता मेला खास है तेरा, कलियुग के पतवारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

ब्रज पहुँचे रवि छाया जाये, दरश श्याम का ना कर पाये।
कोकिलावन में जाय पधराय, कृष्ण छवि बलिहारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

'मनु' गुण तेरे सदा ही गाऊँ, शीश चरण से तेरे लगाऊँ।
हर पल दाता तुम्हें ही ध्याऊँ, भगत लज्जा रखवारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

सब संकट के टारी की कीजै, अपा काल रखवारी की कीजै।
दुष्टन पे भए भारी की कीजै, भक्तन पे दिल वारी की कीजै।।
श्री नीलाम्बर धारी की कीजै.....

श्री शनिदेवजी की आरती

जय जय श्री शनिदेव, भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु, छाया महतारी। जय.....
श्याम अंक, वक्र दृष्टि, चतुर्भुज धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी। जय.....
क्रीट मुकुट शीश सजत दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी। जय.....
मोदक मिष्ठान पान चढ़त है सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी। जय.....
देव दनुज ऋषि मुनी सुरत नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण है तुम्हारी। जय......

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग-दोष जाके निकट न झाँके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोटि समुद्र-सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सीया रामजी के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बाईं भुजा असुर संहारे। दाईं भुजा सब सन्त उबारे।।
सुर-नर-मुनि-जन आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परम पद पावै।।
लंका विध्वंस कीन्ह रघुराई। तुलसीदास स्वामी कीरति गाई।।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

आरती श्रीकुंजबिहारी की

आरती कुंजबिहारी की, श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।
गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनँद नँदलाला।
नंद के नंद मोहन ब्रज चन्द, धर्मानन्द राधीका रमन बिहारी की।।
।।श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी की ।।श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसन कों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की।।श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारी की।।श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारी की।।श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की।।

आरती श्रीलक्ष्मीजी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता॥ ॐ जय॰
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ जय॰
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता॥ ॐ जय॰
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥ ॐ जय॰
जिस घर में तुम रहतीं, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ॐ जय॰
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ॐ जय॰
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ॐ जय॰
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ जय॰
ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
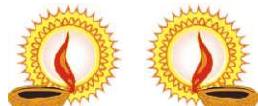
आरती श्री जगदीश हरे की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॐ जय।
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनशे मन का। स्वामी।
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे मन का॥ ॐ जय।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। स्वामी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ जय।
तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अंतर्यामी। स्वामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ जय।
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता। स्वामी।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति। स्वामी।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ जय।
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे। स्वामी।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥ ॐ जय।
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा। स्वामी।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥ ॐ जय।
प्रभु जी की आरती जो कोई नित गावे। स्वामी।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावे॥ ॐ जय।

आरती भगवान शंकर की

जय शिव ओंकारा, प्रभु शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा। ॐ हर हर महादेव
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे। ॐ हर हर महादेव
दोय भुज चारु चतुर्भुज, दशभुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे। ॐ हर हर महादेव
अक्षमाला बनमाला रूण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी, करमाला धारी। ॐ हर हर महादेव
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
शनकादिक गरुड़ादिक, भूतादिक संगे। ॐ हर हर महादेव
कर मध्य सुकमण्डल, चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी, दुखहारी जग पालन कारी। ॐ हर हर महादेव
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित, ये तीनों एका। ॐ हर हर महादेव
त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोई जन गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावै। ॐ हर हर महादेव

आरती श्रीअम्बाजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।। जय अम्बे...
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको।। जय अम्बे...
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।। जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी॥ जय अम्बे...
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति॥ जय अम्बे...
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र-विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती॥ जय अम्बे...
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ जय अम्बे...
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय अम्बे...
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरूँ॥ जय अम्बे...
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय अम्बे...
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ जय अम्बे...
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती॥ जय अम्बे...
माँ अम्बेजी की आरती, जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावै॥ जय अम्बे...

आरती भगवान परशुराम की

आरती परशुधारी की कीजै, परशुराम अवतारी की कीजै।
करूणा सागर जग विख्याता, परसा धनु कर राखे दाता,
भृगुनन्दन की रेणुका माता। तन मृगछाला भारी की कीजै। आरती.....
दीर्घ जटाएँ श्याम सुखकारी, माल रूद्राक्ष राम गलडारी,
चरण खड़ाऊँ अल्प आहारी, श्वेत अश्व असवारी की कीजै। आरती.....
ब्राह्मण रक्षा हेतू आये, ब्रह्म अवतार प्रभु कहलाये,
शक्ति शिव शंकर से पाये, आशुतोष प्रचारी की कीजै। आरती.....
चारों युग जाग्रत तुम स्वामी, सर्व साक्षी अन्तरयामी,
दुष्ट काल ब्राह्मण हित कामी, अविनाशी अविकारी की कीजै। आरती.....
महेन्द्र पर्वत वास है तेरा, यज्ञ तप का इतिहास है तेरा,
उदित वहाँ प्रकाश है तेरा, परम पुरुष उद्धारी की कीजै। आरती.....
बाद दीवाली दशमी जो आवे, रेणुका दर्शन राम जी पावे,
रेणु झील में प्रभु जी नहावे, मात चरण बलिहारी की कीजै। आरती.....
रेणुका धाम है मंदिर तेरा, लक्ष्मी विष्णु का वहाँ डेरा,
संग तेरे शिव शिवा बसेरा, परम तेज विस्तारी की कीजै। आरती.....
'मनु' पाऊँ हिरदय अस्थाना, परम दयालु राम भगवाना,
भव से उबारो दयानिधाना, जन्म मरण दुःख टारि की कीजै। आरती.....
निराकार साकारी की कीजै, दीनन के हितकारी की कीजै,
जगत प्राण संचारी की कीजै, काल पाश से निवारी की कीजै।
आरती परशुधारी की कीजै, परशुराम अवतारी की कीजै.....

सूर्यदेव की आरती

मिल कीजै प्रभाकर आरती मिल कीजै।
दृष्टि से जिनकी तिमिर नाश हो, प्राण जीव संचारती।
माता अदिति पितु हैं काश्यप, अरूण बने हैं सारथी।
द्विभुज आसन कमल विराजित, चक्र तर्जनी धारती।
सविता रवि दिवाकर भानू, मार्तण्डक सहस्त्रार्चि।
सुर मुनि गंधर्व नाग यक्ष संग, वंदन करे 'मनु' भारती।

चन्द्र देव की आरती

जय जय श्री चन्द्रदेव भक्तन हितकारी।
पिता अत्रि अनुसूया महतारी।।
हस्त गदा वर मुद्रा श्वेताम्बर धारी।
मुक्तन की माल गल रथ की असवारी।।
देव पितृ यक्ष भूत प्राण संचारी।
औषध बीज जल द्विज वृक्ष विस्तारी।।
पूर्णिमा दिवस मधु मिश्र आहारी।
सोमवार व्रत दान प्रसन्नता भारी।।
सुधा मन अन्न कलाधर निर्विकारी।
हृदय में निरखूँ छवि 'मनु' मैं तुम्हारी।

मंगल देव की आरती

ओम जय भूमि नन्दन, स्वामी जय वसुधा नन्दन।
शीश झुका श्रद्धा से, भक्त करें वन्दन।।
चार भुजा अति शोभित, रक्त वर्ण प्यारा।
मेष वाहन असवारी, मोहित जग सारा।।
स्वर्ण मुकुट सिर सोहे, रक्ताम्बर धारी।
वृश्चिक मेष के स्वामी, सर्वरोग हारी।।
अभय-मुद्रा वर-मुद्रा, शूल गदा धारे।
रक्त माल गल झूले, कर कंकण डारे।।
ताम्र स्वर्ण गुड़ चन्दन, केसर कस्तूरी।
दान दीन को करते, हो मंशा पूरी।।
महावीर दुःख भंजन, मंगल सुखकारी।
भरद्वाज गौत्रो उत्पन्न, रवि मंडल चारी।।
मंगल देव की आरती, 'मनु' जो जन गावे।
ऋण मुक्ति चिर यौवन, सुख सम्पत्ति पावे।।

बुध देव की आरती

आरती कीजै श्री चन्द्र लला की, भूतल स्वामी बुद्धिकला की।
नवग्रह मण्डल आप विराजे, अर्केशान में बुध द्युति साजे।
मिथुन कन्या राशि के स्वामी, नभ के भूषण अन्तरयामी।
कनक प्रभा पीताम्बर धारी, स्वर्ण मुकुट सिर सिंह सवारी।
पन्ना धारण करे अमावस, द्विज दें वस्त्र फल घृत षटरस।
सत्य सौम्य, सुफल फलदायक, हो विपरीत दशा में सहायक।
तेरे चरण जो शीश नवावें, धूप दीप दें आरती गावें।
'मनु' प्रिय सत्य वचन सुनावें, माधव चरणों में गति पावें।

आरती गुरु बृहस्पति देव जी की

आरती श्री गुरूवर की कीजै, भगतन के हितकर की कीजै।
भक्तन हिरदय आप विराजे, पात्र माल स्वर्ण दंड कर साजे।
दरस करत अवगुण सब भाजे, किरपामय सागर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

बृहस्पति धनु मीन के स्वामी, अंगिरा नन्दन अन्तर्यामी।
बुद्धि प्रदायक ब्रह्म पथगामी, दुखहर सुंदरवर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

पुरूषार्थ मार्ग दिखलावें, दोष कर्म का सभी बतलावें।
ईश्वर भक्ति में मन लावें, जगदीश्वर अनुचर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

सत्संग गुरू का करता पावन, देवें योग समाधि साधन।
गुरू ही जग में अधम उधारण, साईं समचर निरमर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

दुर्भग जीव सहायक दाता, निरबल के तुम नायक दाता।
सकल मनोरथ दायक दाता, करूणाकर दिलबर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

सद्‌चित्त आनन्द कन्द तुम्हीं हो, धरणी दिनकर चन्द तुम्हीं हो।
गायन के सब छन्द तुम्हीं हो, मनहर कविश्वर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

गुरू शरणागत के प्रतिपालक, भगतन के जीवन संचालक।
शरण में सतगुरू है 'मनु' बालक, अजर अमर सुखकर की कीजै॥
आरती श्री गुरूवर की कीजै.....

आरती श्री गुरूवर की कीजै, भगतन के हितकर की कीजै।

बृहस्पतिदेव की आरती

ओम जय बृहस्पति देवा, स्वामी जय बृहस्पति देवा।
आरती प्रभु जी गाऊँ, नित्य करूँ सेवा॥

देव पुरोहित सुरगुरू, आनंद सुख राशी।
अज अगम्य करूणाकर, निर्मल अविनाशी॥

पात्र माल वरमुद्रा, स्वर्ण दंड धारी।
पीताम्बर तन शोभित, भव बंधन हारी॥

स्वर्ण मुकुट सिर ऊपर, भाल तिलक चन्दन।
आसन कमल विराजित, ऋषि अंगिरा नन्दन॥

पीत अश्व स्वर्णिम रथ, मीन धनू स्वामी।
वाचस्पति अति भास्वर, अम्बर पथ गामी॥

जीव बुद्धि के दाता, ग्रह अति बलशाली।
असुर विघ्न से करते, सुर मख रखवाली॥

पीत वस्त्र स्वर्ण भूमि, मधु घृत अन्न पुखराज।
वीर दिवस दे द्विज को, बिगड़े बनते काज॥

धर्मरूप धनदाता, वंश वृद्धि कर्त्ता।
तीन लोक में पूजित, कलिमल के हर्ता॥

आरती देव तुम्हारी, तीन काल गावें।
'मनु' बुद्धि ब्रह्म विद्या, यश जग में पावें॥

शुक्रदेव की आरती

आरती श्री शुक्र स्वामी की, अजर अमर अन्तरयामी की।
असुर देवता करें अभिनन्दन, भार्गव कवि बली भय भञ्जन।
चतुर्भुजा श्वेताम्बर धारी, मान्य कलाधर नभ सञ्चारी।
तुला वृषभ राशि के नायक, सन्तति मुक्ति विद्या नय दायक।
अक्षमाल कर दंड सुशोभित, श्वेत कमल आसन पे विराजित।
मायातीत महाशय मनस्वी, गुरू बलि बन्धु अतिहि तपस्वी।
नीति विद्या लक्षण सम्पन्न, पालक भक्त करें गुण वर्धन।
रजत स्वर्ण अक्षत घृत चन्दन, दान दधि शक्कर दें द्विज जन।
प्रसन्न शुक्रदेव हो जावें, शुक्रवार 'मनु' आरती गावें।

❋ ❋ ❋

जो अपने तथा पराये दोषों को गुप्त रखते हैं। गुरु, गुरु पुत्र, वन्द्य, दीक्षित, सत्यवादी, संन्यासी, योगी अथवा व्रत अनुष्ठानादि व देव पूजा करने वाले लोगों के लिए मारण, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भन अथवा धन के लोभ में पड़कर वे दूषण कार्य कदापि नहीं करने चाहिएं। अन्यथा मंत्र शक्ति विपरीत फल तत्काल प्रदान करती है।

❋ ❋ ❋

राहुदेव की आरती

ओम जय राहु देवा, स्वामी जय राहु देवा।
शाश्वत बली अगोचर, भक्त रक्षक देवा।
पैठीनस कुल उत्पन्न, सिंहिका महतारी।
देव जाति प्रविष्टक, कबन्ध देह न्यारी।
खड्ग शूल खेटक अरू, वर मुद्रा धारी।
सूर्य इंदु छवि नाशक, भक्तन उपकारी।
नीलाम्बर तन शोभित, छाया रूप स्वामी।
सखा शुक्र शनिदेवा, असुरेश्वर नामी।।
क्रूर घोर दक्षिणमुख, शनि वत् फल दाता।
शरणागत के पालक, सर्वापद त्राता।।
रां बीज मंत्र तेरा, प्रणव सहित जापे।
भूत प्रेत भय बाधा, उस जन से काँपे।।
नील वसन तिल उड़द, अश्व पुष्प काला।
दान से रक्षे राहु, लेकर कर भाला।।
आरती राहु देव की, 'मनु' जो जन गावें।
राहु देव शुभकारी, तुरतहि हो जावे।।

एकश्लोकी रामायणम्

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्।।

केतुदेव की आरती

ओम जय केतु देवा, स्वामी जय केतु देवा।
भक्तन को हितकारी, धूम्र वर्ण देवा।
छाया ग्रह बलशाली, कृष्णांबर धारी।
गीध मीन पर राजित, कबन्ध छवि न्यारी।
सिर पर मुकुट विशाला, कानन में कुंडल।
जैमिनि-गौत्र सदस्य, ध्वजाकार मण्डल।
एक कर की वरमुद्रा, दूजे गदा धारे।
अजर अमर सुखकारी, ग्रह नायक प्यारे।
रक्त नेत्र दक्षिण मुख, उत्पातक भारी।
रवि इंदु द्युति नाशक, भव दुख निस्तारी।
नील पुष्प तिल काला, कंबल कस्तूरी।
शस्त्र दान से करते, सब मंशा पूरी।
सौम्य सुजन उपकारी, काम रूप स्वामी।
सखा शुक्र शनिदेवा, असुरेश्वर नामी।
कें बीज मंत्र तेरा, प्रणव सहित जापे।
भूत-प्रेत भय बाधा, उस जन से काँपे।
जो 'मनु' आरती तेरी, प्रेम सहित गावें।
केतु देव शुभकारी, तुरतहि हो जावें।
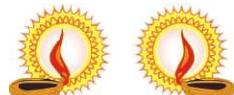
उपसंहार

भगवत्कृपा का कोई नियम नहीं है, वह अहेतु की है। गुरूकृपा आज के परिवेश में अति दुष्कर हो गई है। शास्त्रकृपा सत्शास्त्र वह है जिसे स्वानुभूति से लिखा, बताया, सुनाया गया हो, जो केवल शब्दों का जाल न हो। जिसमें 'आंखिन देखी' बात भी हो इसलिए साधकों की सुविधा के लिए मैंने इस ग्रंथ में यत्र-तत्र से कुछ महत्वपूर्ण स्तुतियों व साधनाओं का जो मेरे द्वारा अनुभूत किये गये हैं, समावेश किया है। इस नवीन संस्करण में रह गई त्रुटियों के लिए साधकों व भक्तों से क्षमा याचना करता हूँ व भविष्य के लिए नेक सुझाव भी आमंत्रित करता हूँ।